

पाएगा। हदीस की ज़बान वाजेह तौर पर मुहम्मद बिल अब्दुल्लाह की ज़बान है और कुरआन की ज़बान वाजेह तौर पर खुदा की ज़बान।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّيَ الْأَعْلَى ۚ
يَا حَمْدُكَ ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝
وَإِنَّهُ فِي أُولَى الْأَعْيُنِ عَزِيزٌ ۝

مع
القول
الطاهر

आयतें-89

सूरह-43. अज़-ज़ुखरुफ

रुकूअ-7

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महारवान, निहायत रहम वाला है।
ह० मी०। कसम है इस वाजेह किताब की। हमने इसे अरबी ज़बान का कुरआन बनाया है ताकि तुम समझो। और वेशक यह अस्ल किताब में हमारे पास है, बुलन्द और पुरहिक्मत (तत्त्वदर्शितापूर्ण)। (1-4)

उम्मुल किताब से मुगद लौहे महफूज (मूल ग्रंथ) है जो अल्लाह के पास है। लौहे महफूज में अल्लाह तआला ने उस अस्ल दीन को सब्त (संरक्षित) कर रखा है जो उसे इंसानों से मल्लूब है। यही अस्ल दीन मुखलिफ जवानों में मुखलिफ पैगम्बरों पर उतरा। और वह पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अरबी ज़बान में उतरा गया। अब अरबी कुरआन ही मौजूदा दुनिया में अस्ल दीने खुदावंदी का नुमाइंदा है। हमिलीने कुरआन की यह जिम्मेदारी है कि वे इसे हर ज़बान में मुंतकिल करके इसे तमाम कौमों तक पहुंचाएं। ताकि इस दीन को जिस तरह अरबों ने समझा उसी तरह दूसरे लोग भी इसे समझ सकें।

कुरआन का बुलन्द और पुरहिक्मत होना इसके किताबे इलाही होने का सुबूत है। कुरआन की ज़बान और इसके मजामीन खुदाई अज़मत के हमसतह हैं और यही इस बात का सुबूत है कि वह खुदा की किताब है। कुरआन अगर इंसानी कलाम होता तो इसमें वह ग़ैर मामूली अज़मत न पाई जाती जो अब इसमें पाई जा रही है।

أَفْخَرْتُ عَنْكُمْ الذِّكْرَ صَفْحًا ۖ إِنَّ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝ وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ
نَبِيِّ فِي الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَنْتَهِمُ مِنْ نَبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْتَىٰ بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝
فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا ۖ وَمَنْ مِثْلُ الْأَوَّلِينَ ۝

क्या हम तुम्हारी नसीहत से इसलिए नज़र फेर लेंगे कि तुम हद से गुजरने वाले हो और हमने अगले लोगों में कितने ही नबी भेजे। और उन लोगों के पास कोई नबी नहीं आया जिसका उन्होंने मज़ाक न उड़या हो। फिर जो लोग उनसे ज्यादा ताक़तवर थे उन्हें हमने हलाक कर दिया। और अगले लोगों की मिसालें गुजर चुकीं। (5-8)

आज दुनिया में बेशुमार ऐसे लोग पाए जाते हैं जो पिछले पैगम्बरों का नाम इज़्जत के साथ लेते हैं। ऐसी हालत में यह बात बड़ी अजीब मालूम होती है कि इन पैगम्बरों का (पैगम्बर इस्लाम सहित) उनके हमजमाना लोगों ने मज़ाक क्यों उड़या।

इसकी वजह यह नहीं है कि पिछले लोग वहशी थे और आज के लोग मुहज्जब हैं। यह सिर्फ ज़माने का फर्क है। आज लम्बी मुद्दत गुज़रने के बाद हर पैगम्बर के साथ तारीख़ी अज़मत का जोर शामिल हो चुका। इसलिए आज हर जाहिरबी पैगम्बर को पहचान लेता है। मगर पैगम्बर अपने ज़माने के लोगों को सिर्फ एक आम इंसान नज़र आता था। उस वक़्त पैगम्बर की पैगम्बराना हैसियत को पहचानने के लिए हकीकतबी (यथार्थदर्शी) निगाह दरकार थी। और बिलाशुबह हकीकतबी निगाह दुनिया में हमेशा सबसे कम पाई गई है।

हक की दावत के मुखातबीन चाहे कितना ही ज्यादा ग़लत रवैया इस्तिज़ार करें, दाओ यक़तरफ़ा तौर पर सब्र करते हुए अपने दावती अमल को जारी रखता है। यहां तक कि वह वक़्त आ जाए जबकि खुदा अपनी तरफ से कोई फैसला फ़रमा दे।

وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝
الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ مَهْدًا ۖ وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ يَقْدَرُ ۖ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتَةً ۚ كَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ۝ وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا ۖ وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ۝ لَتَسْتَخْوُ عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُونَا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحٰنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ۝
وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ۝

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वे ज़रूर कहेंगे कि उन्हें ज़बरदस्त, जानने वाले ने पैदा किया। जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फर्श बनाया। और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम राह पाओ। और जिसने आसमान से पानी उतारा एक अंदाजे के साथ। फिर हमने उससे मुर्दा ज़मीन को जिंदा

कर दिया, इसी तरह तुम निकाले जाओगे। और जिसने तमाम किस्में बनाई और तुम्हारे लिए वे कश्तियां और चौपाए बनाए जिन पर तुम सवार होते हो। ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो। फिर तुम अपने रब की नेमत को याद करो जबकि तुम उन पर बैठो। और कहो कि पाक है वह जिसने इन चीजों को हमारे वश में कर दिया, और हम ऐसे न थे कि उन्हें काबू में करते। और वेशक हम अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं। (9-14)

हर जमाने में बेशतर इंसान यह मानते रहे हैं कि कायनात का खालिक व मालिक खुदा है और वही है जिसने हमें ज़िंदगी के तमाम सामान दिए हैं। कायनात को वजूद में लाना और जमीन पर सामाने हयात की फ़राहमी इतना बड़ा काम है कि किसी शर्ख़ के लिए नामुमकिन है कि वह इसे एक खुदा के सिवा किसी और की तरफ़ मंसूब कर सके।

इस इक्कार का तक्ज़ा है कि इंसान सबसे ज़्यादा खुदा की तरफ़ मुतवज्जह हो। उसकी ज़िंदगी खुदा रूख़ी ज़िंदगी हो जाए। मगर इंसान दूसरी चीज़ों को अपना मक्सूद बनाता है, वह ग़ैर खुदा को अपनी तवज्जोहात का मर्कज़ ठहरा लेता है।

अल्लाह तआला ने हकीकत को अपने फ़ैम्बरों के ज़रिए खोला है। इसी के साथ उसने दुनिया की तख़लीक इस तरह की है कि वह हक़ाइके मअनवी की अमली तम्सील बन गई है। मसलन यह एक हकीकत है कि इंसान को मरकर दुबारा जिंदा होना है। इस हकीकत को नवातात (पेड़-पौधों) की सतह पर बार-बार दिखाया जा रहा है। इंसान हर साल यह देखता है कि जमीन खुशक हो गई। इसके बाद बारिश होती है और जमीन दुबारा सरसबज़ हो जाती है। यह एक इशारा है कि इसी तरह इंसान भी मरने के बाद दुबारा जिंदा किया जाएगा।

मौजूदा दुनिया की दूसरी खुसूसियत यह है कि वह हैरतअंगेज तौर पर इंसान के मुवाफ़िक़ है। यहां की तमाम चीज़ें इस अंदाज़ पर बनाई गई हैं कि इंसान उन्हें जिस तरह चाहे अपने मक्सद के लिए इस्तेमाल करे। इसका तक्ज़ा है कि आदमी के अंदर शुक्र का ज़बा पैदा हो। वह जब खुदा की दुनिया की किसी चीज़ को अपने लिए इस्तेमाल करे तो उसका दिल खुदा के आगे झुक जाए, उसकी जबान से एतराफ़ व दुआ के कलिमात उबलने लगें।

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ۝ أَمْ اتَّخَذَ مِنْ مَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُمْ بِالْبَنِينَ ۝ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝ أَوْ مَنْ يَنْشَأُ فِي الْحُلِيِّةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۝ وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَنِ إِنَاثًا أَشْهَدُوا خَلَقَهُمْ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ۝

और उन लोगों ने खुदा के बंदों में से खुदा का जुज (अंश) ठहराया, वेशक इंसान खुला नाशुक्रा है। क्या खुदा ने अपनी मख़्लूकात में से बेटियां पसंद कीं और तुम्हें बेटों से नवाजा। और जब उनमें से किसी को उस चीज़ की ख़बर दी जाती है जिसे वह रहमान की तरफ़ मंसूब करता है तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और वह ग़म से भर जाता है। क्या वह जो आराइश (आभूषणों) में परवरिश पाए और झगड़े में बात न कह सके। और फरिश्ते जो रहमान के बंदे हैं उन्हें उन्होंने औरत करार दे रखा है। क्या वे उनकी पैदाइश के वक्त मौजूद थे। उनका यह दावा लिख लिया जाएगा और उनसे पूछ होगी। (15-19)

खुदा के साथ ग़ैर खुदा को शरीक करने की एक सूत यह है कि आदमी किसी को खुदा का शरीकें जात ठहराए। मसलन फरिश्तों को खुदा की बेटी मानना, हज़रत मसीह को खुदा का बेटा बताना, या वहदतुल वजूद का नज़रिया (अद्वैत मत) जो तमाम चीज़ों को खुदा के अज्ज (अंश) करार देकर कायनात की तशरीह करता है। इस किस्म के तमाम अफ़ेदे महज बेबुनियाद मफ़रूजे (कल्पनाएँ) हैं। इनके हक़ में कोई भी हकीकी दलील मौजूद नहीं।

यहां औरत की सिंफी (लैंगिक) खुसूसियात को दो जामअ लफ़ज़ में बयान कर दिया गया है। एक यह कि वह तबअन आराइशपसंद होती है। दूसरे यह कि वह मुकाबले के वक्त पुज़ेर अंदाज में कलाम नहीं कर पाती। औरत का यह सिंफी मिजाज एक हकीकत है और इसी बिना पर इस्लाम में यह तकसीम की गई है कि मर्द बेरूनी (बाहर) काम का जिम्मेदार है और औरत अंदरूनी काम की जिम्मेदार।

وَقَالُوا الْوَسْأَاءُ الرَّحْمَنِ مَا عِبَادُهُمْ ۖ مَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۚ أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ۖ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ۖ وَكَذَلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّنْ تَذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا ۖ إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ۖ قُلْ أَوْ لَوْ جِئْتُكُمْ بِآهْدَىٰ مِنْ مَّا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ ۖ لَآتَيْنَاكُمْ ۚ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۖ فَانْتَقِمْنَا مِنْهُمْ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝

और वे कहते हैं कि अगर रहमान चाहता तो हम उनकी इबादत न करते। उन्हें इसका कोई इल्म नहीं। वे महज बेतहकीक बात कह रहे हैं। क्या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब दी है तो उन्होंने उसे मजबूत पकड़ रखा है। बल्कि वे कहते हैं कि हमने अपने

सूरह-43. अज़-ज़ुब्रुफ

1299

पारा 25

बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उनके पीछे चल रहे हैं। और इसी तरह हमने तुमसे पहले जिस बस्ती में भी कोई नजीर (डराने वाला) भेजा तो उसके खुशहाल लोगों ने कहा कि हमने अपने बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उनके पीछे चले जा रहे हैं। नजीर ने कहा, अगरचे मैं उससे ज्यादा सही रास्ता तुम्हें बताऊँ जिस पर तुमने अपने बाप दादा को पाया है। उन्होंने कहा कि हम उसके मुँक़िर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो। तो हमने उनसे इंतिकाम (प्रतिशोध) लिया, पस देखो कि कैसा अंजाम हुआ झुटलाने वालों का। (20-25)

मौजूदा दुनिया में इंसान जो भी काम करना चाहता है वह उसके मौके पा लेता है। इससे अक्सर लोग इस ग़लतफहमी में पड़ जाते हैं कि वे जो कुछ कर रहे हैं सही कर रहे हैं। अगर वे ग़लती पर होते तो वे अपने तरीके को चलाने में कामयाब न होते। इस किस्म की बातें अक्सर वे लोग करते हैं जिन्हें खुशहाल तबका कहा जाता है।

मगर यह जबरदस्त ग़लतफहमी है। मौजूदा दुनिया में हर तरीके का चल पड़ना इसलिए है कि यहां इस्तेहान की आजादी है। आखिरत की दुनिया में इस्तेहान की मुद्दत ख़त्म हो जाएगी। इसलिए वहां किसी के लिए यह मौका भी बाकी न रहेगा।

हर दौर में पैगम्बरों के दीन का मुकाबला सबसे ज्यादा आबाई (पेटुक) दीन से पेश आया है। 'पूर्वज' कौमों की नजर में अकाबिर का दर्जा हासिल कर चुके होते हैं। इसके मुकाबले में वक्त का पैगम्बर उन्हें असागिर (छोटों) में से नजर आता है। इस बिना पर उनके लिए नामुमकिन हो जाता है कि वे बड़ों के दीन को छोड़कर छोटे के दीन को इख़्तियार कर लें। मगर इन्हीं 'छोटों' की तकजीब (अवहेलना, इंकार) पर उन कौमों पर वह अजाब आया जिसके मुतअल्लिक उनका गुमान था कि वह सिर्फ 'बड़ों' की तकजीब पर आ सकता है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبْنَيْهِ وَقَوِيَّةَ إِنِّي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ۖ إِلَّا الذِّنَىٰ فَطَرَنِي ۚ فَآلَهُ سِيْهُدِيْنَ ۖ وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً ۖ فِي عَقِيْبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ بَلْ مَتَّعْتُ هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَاشَىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولُهُ مُبِينٌ ۝ وَلَكُلْجَأَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ۝

और जब इब्राहीम ने अपने बाप से और अपनी कौम से कहा कि मैं उन चीजों से बरी हूँ जिसकी तुम इबादत करते हो। मगर वह जिसने मुझे पैदा किया, पस वेशक वह मेरी रहनुमाई करेगा और इब्राहीम यही कलिमा अपने पीछे अपनी औलाद में छोड़ गया ताकि वे उसकी तरफ रुजूअ करें। बल्कि मैंने उन्हें और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया यहां तक कि उनके पास हक (सत्य) आया और रसूल खोल कर सुना देने वाला।

पारा 25

1300

सूरह-43. अज़-ज़ुब्रुफ

और जब उनके पास हक आ गया उन्होंने कहा कि यह जादू है और हम इसके मुँक़िर हैं। (26-30)

यहां हजरत इब्राहीम अलैहि० के जिस कलिमाएँ तौहीद का जिक्र है वह उनकी दावती जिंदगी के आखिरी दौर में निकला था। यह कलिमा महज चन्द अल्फ़ाज का मजमूआ न था। वह एक अजीम तारीख का खुलासा था। हजरत इब्राहीम जब सिने शुऊर (प्रौढ़ता) को पहुंचे तो उन्हें यह दरयाफ्त हुई कि इंसान का माबूद सिर्फ एक है। उसके सिवा तमाम माबूद बातिल और बेहकीकत हैं। उन्होंने अपनी जिंदगी की तामीर इसी अकीदे पर की। ख़नदान और कौम के अंदर इसी की तबलीग की। वह किसी मस्तेहत का लिहाज किए बग़ैर लम्बी मुद्दत तक इसी पर कायम रहे। यहां तक कि उनका मोहिद (एकेश्वरवादी) होना ही उनकी हैसियत उरफ़ी (पहचान) बन गया। इस तरह की एक लम्बी जिंदगी गुज़ारने के बाद जब वह मचकूरा कलिमा कहकर अपने वतन से ख़ाना हुए तो उनका कलिमा कुदरती तौर पर कलिमाएँ बाकिया (स्थापित कलिमा) बन गया। वह एक ऐसा वाक्या था कि हजरत इब्राहीम का जिक्र आते ही वह लोगों को याद आ जाता था।

हजरत इब्राहीम की इस ताकतवर रिवायत को उनकी बाद की नस्ल में निशानेराह का काम देना चाहिए था। मगर दुनिया की दिलचस्पियों ने बाद के लोगों को इससे गाफिल कर दिया। यहां तक कि वे इस मामले में इतने बेशुऊर हो गए कि बाद के जमाने में जब खुदा का एक बंदा उन्हें उनका माजी (अतीत) का सबक याद दिलाने के लिए उठा तो उन्होंने उसका इंकार कर दिया।

وَقَالُوا لَا تَنْزِلْ هَٰذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْقُرَيْتَيْنِ عَظِيمٍ ۝ أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۖ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ ۖ لِّيُخْذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سَخِرَآءُ ۖ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝ وَلَوْ أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِبُئْسَ مَآزٍ سَفَقًا ۖ مِّنْ فَضَّةٍ وَمَعَارِجٍ عَلَيْهِ يَظْهَرُونَ ۖ وَلِيُبَيِّنَ لَهُمُ الْآيَاتِ وَاسْرَآءُ عَلَيْهَا يَنكَرُونَ ۖ وَخُفِّرُوا وَلَٰنْ كُلُّ ذٰلِكَ لِنَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ۝

عَلَيْهَا

और उन्होंने कहा कि यह कुरआन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया। क्या ये लोग तेरे ख की रहमत को तक्सीम करते हैं। दुनिया की जिंदगी में उनकी रोज़ी को तो हमने तक्सीम किया है और हमने एक को दूसरे पर फ़ैवज़ियत

(उच्चता) दी है ताकि वे एक दूसरे से काम लें। और तेरे रब की रहमत इससे बेहतर है जो ये जमा कर रहे हैं। और अगर यह बात न होती कि सब लोग एक ही तरीके के हो जाएंगे तो जो लोग रहमान का इंकार करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चांदी की बना देते और जीने भी जिन पर वे चढ़ते हैं। और उनके घरों के किवाड़ भी और तख्त भी जिन पर वे तकिया लगाकर बैठते हैं। और सोने के भी, और ये चीजें तो सिर्फ दुनिया की जिंदगी का सामान हैं और आखिरत तेरे रब के पास मुक्तियों (ईश-परायण लोगों) के लिए है। (31-35)

पैगम्बर इस्लाम जब मक्का में जाहिर हुए तो उस वक्त वे लोगों को एक मामूली इंसान नजर आते थे। लोगों ने कहा कि खुदा को अगर अपना कोई नुमाइंदा हमारी हिदायत के लिए भेजना था तो उसने अरब की मर्कजी बस्तियों (मक्का और तायफ) की किसी अजीम शख्सियत को इसके लिए क्यों नहीं चुना। मगर यह उनकी नजर की कोताही थी। इंसान सिर्फ हाल (वर्तमान) को देख पाता है जबकि पैगम्बर इस्लाम की अजमत को समझने के लिए मुस्तकबिल (भविष्य) को देखने वाली नजर दरकार थी। चूँकि लोगों को इस किस्म की दूरबी नजर हासिल न थी, वे पैगम्बर इस्लाम की अजमत को समझने में नाकाम रहे।

पैगम्बर इस्लाम को कम समझने की वजह यह थी कि आपकी जिंदगी में मादूदी चीजों की रैनक लोगों को दिखाई न देती थी मगर इन मादूदी चीजों की खुदा की नजर में कोई अहमियत नहीं। हकीकत यह है कि ये चीजें खुदा की नजर में इतनी ग़ैर अहम हैं कि वह चाहे तो लोगों को सोने चांदी का ढेर दे दे। मगर खुदा ने ऐसा इसलिए नहीं किया कि लोग इन्हीं चीजों में अटक कर रह जाएँ। वे इससे आगे बढ़कर हकीकत को न पा सकेंगे।

وَمَنْ يَعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ قَرِينٌ ۖ وَإِلَهُمَّ
لِيَصُدُّوهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ۖ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُنَّ قَالَ
يَلَيْتُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ بُعْدُ الْمَغْرِقِينَ فِئْسَ الْقَرِينُ ۖ وَلَنْ يَنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ
إِذْ ظَلَمْتُمْ أَتُكْمَرُونَ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۖ

और जो शख्स रहमान की नसीहत से एराज (उपेक्षा) करता है तो हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, पस वह उसका साथी बन जाता है और वे उन्हें राहे हक (सन्मार्ग) से रोकते रहते हैं। और ये लोग समझते हैं कि वे हिदायत पर हैं। यहां तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो वह कहेगा कि काश मेरे और तेरे दर्मियान मशिक और मरिब की दूरी होती। पस क्या ही बुरा साथी था। और जबकि तुम जुल्म कर चुके तो आज यह बात तुम्हें कुछ भी फायदा नहीं देगी कि तुम अजाब में एक दूसरे के शरीक हो। (36-39)

नसीहत से एराज करना यह है कि आदमी हकीकत का एतराफ न करे। खुदाई हकीकत उसके सामने ऐसे दलाइल के साथ आए जिसका वह इंकार न कर सकता हो मगर वह अपनी मस्केहतों (स्वायों) के तहफुज की ख़तिर उसे नज़्अंदाज कर दे।

ऐसा शख्स अपने मौक़िफ को दुरुस्त साबित करने के लिए उसके खिलाफ झूठी बातें करता है। यही वह वक्त है जबकि शैतान को यह मौका मिल जाता है कि वह उसके ऊपर मुसल्लत हो जाए, वह उसकी अकल को ग़लत रूख़ पर दौड़ाने लगे। फर्जी तौजीहात में मशगूल करके शैतान उसे यकीन दिलाता रहता है कि तुम हक पर हो। यह फ़रेब सिर्फ उस वक्त टूटता है जबकि आदमी की मौत आती है और वह खुदा के सामने आखिरी हिसाब के लिए खड़ा कर दिया जाता है।

दुनिया में आदमी का हाल यह है कि वह उसे अपना दोस्त और साथी बना लेता है जो उसके झूठ की ताईद करे। मगर आखिरत में वह ऐसे साथियों पर लानत करेगा। वह चाहेगा कि वे उससे इतना दूर हो जाएं कि वह न उनकी शकल देखे और न उनकी आवाज सुने।

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْى وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ ۝ وَإِنَّمَا
نَذْهَبُ بِكَ وَإِنَّمَا هُمْ مُنْتَقِبُونَ ۖ ۝ أَوْ تُرِيكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِمُ
مُقْتَدِرُونَ ۖ ۝ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ وَإِنَّ
لَكَ لَكُرْكَ وَلَقَوْمَكَ وَسَوْفَ تُنْكَلُونَ ۖ ۝ وَسَأَلُ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ
رُسُلِنَا أَجْعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِلَهًا يُعْبَدُونَ ۖ

पस क्या तुम बहरों को सुनाओगे या तुम अंधों को राह दिखाओगे और उन्हें जो खुली हुई गुमराही में हैं। पस अगर हम तुम्हें उठा लें तो हम उनसे बदला लेने वाले हैं। या तुम्हें दिखा देंगे वह चीज जिसका हमने उनसे वादा किया है। पस हम उन पर पूरी तरह कादिर हैं। पस तुम उसे मजबूती से थामे रहो जो तुम्हारे ऊपर 'वही' (प्रकाशना) की गई है। बेशक तुम एक सीधे रास्ते पर हो। और यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी कौम के लिए नसीहत है। और अनकरीब तुमसे पूछ होगी। और जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा है उनसे पूछ लो कि क्या हमने रहमान से सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) ठहराए थे कि उनकी इबादत की जाए। (40-45)

आंख वाला अपनी आंख को बंद कर ले तो उसे कुछ दिखाई नहीं देगा। कान वाला अपने कान को बंद कर ले तो उसे कुछ सुनाई नहीं देगा। इसी तरह जो शख्स अपनी अकल को इस्तेमाल न करे, वह अकल को मुअत्तल करके अपनी ख़्वाहिश के रूख़ पर चलने लगे तो ऐसे शख्स को समझाना बुझाना बिल्कुल बेकार होता है। समझने का काम अकल के जरिए

सूरह-43. अज़-ज़ुखरुफ

1303

पारा 25

होता है और अपनी अक्ल के ऊपर उसने अपनी ख्वाहिश का पर्दा डाल रखा है। ताहम मदक (संबोधित पक्ष) का रवैया चाहे कुछ भी हो, दाओ (आह्वानकर्ता) को अपना दावती काम हर हाल में जारी रखना है, यहां तक कि वह इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के मरहले तक पहुंच जाए।

हक का दाओ अगरचे एक इंसान होता है मगर हक का मामला खुदा का मामला है। आदमी हक के दाओ का इंकार करके समझता है कि वह हक की जद से बच गया। हालांकि ऐन उसी वक्त वह खुदा की जद में आ जाता है। आदमी अगर इस राज को जाने तो वह हक के दाओ को नजरअंदाज करते हुए कांप उठेगा। क्योंकि वह जानेगा कि हक के दाओ को नजरअंदाज करना खुद हक को नजरअंदाज करना है। और हक को नजरअंदाज करना खुदा को नजरअंदाज करना।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٠﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٥١﴾ وَمَا نُرِيهِمْ مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٢﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهَا السَّحَرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَمِدْتَ إِنَّكَ لَمُهْتَدُونَ ﴿٥٣﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَبْكُثُونَ ﴿٥٤﴾

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा तो उसने कहा कि मैं खुदावंद आलम का रसूल हूं। पस जब वह उनके पास हमारी निशानियों के साथ आया तो वे उस पर हंसने लगे। और हम उन्हें जो निशानियां दिखाते थे वह पहली से बढ़कर होती थीं। और हमने उन्हें अजाब में पकड़ा ताकि वे रुजूअ करें। और उन्होंने कहा कि ऐ जादूगर, हमारे लिए अपने ख से दुआ करो, उस अहद (वचन) की बिना पर जो उसने तुमसे किया है, हम जरूर राह पर आ जाएंगे। फिर जब हमने वह अजाब उनसे हटा दिया तो उन्होंने अपना अहद तोड़ दिया। (46-50)

हजरत मूसा ने फिरऔन के सामने तौहीद की दावत पेश की और असा और यदेबेजा (हाथ का चमकना) का मोजिजा दिखाया। उसे देखकर फिरऔन और उसके दरबारी हंसने लगे। इसकी वजह यह थी कि उन्होंने हजरत मूसा को उनकी दावत में नहीं देखा बल्कि उनकी शख्सियत में देखा। उन्हें नजर आया कि मूसा की शख्सियत बजाहिर उनकी अपनी शख्सियत से कम है। इसी तरह मोजिजे के मुतअल्लिक उन्होंने ख्याल किया कि यह महज जादू है, और ऐसा जादू मुल्क के दूसरे जादूगर भी दिखा सकते हैं।

हक की दावत के सिलसिले में हमेशा यही होता है। लोग दाओ की शख्सियत को देखकर दावत को रद्द कर देते हैं। वे निशानियों को आम वाक्यात पर कयास करके उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

पारा 25

1304

सूरह-43. अज़-ज़ुखरुफ

फिरऔन और उसके साथियों ने जब हजरत मूसा का इंकार किया तो अल्लाह तआला ने उन पर बहुत से तंबीही अजाब भेजे ताकि वे दुबारा रुजूअ करें। इन तंबीही अजाबों का जिक्र सूरह आराफ (133-135) में मौजूद है। ये तमाम अजाब हजरत मूसा की दुआ पर आए और हजरत मूसा की दुआ पर खत्म हुए। यह एक मजीद सबब था कि उनके अंदर रुजूअ की कैफियत पैदा हो। मगर वे रुजूअ न हुए। हकीकत यह है कि जो लोग दलील से न मानें वे तंबीह से भी नहीं मानते, इल्ला यह कि आखिरत का न लौटने वाला अजाब उन्हें आखिरी तौर पर अपने घेरे में ले ले।

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يُقَوْمُ الْيَسْرِ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَخْطَرُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥٥﴾ أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَوْحِيٓنٌ ۖ وَهُوَ لَا يَكَادُيبُنِي ۖ فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيَّ سُورَةُ ۖ مِنْ ذَهَبٍ ۖ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ۖ فَاسْتَحَفَّ قَوْمَهُ ۖ فَطَاعُوهُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَٰسِقِينَ ۖ فَلَمَّا أَسْفَوْا نَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ فَجَعَلْنَاهُمْ سُلَٰفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ۖ ﴿٥٦﴾

और फिरऔन ने अपनी कैम के दर्मियान पुकार कर कहा कि ऐ मेरी कैम क्या मिस्र की बादशाही मेरी नहीं है, और ये नहरें जो मेरे नीचे बह रही हैं। क्या तुम लोग देखते नहीं। बल्कि मैं बेहतर हूं उस शख्स से जो कि हकीर (तुच्छ) है। और साफ बोल नहीं सकता। फिर क्यों न उस पर सोने के कंगन आ पड़े या फरिश्ते उसके साथ परा बांध कर (पार्श्ववर्ती होकर) आते। पस उसने अपनी कैम को बेअक्ल कर दिया। फिर उन्होंने उसकी बात मान ली। ये नाफरमान किस्म के लोग थे। फिर जब उन्होंने हमें गुस्सा दिलाया तो हमने उनसे बदला लिया। और हमने उन सबको ग़र्क कर दिया। फिर हमने उन्हें माजी की दास्तान बना दिया और दूसरों के लिए एक नमूनए इबस्त (सीख)। (51-56)

हक का इंकार करने वालों ने हमेशा हक के दाओ की मामूली हैसियत को देखकर हक का इंकार किया है। मिस्र में फिरऔन की हैसियत यह थी कि वह मुल्क का हुक्मरां था। दरियाए नील से निकली हुई नहरें उसके हुक्म से जारी थीं। इज्जत के तमाम सरोसामान उसके गिर्द जमा थे। इसके मुकाबले में हजरत मूसा बजाहिर एक मामूली इंसान दिखाई देते थे। इसी फर्क को पेश करके फिरऔन ने अपनी कैम को बहकाया। हजरत मूसा का इंकार करने में कैम उसके साथ हो गई।

बजाहिर इसी किस्म के दलाइल की बुनियाद पर फिरऔन की कैम ने फिरऔन का साथ दिया। मगर हकीकत यह है कि इसकी वजह कैम की अपनी कमजोरी थी न कि फिरऔन के दलाइल की मजबूती। उस वक्त हजरत मूसा का साथ देना अपनी जिगी के बने बनाए

नक़्शे को तोड़ना था। और बहुत कम आदमी ऐसे होते हैं जो अपने बने हुए नक़्शे को तोड़कर हक़ का साथ देने की ज़ुरअत करें। चुनांचे फिरऔन पर जब इंकारे हक़ के नतीजे में खुदा का अज़ब आया तो उसकी कौम भी उसके साथ अज़बे इलाही की ज़द में आ गई।

وَلَمَّا حُزِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذْ أَقَامُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ۝ وَ قَالُوا إِلَهَتُنَا
خَيْرٌ أَمْ هُوَ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدًّا ۖ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ۝ إِنَّ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ
أَنعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّلْبَنَى ۖ إِسْرَءِيلَ ۖ وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ فِرْعَوْنَ
الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ۝ وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ ۖ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُون ۚ هَٰذَا
صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ وَلَا يَصُدُّكُمْ الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

और जब इब्ने मरयम की मिसाल दी गई तो तुम्हारी कौम के लोग उस पर चिल्ला उठे। और उन्होंने कहा कि हमारे माबूद (पूज्य) अच्छे हैं या वह। यह मिसाल वे तुमसे सिर्फ झगड़ने के लिए बयान करते हैं। बल्कि ये लोग झगड़ा लू हैं। ईसा तो बस हमारा एक बंदा था जिस पर हमने फल फरमाया और उसे बनी इज़्राईल के लिए एक मिसाल बना दिया। और अगर हम चाहें तो तुम्हारे अंदर से फरिश्ते बना दें जो जमीन में तुम्हारे जानशीन (उत्तराधिकारी) हों। और बेशक ईसा कियामत का एक निशान हैं, तो तुम इसमें शक न करो और मेरी पैरवी करो। यही सीधा रास्ता है। और शैतान तुम्हें इससे रोकने न पाए। बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (57-62)

मौजूदा दुनिया में यह मुमकिन है कि आदमी हर बात का उल्टा मफहूम (भावार्थ) निकाल सके। मसलन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार फरमाया : 'अल्लाह के सिवा जिसकी परस्तिश की जाए उसमें कोई खैर नहीं' इसे सुनकर मुखालिफीन ने कहा कि ईसाई लोग मसीह को पूजते हैं फिर क्या मसीह में भी कोई खैर नहीं। जाहिर है कि यह महज एक शोशा था। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो बात फरमाई थी वह आबिद (पूजक) की निस्वत से थी न कि माबूद (पूज्य) की निस्वत से। और अगर उसे माबूद की निस्वत से माना जाए तब भी वाजेह तौर पर इससे मुराद वे ग़ैर माबूद थे जो अपने माबूद बनाए जाने पर राजी हों। आदमी अगर बात को उसके सही रूख़ से न ले तो हर बात को वह उल्टे मअना पहना सकता है, चाहे वह कितनी ही दुरुस्त बात क्यों न हो।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शख़्सियत एक एतबार से फरिश्तों की मुशाबह थी। इस पर आंजनाब को बहुत से लोगों ने माबूद बना लिया। मगर हज़रत मसीह की मलकूती तख़्बीक (फरिश्तों जैसी उत्पत्ति) खुदा की कुदरत की मिसाल थी न कि खुद हज़रत मसीह की जती कुदरत की मिसाल। हकीकत यह है कि अल्लाह के लिए इस किस्म की तख़्बीक कुछ

भी मुश्किल नहीं। वह चाहे तो जमीन की तमाम आबादी को फरिश्तों की आबादी बना दे। फिर भी ये फरिश्ते, फरिश्ते ही रहेंगे, वे माबूद नहीं हो जाएंगे।

हज़रत मसीह को यह मोजिजा दिया गया कि वह मुर्दों को जिंदा कर देते थे। मिट्टी के पुतले में फूंक मार कर उसे जानदार बना देते थे। यह दरअस्त एक खुदाई निशानी थी जो जिंदगी बाद मौत के इम्कान को बताने के लिए जाहिर की गई थी। मगर लोगों ने इससे अस्त सबक तो नहीं लिया। अलबत्ता हज़रत मसीह को फौकुल बशर (अलौकिक व्यक्ति) समझ कर उन्हें पूजने लगे। इसी तरह खुदाई निशानियां हमेशा मुख़लिफ़ शक्तों में जाहिर होती हैं। उन्हें अगर निशानी समझा जाए तो उनसे जबरदस्त नसीहत मिलती है। और अगर उन्हें निशानी के बजाए कुछ और समझ लिया जाए तो वह आदमी को सिर्फ गुमराही में डालने का सबब बन जाएंगी।

शैतान की हमेशा यह कोशिश रहती है कि वह खुदाई निशानियों से आदमी को सबक न लेने दे। यही वह मक़ाम है जहां यह फैसला होने वाला है कि शैतान को आदमी के ऊपर कामयाबी हासिल हुई या आदमी को शैतान के ऊपर।

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ
الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ
هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ
ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْيَوْمِ ۝

और जब ईसा खुली निशानियों के साथ आया, उसने कहा कि मैं तुम्हारे पास हिक्मत (तत्वदर्शिता) लेकर आया हूं और ताकि मैं तुम पर वाजेह कर दूं कुछ बातें जिनमें तुम इख़्तेलाफ़ (मतभेद) कर रहे हो। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो। बेशक अल्लाह ही मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। तो तुम उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। फिर गिरोहों ने आपस में इख़्तेलाफ़ किया। पस तवाही है उन लोगों के लिए जिन्होंने जुल्म किया, एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से। (63-65)

यहां हिक्मत से मुराद दीन की रूह (मूल भावना) है और सिराते मुस्तकीम से मुराद वही चीज है जिसे आयत में खुदा का ख़ौफ़, उसकी इबादत और रसूल की इताअत कहा गया है। यही अस्त दीन है। यहूद ने बाद को यह किया कि उन्होंने रूहे दीन खो दी और दीन के बुनियादी अहक़ाम में मूशिगाफियों (कुतर्कों) के जरिए बेशुमार नए-नए मसाइल पैदा किए। ये मसाइल आज भी यहूद की किताबों में मौजूद हैं।

इन्हीं ख़ुदसाइज़ा इजफ़ों की वजह से उनके अंदर इख़्तेलाफी फिस्के बने। किसी ने एक इख़्तेलाफी मसले पर जोर दिया, किसी ने दूसरे इख़्तेलाफी मसले पर। इस तरह उनके यहां

एक दिन कई दिन बन गया। हजरत मसीह इसलिए आए कि वे यहूद को बताएं कि दिन में अस्ल अहमियत रूह (मूल भावना) की है न कि जवाहिर (जाहिर चीजों) की। और यह कि आदमी को नजात जिस चीज पर मिलेगी वह उस दिन की पैरवी पर मिलेगी जो खुदा ने भेजा है न कि उस दिन पर जो तुम लोगों ने बतौर खुद वजअ कर रखा है।

हजरत मसीह ने बताया कि अस्ल दिन यह है कि तुम अल्लाह से डरो। सिर्फ एक अल्लाह के इबादतगुजार बनो। जिंदगी के मामलात में रसूल के नमूने की पैरवी करो। उसके सिवा तुमने अपनी बहसों और मूशिगाफियों से जो बेशुमार मसाइल बना रखे हैं वे तुम्हारे अपने इजफे हैं। इन इजफों को छोड़कर अस्ल दिन पर कायम हो जाओ। हजरत मसीह की ये बातें आज भी इंजीलों में मौजूद हैं।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝۱۰۱
يَوْمَ يَمْيزُ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوًّا ۖ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ۝۱۰۲ يَعْبَادُوا خَوْفًا عَلَيْكُمْ الْيَوْمَ ۖ
وَلَأَنْتُمْ تَخْزَوْنَ ۝۱۰۳ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ۝۱۰۴ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَ
أَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ۝۱۰۵ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصَفَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَكَوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا
تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَكُنُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝۱۰۶ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي
أُورِثْتُمْوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝۱۰۷ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهٌ كَثِيرٌ ۖ وَفِيهَا أَنْهَارٌ ۖ

ये लोग बस कियामत का इतिज्जर कर रहे हैं कि वह उन पर अचानक आ पड़े और उन्हें ख़बर भी न हो। तमाम दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाए डरने वालों के। ऐ मेरे बंदे आज तुम पर न कोई ख़ोफ है और न तुम ग़मगीन होगे। जो लोग ईमान लाए और फरमांबरदार रहे। जन्नत में दाखिल हो जाओ तुम और तुम्हारी बीवियां, तुम शाद (हर्षित) किए जाओगे। उनके सामने सोने की रिकाबियां और प्याले पेश किए जाएंगे। और वहां वे चीज़ें होंगी जिन्हें जी चाहेंगी और जिनसे आंखों को लज्जत होगी। और तुम यहां हमेशा रहोगे। और यह वह जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिए गए उसकी वजह से जो तुम करते थे। तुम्हारे लिए इसमें बहुत से भेवे हैं जिनमें से तुम खाओगे। (66-73)

इंसान आजाद नहीं है। उसे बहरहाल हकीकत के आगे झुकना है। अगर वह दाओ की दलील के आगे नहीं झुकता तो उसे खुदाई ताकत के आगे झुकना पड़ेगा। मगर खुदाई ताकत पैसले के लिए जाहिर होती है। इसलिए उस वक्त का झुकना किसी के कुछ काम आने वाला नहीं।

दुनिया में आदमी जब हक के खिलाफ रवैया इख्तियार करता है तो उसे बहुत से दोस्त मिल जाते हैं जो उसका साथ देते हैं। आदमी इन दोस्तों के बल पर ढीठ बनता चला जाता है। मगर ये सारे दोस्त कियामत में उसका साथ छोड़ देंगे। कियामत में सिर्फ वह दोस्ती बाकी रहेगी जो अल्लाह के ख़ौफ की बुनियाद पर कायम हुई हो।

दुनिया में हकपरस्ती की जिंदगी ख़तरात में घिरी हुई होती है। मगर आखिरत में उसका बदला इस शानदार सूरत में मिलेगा कि आदमी वहां हर किस्म के अंदेशे और तकलीफ से हमेशा के लिए नजात हासिल कर लेगा। इस खुदाई वादे पर जो लोग यकीन करें वही मौजूदा दुनिया में हक पर कायम रह सकेंगे। खुदा आखिरत में उन्हें वह सब कुछ मजिद इजफे के साथ दे देगा जो उन्होंने दुनिया में खुदा की खातिर खोया था।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ مُتَسَاوِينَ ۖ أَلَيْسَتْ لَهُمْ عَذَابٌ مُتَسَاوِينَ ۖ
وَمَا ظَنَنْتُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ۝۱۰۸ وَكَادُوا يَكِيدُوكَ لِتُفْضَ عَلَيْكَ رَأْبُكَ ۖ
قَالَ إِنَّكُمْ مَّا تَبْشُرُونَ ۝۱۰۹ لَقَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنْ أَكْثَرُكُمْ لِحَقِّ كُرْهُوْنَ ۝۱۱۰
أَمْ أَمْرُكُمْ أَمْ فَإِنِّي أَنْتَبِهُوْنَ ۝۱۱۱ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۖ بَلَىٰ
وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ۝۱۱۲

बेशक मुजरिम लोग हमेशा दोख के अजाब में रहेंगे। वह उनसे हल्का न किया जाएगा और वे उसमें मायूस पड़े रहेंगे। और हमने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद ही जालिम थे। और वे पुकारेंगे कि ऐ मालिक, तुम्हारा रब हमारा खात्मा ही कर दे। फरिश्ता कहेगा तुम्हें इसी तरह पड़े रहना है। हम तुम्हारे पास हक (सत्य) लेकर आए मगर तुम में से अक्सर हक से बेजार रहे। क्या उन्होंने कोई बात ठहरा ली है तो हम भी एक बात ठहरा लेंगे। क्या उनका गुमान है कि हम उनके राजों को और उनके मशिवरों को नहीं सुन रहे हैं। हां, और हमारे भेजे हुए उनके पास लिखते रहते हैं। (74-80)

उम्मीद हमेशा तकलीफ के एहसास को कम कर देती है। आदमी किसी तकलीफ में मुत्तिला हो और इसी के साथ उसे यह उम्मीद हो कि यह तकलीफ एक रोज ख़त्म हो जाएगी तो आदमी के अंदर उसे सहने की ताकत पैदा हो जाती है। मगर जहन्नम की तकलीफ वह तकलीफ है जिससे निकलने की कोई उम्मीद इंसान के लिए न होगी। जहन्नम में फरिश्तों को मदद के लिए पुकारना जहन्नम वालों की बेबसी का बेताबाना इज्हार होगा। वर्ना पुकारने वाला खुद जानता होगा कि खुदा का फैसला आखिरी तौर पर हो चुका है। अब वह किसी तरह टलने वाला नहीं।

जहन्नम में किसी का दाखिल होना सरासर अपनी कोताही का नतीजा होगा। इंसान को अल्लाह तआला ने आला दर्जे की समझ दी। उसके सामने हक की राहें खोलीं। मगर इंसान ने जानते बूझते हक को नजरअंदाज किया। उसकी सरकशी यहां तक पहुंची कि वह हक के दाजी को मिटाने और बर्बाद करने के दरपे हो गया। ऐसी हालत में उसका अंजाम इसके सिवा और क्या हो सकता था कि उसे दाइमी तौर पर अजाब में डाल दिया जाए।

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ ۖ فَأَنَا الْوَلِيُّ الْعِيدِينَ ۝ سُبْحَنَ رَبِّ السَّمُوتِ
وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ فَذَرَهُمْ مَخُوضًا وَيَلْعَبُوا حَتَّى يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝

कहो कि अगर रहमान के कोई औलाद हो तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करने वाला हूं। आसमानों और जमीन का खुदावंद, अर्श का मालिक। वह उन बातों से पाक है जिसे लोग बयान करते हैं। पस उन्हें छोड़ दो कि वे बहस करें और खेलें यहां तक कि वे उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। (81-83)

‘अगर खुदा के औलाद हो तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करूँ’ यह जुमला बताता है कि पैगम्बर जिस अक्रीदे का एलान कर रहा है वह उसी को ऐन हकीकत समझता है। वह कौमी तकलीद और गिरेही तअस्सुब की जमीन पर नहीं खड़ा हुआ है बल्कि दलील की जवान पर खड़ा हुआ है। वह इस अक्रीदे का दाजी इसलिए है कि तमाम हक़इक इसकी सदाकत (सच्चाई) की ताईद करते हैं। इससे अंदाजा होता है कि दाजी का मामला शुऊरे हकीकत का मामला होता है न कि कौमी तकलीद (अनुसरण) का मामला।

खुदा का तख्तीकी कारखाना जो जमीन व आसमान की सूरत में फैला हुआ है वह बताता है कि उसका खुदा सिर्फ एक खुदा है। कायनात अपने वसीअ (विस्तृत) निजाम के साथ इससे इंकार करती है कि उसका खुदा एक से ज्यादा हो सकता है।

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهُ وَفِي الْأَرْضِ إِلَهُ ۖ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝ وَتَبَرُّكَ
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَالَّذِي
تُرْجَعُونَ ۝

और वही है जो आसमान में खुदावंद है और वही जमीन में खुदावंद है और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला, इल्म वाला है। और बड़ी बाबरकत है वह जात जिसकी बादशाही आसमानों और जमीन में है और जो कुछ उनके दर्मियान है। और उसी के पास कियामत की खबर है। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (84-85)

जमीन व आसमान निहायत हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ मुसलसल अमल कर रहे हैं। उनके अंदर कामिल तौर पर वाहिद (एकीय) हिक्मत और वाहिद इल्म पाया जाता है। यह इस बात का सुबूत है कि यहां एक ही खुदा है जो जमीन व आसमान दोनों का निजाम तंहा चला रहा है।

कायनात बयकवक्त खुदा की बेपनाह कुदरत का भी तआरुफ कराती है और इसी के साथ खुदा की बेपनाह रहमत का भी। इसका तकाजा है कि आदमी सबसे ज्यादा खुदा से डरे, वह सबसे ज्यादा उसी से उम्मीद रखे। जो लोग दुनिया में इस शुऊर और इस किरदार का सुबूत दें वही वे लोग हैं कि जब वे खुदा के यहां पहुंचेंगे तो खुदा उन्हें अपनी बेपायां रहमतों से नवाजा।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝ وَقِيلَ لَهُ يَرْبِّ
إِنَّ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يَتَذَكَّرُونَ ۝ فَأَصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلِّمْ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे सिफारिश का इस्तियार नहीं रखते, मगर वे जो हक की गवाही देंगे और वे जानते होंगे। और अगर तुम उनसे पूछो कि उन्हें किसने पैदा किया है तो वे यही कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वे कहां भटक जाते हैं। और उसे रसूल के इस कहने की खबर है कि ऐ मेरे रब, ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते। पस उनसे दसगुजर करो (रुख फेर लो) और कहो कि सलाम है तुम्हें, अनकरीब उन्हें मालूम हो जाएगा। (86-89)

कियामत में पैगम्बर और दाजियाने हक जो शफअत करें वह हकीकतन शफअत नहीं है बल्कि शहादत है। यानी ऐसी बात की गवाही देना जिसे आदमी जाती तौर पर जानता हो। आखिरत में जब लोगों का मुकदमा पेश होगा तो सारे इल्म के बावजूद अल्लाह मजीद ताईद के तौर पर उन लोगों को खड़ा करेगा जो कौमों के हमअस (समकालीन) थे। उन्होंने उनके सामने हक का पैगाम पेश किया। फिर किसी ने माना और किसी ने नहीं माना। किसी ने हक का साथ दिया और कोई हक का मुखालिफ बनकर खड़ा हो गया। यही तजर्बा जो इन सालिहीन (नेक लोगों) पर बराहेरास्त गुजरा उसे वे खुदा के सामने पेश करेंगे। यह ऐसा ही होगा जैसे कि कोई गवाह अदालत में अपने मुशाहिदे की बुनियाद पर एक सच्चा बयान दे। उसके सिवा किसी को कियामत में यह इस्तियार हासिल न होगा कि वह किसी मुजरिम का शफअ (सिफारिश) बनकर खड़ा हो और उसके बारे में उस खुदाई फैसले को बदल दे जो अजरुए वाकया उसके बारे में होने वाला था। खुदा इससे बहुत बुलन्द है कि उसके हुजूर कोई शख्स ऐसा करने की कोशिश करे।

हक की दावत का काम सरासर नसीहत का काम है। आखिरी मरहले में जबकि दाजी

सूरह-44. अद-दुखान

1311

पारा 25

पर यह वाजेह हो जाए कि लोग किसी तरह मानने वाले नहीं हैं उस वक्त भी दाअी लोगों के लिए खुदा से दुआ करता है। लोगों की ईजारसानी (उत्पीड़न) पर सब्र करते हुए वह लोगों का खैरख्वाह बना रहता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَنَحْنُ إِلَهُ الْغَنِيُّ
حَمْدُ الْكَتَبِ الْمُبِينِ إِنْ أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَرَّكََةٍ إِنْ أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَرَّكََةٍ إِنْ أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَرَّكََةٍ إِنْ أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَرَّكََةٍ
يُفَرِّقُ كُلَّ أَمْرٍ حَكِيمٍ أَمْرًا مِنْ عِنْدِنَا إِنْ أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَرَّكََةٍ إِنْ أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَرَّكََةٍ إِنْ أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَرَّكََةٍ
هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ

आयतें-59

सूरह-44. अद-दुखान

रुकूअ-3

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। हा० मीम०। कसम है इस वाजेह (सुस्पष्ट) किताब की। हमने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा है, बेशक हम आगाह करने वाले थे। इस रात में हर हिक्मत (दत्वदर्शिता) वाला मामला तै किया जाता है, हमारे हुक्म से। बेशक हम थे भेजने वाले। तेरे खब की रहमत से, वही सुनने वाला है, जानने वाला है। आसमानों और जमीन का खब और जो कुछ उनके दर्मियान है, अगर तुम यकीन करने वाले हो। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वही जिंदा करता है और मारता है, तुम्हारा भी खब और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी खब। (1-8)

कुरआन का किताबे मुबीन (सुस्पष्ट ग्रंथ) होना खुद इस बात की दलील है कि वह खुदा की किताब है। और जब वह खुदा की किताब है तो उसकी खबरें और पेशीनगोइयां भी कतई हैं, उनके बारे में शक की कोई गुंजाइश नहीं।

कुरआन के नुज़ूल का आगाज एक खस रात को हुआ। यह रात अहम खुदाई फैसलों के लिए मुर्कर है। कुरआन का नुज़ूल कोई सादा वाक्या न था। यह एक नई तरीख (इतिहास) के जुहू का फैसला था। यही वजह है कि इसे फैसले की रात में नाजिल किया गया। कुरआन अब्बलन हक का एलान था। वह शिर्क को बातिल और तौहीद को बरहक बताने के लिए आया। फिर वह इसी बुनियाद पर कैमों के दर्मियान फर्क करने वाला था। चुनांचे यह फर्क अमलन किया गया। यहां तक कि तारीख (इतिहास) में पहली बार शिर्क का दौर खत्म होकर तौहीद का दौर शुरू हो गया।

पारा 25

1312

सूरह-44. अद-दुखान

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ۚ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُحَانٍ مُبِينٍ ۚ يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ۚ أَتَى لَهُمُ الدِّكْرَى ۖ وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُبِينٌ ۚ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَجْنُونٌ ۚ إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا ۖ إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ۚ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى ۚ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ۚ

बल्कि वे शक में पड़े हुए खेल रहे हैं। पस इतिजार करो उस दिन का जब आसमान एक खुले हुए धुवें के साथ जाहिर होगा। वह लोगों को घेर लेगा। यह एक दर्दनाक अजाब है। ऐ हमारे खब, हम पर से अजाब टाल दे, हम ईमान लाते हैं। उनके लिए नसीहत कहां, और उनके पास रसूल आ चुका था खोल कर सुनाने वाला। फिर उन्होंने उससे पीठ फेरी और कहा कि यह तो एक सिखाया हुआ दीवाना है। हम कुछ वक्त के लिए अजाब को हटा दें, तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे। जिस दिन हम पकड़ेंगे बड़ी पकड़ उस दिन हम पूरा बदला लेंगे। (9-16)

कुरआन के ये मुखातबीन जिस मामले में शक में पड़े हुए थे वह खुदा के वुजूद का मामला न था। बल्कि खुदा की तौहीद का मामला था। वह रिवायती तौर पर खुदा को मानते हुए अमलन अपने अकाबिर (महापुरुषों) के दिन पर कायम थे।

कुरआन ने इन अकाबिर को बेबुनियाद साबित किया। मगर वे उसे मानने के लिए तैयार न हुए। एक तरफ वे अपने आपको बेदलील पा रहे थे। दूसरी तरफ अपने अकाबिर की अजमत को अपने जेहन से निकालना भी उन्हें नामुमकिन नजर आता था। इस देतरफ तकजों ने उन्हें शक में मुक्किला कर दिया। खुदा का दाअी उन्हें इससे कम नजर आया कि उसके कहने से वे अपने मफरूजा (मान्य) अकाबिर को छोड़ दें।

जो लोग नसीहत के जरिए हक को न मानें वे अपने आपको इस खतरे में डाल रहे हैं कि उन्हें अजब के जरिए से उसे मानना पड़े। उस वक्त वे एतराफ करेंगे। मगर उस वक्त का एतराफ करना उनके कुछ काम न आएगा।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ۚ أَنْ أَذْأَبُ إِلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ إِلَهِي ۖ لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۚ وَ أَنْ لَا تَعْلَوْا عَلَى اللَّهِ ۖ إِنْ أَرَادْتُمْ يُبْسَلِطِ الْمُبِينِ ۚ وَلَإِنْ عُدْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُبُون ۚ وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا إِلَيَّ فَأَعْتَزَلُون ۚ

और उनसे पहले हमने फिरऔन की कैम को आजमाया। और उनके पास एक मुभन्नज (सम्माननीय) रसूल आया कि अल्लाह के बंदों को मेरे हवाले करो। मैं तुम्हारे लिए एक

मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूँ। और यह कि अल्लाह के मुकाबले मैं सरकशी न करूँ। मैं तुम्हारे सामने एक वाजेह दलील पेश करता हूँ। और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह ले चुका हूँ इस बात से कि तुम मुझे संगसार (पत्थरों से मार डालना) करो। और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो तुम मुझसे अलग रहो। (18-21)

हक की दावत (आह्वान) का उठना गोया खुदा की ताकत का दलील के रूप में जाहिर होना है। इस तरह खुदा ग़ैब (अप्रकट) में रहकर इंसान की सतह पर अपना एलान कराता है। इस बिना पर हक की दावत उसके मुखातबीन के लिए आजमाइश बन जाती है। हकीकत शनास लोग उसे पहचान कर उसके आगे झुक जाते हैं। और जो जाहिरबी हैं वे उसे ग़ैर अहम समझ कर उसे नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

मगर हक की दावत को ठुकराने के बाद आदमी उसके अंजाम से बच नहीं सकता। पैग़म्बर के जमाने में इस बुरे अंजाम का आज़ाज मौजूदा ज़िंदगी ही में हो जाता है, जैसा कि फिरऔन मिस्र का हुआ। और पैग़म्बर के बाद ऐसे लोगों का अंजाम मौत के बाद सामने आएगा। मजीद यह कि पैग़म्बर को खुदा की खुसूसी नुसरत (मदद) हासिल होती है। किसी के लिए मुमकिन नहीं होता कि वह उसे हलाक कर सके।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِ مَثَلُهُمْ خَيْرٌ مِّمَّنْ مُؤْمِنُونَ ۖ فَأَنشَرِ بَعَادِي لِيَكْلَأُنَّكُمْ مُّشْبَعُونَ ۖ
وَأَتْرَكُوا الْبَحْرَ رَهْوًا ۖ إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُونَ ۖ كَمْ تَرَكُوا مِنْ جِثَّتٍ وَغِيٍّ ۖ وَ
زُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۖ وَنِعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ۖ كَذَلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۖ
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ۖ

पस मूसा ने अपने रब को पुकारा कि ये लोग मुजरिम हैं। तो अब तुम मेरे बंदों को रात ही रात में लेकर चले जाओ, तुम्हारा पीछा किया जाएगा। और तुम दरिया को थमा हुआ छोड़ दो, उनका लश्कर डूबने वाला है। उन्होंने कितने ही बाग़ और चशमे (स्रोत) और खेतियां और उम्दा मकानात और आराम के सामान जिनमें वे खुश रहते थे सब छोड़ दिए। इसी तरह हुआ और हमने दूसरी कौम को उनका मालिक बना दिया। पस न उन पर आसमान रोया और न जमीन, और न उन्हें मोहलत दी गई। (22-29)

लम्बी मुद्दत तक हजरत मूसा की तब्दीली कोशिशों के बाद कौमे फिरऔन पर इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) हो गया। अब यह साबित हो गया कि वे मुजरिम हैं। उस वक्त हजरत मूसा को हुक्म हुआ कि वह अपनी कौम (बनी इस्राईल) के साथ मिस्र से निकल कर बाहर चले जाएं। हजरत मूसा रवाना हुए यहां तक वे दरिया के किनारे पहुंच गए। उस वक्त दरिया का पानी हट गया और आपके लिए पार होने का रास्ता निकल आया।

फिरऔन अपने लश्कर के साथ हजरत मूसा और बनी इस्राईल का पीछा करता हुआ आ रहा था। उसने जब दरिया में रास्ता बनते हुए देखा तो उसने समझा कि जिस तरह मूसा पार हो गए हैं वह भी उसी तरह पार हो सकता है। मगर दरिया का रास्ता सादा मअनों में सिर्फ रास्ता न था बल्कि वह खुदा का हुक्म था और खुदा का हुक्म उस वक्त मूसा के लिए नजात का था और फिरऔन के लिए हलाकत का। चुनांचे जब फिरऔन और उसका लश्कर दरिया में दाखिल हुए तो दोनों तरफ का पानी बराबर हो गया। फिरऔन अपने लश्कर के साथ उसमें मर्कबे गया।

दुनिया की नेमतें जिसे मिलती हैं अक्सर वह उन्हें अपनी जाती चीज समझ लेता है हालांकि किसी के लिए भी वे जाती नहीं हैं। खुदा जब चाहे किसी को दे और जब चाहे उससे छीन कर उसे दूसरे के हवाले कर दे।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيهِ إِسْرَآئِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۖ مِنْ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ كَانَ عَلِيًّا
مِّنَ الْمُتَكِبِينَ ۖ وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۖ وَأَنبَأْنَاهُمْ مِّنَ الْآيَاتِ
مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ۖ

और हमने बनी इस्राईल को ज़िल्लत वाले अज़ाब से नजात दी। यानी फिरऔन से, बेशक वह सरकश और हद से निकल जाने वालों में से था। और हमने उन्हें अपने इल्म से दुनिया वालों पर तरजीह (वरीयता) दी। और हमने उन्हें ऐसी निशानियां दीं जिनमें खुला हुआ इनाम था। (30-33)

दुनिया में एक कौम का गिरना और दूसरी कौम का उभरना इतिफाकी तौर पर नहीं होता। और न इसका मतलब यह है कि एक जालिम कौम अपनी जालिमाना कारवाइयों से दूसरी कौम पर ग़ालिब आ गई। यह तमामतर खुदा के फैसले के मुताबिक होता है। यह खुदा है जो अपने फैसले के तहत एक के लिए मग़लूबियत (पराभाव) का और दूसरे के लिए ग़लबे (वर्चस्व) का फैसला करता है। और वह जो कुछ फैसला करता है अपने इल्म की बिना पर करता है न कि अललटप तौर पर।

इन्मे इलाही के मुताबिक फैसला होने का मतलब दूसरे लफ्जों में यह है कि जो कुछ होता है इस्तहकाक (पात्रता) की बुनियाद पर होता है। खुदा अपने कुली इल्म के तहत कौमों को देखता है। फिर वह जिसे बाइस्तहकाक पाता है उसके हक में ग़लबे का फैसला करता है और जिसे बेइस्तहकाक देखता है उसे मग़लूब (परास्त) व मअज़ूल (निलंबित) कर देता है।

अक्वाम (कौमों) की ज़िंदगी में ऐसी निशानियां जाहिर होती हैं जो ये बताती हैं कि उनके साथ जो फैसला हुआ है वह खुदा की तरफ से हुआ है। अगर आदमी की बसीरत (सूझबूझ) ज़िंदा हो तो वह उन निशानियों में उन असबाब की झलक पा लेगा जिसके तहत खुदा ने कौमों के हक में अपना फैसला सादिर फरमाया है।

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۖ إِنَّمَا أَوْفَرْنَا الْوُدَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِينَ ۖ فَأْتُوا
بِآبَائِنَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ
إِنَّهُمْ كَانُوا يُجْرِبُونَ ۖ

ये लोग कहते हैं, बस यही हमारा पहला मरना है और हम फिर उठाए नहीं जाएंगे।
अगर तुम सच्चे हो तो ले आओ हमारे बाप दादा को। क्या ये बेहतर हैं या तुबब अ की
कौम और जो उनसे पहले थे। हमने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक वे नाफरमान थे।
(34-37)

हर दौर में इंसान की गुमराही की जड़ यह रही है कि उसने मौत के बाद ज़िंदगी में अपना
यकीन खो दिया। कुछ लोगों की बेयकनी का इज़हार उनकी ज़बान से भी हो जाता है, और
कुछ लोग ज़बान से नहीं कहते। मगर उनका दिल इस यकीन से खाली होता है कि उन्हें मर
कर दुबारा उठना है और अल्लाह के सामने अपने आमाल का हिसाब देना है।
इस ग़लतफ़हमी का नपिसयाती सबब अक्सर यह होता है कि दुनिया में अपनी मजबूत
हैसियत को देखकर आदमी गुमान कर लेता है कि वह कभी बेहैसियत होने वाला नहीं।
हालांकि पिछली कैमों के वाक्यात इस फ़रेब की तरदीद करने के लिए काफी हैं।
तुबब अकदीम यमन के हुमैर कबीले के बादशाहों का लक़ब था। 115 क़त्ल मसीह ईसा पूर्व
से 300 क़त्ल मसीह तक उन्हें उरूज हासिल रहा। क़दीम अरब में उनकी अज़मत का बड़ा चर्चा
था। क़ुरआन के इत्तिदाई मुख़ातबीन (क़ुरैश) के लिए कौम तुबब अ का उभरना और गिरना एक
मालूम और मशहूर बात थी। यह उनके लिए इस बात का सुबूत था कि इस दुनिया में मुजाजात
(उत्थान-पतन) का क़ानून जारी है। इसी तरह तमाम लोगों के लिए कोई न कोई 'कौम तुबब अ'
है जो अपने अंजाम से उन्हें सबक दे रही है। मगर इंसान हमेशा यह करता है कि इस तरह के
वाक्यात को आदत के मुताबिक़ होने वाला वाक्या समझ लेता है। इसका नतीजा यह होता है
कि वह उनसे वह सबक नहीं ले पाता जो उनके अंदर खुदा ने छुपा रखा था।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعِینَ ۖ مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنْ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْ
مَوْلَىٰ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۖ إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ

और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है खेल के तौर पर
नहीं बनाया। इन्हें हमने हक के साथ बनाया है लेकिन उनके अक्सर लोग नहीं जानते।
बेशक फैसले का दिन उन सबका तैय्युदा वक़्त है। जिस दिन कोई रिश्तेदार किसी

रिश्तेदार के काम नहीं आएगा और न उनकी कुछ हिमायत की जाएगी। हां मगर वह
जिस पर अल्लाह रहम फरमाए। बेशक वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (38-42)

ज़मीन व आसमान के निजाम पर गौर किया जाए तो मालूम होता है कि उसकी तज़्जीब
निहायत बामअना अंदाज में हुई है। पूरी कायनात एक मक्सद के तहत अमल करती है।
अगर ऐसा न हो तो इस दुनिया में इंसान के लिए शानदार तमद्दुन (सभ्यता) की तामीर
नामुमकिन हो जाए।

आखिरत का अक़ीदा इसी कायनाती मअनवियत की तौसीअ (विस्तार) है। जो कायनात
इतने बामअना (सार्थक) अंदाज में बनाई गई हो। नामुमकिन है कि वह सरासर बेमअना
(निरर्थक) तौर पर ख़त्म हो जाए। कायनात की मौजूदा मअनवियत इस बात का करीना है
कि वह एक बामअना और बामक्सद अंजाम पर ख़त्म होने वाली है। आखिरत इसी बामअना
और बामक्सद अंजाम का दूसरा नाम है।

दुनिया का मौजूदा मरहला आजमाइश का मरहला है, इसलिए आज दुनिया की
मअनवियत (सार्थकता) में हर आदमी अपना हिस्सा पा रहा है। मगर जब आखिरत आएगी
तो उस वक़्त दुनिया की मअनवियत में सिर्फ़ उन लोगों को हिस्सा मिलेगा जो खुदा के
नज़ीक फ़िल्क़अ उसके मुत्तकिक़ार पाएं।

إِنَّ شَجَرَتَ الزُّقُومِ ۖ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۖ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۖ كَغَلْيِ
الْحَمِيمِ ۖ خَذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۖ ثُمَّ صَبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ
عَذَابِ الْحَمِيمِ ۖ ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۖ إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۖ

जक्कूम का दरख़्त गुनाहगार का खाना होगा, तेल की तलछट जैसा, वह पेट में
खौलेगा जिस तरह गर्म पानी खौलता है। उसे पकड़ो और उसे घसीटते हुए जहन्नम
के बीच तक ले जाओ। फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अजाब उड़ेल दो।
चख इसे, तू बड़ा मुअज्जज़, मुक़र्रम है। यह वही चीज़ है जिसमें तुम शक करते थे।
(43-50)

यहां और दूसरे मकामात पर जहन्नम की जो तस्वीर क़ुरआन में पेश की गई है वह हर
ज़िंदा शख्स को तड़पा देने के लिए काफी है। जो शख्स भी अपने मुत्तकबिल के बारे में
संजीदा हो उसे ये अल्फ़ाज़ हिलाकर रख देंगे। वह जहन्नमी रास्ते को छोड़कर जन्नती रास्ते
की तरफ़ दौड़ पड़ेगा।

मगर जो लोग हकीक़तों के बारे में संजीदा न हों, जो सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिशात को जानते
हैं और उनकी अपनी ख़्वाहिशात के बाहर हकाइक़ (यथार्थ) की जो दुनिया है उसके बारे में

सूरह-45. अल-जासियह

1319

पारा 25

न कर सकेगा। कुरआन हर हाल में अपने मुखालिफीन पर ग़ालिब आकर रहेगा।

यह बात मक्की दौर में कही गई थी। उस वक़्त हालात सरासर कुरआन के ख़िलाफ़ थे। मगर बाद की तारीख़ (इतिहास) ने हैरतअंगेज तौर पर इसकी तस्दीक की। कुरआन की दावत को तारीख़ की सबसे बड़ी कामयाबी हासिल हुई।

इसी तरह खुदाए हकीम की तरफ से उतरने का तक्ज़ यह है कि उसके मजामीन (विषय) सबके सब अक्ल व दानिश पर मबनी हों। यह बात भी डेढ़ हजार साल से मुसलसल दुरुस्त साबित होती जा रही है। कुरआन दौरे साइंस से पहले उतरा। मगर दौरे साइंस में भी कुरआन की कोई बात अक्ल के ख़िलाफ़ साबित न हो सकी।

इसके अलावा जो कायनात इंसान के चारों तरफ फैली हुई है, उसकी तमाम चीज़ें कुरआन के पैग़ाम की तस्दीक (पुष्टि) बन गई हैं। ताहम यह तस्दीक सिर्फ़ उन लोगों के लिए तस्दीक बनेगी जिनके अंदर यकीन करने का ज़हन हो जो निशानियों की ज़बान में जाहिर की जाने वाली बात को पाने की इस्तेदाद (सामर्थ्य) रखते हों।

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۚ يَتَّبِعُهُ آيَةُ اللَّهِ تُشَلِّي عَلَيْهِ ۖ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرُهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَ هَاهُنَا ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۖ مِّنْ ذُرِّيَّتِهِمْ جَحَدُوا ۖ وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ مَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا ۖ مِّنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ هَٰذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْحٍ أَلِيمٌ ۖ

ع
IV

ख़राबी है हर शख्स के लिए जो झूठा हो। जो खुदा की आयतों को सुनता है जबकि वे उसके सामने पढ़ी जाती हैं फिर वह तकबुर (घमंड) के साथ अड़ा रहता है, गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं। पस तुम उसे एक दर्दनाक अजाब की खुशख़बरी दे दो। और जब वह हमारी आयतों में से किसी चीज़ की ख़बर पाता है तो वह उसे मजाक बना लेता है। ऐसे लोगों के लिए जिल्लत का अजाब है। उनके आगे जहन्नम है। और जो कुछ उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम अपने वाला नहीं। और न वे जिन्हें उन्होंने अल्लाह के सिवा कारसाज बनाया। और उनके लिए बड़ा अजाब है। यह हिदायत है, और जिन्होंने अपने रब की आयतों का इंकार किया उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अजाब है। (7-11)

हक का एतराफ़ अक्सर हालात में अपनी बड़ाई को खोने के हममअना होता है। आदमी अपनी बड़ाई को खोना नहीं चाहता इसलिए वह हक का एतराफ़ भी नहीं करता। मगर हक के आगे न झुकना खुदा के आगे न झुकना है। ऐसे लोगों के लिए खुदा के यहां सख़्ततरीन अज़ाब है।

आदमी अगरचे तकबुर (घमंड) की बिना पर हक से एराज करता है ताहम अपने

पारा 25

1320

सूरह-45. अल-जासियह

रवैये के जवाज (औचित्य) के लिए वह नजरियाती दलील पेश करता है। मगर इस दलील की हकीकत झूठे अल्फ़ज से ज्यादा नहीं होती। ऐसा आदमी किसी चीज़ को ग़लत मफ़हूम देकर उसे शोशा बनाता है। और इस शोशे की बुनियाद पर हक का और उसके दाबी का मजाक उड़ाने लगता है। ऐसे लोग सख़्ततरीन सज़ा के मुस्तहक़ हैं। क्योंकि वे बदअमली पर सरकशी का इजाफ़ा कर रहे हैं। इस सरकशी पर उन्हें जो चीज़ आमादा करती है वह उनकी दुनियावी हैसियत है। मगर किसी की दुनियावी हैसियत आख़िरत में उसके कुछ काम आने वाली नहीं।

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لَتَجْرَىٰ فِيهِ رَاحَتُهُ ۖ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۖ وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۖ

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए समुद्र को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियां चलें और ताकि तुम उसका फ़ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। और उसने आसमानों और ज़मीन की तमाम चीज़ों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया, सबको अपनी तरफ से। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (12-13)

पानी बजाहिर डुबाने वाली चीज़ है। मगर अल्लाह तआला ने उसे ऐसे क़वानीन (नियमों) का पाबंद बनाया है कि अथाह समुद्रों के ऊपर बड़े-बड़े जहाज एक तरफ से दूसरी तरफ चलते हैं और बहिफ़ज़त अपनी मजिल पर पहुंच जाते हैं। यही मामला पूरी कायनात का है। कायनात इस तरह बनाई गई है कि वह पूरी तरह इंसान के ताबेअ (अधीन) है। इंसान जिस तरह चाहे उसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर सकता है। मौजूदा दुनिया की यही खुसूसियत है जिसकी बिना पर यह मुमकिन हुआ है कि यहां इंसान अपने लिए शानदार तमद्दुन (सम्पत्ता) की तामीर कर सके।

कायनात का मौजूदा ढांचा ही उसका आख़िरी और वाहिद ढांचा नहीं है। वह दूसरे बेशुमार तरीकों से भी बन सकती थी। मगर मुख़लिफ़ इम्कानात में से वही एक इम्कान वाकया बना जो हमारे लिए मुफ़ीद था। यह एक निशानी है जिसमें ग़ौर करने वाले ग़ौर करें तो वे उसमें अपने लिए अजीमुश्शान (अनुपम महान) सबक पा सकते हैं।

قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ إِلَهًا إِلَّا اللَّهُ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۖ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَلَعَلَّهَا تَأْتِيهِ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۖ

ईमान वालों से कहे कि उन लोगों से दरगुजर करें जो खुदा के दिनों की उम्मीद नहीं रखते, ताकि अल्लाह एक कौम को उसकी कमाई का बदला दे। जो शख्स नेक अमल करेगा तो उसका फायदा उसी के लिए है। और जिस शख्स ने बुरा किया तो उसका ववाल उसी पर पड़ेगा। फिर तुम अपने रब की तरफ लौटाए जाओगे। (14-15)

जिन लोगों को यह यकीन न हो कि उनके ऊपर खुदाई फैसले का दिन आने वाला है। वे जुल्म करने में जरी होते हैं। वे हक के दाओ को हर मुमकिन तरीके से सताते हैं। उस वक्त दाओ के दिल में इंतिकाम का जज्बा पैदा होता है। मगर दाओ को चाहिए कि वह आखिर वक्त तक मदऊ से दरगुजर करे। वह अपनी तवज्जोह तमामतर दावत (आह्वान) पर लगाए रहे और लोगों की बदआमालियों पर गिरफ्त के मामले को खुदा के हवाले कर दे।

दाओ की कोशिश की कद्र व कीमत इस एतबार से मुतअव्यन नहीं होती कि उसने कितने लोगों को हक की तरफ मोड़। उसकी कोशिश की कद्र व कीमत खुदा के यहां इस एतबार से मुतअव्यन होती है कि वह खुद कितना ज्यादा हक पर कायम रहा। हक का दाओ हने के तकजों को खुद उसने कितना ज्यादा पूरा किया।

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۖ وَآتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِّن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعْيَا بَيْنَهُمْ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَبِمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۖ ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَى شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۖ إِنَّهُمْ لَن يُغْنُوا عَنكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ۖ هَذَا ابْصَافُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ

और हमने बनी इस्राईल को किताब और हुक्म और नुबुव्वत दी और उन्हें पाकीजा रिज्क अता किया और हमने उन्हें दुनिया वालों पर फजीलत (श्रेष्ठता) बख्शी। और हमने उन्हें दीन के बारे में खुली-खुली दलीलें दीं। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ (मतभेद) नहीं किया मगर इसके बाद कि उनके पास इल्म आ चुका था, आपस की ज़िद की वजह से। बेशक तेरा रब कियामत के दिन उनके दर्मियान फैसला कर देगा उन चीजों के बारे में जिनमें वे आपस में इख़्तेलाफ (मतभेद) करते थे। फिर हमने तुम्हें दीन के एक वाजेह (स्पष्ट) तरीके पर कायम किया। पर तुम उसी पर चलो और उन लोगों की ख़ाहिशों की पैरवी

न करो जो इल्म नहीं रखते। ये लोग अल्लाह के मुकाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकते। और जालिम लोग एक दूसरे के साथी हैं, और डरने वालों का साथी अल्लाह है। ये लोगों को लिए बसीरत (सूझबूझ) की बातें हैं और हिदायत और रहमत उन लोगों के लिए जो यकीन करें। (16-20)

‘बनी इस्राईल को हमने दुनिया वालों पर फजीलत दी’ यह वही बात है जो उम्मेते मुहम्मदी के जेल में इन अल्फ़ज़ में कही गई है कि ‘तुम ख़ैरे उम्मत हो।’ किसी गिरोह को खुदा की किताब का हामिल (धारक) बनाना उसे दूसरी कौमों पर हिदायत का जिम्मेदार बनाना है। यही उसका अफजलुल उमम (श्रेष्ठ समुदाय) या ख़ैरुल उमम (कल्याणकारी समुदाय) होना है।

उसूली तौर पर बनी इस्राईल की हैसियत भी इसी तरह आलमी थी जिस तरह उम्मेते मुस्लिमा की हैसियत आलमी है। मगर बनी इस्राईल ने अपनी किताब में तहरीफात (परिवर्तन) करके हमेशा के लिए अपना यह इस्तहकाक (अधिकार) खो दिया।

दीन की अस्ल तालीमात में हमेशा वहदत (एकत्व) होती है। मगर उलमा के इजाफे उसमें इख़्तेलाफ और तअदुद (मत-भिन्नता) पैदा कर देते हैं। हर आलिम अपने जैक के लिहाज से अलग-अलग इजाफे करता है। इसके बाद हर आलिम और उसके मुत्तबिइन (अनुयायी) अपने इजाफों को सही और दूसरे के इजाफों को ग़लत साबित करने में मसरूफ हो जाते हैं। इस तरह दीनी फिरके बनना शुरू होते हैं और आखिरकार यहां तक नौबत पहुंचती है कि एक दीन कई दीनों में तक्सीम हो जाता है।

बनी इस्राईल ने जब नाज़िल हुए दीन को बदले हुए दीन की हैसियत दे दी उस वक्त हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए अल्लाह ने कुरआन उतारा। चूँकि आपके बाद कोई पैग़म्बर आने वाला न था। इसलिए अल्लाह ने खुसूसी एहतिमाम के साथ कुरआन को महफूज़ (सुरक्षित) कर दिया। ताकि दुबारा यह सूत पैदा न हो कि अल्लाह का दीन इंसानी इजाफों में गुम होकर रह जाए।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمُ الْكَافِرِينَ أَمْ لَا يَعْلَمُونَ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۖ وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَ لِيُجْزِيَ كُلَّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

क्या वे लोग जिन्होंने बरे कार्य किए हैं यह ख़याल करते हैं कि हम उन्हें उन लोगों की मानिंद कर देंगे जो ईमान लाए और नेक अमल किया, उन सबका जीना और मरना एकसां (समान) हो जाए। बहुत बुरा फैसला है जो वे कर रहे हैं। और अल्लाह ने आसमानों और जमीन को हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) के साथ पैदा किया और ताकि हर शख्स को उसके किए का बदला दिया जाए और उन पर कोई जुल्म न होगा। (21-22)

जो शख्स यह ख्याल करे कि आदमी अच्छा बनकर रहे या बुरा बनकर, सब बराबर है। आखिरकार दोनों ही को मरकर मिट जाना है, वह निहायत गलत ख्याल अपने दिमाग में कायम करता है। ऐसा समझना उस शुऊरे अद्ल (न्याय-भाव) के खिलाफ है जो हर आदमी की फितरत में पैदाइशी तौर पर मौजूद है। साथ ही, यह कायनात की उस मअनवियत का इंकार करना है जो उसके निजाम में कमाल दर्जे में पाई जाती है। हकीकत यह है कि ईसान की अंदरूनी फितरत और उसके बाहर की वसीअ कायनात दोनों इसे सरासर बातिल (असत्य) साबित करते हैं कि जिंदगी को एक ऐसी बेमक्सद चीज समझ लिया जाए जिसका कोई अंजाम सामने आने वाला नहीं।

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَى عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَى سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَى بَصَرِهِ غِشَاةً فَنَنْصُرُهُ مِنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾

क्या तुमने उस शख्स को देखा जिसने अपनी ख्वाहिश (इच्छा) को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है और अल्लाह ने उसके इल्म के बावजूद उसे गुमराही में डाल दिया और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आंख पर पर्दा डाल दिया। पस ऐसे शख्स को कौन हिदायत दे सकता है, इसके बाद कि अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया हो, क्या तुम ध्यान नहीं करते। (23)

ख्वाहिश को अपना माबूद बनाने का मतलब ख्वाहिश को अपनी जिंदगी में सबसे बरतर मकाम देना है। जो शख्स अपनी ख्वाहिश के तहत सोचे और अपनी ख्वाहिश के तहत अमल करे वह गोया अपनी ख्वाहिश ही को अपना माबूद बनाए हुए है।

आदमी की अक्ल सही और गलत को पहचानने की कामिल सलाहियत रखती है। मगर जो शख्स अपनी अक्ल को अपनी ख्वाहिश का ताबेअ (अधीन) बना ले उसका हाल यह हो जाता है कि उसके सामने हक के दलाइल आते हैं मगर वह उनके वजन को महसूस नहीं कर पाता। वह हर बात के जवाब में एक झूठी तौजीह पेश करके उसे रद्द कर देता है। आदमी की यह रविश आखिरकार उसकी अक्ली कुव्वतों को मसख कर देती है। उसके कान अल्फज सुनते हैं मगर उनके मअना तक उनकी पहुंच नहीं होती। उसकी आंख हकीकत को देखती है मगर वह उससे सबक नहीं ले पाती। उसके दिल तक एक बात पहुंचती है मगर वह उसके दिल को तड़पाने वाली नहीं बनती।

अक्ली कुव्वतों को खुदा ने हिदायत के दाखिले का दरवाजा बनाया है। मगर जो शख्स अपनी ख्वाहिशपरस्ती में इन दरवाजों को बंद कर ले उसके अंदर हिदायत दाखिल होगी तो किस रास्ते से दाखिल होगी।

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا مَوْتٌ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُم

يَذَلِكُمْ مِنْ عِلْمٍ إِنَّهُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٦﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ مَّا كَانَ حُجَّتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اتُّوَابَا بَيْنَنَا أَنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٧﴾ قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ مُمْمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

और वे कहते हैं कि हमारी इस दुनिया की जिंदगी के सिवा कोई और जिंदगी नहीं। हम मरते हैं और जीते हैं और हमें सिर्फ जमाने की गर्दिश (कालचक्र) हलाक करती है। और उन्हें इस बारे में कोई इल्म नहीं। वे महज गुमान की बिना पर ऐसा कहते हैं। और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो उनके पास कोई हुज्जत इसके सिवा नहीं होती कि हमारे बाप दादा को जिंदा करके लाओ अगर तुम सच्चे हो। कहो कि अल्लाह ही तुम्हें जिंदा करता है फिर वह तुम्हें मारता है फिर वह कियामत के दिन तुम्हें जमा करेगा, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (24-26)

‘हमें जमाने की गर्दिश हलाक करती है’ यह आम लोगों का कौल नहीं। इस तरह की बातें हमेशा मखसूस अफराद करते हैं। ये वे अफराद हैं जो अपनी जहानत की वजह से अक्सर समाज के फिक्री (वैचारिक) नुमाइंद की हैसियत हासिल कर लेते हैं। ताहम ये बातें वे महज कयास (अनुमान) की बुनियाद पर कहते हैं। वे किसी हकीकी इल्म की बुनियाद पर ऐसा नहीं कहते। इसके मुक़बले में पैगम्बर जो बात कहता है उसकी बुनियाद ठेस हकीकत पर कायम है।

हम रोजाना देखते हैं कि एक शख्स नहीं था। फिर वह पैदा होकर मौजूद हो गया। इसके बाद वह दुबारा मर जाता है। गोया यहां हर आदमी को मौत के बाद जिंदगी मिलती है और जिंदगी के बाद वह दुबारा मर जाता है। यह इस बात का करीना (संकेत) है कि जिस तरह पहली बार मौत के बाद जिंदगी हुई, इसी तरह दूसरी बार भी मौत के बाद जिंदगी होगी।

इससे वाजेह तौर पर जिंदगी बाद मौत का मुमकिन होना साबित होता है। इसके बाद यह मुतालबा करना ग़लत है कि जो लोग कल दुबारा पैदा होने वाले हैं उन्हें आज पैदा करके दिखाओ। क्योंकि मौजूदा दुनिया इस्तेहान के लिए है। और अगर मौजूदा दुनिया में अगली दुनिया का हाल दिखा दिया जाए तो इस्तेहान की मस्लेहत बाकी नहीं रह सकती।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُنْحَسِرُ الْمُبِطُونَ ﴿٢٩﴾ وَتَرَىٰ كُلُّ أُمَّةٍ جَائِيَةً كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَىٰ إِلَىٰ كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٠﴾ هَذَا كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ إِنَّا كُنَّا نَسْتَنسِخُ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣١﴾

और अल्लाह ही की बादशाही है आसमानों में और जमीन में और जिस दिन कियामत

सूरह-45. अल-जासियह

1325

पारा 25

कायम होगी उस दिन अहले बातिल (असत्यवादी) ख़सारे (घाटे) में पड़ जाएंगे। और तुम देखोगे कि हर गिरोह घुटनों के बल गिर पड़ेगा। हर गिरोह अपने नामए आमांल (कर्म-फल) की तरफ बुलाया जाएगा। आज तुम्हें उस अमल का बदला दिया जाएगा जो तुम कर रहे थे। यह हमारा दफ्तर है जो तुम्हारे ऊपर ठीक-ठीक गवाही दे रहा है। हम लिखवाते जा रहे थे जो कुछ तुम करते थे। (27-29)

जो लोग अल्लाह की बुनियाद पर दुनिया में खड़े हों वे हक की बुनियाद पर खड़े होते हैं। और जो लोग इसके सिवा किसी और बुनियाद पर खड़े हों वे बातिल की बुनियाद पर खड़े हुए हैं। ऐसे तमाम लोग आखिरत में बेजमीन होकर रह जाएंगे। क्योंकि उन्होंने जिस चीज को बुनियाद समझ रखा था वह कोई बुनियाद ही न थी। वह महज धोखा था जो हकीकते हाल के खुलते ही ख़त्म हो गया।

आमांल को लिखवाने से मुराद मअरूफ (प्रचलित) मअनों में कलम से लिखवाना नहीं है। बल्कि आमांल को रिकॉर्ड कराना है। इंसान की नियत, उसका कौल और उसका अमल सब निहायत सेहत के साथ ख़ुदाई इतिजाम के तहत रिकॉर्ड हो रहा है। आखिरत में इंसान के साथ जो मामला किया जाएगा वह ऐन उस रिकॉर्ड के मुताबिक होगा। यह रिकॉर्ड इतना ज्यादा हकीकी होगा कि किसी के लिए मुमकिन न होगा कि उससे इंकार कर सके।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَفَرُوا بِكُنُوزِ اللَّهِ ۖ فَاسْتَكْبَرُوا
وَكُنْتُمْ قَوْمًا تُجْرِمُونَ ۝ وَإِذْ قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا
قُلْتُمْ مَآ نَدْرِي مَا السَّاعَةُ ۖ إِنَّ نَظْنَ الْأَطْنَّاءِ وَمَا نَحْنُ بِمُستَقْبِقِينَ ۝

पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनका रब उन्हें अपनी रहमत में दाखिल करेगा। यही खुली कामयाबी है। और जिन्होंने इंकार किया, क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर सुनाई नहीं जाती थीं। पस तुमने तकबुर (घमंड) किया और तुम मुजरिम लोग थे। और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वादा हक है और क़ियामत में कोई शक नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है, हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम इस पर यकीन करने वाले नहीं। (30-32)

तकबुर (घमंड) से मुराद ख़ुदा के मुकाबले में तकबुर नहीं है बल्कि ख़ुदा के दाओ के मुकाबले में तकबुर है। ख़ुदा की बात को मानना मौजूदा दुनिया में अमलन ख़ुदा के दाओ की बात को मानने के हममअना होता है। अब जो लोग तकबुर में मुब्तिला हों वे उसे अपने मर्तबे से कमतर समझते हैं कि वे अपने जैसे एक इंसान की बात मान लें। चुनांचे वे उसे नजरअंदाज

पारा 25

1326

सूरह-45. अल-जासियह

कर देते हैं। इसके बरअक्स जो लोग तकबुर की नफ़िसयात से ख़ाली हों वे फौरन उसके आगे झुक जाते हैं। पहले गिरोह के लिए ख़ुदा का ग़जब है और दूसरे गिरोह के लिए ख़ुदा की रहमत।

एक इंसान जब हक का इंकार करता है तो अपने इंकार को जाइज साबित करने के लिए वह तरह-तरह की बातें करता है। वह कभी दाओ को नाकाबिले एतमाद साबित करता है। कभी दाओ के पैग़ाम में शक व शुबह का पहलू निकालता है। मगर क़ियामत के दिन खुल जाएगा कि ये सब मुजरिमाना ज़ेहन से निकली हुई बातें थीं। न कि हक़परस्ताना ज़ेहन से निकली हुई बातें।

وَبَدَّ اللَّهُ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ وَقِيلَ الْيَوْمَ
نَنْسِفُكُمْ كَمَا نَسَفْنَا لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا وَمَا أُولَٰئِكَ إِلَّا وَ مَا لَكُمْ مِنْ تُصَرِّينَ ۝
ذَٰلِكُمْ بِأَنكُمُ اتَّخَذْتُمُ اللَّهَ هُزُوًا وَأَعَزَّكُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُونَ
مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝

और उन पर उनके आमांल की बुराइयां खुल जाएंगी और वह चीज उन्हें घेर लेगी जिसका वे मजाक उड़ाते थे। और कहा जाएगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जिस तरह तुमने अपने इस दिन के आने को भुलाए रखा। और तुम्हारा ठिकाना आग है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं। यह इस वजह से कि तुमने अल्लाह की आयतों का मजाक उड़ाया। और दुनिया की ज़िंदगी ने तुम्हें धोखे में रखा। पस आज न वे उससे निकाले जाएंगे और न उनका उज़ कुकूल किया जाएगा। (33-35)

मौजूदा दुनिया में आदमी जब बुराई करता है तो उसके बुरे नताइज फौरन उसके सामने नहीं आते। यह चीज उसे दिलेर बना देती है। उसे जब उसकी बदअमली से डराया जाता है तो वह संजीदगी के साथ उसे सुनने के लिए तैयार नहीं होता। मगर आखिरत में उसकी बुराइयों के नताइज उसकी आंखों के सामने आ जाएंगे। वह अपनी बदआमालियों में पूरी तरह घिर चुका होगा। उस वक़्त वह उस हक का इक्कार कर लेगा जिसे दुनिया में उसने इतना बेक़ीमत समझा था कि वह उसका मजाक उड़ाता रहा।

आखिरत में इंसान उस हक का इक्कार करेगा जिसे वह दुनिया में झुठलाता रहा। मगर वहां उसे कुकूल नहीं किया जाएगा। क्योंकि हक का इक्कार ग़ैब (अप्रकट) की सतह पर कीमत रखता है न कि शुहद (प्रकट) की सतह पर।

قُلْ لِلَّهِ الْحُكْمُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَلَٰكِنَّ كَثِيرًا مِّنْ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

مُبِينٌ ۖ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

और जब हमारी खुली-खुली आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो मुकिर लोग इस हक की बाबत, जबकि वह उनके पास पहुंचता है, कहते हैं कि यह खुला हुआ जादू है। क्या ये लोग कहते हैं कि उसने इसे अपनी तरफ से बना लिया है, कहे कि अगर मैंने इसे अपनी तरफ से बनाया है तो तुम लोग मुझे जरा भी अल्लाह से बचा नहीं सकते। जो बातें तुम बनाते हो अल्लाह उन्हें खूब जानता है। वह मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाही के लिए काफी है। और वह बख्शने वाला, रहमत वाला है। (7-8)

कदीम अरब में कुरआन के मुखातबीन कुरआन के पैगाम को यह कहकर रद्द कर देते थे कि यह हमारे अकाविर (महापुरुषों) के दीन के खिलाफ है। और चूंकि लोगों के ऊपर अकाविर की अज्मत बैठी हुई थी वे उसे मान कर कुरआन के पैगाम से मुतवहिहश (भयभीत) हो जाते थे। मगर कुरआन का एक और पहलू था और वह उसका अदबी एजाज़ (साहित्यिक विलक्षणता) था। हर अरबीदां महसूस कर रहा था कि यह एक ग़ैर मामूली कलाम है। इस दूसरे पहलू से कुरआन की अहमियत को घटाने के लिए उन्होंने कह दिया कि यह 'सहर' है यानी यह जादू बयानी का करिश्मा है न कि हकीकत बयानी का कमाल।

यह सही है कि कुछ इंसानों के कलाम में ग़ैर मामूली अदबियत (साहित्यिकता) होती है मगर इंसानी कलाम की अदबियत की एक हद है। कुरआन का अदबी एजाज़ इस हद से बहुत आगे है। कुरआन की अदबी अज्मत इससे ज्यादा है कि उसे इंसानी दिमाग का करिश्मा कहा जा सके।

जब फ़रीक सानी (सामने वाला पक्ष) ज़िद पर उतर आए तो उस वक़्त एक संजीदा इंसान यह करता है कि वह यह कहकर चुप हो जाता है कि मेरा और तुम्हारा मामला अल्लाह के हवाले है। ताहम यह पसपाई नहीं बल्कि एक इक्दामी तदवीर है। आदमी जब एक जिद्दी के सामने चुप हो जाए तो वह अपने आपको उसके सामने से हटाकर खुद उसे उसके जमीर (अन्तरात्मा) के सामने खड़ा कर देता है ताकि उसके अंदर एहसास का कोई दर्जा हो तो वह बेदार हो जाए।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدَعَا مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ إِنِ انْتَبِهُوا إِلَّا مَا يُنْصَحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ ۖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ ۖ قَامَنَّ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

कहो कि मैं कोई अनोखा रसूल नहीं हूँ। और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या। मैं तो सिर्फ उसी का इतिबाअ करता हूँ जो मेरी तरफ 'वही' (प्रकाशना) के जरिए आता है और मैं तो सिर्फ एक खुला हुआ आगाह करने वाला हूँ। कहे, क्या तुमने कभी सोचा कि अगर यह कुरआन अल्लाह की जानिब से हो और तुमने इसे नहीं माना, और बनी इस्राईल में से एक गवाह ने इस जैसी किताब पर गवाही दी है। पस वह ईमान लाया और तुमने तकबुर (घमंड) किया। बेशक अल्लाह जालिमों को हिदायत नहीं देता। (9-10)

मुशिकीने मक्का की नजर में यहूद उलूमे दीन के हामिल (धारक) थे। उन्हें वे पैगम्बरों वाली कौम समझते थे। तितारती सफ़रों में मुशिकीन और यहूद की बाहमी मुलाकातें भी होती रहती थीं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मक्का में एक निजाई (विवादित) शख्सियत बने हुए थे तो मक्का के कुछ मुशिकीन ने कुछ यहूदियों से आपके बारे में पूछा। उस दौरान किसी यहूदी आलिम ने उन्हें बताया कि हमारी किताबों के मुताबिक एक पैगम्बर इस इलाके में आने वाले हैं। हो सकता है कि यह वही पैगम्बर हों। उस यहूदी शख्स ने विलवास्ता (परोक्ष) अंदाज में आपकी नुबुव्वत का इकार किया।

अब सूरतेहाल यह थी कि तारीख़ से साबित हो रहा था कि खुदा के पैगम्बर खुदा की किताब लेकर आते हैं। कदीम आसमानी किताबों में यह लिखा हुआ था कि बनू इसमाईल में एक ऐसा पैगम्बर आने वाला है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कलाम और आपकी जिदगी में वे तमाम अलामतें वाजेह तौर पर पाई जा रही थीं जो पैगम्बरों में होती हैं। इन अलामात और कराइन की मौजूदगी में जो लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैगम्बरी का इंकार कर रहे थे वह किसी माकूलियत की वजह से नहीं कर रहे थे बल्कि महज इसलिए कर रहे थे कि एक शख्स जिसे अब तक वे एक मामूली आदमी समझते थे उसे खुदा का पैगम्बर मानने में उनकी बड़ाई टूट जाएगी।

जिन लोगों का हाल यह हो कि उनके सामने हक आए तो वे मुतकब्बिराना नफ़िसयात (घमंड-भाव) का शिकार हो जाएं। ऐसे लोगों का जेहन हमेशा उन्हें ग़लत रूख़ पर ले जाता है। वह सही सम्त में उनकी रहनुमाई नहीं करता।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَكُنْ لَهُ دَلِيلٌ فَسَيَقُولُونَ هَذَا أَلْفَاكٌ قَدِيمٌ ۝

और इंकार करने वाले ईमान लाने वालों के बारे में कहते हैं कि अगर यह कोई अच्छी चीज़ होती तो वे इस पर हमसे पहले न दौड़ते। और चूंकि उन्होंने इससे हिदायत नहीं पाई तो अब वे कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है। (11)

इब्तिदा में जो लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी बने उनमें कई ऐसे लोग थे जो जईफ (बूढ़े) और गुलाम तबके से तअल्लुक रखते थे। मसलन बिलाल, अम्मार, सुहैब, खब्बाब वगैरह। इसी के साथ आप पर ईमान लाने वालों में वे लोग भी थे जो अरब के मुअज्ज खनदानों से तअल्लुक रखते थे। मसलन अबूबक्र बिन अबी क्हाफ, उस्मान बिन अफ्फन, अली इब्ने अबी तालिब वगैरह। मगर आपके मुख़लिफ़ीन सिर्फ़ पहली क्रिस्म के लोगों का जिक्र करते थे, वे दूसरी क्रिस्म के लोगों का जिक्र नहीं करते थे। इसकी वजह यह है कि आदमी को जब किसी से ज़िद हो जाती है तो वह उसके बारे में यक़रूखा हो जाता है। वह उसके अच्छे पहलुओं को नज़रअंदाज़ कर देता है और सिर्फ़ उन्हीं पहलुओं का जिक्र करता है जिसके ज़रिए उसे उसकी तहकीर (तुच्छ समझने) का मौक़ा मिलता हो।

इसी तरह यह एक वाक़या था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत वही थी जो पिछले तमाम पैग़म्बरों की दावत थी। आप एक अबदी सदाक़त (सच्चाई) को लेकर आए थे। इस वाक़ये को आपके मुख़लिफ़ीन इन लफ़्ज़ों में भी बयान कर सकते थे कि 'यह एक बहुत पुराना सच है' मगर उन्होंने यह कह दिया कि 'यह एक बहुत पुराना झूठ है' नाइंसाफी की यह क्रिस्म क़दीम ज़माने के इंसानों में भी पाई जाती थी और आज भी वह पूरी तरह लोगों के अंदर पाई जा रही है।

وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۖ وَهَذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانِكَ عَرَبِيًّا
لِّيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَبَشَىٰ لِّلْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ
اسْتَفْأَمُوا فَلَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ خَالِدِينَ
فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

और इससे पहले मूसा की किताब थी रहनुमा और रहमत। और यह एक किताब है जो उसे सच्चा करती है, अरबी ज़बान में, ताकि उन लोगों को डराए जिन्होंने जुल्म किया। और वह खुशख़बरी है नेक लोगों को लिए। वेशक़ जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वे उस पर जमे रहे तो उन लोगों पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वे ग़मगीन होंगे। यही लोग जन्नत वाले हैं जो उसमें हमेशा रहेंगे, उन आमा़ल के बदले जो वे दुनिया में करते थे। (12-14)

क़ुरआन की सदाक़त की एक दलील यह है कि पिछली आसमा़नी किताबें इसकी पेशीनगोई (भविष्यवाणी) करती हैं। यह पेशीनगोइयां आज भी इंज़ील और तौरात में मौजूद हैं। इस तरह क़ुरआन अपनी साबिक (पूर्ववर्ती) आसमा़नी पेशीनगोइयों का मिस्दाक़ (पुष्टि रूप) बनकर आया है। वह उनकी पेशगी इत्तिलाअ (पूर्व सूचना) को सच कर दिखाता है। यह

एक वाज़ेह करीना है जो साबित करता है कि क़ुरआन वाक़ेयतन एक ख़ुदाई किताब है। वना सैंकड़ों और हजारों साल पहले उसकी पेशगी ख़बर देना कैसा मुमकिन होता।

'क़लू ख़बुनल्लाहु सुम्स तक़मू' के सिलसिले में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कहा है कि इससे मुराद उसके फ़ाइज़ की अदायगी पर क़यम रहना है।

ईमान एक मुक़द्दस अहद है। ज़िंदगी में बार-बार ऐसे मौक़े आते हैं कि एक रविश आदमी के अहदे ईमान के मुताबिक़ होती है और एक रविश उसके अहदे ईमान के ग़ैर मुताबिक़। ऐसे मौक़े पर जिस शख्स ने अपने अहदे ईमान के मुताबिक़ अमल किया उसने इस्तिक्कामत (टुटता) दिखाई और जो शख्स अपने अहदे ईमान के मुताबिक़ अमल न कर सका वह इस्तिक्कामत दिखाने में नाकाम रहा।

इस्तिक्कामत का सुबूत न देने वाले लोग ज़ालिम लोग हैं। उनका दावए ईमान उन्हें कुछ फायदा न देगा और जिन लोगों ने इस्तिक्कामत का सुबूत दिया वही वे लोग हैं जो जन्नत के अबदी बाग़ों में बसाए जाएंगे।

وَوَضَّيْنَا لِلْإِنْسَانِ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۚ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَ
حَمَلُهُ وَفِصْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۖ
قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَتِي
وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۚ إِنِّي تُثِيبُ إِلَيْكَ وَارِئِي
مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَقَبَلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَتَتَجَاوَرُ
عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعَدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

और हमने इंसान को हुक्म दिया कि वह अपने मां-बाप के साथ भलाई करे। उसकी मां ने तकलीफ़ के साथ उसे पेट में रखा। और तकलीफ़ के साथ उसे जना। और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में हुआ। यहां तक कि जब वह अपनी पुष्टिगी को पहुंचा और चालीस वर्ष को पहुंच गया तो वह कहने लगा कि ऐ मेरे रब, मुझे तौफीक़ दे कि मैं तेरे एहसान का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर किया और मेरे मां-बाप पर किया और यह कि मैं वह नेक अमल करूं जिससे तू राजी हो। और मेरी औलाद में भी मुझे नेक औलाद दे। मैं तेरी तरफ़ रज़ूअ किया और मैं फ़रमांबरदारों में से हूं। ये लोग हैं जिनके अच्छे आमा़ल को हम कुबूल करेंगे और उनकी बुराइयों से दरगुज़र करेंगे, वे अहले जन्नत में से होंगे, सच्चा वादा जो उनसे किया जाता था। (15-16)

इंसानी नस्ल का तरीका यह है कि आदमी एक मां और एक बाप के जरिए जुजुद में आता है जो उसकी परवरिश करके उसे बड़ा बनाते हैं। यह गोया इंसान की तर्बियत का फितरी निजम है। यह इसलिए है कि इसके जरिए से इंसान के अंदर हुकू व फाइन का शुरु पैदा हो। उसके अंदर यह जज्बा पैदा हो कि उसे अपने मोहसिन का एहसान मानना है और उसका हक अदा करना है। यह जज्बा बयकवक्त इंसान को दूसरे इंसानों के हुकू अदा करने की तालीम देता है। और इसी के साथ खालिक व मालिक खुदा के अजीमतर हुकू को अदा करने की तालीम भी।

जो लोग फितरत के मुअल्लिम (शिक्षक) से सबक लें। जो लोग अपने शुरु को इस तरह बेदार करें कि वे अपने वालिदेन से लेकर अपने खुदा तक हर एक के हुकू को पहचानें और उन्हें ठीक-ठीक अदा करें, वही वे लोग हैं जो आखिरत में खुदा की अबदी रहमतों के मुतहिक कर दिए जाएंगे।

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ إِفِّ لَّكُمَا اتَّعِدْنِي أَنْ أُخْرِجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي ۚ وَهُمَا يَسْتَعْجِلَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ ۖ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَيَقُولُ مَا هَذَا إِلَّا سَأْطِيرُ الْأُولِينَ ۖ وَلِيْلِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أَمْرٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ۝

और जिसने अपने मां-बाप से कहा कि मैं बेजार हूं तुमसे। क्या तुम मुझे यह खौफ दिलाते हो कि मैं कब्र से निकाला जाऊंगा, हालांकि मुझ से पहले बहुत सी कौम गुजर चुकी हैं और वे दोनों अल्लाह से फरयाद करते हैं कि अफसोस है तुझ पर, तू ईमान ला, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। पस वह कहता है कि यह सब अगलों की कहानियां हैं। ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह का कौल पूरा हुआ उन गिरोहों के साथ जो उनसे पहले गुजरे जिनों और इंसानों में से। बेशक वे ख़सारे (घाटे) में रहे। (17-18)

जो औलाद अपने वालिदेन की फरमांबरदार हो वह खुदा की भी फरमांबरदार होती है। इसके बरअक्स नाफरमान औलाद का हाल यह होता है कि वह बड़ी उम्र को पहुंचते ही भूल जाते हैं कि उनके वालिदेन ने बेशुमार मुसीबतें उठाकर उन्हें इस मकाम तक पहुंचाया है।

किसी शख्स के सबसे ज्यादा ख़ैरख़ाह उसके वालिदेन होते हैं। वालिदेन अपनी औलाद को जो मशिवरा देते हैं वह सरासर बेगर्जाना ख़ैरख़ाही पर मबनी होता है। इसलिए इंसान को चाहिए कि वह अपने सालेह वालिदेन के मशिवरों का सबसे ज्यादा लिहाज करे। जो शख्स अपने सालेह वालिदेन के मशिवरों पर उन्हें झिड़क दे वह अपनी इस रविश से जाहिर करता है कि वह निहायत संगदिल इंसान है। यही वे लोग हैं जो सबसे ज्यादा ख़सारे में पड़ने वाले हैं।

وَلِكُلِّ دَرَجَتٍ مِمَّا عَمِلُوا ۖ وَيُؤْفِقُهُمُ أَعْمَالُهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۖ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلْهَبْتُمْ طِبَابَكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۖ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۖ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ۖ

और हर एक के लिए उनके आमाल के एतबार से दर्जे होंगे। और ताकि अल्लाह सबको उनके आमाल पूरे कर दे और उन पर जुल्म न होगा। और जिस दिन इंकार करने वाले आग के सामने लाए जाएंगे, तुम अपनी अच्छी चीजें दुनिया की ज़िंदगी में ले चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें जिल्लत की सजा दी जाएगी, इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक तकबुर (घमंड) करते थे और इस वजह से कि तुम नाफरमानी करते थे। (19-20)

एक शख्स के सामने हक आता है और वह दुनियावी मस्तेहत और माददी मफ़ाद के खातिर उसे इख़्तियार नहीं करता। इसका मतलब यह है कि उसने आखिरत के मुकाबले में दुनिया को अहमियत दी। उसने तय्यिबाते आखिरत (परलोक की अच्छी चीजों) के मुकाबले में तय्यिबाते दुनिया को अपने लिए पसंद कर लिया।

इसी तरह अपनी बड़ाई का एहसास आदमी के लिए बेहद लजीज चीज है। जब ऐसा हो कि अपनी बड़ाई का घरोँदा तोड़कर हक को कुबूल करना हो और आदमी अपनी बड़ाई को बचाने के लिए हक को कुबूल न करे, उस वक्त भी गोया उसने तय्यिबाते दुनिया को तरजीह दी और तय्यिबाते आखिरत को नाकाबिले लिहाज समझ कर छोड़ दिया।

ऐसे तमाम लोग जिन्होंने दुनिया की तय्यिबात की खातिर आखिरत की तय्यिबात को नज़रअंदाज किया वे आखिरत में जिल्लत के अजाब से दो चार होंगे। जिसका अमल जिस दर्जे का होगा उसी के बकदर वह अपने अमल का अंजाम आखिरत में पाएगा।

وَأَذْكُرُ أَخَاعَادُ إِذْ أُنْذِرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهِ ۖ أَلا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۚ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۖ قَالُوا اجْنُتْنَا بِلِأْفِكَ عَنِ الْهَيْئَةِ ۚ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۖ قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ۖ

और आद के भाई (हूद) को याद करो। जबकि उसने अपनी कौम को अह्काफ में डराया और डराने वाले उससे पहले भी गुजर चुके थे और उसके बाद भी आएँ कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मैं तुम पर एक हौलनाक दिन के अजाब से डरता हूँ। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से फेर दो। पस अगर तुम सच्चे हो तो वह चीज हम पर लाओ जिसका तुम हमसे वादा करते हो। उसने कहा कि इसका इल्म तो अल्लाह को है, और मैं तो तुम्हें वह पैग़ाम पहुँचा रहा हूँ जिसके साथ मुझे भेजा गया है। लेकिन मैं तुम्हें देखता हूँ कि तुम लोग नादानी की बातें करते हो। (21-23)

कौमे आद जुनूबी (दक्षिणी) अरब के उस इलाके में आबाद थी जिसे अब 'अररुबउ ख़ली' कहा जाता है। इस कौमे ने काफ़ी तरक्की की। मगर उसकी तरक्कियों ने उसे ग़मलत और सरकशी में मुब्तिला कर दिया। फिर अल्लाह तआला ने उसके एक फ़र्द हजरत हूद अलैहिस्सलाम को पैग़म्बर बनाकर उसकी तरफ भेजा।

हजरत हूद ने कौम को डराया। मगर वह इस्लाह कुबूल करने के लिए तैयार न हुई। उसने अपने पैग़म्बर का इस्तक़बाल जहालत से किया। आख़िरकार वह खुदा की पकड़ में आ गई। उस पर ऐसा सज़ा अजाब आया कि उसका सरसब्ज और शानदार इलाका महज़ एक ख़ुश्क सहरा बन कर रह गया।

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ قَالَ لَوْ هَذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ رِيحٌ فِيْهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ تَذَرُّ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَى إِلَّا مَسَكِنُهُمْ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝

पस जब उन्होंने उसे बादल की शक़ल में अपनी वादियों की तरफ आते हुए देखा तो उन्होंने कहा कि यह तो बादल है जो हम पर बरसेगा। नहीं बल्कि यह वह चीज है जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। एक आंधी है जिसमें दर्दनाक अजाब है। वह हर चीज को अपने रब के हुक्म से उखाड़ फेंकेगी। पस वे ऐसे हो गए कि उनके घरों के सिवा वहां कुछ नजर न आता था। मुजरिमों को हम इसी तरह सज़ा देते हैं। (24-25)

अजाब के बादल को आद के लोग बारिश का बादल समझे। वे उसकी हकीक़त को सिर्फ़ उस वक़्त समझ सके जबकि अजाब की आंधी ने उनकी बस्तियों में दाख़िल होकर उन्हें बिल्कुल खंडहर बना दिया। इंसान इतना जालिम है कि वह एक लम्हे पहले तक भी हक का एतराफ़ नहीं करता। वह सिर्फ़ उस वक़्त एतराफ़ करता है जबकि एतराफ़ करने का मौक़ा उससे छिन गया हो।

وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيْمَا أَرْنَا مَكَّنَّكُمْ فِيْهِ ۖ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَآبْصَارًا وَآفِدَةً ۚ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا آفِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَمْجَدُّونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۚ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَىٰ وَصَرَفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۚ فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً بَلَّ ضُلُوكُمْ عَنْهُمْ وَذَلِكَ أَفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝

और हमने उन लोगों को उन बातों में कुदरत दी थी कि तुम्हें उन बातों में कुदरत नहीं दी और हमने उन्हें कान और आंख और दिल दिए। मगर वे कान उनके कुछ काम न आए और न आंखें और न दिल। क्योंकि वे अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे और उन्हें उस चीज ने घेर लिया जिसका वे मजाक उड़ाते थे। और हमने तुम्हारे आस पास की बस्तियां भी तबाह कर दीं। और हमने बार-बार अपनी निशानियां बताईं ताकि वे बाज आएँ। पस क्यों न उनकी मदद की उन्होंने जिनको उन्होंने खुदा के तकरूब (समीपता) के लिए माबूद (पूज्य) बना रखा था। बल्कि वे सब उनसे खोए गए और यह उनका झूठ था और उनकी गढ़ी हुई बात थी। (26-28)

कुरैश के सरदारों को जो दुनियावी मर्तबा हासिल था उसने उन्हें सरकश बना रखा था। उन्हें याद दिलाया गया कि अपने पड़ोस की कौम आद को देखो। उसे तमदुदनी एतबार से तुमसे भी ज्यादा बड़ा दर्जा हासिल था। इसके बावजूद जब खुदा का फैसला आया तो उसकी सारी बड़ाई ग़ारत होकर रह गई। उन चीजों में से कोई चीज उसका सहारा न बन सकी जिन्हें उन्होंने अपना सहारा समझ रखा था।

इंसान आख़िरकार खुदा की बड़ाई के मुकाबले में छोटा होने वाला है। मगर दुनिया का निजाम कुछ इस तरह बनाया गया है कि इसी दुनिया में आदमी को बार-बार दूसरों के मुकाबले में छोटा होना पड़ता है। इस तरह के वाक़ेयात खुदा की निशानियां हैं। आदमी अगर इन निशानियों से सबक ले तो आख़िरत के दिन छोटा किए जाने से पहले वह खुद अपने आपको छोटा कर ले। वह आख़िरत से पहले इसी दुनिया में हकीक़तपसंद बन जाए।

इंसान के सामने मुक़ालिफ़ क़िस्म के वाक़ेयात खुदाई निशानी बनकर जाहिर होते हैं। मगर वह अंधा बहरा बना रहता है। वह उनसे सबक लेने के लिए तैयार नहीं होता।

وَلَا تَصْرَفُوا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْبَنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنْصِتُوا
فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُّندَرِينَ ۖ قَالُوا يَقَوْمُنَا إِنَّا سَمِعْنَا نَبَأًا أَنْزَلَ
مِن بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقِ
مُّسْتَقِيمٍ ۖ يَقَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ ۖ يَعْفِرْ لَكُمْ مِّن ذُنُوبِكُمْ
وَيُجْزِكُمْ مِّن عَذَابِ آلِ يَمِينٍ ۖ وَمَنْ لَا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعِجِّزٍ فِي
الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءُ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

और जब हम जिन्नात के एक गिरोह को तुम्हारी तरफ ले आए, वे कुरआन सुनने लगे।
पस जब वे उसके पास आए तो कहने लगे कि चुप रहो। फिर जब कुरआन पढ़ा जा
चुका तो वे लोग डराने वाले बनकर अपनी कौम की तरफ वापस गए। उन्होंने कहा
कि ऐ हमारी कौम, हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है, उन
पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की तस्दीक (पुष्टि) करती हुई जो उसके पहले से मौजूद
हैं। वह हक की तरफ और एक सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई करती है। ऐ हमारी कौम,
अल्लाह की तरफ बुलाने वाले की दावत (आह्वान) कुबूल करो और उस पर ईमान ले
आओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा और तुम्हें दर्दनाक अजाब से
बचाएगा। और जो शख्स अल्लाह के दाअी (आह्वानकर्ता) की दावत पर लम्बैक नहीं
कहेगा तो वह जमीन में हरा नहीं सकता और अल्लाह के सिवा उसका कोई मददगार
न होगा। ऐसे लोग खुली हुई गुमराही में हैं। (29-32)

नुबुव्वत के दसवें साल मक्का में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हालात
बेहद सख्त हो चुके थे। उस वक्त आपने मक्का से तायफ की तरफ सफर फरमाया कि शायद
आपको कुछ साथ देने वाले मिल सकें। मगर वहां के लोगों ने आपका बहुत बुरा इस्तकबाल
किया। वापसी में आप रात गुजारने के लिए नखला के मकाम पर ठहरे। यहां आप नमाज
में कुरआन की तिलावत फरमा रहे थे कि जिन्नात के एक गिरोह ने कुरआन को सुना। और
वे उसी वक्त उसके मोमिन बन गए। एक गिरोह कुरआन को रद्द कर रहा था। मगर ऐन
उसी वक्त दूसरा गिरोह कुरआन को कुबूल कर रहा था। और इतनी शिद्दत के साथ कुबूल
कर रहा था कि उसी वक्त वह उसका मुबल्लिग (प्रचारक) बन गया।

अल्लाह के दाअी की बात को रद्द करना गोया खुदा के मंसूबे को रद्द करना है। मगर
इंसान के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह खुदा के मंसूबे को रद्द कर सके। इसलिए ऐसी
कोशिश करने वाले का अंजाम सिर्फ यह होता है कि वह खुद रद्द होकर रह जाता है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْصِ بِخَلْقِهِنَّ بِقَدْرِ
عَلَىٰ أَنْ يُخَيِّئَ الْمَوْتَىٰ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ
كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا قَالُوا فَذُوقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस खुदा ने आसमानों और जमीन को पैदा किया
और वह उनके पैदा करने से नहीं थका, इस पर कुदरत रखता है कि वह मूर्तों को
जिंदा कर दे, हां वह हर चीज पर कादिर है। और जिस दिन ये इंकार करने वाले आग
के सामने लाए जाएंगे, क्या यह हकीकत नहीं है। वे कहेंगे कि हां, हमारे रब की
कसम। इर्शाद होगा फिर चखो अजाब उस इंकार के बदले जो तुम कर रहे थे।
(33-34)

जमीन व आसमान जैसी अजीम कायनात का वुजूद में आना, और फिर अरबों साल से
उसका निहायत सेहत और हमआहंगी के साथ चलते रहना यह साबित करता है कि इस
कायनात का पैदा करने वाला अजीमतरीन ताकतों का मालिक है। नीज यह कि इस कायनात
को वुजूद में लाना उसके लिए इज्ज (निर्बलता) का सबब नहीं बना। तख्लीक का अमल अगर
उसे थका देता तो तख्लीक के बाद वह इतनी सेहत के साथ चलती हुई नजर न आती।
खुदा की अजीम ताकत व कुदरत का मुजाहिदा जो कायनात की सतह पर हो रहा है वह
यह यकीन करने के लिए काफी है कि इंसानी नस्ल को दुबारा जिंदा करना और उससे उसके
आमाल का हिसाब लेना उसके लिए कुछ मुश्किल नहीं।

मौजूदा दुनिया में आदमी के सामने हकीकत आती है मगर वह उसे नहीं मानता। इसकी
वजह यह है कि मौजूदा दुनिया में हकीकत के इंकार का अंजाम फौरन सामने नहीं आता।
आखिरत में इंकार का हौलनाक अंजाम हर आदमी के सामने होगा। उस वक्त वह इतिहाई
हद तक संजीदा हो जाएगा और उस हकीकत का फौरन इक्कार कर लेगा जिसे मौजूदा दुनिया
में वह मानने के लिए तैयार न होता था।

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعِزْرِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ ۚ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ
يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّن نَّكَالٍ ۚ بَلَّغْ قَهْلُ يَهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمُ
الْفٰسِقُونَ ۝

पस तुम सब्र करो जिस तरह हिम्मत वाले पैगम्बरों ने सब्र किया। और उनके लिए जल्दी

न करो। जिस दिन ये लोग उस चीज को देखेंगे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो गोया कि वे दिन की एक घड़ी से ज्यादा नहीं रहे। यह पहुंचा देना है। पस वही लोग बर्बाद होंगे जो नाफरमानी करने वाले हैं। (35)

हक की दावत देने वाले को हमेशा सब्र की जमीन पर खड़ा होना पड़ता है। सब्र दरअसल इसका नाम है कि मदऊ (संबोधित पक्ष) की ईजारसानियों (उत्पीड़न) को दाजी यकतरफा तौर पर नजरअंदाज करे। वह मदऊ के ज़िद और इंकार के बावजूद मुसलसल उसे दावत पहुंचाता रहे। दाजी अपने मदऊ का हर हाल में खैरखाह बना रहे। चाहे मदऊ की तरफ से उसे कितनी ही ज्यादा नाखुशगवारियों का तजर्बा क्यों न हो रहा हो। यह यकतरफा सब्र इसलिए जरूरी है कि इसके बगैर मदऊ के ऊपर खुदा की हुज्जत तमाम नहीं होती।

खुदा के तमाम पैगम्बरों ने हर जमाने में इसी तरह सब्र व इस्तिकामत के साथ हक की दावत का काम किया है। आइंदा भी पैगम्बरों की नियाबत (प्रतिनिधित्व) में जो लोग हक की दावत का काम करें उन्हें इसी नमूने पर दावत का काम करना है। खुदा के यहां दाजी का मक़म सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए मुकद्दर है जो यकतरफा बर्दाश्त का हैसला दिखा सकें।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۖ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَى مُحَمَّدٍ ۖ وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۖ كَفَرَعَهُمْ سَبَاتِهِمْ ۖ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ ۖ وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَبِّهِمْ ۖ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है। जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, अल्लाह ने उनके आमाल को रायगां (अकारत) कर दिया। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए और उस चीज को माना जो मुहम्मद पर उतारा गया है, और वह हक है उनके ख की तरफ से, अल्लाह ने उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दीं और उनका हाल दुरुस्त कर दिया। यह इसलिए कि जिन लोगों ने इंकार किया उन्होंने बातिल (असत्य) की पैरवी की। और जो लोग ईमान लाए उन्होंने हक (सत्य) की पैरवी की जो उनके ख की तरफ से है। इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनकी मिसालें बयान करता है। (1-3)

कदीम अरब में जिन लोगों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंकार किया और आपकी मुख़लिफ़त की उनके आमाल जाया हो गए। इसका मतलब दूसरे लफ्ज़ों में यह है कि उन्होंने चूंकि शुऊरी सतह पर दीनदारी का सुबूत नहीं दिया इसलिए उनके वे आमाल भी बेकीमत करार पाए जो वे रिवायती दीनदारी की सतह पर अंजाम दे रहे थे।

कदीम अरब के लोग अपने आपको इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की उम्मत समझते थे। उन्हें ख़ाना काबा का मुंजिम (प्रबंधक) होने का एजाज हासिल था। उनके यहां किसी न किसी शक्ल में नमाज, रोजा, हज का रवाज भी मौजूद था। हाजियों की ख़िदमत, रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक, मेहमानों की तवाजोअ का भी उनके यहां रवाज था। ये सब काम अगरचे वे बजाहिर कर रहे थे मगर वे उनकी शुऊरी दीनदारी का हिस्सा न थे। वे महज रिवायती तौर पर उनकी ज़िंदगी का जुज बने हुए थे। इन आमाल को वे इसलिए कर रहे थे कि वे सदियों से उनके दर्मियान राइज चले आ रहे थे।

मगर वक़्त के पैगम्बर को पहचानने के लिए जरूरी था कि वे अपने शुऊर को मुतहर्रिक करें। वे जाती मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) की सतह पर उसे पाएं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ उस वक़्त कदीम रिवायात का जोर शामिल न था इसलिए आपको वही शख्स पहचान सकता था जो जाती शुऊर की सतह पर हकीकत को पहचानने की सलाहियत रखता हो। जब उन्होंने वक़्त के पैगम्बर का इंकार किया तो यह साबित हो गया कि उनकी दीनदारी महज रिवायत के तहत है न कि शुऊर के तहत। और अल्लाह को शुऊरी दीनदारी मल्लूब है न कि महज रिवायती दीनदारी।

इसके बरअक्स जो लोग वक़्त के पैगम्बर पर ईमान लाए उन्होंने यह सुबूत दिया कि वे शुऊर की सतह पर दीनदार बनने की सलाहियत रखते हैं। चुनांचे वे खुदा के यहां काबिले कुबूल और कबिले इनाम करार पाए। तारीख़ का तजर्बा बताता है कि माजी (अतीत) के जोर पर मानने वाले लोग हाल की मअरफ़त के इस्तेहान में फ़ेल हो जाते हैं। दूसरों की नजर से देखने वाले अपनी नजर से देखने में हमेशा नाकाम रहते हैं।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَضْرَبِ الرَّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوُثَاقَ ۖ وَلَمَّا مَتَّاعُوا فَوَدَّ أَحَدٌ حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَانتَصَرْنَا مِنْهُمْ وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ ۖ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَنْ يُخِلَّ أَعْمَالَهُمْ ۖ سَيَهْدِيَهُمْ وَيُصْلِحَ بَالَهُمْ ۖ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَفَهَا اللَّهُ ۝

पस जब मुंकिरों से तुम्हारा मुकाबला हो तो उनकी गर्दन मारो। यहां तक कि जब खूब

सूरह-47. मुहम्मद

1341

पारा 26

कत्त कर चुको तो उन्हें मजबूत बांध लो। फिर इसके बाद या तो एहसान करके छोड़ना है या मुआवजा लेकर, यहां तक कि जंग अपने हथियार रख दे। यह है काम। और अगर अल्लाह चाहता तो वह उनसे बदला ले लेता, मगर ताकि वह तुम लोगों को एक दूसरे से आजमाए। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएंगे, अल्लाह उनके आमाल को हरगिज जाए (नष्ट) नहीं करेगा। वह उनकी रहनुमाई फरमाएगा और उनका हाल दुरुस्त कर देगा। और उन्हें जन्नत में दाखिल करेगा जिसकी उन्हें पहचान करा दी है। (4-6)

यहां इंकार करने वालों से मुराद वे लोग हैं जो इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद ईमान नहीं लाए और मजीद यह कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खिलाफ नाहक जंग छेड़ दी और इस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिफाई (रक्षात्मक) कदम उठाने पर मजबूर कर दिया। ऐसे लोगों के बारे में हुक्म दिया गया कि जब उनसे तुम्हारी मुठभेड़ हो तो उनसे लड़कर उनका जोर तोड़ दो, ताकि वे आइंदा हक की दावत (आह्वान) की राह में रुकावट न बन सकें।

अल्लाह तआला का यह कानून रहा है कि जिन कौमों ने अपने पैगम्बरों का इंकार किया वे इतमामेहुज्जत के बाद हलाक कर दी गईं। मगर पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के सिलसिले में अल्लाह तआला को यह मल्लूब था कि आप और आपके साथियों के जरिए शिर्क का दौर खत्म किया जाए और तौहीद की बुनियाद पर एक नई तारीख बज्जद में लाई जाए। ऐसे तारीखसाज इंसानों का इंतखाब सख्ततरीन हालात ही में हो सकता था। चुनांचे मुखालिफीन की तरफ से छेड़ी हुई जंग में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों को दाखिल करके यही फायदा हासिल किया गया।

जन्नत मोमिन की एक इतिहाई मालूम चीज है। वह न सिर्फ पैगम्बर से उसकी खबर सुनता है बल्कि अपनी बढ़ी हुई मअरफत (अन्तर्ज्ञान) के जरिए वह उसका तसव्वुराती इदराक (परिकल्पना-भान) भी कर लेता है। ग़ैब में छुपी हुई जन्नत का यही गहरा इदराक है जो आदमी को यह हौसला देता है कि वह कुर्बानी की कीमत पर उसका तालिब बन सके। अगर ऐसा न हो तो कोई शख्स आज की दुनिया को कुर्बान करके कल की जन्नत का उम्मीदवार न बने।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُخْرِجْكُمْ مِّنَ الدُّنْيَا إِلَىٰ دَارٍ مُّحْسَنَةٍ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ فَلَحِطَ أَغْمَالُهُمْ ۚ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَلُهَا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُ مَوْلَىٰ الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ۚ

ع

पारा 26

1342

सूरह-47. मुहम्मद

ऐ ईमान वालो, अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे कदमों को जमा देगा। और जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए तबाही है और अल्लाह उनके आमाल को जाया कर देगा। यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारी है। पस अल्लाह ने उनके आमाल को अकारत कर दिया। क्या ये लोग मुल्क मे चले फिर नहीं कि वे उन लोगों का अंजाम देखते जो उनसे पहले गुजर चुके हैं, अल्लाह ने उन्हें उखाड़ फेंका और मुंकिरों के सामने उन्हीं की मिसालें आनी हैं। यह इस सबब से कि अल्लाह ईमान वालों का कारसाज (संरक्षक) है और मुंकिरों का कोई कारसाज नहीं। (7-11)

वाक्यात को ज़ूह में लाने वाला ख़ुदा है। मगर वह वाक्यात को असबाब के पर्दे में ज़ूह में लाता है। यही मामला दीन का भी है। अल्लाह तआला को यह मल्लूब है कि बातिल का जोर टूटे और हक को दुनिया में ग़लबा और इस्तहकाम हासिल हो। मगर इस वाक्ये को ज़ूह में लाने के लिए अल्लाह तआला को कुछ ऐसे अफ़राद दरकार हैं जो इस ख़ुदाई अमल का इंसानी पर्दा बनें। यही वह मामला है जिसे यहां ख़ुदा की नुसरत (मदद) करना कहा गया है।

जब एक गिरोह ख़ुदा की नुसरत के लिए उठता है तो वह इसी के साथ दूसरा काम यह करता है कि वह मुंकिरीन का मुंकिरीन होना साबित करता है। ख़ुदा की नुसरत करने वाले अफ़राद इतिहाई संजीदगी और ख़ैरख़ाही के साथ लोगों को ख़ुदा की तरफ बुलाते हैं। वे हर ख़िलाफे हक रक्ये से बचते हुए दीन की गवाही देते हैं। वे हक के हक हेमे को आखिरी हद तक साबितशुदा बना देते हैं। इस तरह मुंकिरीन के ऊपर वह इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) हो जाता है जो आखिरत के फैसले के लिए अल्लाह तआला को मल्लूब है।

बातिलपरस्त लाजिमन ज़े हते हैं और हकपरस्त लाजिमन उनके ऊपर ग़ालिब आते हैं बशर्ते कि हकपरस्त गिरोह उस अमल को अंजाम दे जो ख़ुदा की सुन्नत (तरीके) के मुताबिक ख़ुदा की हिमायत को हासिल करने के लिए अंजाम देना चाहिए।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۚ وَكَأَيْنَ مِنْ قَرِينَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ ۚ أَهْلَكَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۚ

बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जिन लोगों ने इंकार किया वे बरत रहे हैं और खा रहे हैं जैसे कि चौपाए खाएं, और आग उन लोगों का ठिकाना है।

सूरह-47. मुहम्मद

1343

पारा 26

और कितनी ही बस्तियां हैं जो कुव्वत (शक्ति) में तुम्हारी उस बस्ती से ज्यादा थीं जिसने तुम्हें निकाला है। हमने उन्हें हलाक कर दिया। पस कोई उनका मददगार न हुआ। (12-13)

अरब में जिन लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंकार किया उन्हें आपने यह पेशगी खबर दी कि तुम जो कुछ खा पी रहे हो तो यह मत समझो कि तुम आजाद हो। तुम पूरी तरह खुदा की गिरफ्त में हो। और इसका सबूत यह है कि अगर तुम अपने इंकार पर कायम रहे तो खुदा के कानून के मुताबिक तुम तबाह कर दिए जाओगे।

यह वाक्या ऐन फेशीनगोई के मुताबिक जुहूर में आया। तौहीद के अलमबरदार गालिब आए और जो लोग शिर्क के अलमबरदार बने हुए थे वे हमेशा के लिए नाबूद (विनष्ट) हो गए।

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ كَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ ۖ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۖ
مَّثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ
لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّن خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِلشَّرَابِ بَيِّنَةٌ وَأَنْهَارٌ مِّن عَسَلٍ مُّصَفًّى
وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۚ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ
وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ۖ

क्या वह जो अपने रब की तरफ से एक वाजेह (स्पष्ट) दलील पर है। वह उसकी तरह हो जाएगा जिसकी बदअमली उसके लिए खुशनुमा बना दी गई है और वे अपनी ख्वाहिशात (इच्छाओं) पर चल रहे हैं। जन्नत की मिसाल जिसका वादा डरने वालों से किया गया है उसकी कैफियत यह है कि उसमें नहरें हैं ऐसे पानी की जिसमें तब्दीली न होगी और नहरें होंगी दूध की जिसका मजा नहीं बदला होगा और नहरें होंगी शराब की जो पीने वालों के लिए लजीज होंगी और नहरें होंगी शहद की जो बिल्कुल साफ होगा। और उनके लिए वहां हर किस्म के फल होंगे। और उनके रब की तरफ से बख्शिश (क्षमा) होगी। क्या ये लोग उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा आग में रहेंगे और उन्हें खोलता हुआ पानी पीने के लिए दिया जाएगा, पस वह उनकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा। (14-15)

बय्यिनह (दलील) पर खड़ा होना अपनी जिंदगी की तामीर हकीकते वाक्या की बुनियाद पर करना है। इसके बरअक्स जो शख्स अहवा (अपनी ख्वाहिशात) पर खड़ा होता है वह हकीकते वाक्या से इहराफ करता है वह खुदा की दुनिया में खुदा की मर्जी के खिलाफ अपनी दुनिया बनाना चाहता है।

पारा 26

1344

सूरह-47. मुहम्मद

मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में दोनों गिरोह बजाहिर एकसां (समान) मौके पा रहे हैं। मगर आखिरत की हकीकी दुनिया में सिर्फ पहला गिरोह खुदा की अबदी नेमतों में हिस्सा पाएगा और दूसरा गिरोह हमेशा के लिए जलील और नाकाम होकर रह जाएगा।

وَمِنْهُمْ مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۚ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِندِكَ قَالُوا الَّذِينَ أُولَٰئِ الْعَالَمِ
مَاذَا قَالَ إِبْرَاهِيمَ ۖ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۖ وَالَّذِينَ
اهْتَدَوْا ۖ أَزَادَهُمْ هُدًى وَاتَّبَعُوا تَقْوَاهُمْ ۖ

और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं। यहां तक कि जब वे तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो इल्म वालों से पूछते हैं कि उन्होंने अभी क्या कहा। यही लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी। और वे अपनी ख्वाहिशों पर चलते हैं। और जिन लोगों ने हिदायत की राह इख्तियार की तो अल्लाह उन्हें और ज्यादा हिदायत देता है और उन्हें उनकी परहेजगारी (ईश-परायणता) अता करता है। (16-17)

मुनाफिक आदमी की एक पहचान यह है कि वह संजीदा मज्लिस में बैठता है तो बजाहिर बहुत बाअदब नजर आता है मगर उसका जेहन दूसरी-दूसरी चीजों में लगा रहता है। वह मज्लिस में बैठकर भी मज्लिस की बात नहीं सुन पाता। चुनांचे जब वह मज्लिस से बाहर आता है तो दूसरे असहबवे इल्म से पूछता है कि 'हजरत ने क्या फरमाया।'

यह वह कीमत है जो अपनी ख्वाहिशपरस्ती की बिना पर उन्हें अदा करनी पड़ती है। वे अपने ऊपर अपनी ख्वाहिश को गालिब कर लेते हैं। वे दलील की पैरवी करने के बजाए अपनी ख्वाहिश की पैरवी करते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि धीरे-धीरे उनके एहसासात कुंद हो जाते हैं। उनकी अक्ल इस काबिल नहीं रहती कि वह बुलन्द हकीकतों का इदराक कर सके।

इसके बरअक्स जो लोग हकीकतों को अहमियत दें, जो सच्ची दलील के आगे झुक जाएं, वे इस अमल से अपनी फिक्री सलाहियत (वैचारिक क्षमता) को जिंदा करते हैं। ऐसे लोगों की मअरफत में दिन-ब-दिन इजाफा होता रहता है। उन्हें अबदी तौर पर जुमूद नाआशना (क्रियाशील) ईमान हासिल हो जाता है।

فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۖ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا
جَاءَهُمُ ۖ ذِكْرُهَا ۖ ۝ فَأَعْلَمَ أَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ۖ وَاسْتَغْفِرُ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ۖ

ये लोग तो बस इसके मुंजिर हैं कि कियामत उन पर अचानक आ जाए तो उसकी अलामतें जाहिर हो चुकी हैं। पस जब वह आ जाएगी तो उनके लिए नसीहत हासिल करने का मौका कहाँ रहेगा। पस जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और माफ़ी मांगो अपने कुसूर के लिए और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए। और अल्लाह जानता है तुम्हारे चलने फिरने को और तुम्हारे ठिकानों को। (18-19)

जलजले के आने की फ़ैली इतिलाअ से जो शख्स चौकन्ना न हो वह गोया जलजले के आने का मुंजिर है। क्योंकि हर अगला लम्हा जलजले को उसके करीब ला रहा है। इसी तरह कियामत की चेतावनी से आदमी मुतनब्बह (सतर्क) नहीं होता मगर जब कियामत उसके सिर पर टूट पड़ेगी तो वह एतराफ करने लगेगा। मगर उस वक्त का एतराफ उसे फायदा न देगा। क्योंकि एतराफ वह है तो पर्दा उठने से पहले किया जाए। पर्दा उठने के बाद एतराफ की कोई कीमत नहीं।

इस्तिफ़ार (माफ़ी) दरअसल एहसासे इज्ज (निर्कतता-भाव) का एक इच्छा है। कियामत की हैलनाकी का यकीन और अल्लाह की क़ुदरत और उसके हर चीज से बाख़बर होने का एहसास आदमी के अंदर जो नफ़िसयाती हैजान पैदा करता है वह हर लम्हा लतीफ कलिमात में ढलता रहता है। उन्हीं कलिमात को जिक्र और दुआ और इस्तिफ़ार कहा जाता है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۚ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ ۖ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يَّتَنَبَّهُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْبَغْضَىٰ عَلَيْهِ ۖ مِنَ الْمَوْتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْصَدَقُوا ۚ اللَّهُ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتَقَطَّعُوا أَرْحَامَكُمْ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّىٰ أَبْصَارَهُمْ ۚ

और जो लोग ईमान लाए हैं वे कहते हैं कि कोई सूरह क्यों नहीं उतारी जाती। पस जब एक वाजेह सूरह उतार दी गई और उसमें जंग का भी जिक्र था तो तुमने देखा कि जिनके दिलों में बीमारी है वे तुम्हारी तरफ इस तरह देख रहे हैं जैसे किसी पर मौत छा गई हो। पस ख़राबी है उनकी। हुक्म मानना है और भली बात कहना है। पस जब मामले का कतई फैसला हो जाए तो अगर वे अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिए बहुत बेहतर होता। पस अगर तुम फिर गए तो इसके सिवा तुमसे कुछ उम्मीद नहीं कि तुम ज़मीन में फ़साद करो और आपस के रिश्तों को तोड़ दो। यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने अपनी रहमत से दूर किया, पस उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आंखों को अंधा कर दिया। (20-23)

मुनाफ़िक (पाखंडी) की पहचान यह है कि वह अल्फ़ज में सबसे आगे और अमल में सबसे पीछे हो। जिहाद से पहले वह जिहाद की बातें करे और जब जिहाद वाक़ेयतन पेश आ जाए तो वह उससे भाग खड़ा हो।

सच्चे अहले ईमान का तरीका यह है कि वह हर वक्त सुनने और मानने के लिए तैयार रहे और जब किसी सख़्ख़ इक्दाम का फैसला हो जाए तो अपने अमल से साबित कर दे कि उसने ख़ुदा को गवाह बनाकर जो अहद किया था उस अहद में वह पूरा उतरा।

मुनाफ़िक लोग जिहाद से बचने के लिए बजाहिर अमनपसंदी की बातें करते हैं। मगर अमलन सूरतेहाल यह है कि जहां उन्हें मौका मिलता है वे फौरन शर फैलाना शुरू कर देते हैं। यहां तक कि जिन मुसलमानों से उनकी कराबतें (रिश्ते-नाते) हैं उनकी मुतलक परवाह न करते हुए उनके दुश्मनों के मददगार बन जाते हैं। ऐसे लोग ख़ुदा की नजर में मलऊन हैं। मलऊन होने का मतलब यह है कि आदमी के सोचने समझने की सलाहियत उससे छिन जाए। वह आंख रखते हुए भी न देखे और कान रखते हुए भी कुछ न सुने।

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ ۚ الْقُرْآنُ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ۚ إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَخِيطًا ۚ لِيُفِضَ فِي بَعْضِ الْأُمْرِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ۚ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّيْتُمُ الْمَلَائِكَةَ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ الْبَغَاوَا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ ۚ فَاحْبِطْ أَعْمَالَهُمْ ۚ

24-28

क्या ये लोग कुरआन में ग़ौर नहीं करते या दिलों पर उनके ताले लगे हुए हैं। जो लोग पीठ फेरकर हट गए, बाद इससे कि हिदायत उन पर वाजेह हो गई, शैतान ने उन्हें फरेब दिया और अल्लाह ने उन्हें ढील दे दी। यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने उन लोगों से जो कि ख़ुदा की उतारी हुई चीज को नापसंद करते हैं, कहा कि कुछ बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे। और अल्लाह उनकी राजदारी को जानता है। पस उस वक्त क्या होगा जबकि फरिश्ते उनकी रूहे कब्ज करते होंगे, उनके मुंह और उनकी पीठों पर मारते हुए यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज की पैरवी की जो अल्लाह को गुस्सा दिलाने वाली थी और उन्होंने उसकी रिजा को नापसंद किया। पस अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए। (24-28)

कुरआन नसीहत की किताब है मगर किसी चीज से नसीहत लेने के लिए ज़रूरी है कि आदमी नसीहत के बारे में संजीदा हो। अगर कोई ग़लत जच्चा आदमी के अंदर दाख़िल होकर

सूरह-47. मुहम्मद

1347

पारा 26

उसे नसीहत के बारे में ग़ैर संजीदा बना दे तो वह कभी नसीहत से फायदा नहीं उठा सकता, चाहे नसीहत को कितना ही अच्छे अंदाज में बयान किया गया हो।

दीन का कोई ऐसा हुक्म सामने आए जिसमें आदमी को अपनी ख्वाहिशत और मफ़ादात की कुर्बानी देनी हो तो शैतान फ़ैरन आदमी को कोई झूठा उज्र समझा देता है। और मौजूदा दुनिया में मोहलते इस्तेहान की वजह से आदमी को मौका मिल जाता है कि वह इस झूठे उज्र को अमलन भी इख़्तियार कर ले। मगर यह सब कुछ सिर्फ़ चन्द दिनों तक के लिए है। मौत का वक्त आते ही सारी सूरतेहाल बिल्कुल मुख़लिफ़ हो जाएगी।

यहां निफ़क के लिए इरतिदाद (धर्म त्याग) का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है। मगर मालूम है कि मदीना के उन मुनाफ़िकों को इरतिदाद की मुकर्रह सजा नहीं दी गई। इससे मालूम हुआ कि इरतिदाद की शर्ई सजा सिर्फ़ उन लोगों के लिए है जो एलान के साथ मुरतद (दीन को छोड़ने वाले) हो जाएं। हम ऐसा नहीं कर सकते कि किसी शख़्स को बतौर ख़ुद क़रबी मुरतद करार दें और फिर उसे वह सजा देने लें जो शरीअत में मुरतदीन के लिए मुकर्र है।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَنْ لَنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ۖ وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَالْعَرَفْتَهُمْ بِسَيِّئِهِمْ ۖ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي نَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۝

जिन लोगों के दिलों में बीमारी है क्या वे ख़्याल करते हैं कि अल्लाह उनके कीने (देवों) को कभी जाहिर न करेगा। और अगर हम चाहते तो हम उनको तुम्हें दिखा देते, पस तुम उनकी अलामतों से उन्हें पहचान लेते। और तुम उनके अंदाजे कलाम से ज़रूर उन्हें पहचान लोगे। और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है। (29-30)

मुनाफ़िकीन की बीमारी यह थी कि उनके सीनों में हसद था। मुनाफ़िक मुसलमानों को अपने मुख़्तस बिरादराने दीन से यह हसद क्यों था। इसकी वजह यह थी कि इस्लाम की हर तरक्की उन्हें मुख़्तस मुसलमानों के हिस्से में जाती हुई नजर आती थी। यह चीज मुनाफ़िकीन के लिए बेहद शाक (असहनीय) थी। वे सोचते थे कि हम ऐसी मुहिम में अपना जान व माल क्यों खपाएं जिसमें दूसरों की हैसियत बढ़े, जिसमें दूसरों को बड़ाई हासिल होती हो।

मुनाफ़िकीन अपने जाहिरी रवैये में अपनी इस अंदरूनी हालत को छुपाते थे मगर समझदार लोगों के लिए वह छुपा हुआ न था। मुनाफ़िकीन का मस्नूई (बनावटी) लहजा, उनकी दर्द से ख़ाली आवाज बता देती थी कि इस्लाम से उनका तअल्लुक महज दिखावे का तअल्लुक है न कि हकीक़ी मउनीमेंकबी तअल्लुक।

पारा 26

1348

सूरह-47. मुहम्मद

وَلَتُبْلَوُنَّكُمْ حَتَّى تَعْلَمَ الْجُهْدَيْنِ مِنْكُمْ وَالضَّرِيرَيْنِ وَبَلَّوْا أَخْبَارَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحِطُّ أَعْمَالُهُمْ ۝

और हम ज़रूर तुम्हें आजमाएंगे ताकि हम उन लोगों को जान लें जो तुम में ज़िहाद करने वाले हैं और साबितकदम रहने वाले हैं और हम तुम्हारे हालात की जांच कर लें। वेशक जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की मुख़ालिफ़त की जबकि हिदायत उन पर वाजेह हो चुकी थी, वे अल्लाह को कुछ नुक़सान न पहुंचा सकेंगे। और अल्लाह उनके आमाल को ढा देगा। (31-32)

आदमी जब ईमान को लेकर खड़ा होता है तो उस पर मुख़लिफ़ हालात पेश आते हैं। ये हालात उसके ईमान का इस्तेहान हेते हैं। वे तक्वजा करते हैं कि वह कुर्बानी की कीमत पर अपने मोमिन होने का सुबूत दे। वह अपने नफ़स को कुचले। वह अपने मादूदी मफ़ादात (हितों) को नजरअंदाज करे। वह लोगों की ईज़ारसानी (उत्पीड़न) को बर्दाश्त करे। यहां तक कि जान व माल को खपाकर अपने ईमान पर कायम रहे।

मोमिन को इस किस्म के हालात में डालने के लिए ज़रूरी है कि ग़ैर मोमिनीन को खुली आजादी हासिल हो ताकि वे अहले ईमान के ख़िलाफ़ हर किस्म की कारवाइयां कर सकें। इन कारवाइयों के ज़रिए एक तरफ़ मुख़लिफ़ीन का ज़ुर्म साबितशुदा बनता है। दूसरी तरफ़ उन शदीद हालात में अहले ईमान साबितकदम रहकर दिखा देते हैं कि वे वाकई मोमिन हैं और इस काबिल हैं कि ख़ुदा की मेयारी दुनिया में बसाने के लिए उनका इतिख़ाब किया जाए।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ بَدَّلُوا دِينَهُمْ كُفْرًا ۚ فَلَنْ يُغْفَرَ اللَّهُ لَهُمْ ۖ فَلَا تَهْنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلَامِ وَأَنْتُمْ الْكَافِرُونَ ۚ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتَرَكَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ۝

ऐ ईमान वाले, अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने आमाल को बर्बाद न करो। वेशक जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका। फिर वे मुंकिर ही मर गए, अल्लाह उन्हें कभी न बख़्शेगा। पस तुम हिम्मत न हारो और सुलह की दरख़्वास्त न करो। और तुम ही ग़ालिब रहोगे। और अल्लाह तुम्हारे साथ है। और वह हरगिज तुम्हारे आमाल में कमी न करेगा। (33-35)

एक रिवायत में आता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में

कुछ मुसलमानों ने यह ख्याल जाहिर किया कि अगर वे ला इला-ह इल्लल्लाहु का इकरार कर लें तो कोई गुनाह उन्हें नुक्सान न पहुंचाएगा। इस पर यह आयत (33) उतरी। इसकी रोशनी में आयत का मतलब यह है कि आदमी को चाहिए कि वह ईमान के साथ इताअत को जमा करे। वह न सिर्फ बेजरर (सरल) अहकाम की पैरवी करे बल्कि वह उन अहकाम का भी पैरोकार बने जिनके लिए अपने नफ्स को कुचलना और अपने मफाद को खतरे में डालना पड़ता है। अगर उसने ऐसा नहीं किया तो उसके साबिका आमाल उसे कुछ फायदा नहीं देंगे।

कमजोर मुसलमानों का हाल यह होता है कि वे हक का साथ इस शर्त पर देते हैं कि वक्त के बड़ों की नाराजगी मोल न लेनी पड़े। जब वे देखते हैं कि हक का साथ देना वक्त के बड़ों को नाराज करने का सबब बन रहा है तो वे उनकी तरफ झुक जाते हैं, चाहे वे बड़े हक के मुक़िर हों और चाहे वे हक को रोकने वाले बने हुए हों।

जो लोग हक का इंकार करें और उसके मुखालिफ बनकर खड़े हो जाएं वे कभी अल्लाह की रहमत नहीं पा सकते। फिर जो लोग ऐसे मुकिरीन का साथ दें, उनका अंजाम उनसे मुखालिफ क्यों होगा।

इस्लाम में जंग भी है और सुलह भी। मगर वह जंग इस्लामी जंग नहीं जो इश्तिआल (उत्तेजना) की बिना पर लड़ी जाए। इसी तरह वह सुलह भी इस्लामी सुलह नहीं जिसका मुहरिक (प्रक) बुजदिली और कमहिम्मी हो। कामयाबी हासिल करने के लिए जरूरी है कि दोनों चीजें सोचे समझे फैसले के तहत की जाएं न कि महज जबाली रुदेअमल के तहत।

إِنَّمَا الْحَيَوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوَ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أَجْرَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ
أَمْوَالَكُمْ ۚ إِنَّ يَسْأَلَكُمْ عَنْهَا فَيُخْفِكُمْ تَبْخُلُوا وَيُخْرِجْ أَمْوَالَكُمْ ۖ هَآئِنْتُمْ
هَؤُلَاءِ تَدْعُونَ لِنُفِيقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبِمَنْ يَبْخُلُ وَمَنْ يَبْخُلْ وَإِنَّمَا
يَبْخُلُ عَنْ نَفْسِهِ ۖ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ ۚ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا
غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ۝

दुनिया की जिंदगी तो महज एक खेल तमाशा है और अगर तुम ईमान लाओ और तक्वा (ईशपरायणता) इस्तिआर करो तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे अज़्र अता करेगा और वह तुम्हारे माल तुमसे न मांगेगा। अगर वह तुमसे तुम्हारे माल तलब करे फिर आखिर तक तलब करता रहे तो तुम बुख़ल (कंजूसी) करने लगे और अल्लाह तुम्हारे कीने को जाहिर कर दे। हां, तुम वे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह की राह में खर्च करने के लिए बुलाया जाता है, पर तुम में से कुछ लोग हैं जो बुख़ल (कंजूसी) करते हैं। और जो शख्स बुख़ल करता। तो वह अपने ही से बुख़ल करता है। और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तुम मोहताज हो। और अगर तुम फिर जाओ तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी कौम ले आएगा, फिर वे तुम जैसे न होंगे। (36-38)

ईमान और तक्वे की जिंदगी इस्तिआर करने में जो चीज रुकावट बनती है वह दुनिया के फायदे और दुनिया की रौनकें हैं। आदमी जानता है कि वह कौन सा रवैया है जो आखिरत में उसे कामयाब बनाने वाला है। मगर वक्ती मस्लेहतों का ख्याल उसके ऊपर ग़ालिब आता है और वह बेराहरी की तरफ चला जाता है। हालांकि वाक्या यह है कि अल्लाह अपने बंदों के हक में बेहद महरबान है। वह कभी इंसान से इतना बड़ा मुतालबा नहीं करता जो उसके लिए नाकाबिले बर्दाश्त हो। जिसके नतीजे में यह हो कि उसका भरम खुल जाए और उसकी छुपी हुई बशरी (इंसानी) कमजोरियां लोगों के सामने आ जाएं।

इस्लाम खुदा का दीन है। मगर इसकी इशआत (प्रचार-प्रसार) और हिफाजत का काम इस आलमे असबाब में इंसानी गिरोह के जरिये अंजाम पाना है। मुसलमान यही इंसानी गिरोह हैं। मुसलमान अगर अपने फरीजे को अंजाम दे तो वे खुदा की नजर में बाकीमत ठहरेंगे। लेकर अगर वे इस फरीजे को अंजाम देने में नाकाम रहें तो अल्लाह दूसरी कौमों को ईमान की तैमिन्क देगा और उनके जरिए अपने दीन का तसलसुल बाकी रखेगा।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝
إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا ۚ لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ
نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝ وَيُصْرِكَ اللَّهُ نَصْرًا عَظِيمًا ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। बेशक हमने तुम्हें खुली फतह दे दी। ताकि अल्लाह तुम्हारी अगली और पिछली ख़ताएं माफ कर दे। और तुम्हारे ऊपर अपनी नेमत की तक्मील कर दे। और तुम्हें सीधा रास्ता दिखाए। और तुम्हें जबरदस्त मदद अता करे। (1-3)

सन् 6 हि० में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने असहाब के साथ मदीना से मक्का के लिए रवाना हुए ताकि वहां उमरा अदा कर सकें। आप हुदैबिया के मकाम पर पहुंचे थे कि मक्का के मुश्रिकीन ने आगे बढ़कर आपको रोक दिया और कहा कि हम आपको मक्का में दाखिल नहीं होने देंगे। इसके बाद बातचीत शुरू हुई जिसके नतीजे में फरीकैन (पक्षों) के दर्मियान एक मुआहिदा सुलह करार पाया।

यह मुआहिदा बजाहिर यकतरफा तौर पर मुश्रिकीन की शराइत पर हुआ था। असहाबे रसूल उससे सख़्त कुबीदाखातिर (हताश) थे। वे इसे जिल्लत की सुलह समझते थे। मगर आप हुदैबिया से वापस होकर अभी रास्ते ही में थे कि यह आयत उतरी 'हमने तुम्हें खुली फतह

दे दी' इसकी वजह यह थी कि इस मुआहिदे के तहत यह करार पाया था कि दस साल तक मुसलमानों और मुश्रीकों के दरमियान लड़ाई नहीं होगी। लड़ाई का बंद होना दरअसल दावत का दरवाजा खुलने के हममअना था। हिजरत के बाद मुसलसल जंगी हालत के नतीजे में दावत का काम रुक गया था। अब जंगबंदी ने दोनों फरीकों के दरमियान खुले तबादले ख्याल की फज्र पैदा कर दी।

इस तरह इस मुआहिदे ने मैदान मुक़बले को बदल दिया। पहले दोनों फरीकों का मुक़बला जंग के मैदान में होता था जिसमें फरीके सानी (प्रतिपक्षी) बरतर हैसियत रखता था। अब मुक़बला नजरिये के मैदान में आ गया। और नजरिये के मैदान में शिक के मुक़बले में तौहीद को वाजेह तौर पर बरतर हैसियत हासिल थी। यही इस मामले में 'सीधा रास्ता' था यानी वह रास्ता जिसमें तौहीद के अलमबरदारों के लिए फतह को यकीनी बनाया।

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَرُدُّوا إِلَيْنَا مَعْرَانَهُمْ ۖ وَلَهُ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ لِيَدْخُلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَيُكَفِّرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ۝ وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ ۖ وَالْمُنَافِقَاتِ ۖ وَالْمُشْرِكِينَ ۖ وَالْمُشْرِكَاتِ ۖ الظَّالِمِينَ ۖ وَاللَّهُ ظَنُّ السَّوْءِ ۖ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

वही है जिसने मोमिनों के दिल में इत्मीनान उतारा ताकि उनके ईमान के साथ उनका ईमान और बढ़ जाए। और आसमानों और जमीन की फौजें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। ताकि अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे बागों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे। और ताकि उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दे। और यह अल्लाह के नजदीक बड़े कामयाबी है। और ताकि अल्लाह मुनाफिक (पाखंडी) मर्दों और मुनाफिक औरतों को और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को अजाब दे जो अल्लाह के साथ बुरे गुमान रखते थे। बुराई की गर्दिश उन्हीं पर है। और उन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ और उन पर उसने लानत की। और उनके लिए उसने जहन्नम तैयार कर रखी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। और आसमानों और जमीन की फौजें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (4-7)

यहां 'सकीनत' से मुराद इश्तिआल (उत्तेजना) के बावजूद मुशतइल (उत्तेजित) न होना है। हुदैबिया के सफर में मुखालिफीने इस्लाम ने तरह-तरह से मुसलमानों को इश्तिआल दिलाने की कोशिश की ताकि वे मुशतइल होकर कोई ऐसी कार्रवाई करें जिसके बाद उनके खिलाफ जारिहियत का जवाज मिल जाए। मगर मुसलमान हर इश्तिआल को यकतरफ़ा तौर पर बर्दाश्त करते रहे। वे आखिरी हद तक एराज की पॉलिसी पर कायम रहे।

खुदा चाहे तो अपनी बरहिरास्त कुव्वत से बातिल को ज़र कर दे। और हक को ग़लबा अता फरमाए। फिर खुदा क्यों ऐसा करता है कि वह 'सुलह हुदैबिया' जैसे हालात में डाल कर अहले ईमान को उनका सफर कराता है। इसका मक़सद ईमान वालों के ईमान में इज़ाफ़ा है। आदमी जब अपने अंदर इंतक़ाम की नपिसयात को दबाए और एक सरक़श क़ौम से इसलिए सुलह कर ले कि हक की दावत का तक्काज यही है तो वह अपने शुऊरी फैसले के तहत वह काम करता है जिसे करने के लिए उसका दिल राजी न था। इस तरह वह अपने शुऊरी ईमान को बढ़ाता है। वह अपने आपको ऐसी रब्बानी कैफियत का महबित (उतरने की जगह) बनाता है जिसे किसी और तदबीर से हासिल नहीं किया जा सकता। फिर इस अमल का यह फायदा भी है कि इसके जरिए से जन्नत वाले लोग अलग हो जाते हैं और जहन्नम वाले लोग अलग।

إِنَّا أَوْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۖ لَتُؤْمِنُنَّوْا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ ۖ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ ۖ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۖ فَمَنْ تَكَثَّرَ فَأْتِمَّ بَيْنَكُمْ عَلَى نَفْسِهِ ۚ وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ فَسَيُؤْتِيَهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

बेशक हमने तुम्हें गवाही देने वाला और बशाारत (शुभ-सूचना) देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसकी ताजीम (सम्मान) करो। और तुम अल्लाह की तस्बीह करो सुबह व शाम। जो लोग तुमसे बैअत (प्रतिज्ञा) करते हैं वे दरहकीक़त अल्लाह से बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है। फिर जो शख्स उसे तोड़ेगा उसके तोड़ने का ववाल उसी पर पड़ेगा। और जो शख्स उस अहद (वचन) को पूरा करेगा जो उसने अल्लाह से किया है तो अल्लाह उसे बड़ा अज़्र अता फरमाएगा। (8-10)

शाह वलीउल्लाह साहब ने शाहिद का तर्जुमा इश्तारे हक कुन्दि (हक का इश्हार करने वाला) किया है। यही इस लफ्ज का सहीतरीन मफहूम है। पैगम्बर का अस्ल काम यह होता है कि वह हकीक़त का एतान व इश्हार कर दे। वह वाजेह तौर पर बता दे कि मौत के बाद की अबदी जिंदगी में किन लोगों के लिए खुदा का इनाम है और किन लोगों के लिए खुदा की सज़ा।

ऐसे एक शाहिदे हक का खड़ा होना उसके मुखातबीन के लिए सबसे ज्यादा सख्त इस्तेहान होता है। उन्हें एक बशर की आवाज में खुदा की आवाज को सुनना पड़ता है। एक बजाहिर इंसान को खुदा के नुमाइंदे के रूप में देखना पड़ता है। एक इंसान के हाथ में अपना हाथ देते हुए यह समझना पड़ता है कि वे अपना हाथ खुदा के हाथ में दे रहे हैं। जो लोग इस आला मअरफत का सुबूत दें उनके लिए खुदा के यहां बहुत बड़ा अज्र है और जो लोग इस इस्तेहान में नाकाम रहें उनके लिए सख्ततरीन सजा।

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلْفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَعَلْنَا أَمْوَالَنَا وَهَلُونَا وَاسْتَغْفِرُكَ
يَقُولُونَ يَا سِنَّتَهُمْ تَالَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
إِنْ أَرَادَكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ مَتَّعِيًا ۖ بَلْ
ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَتَقَلَّبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَى أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزِينَ ذَلِكَ فِي
قُلُوبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَ السَّوءِ ۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ۖ وَمَنْ لَمْ يُؤْمَرْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۖ وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعْزِزُ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيُعِزِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

जो देहाती पीछे रह गए वे अब तुमसे कहेंगे कि हमें हमारे अमवाल (धन-सम्पत्ति) और हमारे बाल बच्चों ने मशगूल रखा, पस आप हमारे लिए माफ़ी की दुआ फरमाएं। यह अपनी जवानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है। तुम कहो कि कौन है जो अल्लाह के सामने तुम्हारे लिए कुछ इस्तिथार रखता हो। अगर वह तुम्हें कोई नुस्सान या नफा पहुंचाना चाहे। बल्कि अल्लाह उससे बाख़बर है जो तुम कर रहे हो। बल्कि तुमने यह गुमान किया कि रसूल और मोमिनीन कभी अपने घर वालों की तरफ लौटकर न आएंगे। और यह ख़्याल तुम्हारे दिलों को बहुत भला नजर आया और तुमने बहुत बुरे गुमान किए। और तुम बर्बाद होने वाले लोग हो गए। और जो ईमान न लाया अल्लाह पर और उसके रसूल पर तो हमने ऐसे मुंकिरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। और आसमानों और जमीन की वादशाही अल्लाह ही की है। वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अजाब दे। और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (11-14)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना में ख़्वाब देखा था कि आप मक्का का सफर बराए उमरा कर रहे हैं। उसके मुताबिक आप असहाब (साथियों) के साथ मक्का के लिए रवाना हुए। मगर उस वक्त हालात बेहद ख़राब थे। शदीद अंदेशा था कि

कुैश से टकराव हो और मुसलमान बुरी तरह मारे जाएं। चुनांचे मक्का के करीब पहुंच कर कुैश ने मुसलमानों की जमाअत पर पत्थर फेंके और तरह-तरह से छेड़ा ताकि वे मुशतइल (उत्तेजित) होकर लड़ने लगें। और कुैश को उनके ख़िलाफ़ जारिहियत का मौख़र मिले। मगर मुसलमानों के यकतरफ़ सन्न व एराज ने इसका मौख़र आने नहीं दिया।

अतराफ़ मदीना के बहुत से कमजोर मुसलमान इसी अंदेशे की बिना पर सफर में शरीक नहीं हुए थे। जब आप बहिफ़ाजत वापस आ गए तो ये लोग आपके पास अपनी वफ़ादारी जाहिर करने के लिए आए। और आपसे माफ़ी मांगने लगे। मगर उन्हें माफ़ी नहीं दी गई। इसकी वजह यह थी कि उनका उज़्र झूठा उज़्र था न कि सच्चा उज़्र। अल्लाह के यहां हमेशा सच्चा उज़्र कबिले कुबूल होता है और झूठा उज़्र हमेशा नाकबिले कुबूल।

उन लोगों का खुदा के रसूल के साथ सफर में शरीक न होना बेयकीनी की वजह से था न कि किसी वाकई उज़्र की बिना पर। वे समझते थे कि ऐसे पुरख़तर सफर से दूर रहकर वे अपने मफ़दात को महफूज़ कर रहे हैं। उन्हें मालूम न था कि नफ़ और नुस्सान का मालिक खुदा है। अगर खुदा न बचाए तो किसी की हिफ़ाजती तदवीरें उसे बचाने वाली नहीं बन सकतीं। ऐसे लोगों के लिए दुनिया में भी बर्बादी है और आख़िरत में भी बर्बादी।

سَيَقُولُ الْمُخَلْفُونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلَى مَغَائِرِمْ لِتَأْخُذُوا هَٰذِرُونَ أَنْتُمْ يُرِيدُونَ
أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللَّهِ قُلْ لَنْ تَتَّعِبُونَا كَذِبًا ۚ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلِ فَسَيَقُولُونَ بَلْ
تَحْسَدُونََنَا ۖ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

जब तुम ग़नीमतें लेने के लिए चलोगे तो पीछे रह जाने वाले लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो। वे चाहते हैं कि अल्लाह की बात को बदल दें। कहो कि तुम हरगिज हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह पहले ही यह फरमा चुका है। तो वे कहेंगे बल्कि तुम लोग हमसे हसद करते हो। बल्कि यही लोग बहुत कम समझते हैं। (15)

सुलह हुदैबिया से पहले यहूद मुसलमानों की दुश्मनी में बहुत जरी थे। क्योंकि इससे पहले उन्हें इस मामले में कुैश का पूरा तआवुन हासिल था। हुदैबिया में कुैश से ना जंग मुआहिदा ने यहूद को कुैश से काट दिया। इसके बाद वे अकेले रह गए। इससे ख़ैबर, तेमा, फिदक वगैरह के यहूदियों के हौसले टूट गए। चुनांचे सुलह के तीन महीने बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर पर चढ़ाई की तो वहां के यहूद ने लड़े भिड़े बगैर हथियार डाल दिए और उनके कसीर अमवाल (विपुल धन) मुसलमानों को ग़नीमत में मिले।

कमजोर ईमान के लोग जो हुदैबिया के सफर को पुरख़तर समझ कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नहीं गए थे, अब उन्होंने चाहा कि वे यहूदियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई में शरीक हों और माले ग़नीमत में अपना हिस्सा हासिल करें। मगर उन्हें साथ जाने से रोक दिया गया। खुदा का कानून यह है कि जो ख़तरा मोल ले वह नफ़ा हासिल करे।

आदमी जब खतरा मोल लिए बगैर हासिल करना चाहे तो गोया वह कानून इलाही को बदल देना चाहता है। मगर इस दुनिया में खुदा के कानून को बदलना किसी के लिए मुमकिन नहीं।

قُلْ لِلْمُخَافِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سُنْدُ عَوْنٍ إِلَى قَوْمِهِ أُولَئِكَ شَدِيدُ
تُقَاتِهِمْ أَوْ يُسْلِمُونَ فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا وَإِنْ تَوَلَّوْا كَمَا
تَوَلَّيْتُمْ مِّن قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى
الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمُرِيضِ حَرَجٌ ۖ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ
تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَنْ يَتَوَلَّ يَُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

وَلَا عَلَى

पीछे रहने वाले देहातियों से कहो कि अनकरीब तुम ऐसे लोगों की तरफ बुलाए जाओगे जो बड़े जोरआवर हैं, तुम उनसे लड़ोगे या वे इस्लाम लाएंगे। पस अगर तुम हुक्म मानोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज्र देगा और अगर तुम रूगदानी (अवहेलना) करोगे जैसा कि तुम इससे पहले रूगदानी कर चुके हो तो वह तुम्हें दर्दनाक अजाब देगा। न अंधे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न बीमार पर कोई गुनाह है। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करेगा उसे अल्लाह ऐसे बारां में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो शख्स रूगदानी करेगा उसे वह दर्दनाक अजाब देगा। (16-17)

जिन लोगों ने हुदैबिया (6 हि०) के मौके पर कमजोरी दिखाई थी वे उसके नतीजे में मिलने वाले इनाम से तो महरूम रहे। मगर उनके लिए दरवाजा अब भी बंद न था। क्योंकि तौहीद की मुहिम को अभी दूसरे बड़े-बड़े मअरके पेश आने बाकी थे। फरमाया गया कि अगर तुमने आइंदा पेश आने वाले इन मौकों पर कुर्बानी का सुबूत दिया तो दुबारा तुम खुदा की रहमतों के मुस्तहिक हो जाओगे।

इस क्रिम का इम्तेहान आदमी के मोमिन या मुनाफिक होने का फैसला करता है। इससे मुस्तसना (अपवाद) सिर्फ वे लोग हैं जिन्हें कोई वाकई उज़्र लाहिक हो। मजबूराना कोताही को अल्लाह माफ फरमा देता है। मगर जो कोताही मजबूरी के बगैर की जाए वह अल्लाह के यहां कबिले माफी नहीं।

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي
قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ۝ وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً
يَأْخُذُونَهَا ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ وَعَدَ اللَّهُ الْمُغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا

فَعَجَلَ لَكُمْ هَذِهِ وَكَفَتْ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ آيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ
صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝ وَأُخْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

अल्लाह ईमान वालों से राजी हो गया जबकि वे तुमसे दरख्त के नीचे बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे, अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था। पस उसने उन पर सकीनत (शान्ति) नाजिल फरमाई और उन्हें इनाम में एक करीबी फतह दे दी। और बहुत सी ग़नीमतें भी जिन्हें वे हासिल करेंगे। और अल्लाह जबरदस्त है, हियमत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। और अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिन्हें तुम लोग, पस यह उसने तुम्हें फौरी तौर पर दे दिया। और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए और ताकि अहले ईमान के लिए यह एक निशानी बन जाए। और ताकि वह तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाए। और एक फतह और भी है जिस पर तुम अभी कादिर नहीं हुए। अल्लाह ने उसका इहाता (आच्छादन) कर रखा है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (18-21)

हुदैबिया के सफर में एक मौके पर यह ख़बर फैली कि कुैश ने हज़रत उस्मान को कल कर दिया जो उनके यहां रसूलुल्लाह के सफीर (संदेशवाहक) के तौर पर गए थे। यह एक जारिहियत का मामला था। चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कीकर के एक दरख्त के नीचे बैठकर अपने चौदह सौ असहाब से यह बैअत ली कि वे मर जाएंगे मगर दुश्मन को पीठ नहीं दिखाएंगे। इस्लाम की तारीख में इस बैअत का नाम बैअते रिजवान है।

यह बैअत जिस मकाम पर ली गई वह मदीना से ढाई सौ मील और मक्का से सिर्फ बारह मील के फासले पर था। गोया मुसलमान अपने मर्कज से बहुत दूर थे और कुैश अपने मर्कज से बहुत करीब। मुसलमान उमरे की नियत से निकले थे। इसलिए उनके पास महज सफरी सामान था, जबकि कुैश हर क्रिम के जंगी सामान से मुसल्लह थे। ऐसे नाजुक मौके पर यह सिर्फ लोगों का जच्बए इख़लास (निष्ठा-भाव) था जिसने उन्हें आमादा किया कि वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ दें। क्योंकि कोई जाहिरी दबाव वहां सिर से मौजूद ही न था।

‘अल्लाह ने उनके दिलों का हाल जाना और सकीनत नाजिल फरमाई’ इससे मुराद वह रंज व इजतिराब (बेचैनी) है जो हुदैबिया की बजाहिर यकतरफा सुलह से सहाबा के दिलों में पैदा हुआ था। ताहम उन्होंने खुदा के इस हुक्म को सत्र व सुकून के साथ कुबूल कर लिया। इसके नतीजे में चन्द माह बाद ही उसके फायदे जाहिर होना शुरू हो गए। इस मुआहिदे ने कुैश को यहूद के महाज से अलग कर दिया और इस तरह यहूद को मुख़बर करना आसान हो गया। जंगी हालात ख़त्म होने की वजह से इस्लाम की इशाअत बहुत तेजी से बढ़ी, यहां

तक कि खुद कुरैश को दावत की राह से मुसख़्खर (विजित) कर लिया गया जिन्हें जंग की राह से मुसख़्खर करना मुश्किल बना हुआ था।

وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ سُنَّةَ
اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ وَلَكِنْ تَحْدِثُ سُنَّةَ اللَّهِ تَتَّبِدُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي كَفَّ
أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّيَدُوا بِكُمْ عَصَافُهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۝ وَ
كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝

और अगर ये मुंकिर लोग तुमसे लड़ते तो जरूर पीठ फेरकर भागते, फिर वे न कोई हिमायती पाते और न मददगार। यह अल्लाह की सुन्नत (तरीका) है जो पहले से चली आ रही है। और तुम अल्लाह की सुन्नत में कोई तब्दीली न पाओगे। और वही है जिसने मक्का की वादी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए। बाद इसके कि तुम्हें उन पर काबू दे दिया था। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है। (22-24)

पैगम्बर के मुखातबीने अब्बल के लिए खुदा का कानून यह है कि उनके इंकार के बाद वह उन्हें हलाक कर देता है। हुदैबिया के मौके पर कुरैश का इंकार आखिरी तौर पर सामने आ गया था। ऐसी हालत में अगर जंग की नौबत आती तो मुसलमानों की तक्वियत (सशक्तता) के लिए खुदा के फरिश्ते उतरते और वे मुसलमानों का साथ देकर उनके दुश्मनों का खात्मा कर देते।

मगर मुशिरकीन के सिलसिले में अल्लाह की मस्लेहत यह थी कि उन्हें हलाक न किया जाए। बल्कि उनकी ग़ैर मामूली इंसानी सलाहियों को इस्लाम के मकसद के लिए इस्तेमाल किया जाए। इसलिए अल्लाह तआला ने अपने पैगम्बर को नाजंग मुआहिदे की तरफ रहनुमाई फरमाई।

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ
حَجَّكُمْ وَلَوْلَا رِجَالُ الْمُؤْمِنُونَ وَالنِّسَاءُ الْمُؤْمِنَاتُ لَمْ تَغْلِبُوهُمْ أَنْ تَطْوَؤُهُمْ
فَتُصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ لِيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ
لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

वही लोग हैं जिन्होंने कुफ्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका और कुर्बानी के जानवरों को भी रोके रखा कि वे अपनी जगह पर न पहुंचें। और अगर (मक्का में) बहुत से मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें न होतीं जिन्हें तुम लाइल्मी में पीस डालते, फिर उनके कारण तुम पर बेखबरी में इल्जाम आता, ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत

में दाखिल करे। और अगर वे लोग अलग हो गए होते तो उनमें जो मुंकिर थे उन्हें हम दर्दनाक सजा देते। (25)

कुरैश के सरदारों ने पैगम्बर के खिलाफ अपनी दुश्मनाना हरकतों से अपने आपको अजाब का मुस्तहिक बना लिया था और इस काबिल बना लिया था कि उनसे जंग की जाए। मगर एक अजीमतर मस्लेहत की खातिर उनसे जंग के बजाए सुलह कर ली गई। वह मस्लेहत यह थी कि इस वक़्त कुरैश की जमाअत में बहुत से दूसरे लोग भी थे जो या तो अपने दिल में शिर्क से तौबा करके तौहीद पर ईमान ला चुके थे या ऐसे लोग थे जिनकी सालिहियत (सज्जनता) की बिना पर यकीनी था कि हालात के मोअतदिल (नॉर्मल) होते ही वे इस्लाम कुबूल कर लेंगे। इसलिए अल्लाह तआला ने दोनों फरीकों के दर्मियान जंग न होने दी। ताकि वे लोग मोमिन बनकर दुनिया में अपना इस्लामी हिस्सा अदा करें और आखिरत में खुदा का इनाम हासिल करें। अल्लाह की नजर में हर दूसरी मस्लेहत के मुकाबले में दावत की मस्लेहत ज्यादा अहमियत रखती है।

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ الْحَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ
عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۝
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

जब इंकार करने वालों ने अपने दिलों में हमिय्यत (हठ) पैदा की, जाहिलियत की हमिय्यत, फिर अल्लाह ने अपनी तरफ से सकीनत (शांति) नाजिल फरमाई अपने रसूल पर और ईमान वालों पर, और अल्लाह ने उन्हें तकवा (ईशपरायणता) की बात पर जमाए रखा और वे उसके ज्यादा हकदार और उसके अहल थे। और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (26)

जिस आदमी के अंदर अल्लाह का डर पैदा हो जाए उसके दिल से एक अल्लाह के सिवा हर दूसरी चीज की अहमियत निकल जाती है। वह सिर्फ एक अल्लाह को सारी अहमियत देने लगता है। हुदैबिया का मौका सहाबा के लिए इसी किस्म का एक शदीद इम्तेहान था जिसमें वे पूरे उतरे। इस मौके पर फरीके सानी (प्रतिपक्ष) ने जाहिलाना ज़िद और कैमी अखियत का जबरदस्त मुजाहिरा किया। मगर सहाबा हर चीज को खुदा के खाने में डालते चले गए। उनके मुतक्रियाना मिजाज ने उन्हें इस सख्त इम्तेहान में जवाबी ज़िद और जवाबी अखियत से बचाया। वे मुसलसल इश्तिआलअंगेजी के बावजूद आखिर वक़्त तक मुशतइल नहीं हुए।

لَقَدْ صَدَّقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الْوَيْيَا الْحَقَّ لَتَدْخُلَنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ
اللَّهُ أَمِينِينَ مُخَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ
مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ۝

सूरह-48. अल-फतह

1359

पारा 26

वेशक अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख़ाब दिखाया जो वाक्या के अनुसार है। वेशक अल्लाह ने चाहा तो तुम मस्जिदे हराम में जरूर दाखिल होगे, अमन के साथ, बाल मूंडते हुए अपने सरों पर और कतरते हुए, तुम्हें कोई अंदेशा न होगा। पस अल्लाह ने वह बात जानी जो तुमने नहीं जानी, पस इससे पहले उसने एक फतह (विजय) दे दी। (27)

हुदैबिया का सफर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक ख़ाब पर हुआ था। आपने मदीना में ख़ाब देखा कि आप मक्का पहुंच कर उमरा अदा फरमा रहे हैं। इस ख़ाब को लोगों ने खुदा की बिशारत समझा और मदीना से मक्का के लिए रवाना हुए। मगर हुदैबिया में क़ौश ने रोका और बिलआखिर उमरा अदा किए बग़ैर लोगों को वापस आना पड़ा। इससे कुछ लोगों को ख़्याल हुआ कि क्या पैगम्बर का ख़ाब सच्चा न था। मगर यह महज शुभव था। क्योंकि ख़ाब में यह सराहत न थी कि उमरा इसी साल होगा। चुनांचे खुद मुआहिदे की शराइत के मुताबिक अगले साल जिकअदह सन् 7 हि० में यह उमरा पूरे अमन व अमान के साथ अदा किया गया। इस उमरे को इस्लामी तारीख में उमरतुल कजा कहा जाता है।

इस साल उमरा का इल्लिवा (स्थगन) एक अजीम मस्लेहत की कीमत पर हुआ था। यह मस्लेहत कि इसके जरिए क़ौश से दस साल का नाजंग मुआहिदा तै पाया और नतीजतन दावत के काम के लिए मुवाफ़िक फजा पैदा हुई। यह खुद एक फतह थी। क्योंकि इसके जरिए से अलमबरदारों शिर्क (बहुदेववाद के ध्वजावाहकों) के ऊपर आखिरी और कुल्ली फतह का दरवाजा खुला।

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ

شَهِيدًا ۝

और अल्लाह ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ भेजा ताकि वह इसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे। और अल्लाह काफी गवाह है। (28)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो हैसियतें थीं। एक यह कि आप पैगम्बर थे। दूसरे यह कि आप पैगम्बर आखिरुज्जमां (अंतिम पैगम्बर) थे। आपके बाद कोई और पैगम्बर आने वाला नहीं। पहली हैसियत के एतबार से आपको भी वही काम करना था जो तमाम पैगम्बरों ने किया, यानी तौहीद का एलान और आखिरत का इंजार व तबशीर (डरावा और खुशख़बरी)

दूसरी हैसियत का मामला मुख़लिफ था। दूसरी हैसियत के एतबार से आपके जरिए वे तारीख़ी हालात पैदा करना मलूब था जो किताबे इलाही और सुन्नते नबी की हिफ़ाजत की जमानत बन जाएं। ताकि दुबारा वह ख़ला (रिक्तता) पैदा न हो जिसके नतीजे में पैगम्बर भेजना जरूरी हो जाता है। इस दूसरे पहलू का तक्वाज था कि आपकी दावत सिर्फ 'एलान'

पारा 26

1360

सूरह-48. अल-फतह

पर ख़त्म न हो बल्कि वह 'इक़िलाब' तक पहुंचे। इक़िलाब से मुराद आलमी तारीख में वह तब्दीली पैदा करना है जिसके बाद वे हालात हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएं जिनकी वजह से बार-बार खुदा की हिदायत मादूम (विलुप्त) या तब्दील हो गई और इसकी जरूरत पेश आई कि नया पैगम्बर आकर दुबारा हिदायत को असली सूरत में ज़िंदा करे।

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا
سُجَّدًا يُبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ
ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ
فَأَسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَى عَلَى سَوْقِهِ يُجْهَبُ الزَّرْعُ لِيَغْضِبَ بِهِمُ الْكُفَّارُ وَعَدَّ اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वे मुंकिरों पर सख़्त हैं और आपस में महरबान हैं तुम उन्हें रुकूअ में और सज्दे में देखोगे, वे अल्लाह का फज़ल और उसकी रिजामंदी की तलब में लगे रहते हैं। उनकी निशानी उनके चेहरों पर है सज्दे के असर से, उनकी यह मिसाल तौरात में है। और इंजील में उनकी मिसाल यह है कि जैसे खेती, उसने अपना अंकुर निकाला, फिर उसे मजबूत किया, फिर वह और मोटा हुआ, फिर अपने तने पर खड़ा हो गया, वह किसानों को भला लगता है ताकि उनसे मुंकिरों को जलाए। उनमें से जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किया अल्लाह ने उनसे माफी का और बड़े सवाब का वादा किया है। (29)

पैगम्बरे इस्लाम को एक अजीम तारीख़ी किरदार अदा करना था जिसे कुरआन में इज़्हारे दीन कहा गया है। इस तारीख़ी किरदार के लिए आपको आला इंसानों की एक जमाअत दरकार थी। यह जमाअत हजरत इस्माईल को अरब के सहारा में आबाद करके ढाई हजार साल के अंदर तैयार की गई। यह एक हकीकत है कि बनू इस्माईल का यह गिरोह तारीख़ का जानदारतरीन गिरोह था। उनकी यह बिलकुवह (Potential) सलाहियत जब कुरआन से फैज्याब हुई तो प्रेमेसर मारगोलेथ के अल्फ़ाज़ में अरब की यह कैम हीरोज़ (नायकों) की एक कैम (A nation of heroes) में तब्दील हो गई। इस गिरोह की अहमियत खुदा की नज़र में इतनी ज्यादा थी कि उनके बारे में उसने पेशगी तौर पर अपने पैगम्बरों को बाख़बर कर दिया था। चुनांचे तौरात में उनकी इफ़िरादी (व्यक्तिगत) ख़ुसूसियत दर्ज कर दी गई थी और इंजील में उनकी इज्तिमाई (सामूहिक) ख़ुसूसियत।

इस गिरोह के फ़र्द-फ़र्द की यह ख़ुसूसियत बताई कि वे मुंकिरों के लिए सख़्त और मोमिनों के लिए नर्म हैं। यानी उनका रवैया उसूल के तहत मुतअय्यन होता है न कि महज

ख्वाहिशात और जच्चात के तहत। शाह अब्दुल कादिर साहब इसकी तशरीह में लिखते हैं 'जो तुंदी और नर्मी अपनी खू (स्वभाव) हो वह सब जगह बराबर चले और जो ईमान से संवर कर आए वह तुंदी अपनी जगह और नर्मी अपनी जगह' इसी तरह उनके अफराद का मिजाज यह है कि वे खुदा के आगे झुकने वाले और उसकी इबादत और जिक्र में लगे रहने वाले हैं। खुदा की तरफ उनकी तवज्जोह इतनी बढ़ी हुई है कि उसका निशान उनके चेहरों पर नुमायां हो रहा है। असहाबे रसूल की ये सिफात इस तफसील के साथ मौजूदा मुहरफ (परिवर्तित) तौरात में नहीं मिलतीं। ताहम किताब इस्तसना (बाब 33) में कुदसियों (Saints) कालमअभी तक मौजूद है।

अलबत्ता इंजील की पेशीनगोई आज भी मरकिस (बाब 4) और मत्ता (बाब 13) में मौजूद है। यह तमसील की जवान में इस बात का एलान है कि इस्लाम की दावत एक पौधे की तरह मक्का से शुरू होगी। फिर वह बढ़ते-बढ़ते एक ताकतवर दरख्त बन जाएगी। यहां तक कि उसका इस्तहकाम इस दर्जे को पहुंच जाएगा कि अहले हक उसे देखकर खुश होंगे और अहले बातिल गैज व हसद में मुत्तिला होंगे कि वे चाहने के बावजूद उसका कुछ बिगाड़ नहीं सके।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْصُرُوا بِيَدِكُم مَّا بَيْنَ يَدَيْ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

रसूल की राय से अपनी राय को ऊपर करना हराम है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिंदगी में इसकी सूरत यह थी कि मज्लिस में गुफ्तगू करते हुए कोई बढ़-बढ़कर बातें करे, वह आपकी बात पर अपनी बात को मुकद्दम करना चाहे। बाद के जमाने में इसका मतलब यह है कि आदमी खुदा व रसूल की दी हुई हिदायत से आजाद होकर अपनी राय कायम करने लगे।

इस किस्म की गफ़लत हमेशा इसलिए होती है कि आदमी यह भूल जाता है कि अल्लाह उसके ऊपर निगरां है। अगर वह जाने कि उसके मुंह से निकली हुई आवाज इंसानों तक पहुंचने से पहले अल्लाह तक पहुंच रही है तो आदमी की जवान रुक जाए, वह बोलने से

ज्यादा चुप रहने को अपने लिए पसंद करने लगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَعْصُونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

ऐ ईमान वालो, तुम अपनी आवाजें पैगम्बर की आवाज से ऊपर मत करो और न उसे इस तरह आवाज देकर पुकारो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को पुकारते हो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आमांल बर्बाद हो जाएं और तुम्हें खबर भी न हो। जो लोग अल्लाह के रसूल के आगे अपनी आवाजें पस्त रखते हैं वही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक्वे (ईशपरायणता) के लिए जांच लिया है। उनके लिए माफी है और बड़ा सवाब है। जो लोग तुम्हें हुज्रों कमरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अक्सर समझ नहीं रखते। और अगर वे सब करते यहां तक कि तुम खुद उनके पास निकल कर आ जाओ तो यह उनके लिए बेहतर होता। और अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। (2-5)

अतराफे मदीना के देहाती कबीले शुऊरी एतबार से ज्यादा पुख्या न थे। उनके सरदारों का हाल यह था कि वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में आते तो आपको मुखातब करते हुए या रसूलल्लाह कहने के बजाए या मुहम्मद कहते। उनकी गुफ्तगू मुतवाजआना (विनम्र शालीन) न होती बल्कि मुतकब्बिराना (धमडपूरी) होती। इससे उन्हें मना किया गया। रसूल दुनिया में खुदा का नुमाइंदा होता है। उसके सामने इस तरह की नाशाइस्तगी (अभद्रता) खुदा के सामने नाशाइस्तगी है जो कि आदमी को बिल्कुल बेकीमत बना देने वाली है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात के बाद आपकी लाई हुई हिदायत दुनिया में आपकी कायम मकाम (स्थानापन्न) है। अब इस हिदायत के साथ वही ताबेदारी मलूब है जो ताबेदारी रसूल की जिंदगी में रसूल की जात के साथ मलूब होती थी।

अल्लाह का डर आदमी को संजीदा बनाता है। किसी के दिल में अगर वाकेयतन अल्लाह का डर पैदा हो जाए तो वह खुद अपने मिजाज के तहत वे बातें जान लेगा जिसे दूसरे लोग बताने के बाद भी नहीं जानते।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا أَنْ تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ لَوْ يُبِغِضُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّشِدُونَ ۖ فَضَلَا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَ ٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

ऐ ईमान वालो, अगर कोई फासिक (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास ख़बर लाए तो तुम अच्छी तरह तहकीक कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को नादानी से कोई नुकसान पहुंचा दो, फिर तुम्हें अपने किए पर पछताना पड़े। और जान लो कि तुम्हारे दर्मियान अल्लाह का रसूल है। अगर वह बहुत से मामलात में तुम्हारी बात मान ले तो तुम बड़ी मुश्किल में पड़ जाओ। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और उसे तुम्हारे दिलों में मरसूब (प्रिय) बना दिया, और कुफ़्र और फिस्क (अवज्ञा) और नाफ़रमानी से तुम्हें मुत्तफिर (खिन्न) कर दिया। ऐसे ही लोग अल्लाह के फल और इनाम से राहेरास्त (सन्मार्ग) पर हैं। और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-8)

कोई आदमी दूसरे शख्स के बारे में अगर ऐसी ख़बर दे जिसमें उस शख्स पर कोई इल्जाम आता हो तो ऐसी ख़बर को महज सुनकर मान लेना ईमानी एहतियात के सरासर खिलाफ है। सुनने वाले पर लाजिम है कि वह इसकी ज़रूरी तहकीक करे, और जो राय कायम करे ग़ैर जानिवदराना (निष्पक्ष) तहकीक के बाद करे न कि तहकीक से पहले।

अक्सर ऐसा होता है कि जब इस किस्म की ख़बर एक शख्स को मिलती है तो उसके साथी फौरन उसके खिलाफ इक्दाम की बातें करने लगते हैं। यह सख्त ग़ैर जिम्मेदारी की बात है। न किसी आदमी को ऐसी ख़बर पर तहकीक से पहले कोई राय कायम करना चाहिए और न उसके साथियों को तहकीक से पहले इक्दाम का मश्विरा देना चाहिए।

जो लोग वाकई हिदायत के रास्ते पर आ जाएं उनके अंदर बिल्कुल मुख़लिफ़ मिजाज पैदा होता है। दूसरों पर इल्जाम तराशी से उन्हें नफ़रत हो जाती है। ग़ैर तहकीकी बात पर बोलने से ज्यादा वे उस पर चुप रहना पसंद करते हैं। उनका यह मिजाज इस बात की अलामत होता है कि उन्हें खुदा की रहमतों में से हिस्सा मिला है। वह ईमान फिलवाकअ उनकी किंगियों में उतरा है जिसका वे अपनी ज़बान से इक़्रार कर रहे हैं।

وَأِنْ طَائِفَتَيْنِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا فَإِنْ بَغَتْ إِحْدَاهُمَا

عَلَىٰ الْآخَرَىٰ فَتَجِدُوا آلَئِي تَبْنِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ فَإِنْ فَاءَتْ فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلَحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ जाएं तो उनके दर्मियान सुलह कराओ। फिर अगर उनमें का एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज्यादाती करे तो उस गिरोह से लड़ो जो ज्यादाती करता है। यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ लौट आए। फिर अगर वह लौट आए तो उनके दर्मियान अदल (न्याय) के साथ सुलह कराओ और इंसाफ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। मुसलमान सब भाई हैं, पस अपने भाइयों के दर्मियान मिलाप कराओ और अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (9-10)

मुसलमान आपस में किस तरह रहें, इसका जवाब एक लफ्ज में यह है कि वे इस तरह रहें जिस तरह भाई-भाई आपस में रहते हैं। दीनी रिश्ता ख़ूनी रिश्ते से किसी तरह कम नहीं। अगर दो मुसलमान आपस में लड़ जाएं तो बकिया मुसलमानों को हरगिज ऐसा नहीं करना चाहिए कि वे उनके दर्मियान मजीद आग भड़काएं। बल्कि उन्हें भाइयों वाले जच्चे के तहत दोनों के दर्मियान मुसालिहत के लिए उठ जाना चाहिए।

दो मुसलमान जब आपस में लड़ें तो एक सूत यह है कि बकिया मुसलमान ग़ैर जानिवदार (निष्पक्ष) बन जाएं। या अगर वे दखल दें तो इस तरह कि खानदानी और गिरोही अस्बियत के तहत 'अपनों' से मिलकर 'गैरों' से लड़ने लगे। ये तमाम तरीके इस्लाम के खिलाफ हैं। सही इस्लामी तरीका यह है कि असल मामले की तहकीक की जाए और जो शख्स हक पर हो उसका साथ दिया जाए और जो शख्स नाहक पर हो उसे मजबूर किया जाए कि वह मामले के मुसफ़ना फैसले पर राजी हो।

अल्लाह से डरने वाला आदमी कभी ऐसा नहीं हो सकता कि वह दूसरों को लड़ते हुए देखकर उससे लज्जत ले। वह ऐसे मंज़र देखकर तड़पेगा। उसका मिजाज उसे मजबूर करेगा कि वह दोनों के दर्मियान तअल्लुकात को दुरुस्त कराने की कोशिश करे। यही वे लोग हैं जिनके लिए अल्लाह पर ईमान अल्लाह की रहमतों का दरवाजा खोलने का सबब बन जाता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَلَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّن نِّسَاءٍ عَلَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَرُوا بِالْأَلْقَابِ بِئْسَ الْأَسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, न मर्द दूसरे मर्दों का मजाक उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न औरतें दूसरी औरतों का मजाक उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न एक दूसरे को ताना दो और न एक दूसरे को बुरे लकब से पुकारो। ईमान लाने के बाद गुनाह का नाम लगना बुरा है। और जो बाज न आए तो वही लोग जालिम हैं। (11)

हर आदमी के अंदर पैदाइशी तौर पर बड़ा बनने का जज्बा छुपा हुआ है। यही वजह है कि एक शख्स को दूसरे शख्स की कोई बात मिल जाए तो वह उसे खूब नुमायां करता है ताकि इस तरह अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा साबित करे। वह दूसरे का मजाक उड़ाता है, वह दूसरे पर ऐब लगाता है, वह दूसरे को बुरे नाम से याद करता है ताकि उसके जरिए से अपने बड़ाई के जज्बे की तस्कीन हासिल करे।

मगर अच्छा और बुरा होने का मेयार वह नहीं है जो आदमी बतौर खुद मुकर्रर करे। अच्छा दरअस्तल वह है जो खुदा की नजर में अच्छा हो और बुरा वह है जो खुदा की नजर में बुरा ठहरे। अगर आदमी के अंदर फिलवाकअ इसका एहसास पैदा हो जाए तो उससे बड़ाई का जज्बा छिन जाएगा। दूसरे का मजाक उड़ाना, दूसरे को ताना देना, दूसरे पर ऐब लगाना, दूसरे को बुरे लकब से याद करना, सब उसे बेमअना मालूम होने लगेंगे। क्योंकि वह जानेगा कि लोगों के दर्जे व मर्तबे का अस्तल फैसला खुदा के यहां होने वाला है। फिर अगर आज मैं किसी को हकीर (तुच्छ) समझूँ और आखिरत की हकीमी दुनिया में वह बाइज्जत करार पाए तो मेरा उसे हकीर समझना किस कदर बेमअना होगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ بَعْضُكُم بَعْضًا يُؤْخَذُ كُفْرًا أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ۝

ऐ ईमान वालो, बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं। और टोह में न लगे। और तुम में से कोई किसी की गीबत (पीठ पीछे बुराई) न करे। क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, इसे तुम खुद नागवार समझते हो। और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (12)

एक आदमी किसी शख्स के बारे में बदगुमान हो जाए तो उसकी हर बात उसे गलत मालूम होने लगती है। उसके बारे में उसका जेहन मंफ्री रख पर चल पड़ता है। उसकी खूबियाँ से ज्यादा वह उसके ऐब तलाश करने लगता है। उसकी बुराइयों को बयान करके उसे बेइज्जत

करना उसका महबूब मशगला बन जाता है।

अक्सर समाजी खराबियों की जड़ बदगुमानी है। इसलिए जरूरी है कि आदमी इस सिलसिले में चौकन्ना रहे। वह बदगुमानी को अपने जेहन में दाखिल न होने दे।

आपको किसी से बदगुमानी हो जाए तो आप उससे मिलकर गुफ्तगू कर सकते हैं। मगर यह सख्त गैर अख्लाकी फेअल है कि किसी की गैर मौजूदगी में उसे बुरा कहा जाए जबकि वह अपनी सफाई के लिए वहां मौजूद न हो। वक्ती तौर पर कभी आदमी से इस किस्म की गलतियां हो सकती हैं। लेकिन अगर वह अल्लाह से डरने वाला है तो वह अपनी गलती पर दीठ नहीं होगा। उसका खौफे खुदा उसे फौरन अपनी गलती पर मुतनब्बह (सचेत) कर देगा, वह अपनी रविश को छोड़कर अल्लाह से माफी का तालिब बन जाएगा।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِّن ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاهُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝

ऐ लोगो, हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया। और तुम्हें कौमों और खानदानों में तक्सीम कर दिया ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। बेशक अल्लाह के नज्दीक तुम में सबसे याद इब्जत वाला वह है जो सबसे याद परहेज़ार है। बेशक अल्लाह जानने वाला, खबर रखने वाला है। (13)

इंसानों के दर्मियान मुज्जलिफ किस्म के फर्क होते हैं। कोई सफेद है और कोई काला। कोई एक नस्ल से है और कोई दूसरी नस्ल से। कोई एक जुग्राफिया (भौगोलिक क्षेत्र) से तअल्लुक रखता है और कोई दूसरे जुग्राफिया से। ये तमाम फर्क सिर्फ तआरफ (परिचय) के लिए हैं न कि इम्तियाज (विशिष्टता) के लिए। अक्सर खराबियों का सबब यह होता है कि लोग इस किस्म के फर्क की बिना पर एक दूसरे के दर्मियान फर्क करने लगते हैं। इससे वह तफरीक व तअस्सुब (विभेद एवं विद्वेष) वजूद में आता है जो कभी खत्म नहीं होता। इंसान अपने आराज के एतबार से सबके सब एक हैं। उनमें इम्तियाज की अगर कोई बुनियाद है तो वह सिर्फ यह है कि कौन अल्लाह से डरने वाला है और कौन अल्लाह से डरने वाला नहीं। और इसका भी सही इल्म सिर्फ खुदा को है न कि किसी इंसान को।

قَالَتِ الْأَعْرَابُ امْكُنَا وَنَحْنُ مُؤْمِنُونَ وَلَكِنْ قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَا يَلِكْ لَكُمْ مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْءٌ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصِّدِّقُونَ ۝

देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाए, कहो कि तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि यूँ कहो कि हमने इस्लाम कुबूल किया, और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाखिल नहीं हुआ। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो तो अल्लाह तुम्हारे आमाल में से कुछ कमी नहीं करेगा। वेशक अल्लाह बख्शने वाला, रहम करने वाला है। मोमिन तो बस वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर उन्होंने शक नहीं किया और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद (जद्दोजहद) किया, यही सच्चे लोग हैं। (14-15)

मदीना के अतराफ में कई छोटे-छोटे कबीले थे। ये लोग हिजरत के बाद इस्लाम में दाखिल हो गए मगर उनका इस्लाम किसी गहरे जेहनी इकिलाब का नतीजा न था। अल्लाह की नजर में इस्लाम पर ईमान लाने वाला वह है जो इस्लाम को एक ऐसी हकीकत के तौर पर पाए जो उसके दिल की गहराइयों में उतर जाए। जो लोग इस तरह खुदा के दीन को कुबूल करें वे एक लाज्वाल यकीन को पा लेते हैं। वे कुर्बानी की हद तक उस पर कायम रहने के लिए तैयार रहते हैं।

आदमी कोई अच्छा काम करे तो वह उसका इज्हार करना जरूरी समझता है। हालांकि इस किस्म का इज्हार उसके अमल को बातिल कर देने वाला है। अच्छा अमल हकीकतन वह है जो अल्लाह के लिए किया जाए। फिर अल्लाह जब खुद हर बात को जानता है तो उसके एलान व इश्वर की क्या जरूरत।

قُلْ اتَّعْلَمُونَ ۖ اللَّهُ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يُعَلِّمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۖ يٰۤأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُلْ لَا تَتَّبِعُوا عَلَىٰ إِسْلَامِكُمْ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

कहो, क्या तुम अल्लाह को अपने दीन से आगाह कर रहे हो। हालांकि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। और अल्लाह हर चीज से बाख़बर है। ये लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि उन्होंने इस्लाम कुबूल किया है। कहो कि अपने इस्लाम का एहसान मुझ पर न रखो, बल्कि अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उसने तुम्हें ईमान की हिदायत दी। अगर तुम सच्चे हो। वेशक अल्लाह आसमानों और जमीन की छुपी बातों को जानता है। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो। (16-18)

कोई शख्स इस्लाम में दाखिल हो या उसके हाथ से कोई इस्लामी काम अंजाम पाए तो

उसे समझना चाहिए कि यह अल्लाह की मदद से हुआ है। ईमान और अमल सबका इंहिसार अल्लाह की तौफ़ीक पर है। इसलिए जब भी किसी को किसी ख़ैर की तौफ़ीक मिले तो वह अल्लाह का शुक्र अदा करे।

इसके बजाए अगर वह अपने हमजहबों पर इसका एहसान जताने लगे तो गोया वह जवानेहाल से कह रहा है कि यह काम मैंने अल्लाह को दिखाने के लिए नहीं किया था बल्कि इंसानों को दिखाने के लिए किया था। खुदा हर चीज से बराह्रास्त वाकफ़ियत रखता है, जो शख्स खुदा के लिए अमल करे उसे यकीन रखना चाहिए कि उसका खुदा उसके अमल को बताए, बग़ैर देख रहा है।

سُبْحَانَكَ يَا مَنْ لَا يَمُوتُ ۚ وَبِحَمْدِكَ أَصْبَحْنَا وَبِحَمْدِكَ أَنْعَمْنَا ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَنِيُّ الْكَرِيمُ ۚ قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۚ بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ۚ إِذَا امْتَنَّا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذَلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ۚ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِيفٌ ۚ بَلْ كَذَّبُوا بِآلِ الْاٰخِرِ ۚ جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مُّرِيرٍ ۝

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कफ़र। कसम है बाअमत्त कुआन की। बल्कि उन्हें तअज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक डराने वाला आया, पस मुंकिरों ने कहा कि यह तअज्जुब की चीज है। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे, यह दुबारा जिंदा होना बहुत बर्ईद (दूर की बात) है। हमें मालूम है जितना जमीन उनके अंदर से घटाती है और हमारे पास किताब है जिसमें सब कुछ महफूज है। बल्कि उन्हें हक को झुटलाया है जबकि वह उनके पास आ चुका है, पस वे उलझन में पड़े हुए हैं। (1-5)

पैगम्बरों की तारीख बताती है कि उनके हमजमाना (समकालीन) लोग उन्हें मानने के लिए तैयार नहीं होते। अलबत्ता जब बाद का जमाना आता है तो लोग आसानी के साथ उनकी पैगम्बराना हैसियत को तस्लीम कर लेते हैं।

इसकी वजह यह है कि पैगम्बर अपने हमजमाना लोगों को 'अपने बराबर का एक शख्स' नजर आता है। यह बात उनके लिए तअज्जुबख़ेज बन जाती है कि जिस शख्स को वे अपने बराबर का समझे हुए थे वह अचानक बड़ा बनकर उन्हें नसीहत करने लगे। मगर बाद के

सूरः २६

1369

पारा 26

जमाने में पैगम्बर के साथ अज्मतों की तारीख वाबस्ता हो चुकी होती है। इसलिए बाद के लोगों को वह 'अपने से बरतर शख्स' दिखाई देने लगता है। यही वजह है कि बाद के जमाने में पैगम्बर की पैगम्बराना हैसियत को मानना लोगों के लिए मुश्किल नहीं होता। बअल्फाज दीगर, इब्तिदाई दौर के लोगों के सामने पैगम्बर एक निजाई (विवादित) शख्सियत के रूप में होता है। और बाद के लोगों के सामने साबितशुदा शख्सियत के रूप में। वीरे अव्वल के लोगों को अपने और पैगम्बर के दर्मियान खला (रिक्तता) को पुर करने के लिए शुऊरी सफर तै करना पड़ता है जबकि बाद के जमाने में यह खला तारीख पुर कर चुकी होती है।

जो लोग पैगम्बर की पैगम्बरी पर शुबह कर रहे हों उनकी नजर में पैगम्बर की हर बात मुशतबह हो जाती है यहां तक कि वह बात भी जिसका अकीदा रिवायती तौर पर उनके यहां मौजूद होता है। ताहम ये बातें लोगों के लिए उज्र नहीं बन सकतीं। पैगम्बर को न मानने वाले अगर उसकी किताब की नाकाबिले तकलीद (अद्वितीय) अदबी अज्मत पर गौर करें तो वे उसके लाने वाले को खुदा का पैगम्बर मानने पर मजबूर हो जाएंगे।

أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَيْنَها وَزَيْلُها وَمَا لَها مِنْ فُرُوجٍ ۝ وَ
الْأَرْضِ مَدَدُها وَالْقَيْنِ فِيها رِواسٍ ۝ وَابْتِئْنَا فِيها مِنْ كُلِّ شَيْءٍ نَهيْجٍ ۝
تَبْصِرَةً وَذِكْرَى لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ۝ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبَارَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ
جَبَلٍ وَحَبَّ الْحَبِيدِ ۝ وَالنَّخْلَ بَسَقَتْ لَها طَلْعُ خَضِيدٍ ۝ وَزَعْنَا لِلْإِِبَادِ وَأَحْيَيْنَا
بِهِ بَكْدَةً نَّيْنًا كَذَلِكَ الْخُرُوجُ ۝

क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा, हमने कैसा उसे बनाया और उसे रैनक दी और उसमें कोई दरार नहीं। और जमीन को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ डाल दिए और उसमें हर किसम की रैनक की चीज उगाई, समझाने को और याद दिलाने को हर उस बंदे के लिए जो रुजूअ करे। और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे हमने बाग उगाए और काटी जाने वाली फसलें। और खजूरों के लम्बे दरख्त जिनमें तह-ब-तह खोशे लगते हैं, बंदों की रोजी के लिए। और हमने उसके जरिए से मुर्दा जमीन को जिंदा किया। इसी तरह जमीन से निकलना होगा। (6-11)

कायनात की मअनवियत, उसकी तख्लीकी हिक्मत, उसका हर किसम की कमी से खाली होना, उसका इंसानी जरूरतों के ऐन मुताबिक होना, ये वाक्यात हर साहिबे अक्ल को गौरोफिक्र पर मजबूर करते हैं। और जो शख्स संजीदगी के साथ कायनात के निजाम पर गौर करे वह मख्तूक़ात के अंदर उसके खालिक को पा लेगा। वह दुनिया के अंदर आखिरत की

पारा 26

1370

सूरः २६

झलक देख लेगा, क्योंकि आखिरत की दुनिया दरअसल मौजूदा दुनिया ही का दूसरा लाजिमी रूप है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ۝ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ
لُوطٍ ۝ وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدُ ۝ أَفَعَيَيْنَا
بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝

उनसे पहले नूह की कौम और अर-रस वाले और समूद। और आद और फिरऔन और लूत के भाई और ऐका वाले और तुब्बअ की कौम ने भी झुठलाया। सबने पैगम्बरों को झुठलाया, पस मेरा डराना उन पर वाकेअ होकर रहा। क्या हम पहली बार पैदा करने से आजिज रहे। बल्कि ये लोग नए सिरे से पैदा करने की तरफ से शुबह में हैं। (12-15)

कुरआन ने तारीख का जो तसक्कुर पेश किया है, उसके मुताबिक यहां बार-बार ऐसा हुआ है कि पैगम्बरों के इंकार के नतीजे में उनकी मुखातब कौमें हलाक कर दी गई। यहां उन्हीं हलाकशुदा कौमों में से कुछ कौमों का जिक्र बतौर मिसाल फरमाया गया है। कौमों की यह हिलाकत दरअसल आखिरत का एक हिस्सा है। मुकिरीने हक के लिए जो अजाब आखिरत में मुकद्दर है उसका एक जुज इसी आज की दुनिया में दिखा दिया जाता है। दुनिया की पहली तख्लीक (सृजन) उसकी दूसरी तख्लीक के इम्कान को साबित कर रही है। अगर आदमी संजीदा हो तो आखिरत को मानने के लिए इसके बाद उसे किसी और दलील की जरूरत नहीं।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعَلَهُم مَّا تَوْسَّوسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ
حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝ إِذْ يَتَلَفَّى الْمُتَكَلِّفِينَ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۝ مَا يَلْفِظُ
مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ۝

और हमने इंसान को पैदा किया और हम जानते हैं उन बातों को जो उसके दिल में आती हैं। और हम रगे गर्दन से भी ज्यादा उससे करीब हैं। जब दो लेने वाले लेते रहते हैं जो कि दाई और बाई तरफ बैठे हैं। कोई लफज वह नहीं बोलता मगर उसके पास एक मुस्तइद (चुस्त) निगरां (सतर्क निरीक्षक) मौजूद है। (16-18)

दुनिया का मुतालआ बताता है कि यहां 'रिकॉर्डिंग' का नाकाबिले खता (अचूक) निजाम मौजूद है। इंसान की सोच उसके जेहनी पद पर हमेशा के लिए नक्श हो रही है। इंसान का हर बोल हवाई लहरों की सूरत में मुस्तकिल तौर पर बाकी रहता है। इंसान का अमल हरारती लहरों

सूरः ५० वाक

1371

पारा 26

के जरिए खारजी वाह्य दुनिया में इस तरह महफूज हो जाता है कि उसे किसी भी वक्त दोहराया जा सके। ये सब आज की मालूम हकीकतें हैं। और ये मालूम हकीकतें कुआन की इस खबर को काबिलेफहम बना रही हैं कि इंसान की नियत, उसका क़ैल और उसका अमल सब कुछ ख़ालिक के इल्म में है। इंसान की हर चीज फरिश्तों के रजिस्टर में दर्ज की जा रही है।

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۖ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ
ذَلِكَ يَوْمُ الْوَعْدِ ۖ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ۖ لَقَدْ كُنْتَ فِي
غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۖ وَقَالَ قَرِينُهُ
هَذَا مَا لَدَىٰ عَتِيدٍ ۖ أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۖ مَّنَّاءٍ لِّلْغَيْرِ مُعْتَدٍ
مُّرِيدٍ ۖ إِنِّي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيَا فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۖ قَالَ
قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۖ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدُنِّي وَ
إِن كُنْتُمْ إِلَّا قَوْمٌ ۖ قَدْ كُنْتُ الْيَكْثَرُ ۖ أَلَيْسَ لِي بِالنُّفَرِ الْكَثِيرِ ۖ وَمَا أَنَا إِلَّا ظَلَامٌ لِّلْعَالَمِينَ ۖ

और मौत की बेहोशी हक के साथ आ पहुंची। यह वही चीज है जिससे तू भागता था। और सूर फूँका जाएगा, यह डराने का दिन होगा। हर शख्स इस तरह आ गया कि उसके साथ एक हांकने वाला है और एक गवाही देने वाला। तुम उससे इफ़लत में रहे, पस हमने तुम्हारे ऊपर से पर्दा हटा दिया, पस आज तुम्हारी निगाह तेज है। और उसके साथ का फरिश्ता कहेगा, यह जो मेरे पास था हाज़िर है। जहन्नम में डाल दो नाशुक, मुख़ालिफ को। नेकी से रोकने वाला, हद से बढ़ने वाला, शुबह डालने वाला। जिसने अल्लाह के साथ दूसरे भावूद (पूज्य) बनाए, पस उसे डाल दो सख़्त अजाब में। उसका साथी शैतान कहेगा कि ऐ हमारे रब मैंने इसे सरकश नहीं बनाया बल्कि वह खुद राह भूला हुआ, दूर पड़ा था। इशार्द होगा, मेरे सामने झगड़ा न करो और मैंने पहले ही तुम्हें अजाब से डरा दिया था। मेरे यहां बात बदली नहीं जाती और मैं बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं हूँ। (19-29)

इन आयात में मौत और उसके बाद कियामत का मंजर खींचा गया है। बताया गया है कि वहां उन लोगों पर क्या बीतेगी जो मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में अपने को आजाद पाकर सरकश बने हुए थे। हकीकत यह है कि यह मंजरकशी इतनी भयानक है कि जिंदा आदमी को तड़पा देने के लिए काफी है।

पारा 26

1372

सूरः ५० वाक

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتَ وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ ۖ وَأَنزَلْنَاهُ
لِلْمُتَّقِينَ ۖ غَيْرَ بَعِيدٍ ۖ هَذَا مَا تَوَعَدُونَ لِكُلِّ أَكْوَافٍ حَفِيزٌ ۖ مِّنْ خَشْيَةٍ
الْزَّكِيمِ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۖ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۖ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۖ
لَهُمْ فِيهَا زَوْجٌ وَلَهُمْ فِيهَا وَلَدٌ ۖ وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۖ

जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे, क्या तू भर गई। और वह कहेगी कि कुछ और भी है। और जन्नत डरने वालों के करीब लाई जाएगी, कुछ दूर न रहेगी। यह है वह चीज जिसका तुमसे वादा किया जाता था, हर रुजूअ करने वाले और याद रखने वाले के लिए। जो शख्स रहमान से डरा बिना देखे और रुजूअ होने वाला दिल लेकर आया, दाखिल हो जाओ उसमें सलामती के साथ, यह दिन हमेशा रहेगा। वहां उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहें, और हमारे पास मजीद (और भी) है। (30-35)

खुदा की अबदी जन्नत के मुस्तहिक कौन लोग हैं। ये वे लोग हैं जो दुनिया में अल्लाह के अजाब से डरते रहे। जो लोग बिना देखे डरे वही वे लोग हैं जो उस दिन डर और ग़म से महफूज रहेंगे जब डर लोगों की आंखों के सामने आ जाएगा। अल्लाह का ख़ौफ आदमी के अंदर जन्नत वाले औसाफ (गुण) पैदा करता है और अल्लाह से बेख़ौफी जहन्नम वाले अस्मा

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ ۖ هَلْ
مِّنْ فَحِیْصٍ ۖ إِنَّ فِيْ ذَٰلِكَ لَذِكْرًا لِّمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ
شَكِيمٌ ۖ

और हम उनसे पहले कितनी ही कौमों को हलाक कर चुके हैं, वे कुव्वत (शक्ति) में उनसे ज्यादा थीं, पस उन्होंने मुल्कों को छान मारा कि है कोई पनाह की जगह। इसमें याददिहानी है उस शख्स के लिए जिसके पास दिल हो या वह कान लगाए मुतबज्जह होकर। (36-37)

कौमों उभरती हैं और उरूज को पहुंच जाती हैं मगर जब वे अपनी बदआमाली के नतीजे में खुदा की जद में आती हैं तो उनका हाल यह होता है कि जमीन में कहीं कोई जगह नहीं होती जहां वे भाग कर पनाह ले सकें। तारीख के इन वाक्यात में जबरदस्त नसीहत है। मगर नसीहत वह शख्स लेगा जिसके अंदर या तो सोचने की सलाहियत जिंदा हो कि वह खुद वाक्यात के ख़ामोश पैगाम को अख़ज (ग्रहण) कर सके। या उसके अंदर सुनने की सलाहियत जिंदा हो कि जब उसे बताया जाए तो वह उसके अंदरून तक बिला रोकटोक पहुंचे।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ وَامَّا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۚ
فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۚ
وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ الشُّجُورِ ۚ

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है छः दिन में बनाया और हमें कुछ थकान नहीं हुई। पस जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो और अपने रब की तस्वीह करो हम्द (प्रशंसा) के साथ, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले। और रात में उसकी तस्वीह करो और सज्दों के पीछे। (38-40)

जमीन व आसमान को छः दिनों, बअल्फाज दीगर छः दौरों में पैदा करना बताता है कि खुदा का तरीका तदरीजी (क्रमबद्ध) अमल का तरीका है। और जब खुदा सारी ताकतों का मालिक होने के बावजूद वाक्यात को तदरीज के साथ लम्बी मुद्दत में जुहूर में लाता है तो इंसान को भी चाहिए कि वह जल्दबाजी से बचे, वह साबिराना (धैर्यपूर्ण) अमल के जरिए नतीजे तक पहुंचने की कोशिश करे।

दावत (आह्वान) का अमल शुरू से आखिरत तक सब्र का अमल है। इसमें इंसान की तरफ से पेश आने वाली तल्लिखों को सहना पड़ता है। इसमें नतीजा सामने दिखाई न देने के बावजूद अपने अमल को जारी रखना पड़ता है। इस सब्रआजमा (धैर्यपरक) अमल पर वही शख्स कायम रह सकता है जिसके सुबह व शाम जिफ्र व इबादत में गुजरते हों, जो इंसानों से न पाकर खुदा से पा रहा हो, जो सब कुछ खोकर भी एहसासे महरूमी का शिकार न हो सके।

‘हमें थकान नहीं हुई’ एक जिमनी (फूक) फिकरा है। मौजूदा मुहर्रफ (परिवर्तित) बाइबल में है कि खुदा ने छः दिनों में आसमान और जमीन को पैदा किया और सातवें दिन आराम किया। यह फिकरा इसी की तस्वीह व तरदीद है। आराम वह करता है जो थके। खुदा को थकान नहीं होती इसलिए उसे आराम करने की जरूरत भी नहीं।

وَأَسْمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادُ مَنْ مَكَانٍ قَرِيبٍ ۚ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْعَةَ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۚ إِنَّا نَحْنُ مُخِيٌّ وَوَعْدُ ۚ وَإِنَّا الْمُصِدِّقُ ۚ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سَرَاعًا ۚ
ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا لَئَسَّ يُؤْتَىٰ

और कान लगाए रखो कि जिस दिन पुकारने वाला बहुत करीब से पुकारेगा। जिस दिन लोग यकीन के साथ चिंघाड़ को सुनेंगे वह निकलने का दिन होगा। बेशक हम ही जिलाते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ लौटना है। जिस दिन जमीन उन पर से खुल जाएगी, वे सब दौड़ते होंगे, यह इकट्ठा करना हमारे लिए आसान है। (41-44)

कियामत की कोई तरीख मुकरर नहीं। किसी भी वक़्त अल्लाह तआला का हुक्म होगा और इसाफ़ील सूर में फूंक मारकर उसकी अचानक आमद की इत्तला दे देंगे।

जो लोग खुदा से गाफिल हैं वे कियामत को दूर की चीज समझते हैं। मगर जो सच्चा मोमिन है वह हर आन इस अंदेशे में रहता है कि कब सूर फूंक दिया जाए और कब कियामत आ जाए। सूर फूंक जाने के बाद जमीन व आसमान का नक्शा बदल चुका होगा और तमाम लोग एक नई दुनिया में जमा किए जाएंगे ताकि अपने-अपने अमल के मुताबिक अपना अबदी (चिरस्थायी) अंजाम पा सकें।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۚ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ
وَعِيدَ ۚ

हम जानते हैं जो कुछ ये लोग कह रहे हैं। और तुम उन पर जबर करने वाले नहीं हो। पस तुम कुरआन के जरिए उस शख्स को नसीहत करो जो मेरे डराने से डरे। (45)

कुरआन में बार-बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में इशार्द हुआ है कि तुम्हारा काम सिर्फ पहुंचा देना है तुम्हारा काम लोगों को बदलना नहीं है। दूसरी तरफ कुरआन में एक से ज्यादा मक़म पर यह भी इशार्द हुआ है कि खुदा तुम्हारे जरिए से देने हक को तमाम दीनों पर ग़ालिब करेगा।

यह दो बात दरअसल पैगम्बरे इस्लाम की दो मुख्तलिफ हैसियतों के एतबार से है। आप एक एतबार से ‘अल्लाह के रसूल’ थे। दूसरे एतबार से आप ‘खातमुन नबिय्यीन’ (अंतिम नबी) थे। अल्लाह का रसूल होने की हैसियत से आपका काम वही था जो तमाम पैगम्बरों का था। यानी अग्रे हक को लोगों तक पूरी तरह पहुंचा देना। मगर खातमुन नबिय्यीन होने की हैसियत से अल्लाह तआला को यह भी मल्लूब था कि आपके जरिए से वे असबाब पैदा किए जाएं जो हिदायते इलाही को मुस्तक़िल तौर पर महफूज कर दें। ताकि दुबारा पैगम्बर भेजने की जरूरत पेश न आए। आपकी इस दूसरी हैसियत का तक्का था कि आपके जरिए से वह इकिलाब लाया जाए जो शिर्क के ग़लबे (वर्चस्व) को ख़त्म कर दे और इस्लाम को एक ऐसी ग़ालिब कुव्वत की हैसियत से कायम कर दे जो हमेशा के लिए हिदायते इलाही की हिफ़ाज़त की ज़मानत बन जाए।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَنِيُّ ۖ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۚ
وَالَّذِي تَدْرَأُ ۚ فَالْحَمْلُ وَقَرَأَ ۚ فَالْجَرِيْتُ يُسْرًا ۚ فَالْمَقْسَمُتِ أَمْرًا ۚ إِنَّمَا

تُوعَدُونَ لَصَادِقٍ ۖ وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۚ وَالسَّمَاءُ ذَاتُ الْحُبُوبِ ۚ إِنَّكُمْ لَعَفْوٌ
قَوْلٍ مُتَخَلِّفٍ ۚ يُؤَذِّنُ عَنْهُ مَنْ أُولُوا

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कसम है उन हवाओं की जो गर्द उड़ाने वाली हैं फिर वे उठा लेती हैं बोझ। फिर वे चलने
लगती हैं आहिस्ता। फिर अलग-अलग करती हैं मामला। बेशक तुमसे जो वादा किया
जा रहा है वह सच है। और बेशक इंसाफ होना जरूर है। कसम है जालदार आसमान
की। बेशक तुम एक इस्तेलाफ (बिखराव, मत-भिन्नता) में पड़े हुए हो। उससे वही
फिरता है जो फेरा गया। (1-9)

यहां बारिश के अमल की तस्वीरकशी की गई है। पहले तेज हवाएं उठती हैं। फिर
मुख्तलिफ मराहिल से गुजर कर वे बादलों को चलाती हैं। और फिर वे किसी गिरोह पर बाराने
रहमत (सुखद वर्षा) बरसाती हैं और किसी गिरोह पर सैलाब की सूरत में तबाहकारियां लाती हैं।

यह वाक्या बताता है कि खुदा की इस दुनिया में 'तक्सीमे अम्र' का कानून है। यहां
किसी को कम मिलता है और किसी को ज्यादा। किसी को दिया जाता है और किसी से छीन
लिया जाता है। यह एक इशारा है जो बताता है कि मौत के बाद आने वाली दुनिया में इंसान
के साथ क्या मामला पेश आने वाला है। वहां तक्सीमे अम्र का यह उसूल अपनी कामिल सूरत
में नाफिज होगा। हर एक को हददर्जा इंसाफ के साथ वही मिलेगा जो उसे मिलना चाहिए
और वह नहीं मिलेगा जिसे पाने का वह मुस्तहिक न था।

आसमान में बेशुमार सितारे हैं। ये सबके सब अपने अपने मदार (कक्ष) में घूम रहे हैं।
अगर उनकी मज्मूई तस्वीर बनाई जाए तो वह किसी खानेदार जाल की मानिंद होगी। इस
किस्म का हैरतनाक निजाम अपने अंदर गहरी मअनवियत का इशारा करता है। जो लोग
अपनी अकल को इस्तेमाल करें वे उसमें सबक पाएंगे। और जो लोग अपनी अकल को
इस्तेमाल न करें उनके लिए वह एक बेमअना रक्स (नृत्य) है जिसके अंदर कोई सबक नहीं।

قِيلَ الْخَرَّاصُونَ ۖ الَّذِينَ هُمْ فِي عَمْرَةٍ سَاهُونَ ۖ يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ
الَّذِينَ ۖ يَوْمَهُمْ عَلَى النَّارِ يُقْتَنُونَ ۖ ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ
تَسْتَعْجِلُونَ ۚ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۖ اخْذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۚ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُجْسِنِينَ ۚ كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ الْيَوْمِ ۚ مَا يَهْجَعُونَ ۚ وَ

بِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۚ وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۚ

मारे गए अटकल से बातें करने वाले। जो गफलत में भूले हुए हैं। वे पूछते हैं कि कब है
बदले का दिन। जिस दिन वे आग पर रखे जाएंगे। चखो मजा अपनी शराबत का, यह है
वह चीज जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। बेशक डरने वाले लोग बाणों में और चशमों
(स्रोतों) में होंगे। ले रहे होंगे जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया, वे इससे पहले नेकी करने
वाले थे। वे रातों को कम सोते थे। और सुबह के वक्तों में वे माफी मांगते थे। और
उनके माल में साइल (मांगने वाले) और महरूम (असहाय) का हिस्सा था। (10-19)

किसी बात को समझने के लिए सबसे जरूरी शर्त संजीदगी है। जो लोग एक बात के
मामले में संजीदा न हों वे उसके कराइन व दलाइल पर ध्यान नहीं देते, इसलिए वे उसे समझ
भी नहीं सकते। वे उसका मजाक उड़ाकर यह जाहिर करते हैं कि वह इस कबिल ही नहीं
कि उसे संजीदा गौरोफिक्र का मौजूअ समझा जाए। ऐसे लोगों को मनवाना किसी तरह
मुमकिन नहीं। वे सिर्फ उस वक्त एतराफ करेंगे जबकि उनकी गलत रविश एक ऐसा अजाब
बनकर उनके ऊपर टूट पड़े जिससे छुटकारा पाना किसी तरह उनके लिए मुमकिन न हो।

संजीदा लोगों का मामला इससे बिल्कुल मुख्तलिफ होता है। उनकी संजीदगी उन्हें
मोहतात (सजग) बना देती है। उनसे सरकशी का मिजाज रुख्सत हो जाता है। उनका बढ़ा
हुआ एहसास उन्हें रातों को भी बेदार रहने पर मजबूर कर देता है। उनके औकात (समय)
खुदा की याद में बसर होने लगते हैं। वे अपने माल को अपनी मेहनत का नतीजा नहीं समझते
बल्कि उसे खुदा का अतिव्या (देन) समझते हैं। यही वजह है कि वे उसमें दूसरों का भी हक
समझने लगते हैं जिस तरह वे उसमें अपना हक समझते हैं।

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ ۖ وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصَرُونَ ۚ وَفِي السَّمَاءِ
رِجٌّ مِّمَّا كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۚ فَارْتَبِ السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ إِنَّهُ حَقٌّ فِثْلَ مَا أَنْتُمْ تَنْطِقُونَ ۚ

और जमीन में निशानियां हैं यकीन करने वालों के लिए। और खुद तुम्हारे अंदर भी,
क्या तुम देखते नहीं। और आसमान में तुम्हारी रोजी है और वह चीज भी जिसका तुमसे
वादा किया जा रहा है। पस आसमान और जमीन के रब की कसम, वह यकीनी है
जैसा कि तुम बोलते हो। (20-23)

अल्लाह तआला ने दुनिया को इस तरह बनाया है कि मौजूदा मालूम दुनिया बाद को
आने वाली नामालूम दुनिया की निशानी बन गई है। जमीन में फैले हुए मादूदी वाक्यात और
इंसान के अंदर छुपे हुए एहसासात दोनों बिलवास्ता अंदाज में उस वाक्य की पेशगी खबर दे
रहे हैं जो मौत के बाद बराहरेस्त अंदाज में इंसान के सामने आने वाला है। इन्हीं निशानियों

में से एक निशानी नुक (बोलना) है।

हदीस में इशार्द हुआ है कि आखिरत में जो कुछ मिलेगा वे खुद आदमी के अपने आमाल होंगे जो उसकी तरफ लौटा दिए जाएंगे। गोया आखिरत की दुनिया मौजूदा दुनिया ही का मुसन्ना (Double) है। आदमी का नुक (बोलना) इसी इम्कान का एक जुर्ई मुजाहिरा है। आदमी की आवाज टेप पर रिकॉर्ड कर दी जाए और फिर टेप को बजाया जाए तो ऐन वही आवाज उससे निकलती है जो इंसान की आवाज थी। टेप की आवाज इंसान की अस्त आवाज का मुसन्ना (Double) है। इस तरह आवाज जुर्ई सतह पर उस वाक्य का तजर्बा करा रही है जो कुल्ली सतह पर आखिरत में जाहिर होने वाला है।

‘वह यक्रीनी है तुम्हारे नुक की तरह’ यानी जब तुम्हारे नुक (बोलने) की तकरार (पुनरावृत्ति) मुमकिन है तो तुम्हारे वजूद की तकरार क्यों मुमकिन नहीं। इंसानी हस्ती के एक जुज (अंश) की कामिल तकरार का मुशाहिदा इसी दुनिया में हो रहा है, इसी से कयास किया जा सकता है कि इंसानी हस्ती के कामिल मज्मूअह (कुल) की तकरार भी हो सकती है।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ الْإِبْرَاهِيمَ الْمَكْرُومِ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ قَوْمُ مُتَذَكِّرُونَ ۖ فَارَأَىٰ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ۖ فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۚ فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۚ قَالُوا لَا تَحْزَنْ وَبَشِّرْهُ بِعِلْمٍ ۖ فَاقْبَلْ أَتْرَأْتِ فِي صَرَةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ۚ قَالُوا كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝

क्या तुम्हें इब्राहीम के मुअज्जज (आदरणीय) मेहमानों की बात पहुंची। जब वे उसके पास आए। फिर उन्हें सलाम किया। उसने कहा तुम लोगों को भी सलाम है। कुछ अजनबी लोग हैं। फिर वह अपने घर की तरफ चला और एक बछड़ा भुना हुआ ले आया। फिर उसे उनके पास रखा, उसने कहा, आप लोग खाते क्यों नहीं। फिर वह दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो मत। और उन्हें जीइल्म (ज्ञानवान) लड़के की बशारत (शुभ सूचना) दी। फिर उसकी बीवी बोलती हुई आई, फिर माथे पर हाथ मारा और कहने लगी कि बूढ़ी, बांझ। उन्होंने कहा कि ऐसा ही फरमाया है तेरे रब ने। बेशक वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला, जानने वाला है। (24-30)

इन आयतों में उस मंजर का बयान है जबकि हजरत इब्राहीम के पास खुदा के फरिश्ते आए ताकि उन्हें बुढ़ापे में औलाद की बशारत दें। हजरत इब्राहीम कदीम इराक में पैदा हुए। वह लम्बी मुदत तक अपनी कौम को तौहीद और आखिरत का पैगाम देते रहे। मगर आपकी बीवी और आपके एक भतीजे के सिवा कोई भी शख्स आपकी बात मानने के लिए तैयार न

हुआ। यहां तक कि आप बुढ़ापे की उम्र को पहुंच गए।

अब आपके मिशन का तसलसुल (निरंतरता) बाकी रखने के लिए दूसरी मुमकिन सूरत सिर्फ यह थी कि आपके यहां औलाद पैदा हो और आप उसे तर्बियत देकर तैयार करें। बाप और बेटे के दमियान खूनी तअल्लुक होता है। यह खूनी तअल्लुक एक इजाफी ताकत बन जाता है जो बेटे को अपने बाप के साथ हर हाल में जोड़े रखे और उसे उसका हमख्याल बनाए।

अल्लाह तआला ने हजरत इब्राहीम को आखिर उम्र में दो लड़के अता किए। एक हजरत इस्हाक जिनके जरिए से बनी इस्माईल में दावते तौहीद का तसलसुल जारी रहा। दूसरे हजरत इस्माईल जिनके जरिए अरब के सहरा में एक ऐसी नस्ल तैयार करने का काम लिया गया जो पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का साथ देकर आपके तारीखी मिशन की तक्मील कर सके।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۚ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ۚ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ جَارَةً مِّنْ طِينٍ ۚ مُّسَوِّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ۚ فَانْخَرَجْنَا مَن كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ۚ وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝

इब्राहीम ने कहा कि ऐ फरिश्तो, तुम्हें क्या मुहिम दरपेश है। उन्होंने कहा कि हम एक मुजरिम कौम (कौमे लूत) की तरफ भेजे गए हैं। ताकि उस पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएं। जो निशान लगाए हुए हैं तुम्हारे रब के पास उन लोगों के लिए जो हद से गुजरने वाले हैं। फिर वहां जितने ईमान वाले थे उन्हें हमने निकाल लिया। पस वहां हमने एक घर के सिवा कोई मुस्लिम (आज्ञाकारी) घर न पाया और हमने उसमें एक निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अजाब से डरते हैं। (31-37)

हजरत इब्राहीम उस वक्त फिलिस्तीन में थे। करीब ही बहरे मुर्दार के पास सदूम व अमूरा की बस्तियां थीं जहां कौमे लूत के लोग आबाद थे। हजरत लूत की तवील तबलीग के बावजूद वे लोग खुदाफरामोशी की जिंदगी से निकलने के लिए तैयार नहीं हुए। चुनांचे हजरत लूत और उनके साथी अल्लाह के हुक्म से बाहर आ गए। मच्चूरा फरिश्तों ने जलजला और आंधी और कंकरो की बारिश से पूरी कौम को हलाक कर दिया।

कौमे लूत दो हजार साल पहले खत्म हो गई। मगर उसका तबाहशुदा आवास-क्षेत्र (बहरे मुर्दार का जुनूबी इलाका) आज भी उन लोगों को सबक दे रहा है जो वाक्यात से सबक लेने का मिजाज रखते हैं।

وَفِي مُوسَى إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۖ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سِحْرٌ
أَوْ يَجْنُونُ ۚ فَآخَذْنَاهُ وَجُودَهُ فَنَبَذْنَاهُ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ۚ وَفِي عَادٍ إِذْ
أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ۚ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ
كَالْزَمِيمِ ۚ وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ۚ فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ
فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۚ فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا
مُتَنَبِّهِينَ ۚ وَقَوْمُ نُوحٍ ۖ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۚ

और मूसा में भी निशानी है जबकि हमने उसे फिरऔन के पास एक खुली दलील के साथ भेजा तो वह अपनी कुव्वत के साथ फिर गया। और कहा कि यह जादूगर है या मजनून है। पस हमने उसे और उसकी फौज को पकड़, फिर उन्हें समुद्र में फेंक दिया और वह सजावारे मलामत (निन्दनीय) था। और आद में भी निशानी है जबकि हमने उन पर एक बेनफा हवा भेज दी। वह जिस चीज पर से भी गुज़री उसे ख़राब करके छोड़ दिया। और समूद में भी निशानी है जबकि उनसे कहा गया कि थोड़ी मुद्दत तक के लिए फायदा उठा लो। पस उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें कड़क ने पकड़ लिया। और वे देख रहे थे। फिर वे न उठ सके। और न अपना बचाव कर सके। और नूह की कौम को भी इससे पहले, बेशक वे नाफरमान लोग थे। (38-46)

फिरऔने मिस्र ने हज़रत मूसा के मेजिज़ें (चमत्कारों) को जादू करार दिया। आपका वह यकीन जो आपके बरसरे हक होने को जाहिर कर रहा था उसे उसने जुनून से ताबीर किया था। इसी का नाम तल्बीस (गलत नाम देना) है और यही तल्बीस हमेशा उन लोगों का तरीका रहा है जो दलील के बावजूद हक को मानने के लिए तैयार नहीं होते।

हक के मुक़ाबले में इस किस्म की सरकशी करने वाले लोग कभी खुदा की पकड़ से नहीं बचते। फिरऔन इसी बिना पर हलाक किया गया। और कौमे आद और कौमे समूद और कौमे नूह भी इसी बिना पर तबाह व बर्बाद कर दी गई। ऐसे लोगों के लिए खुदा की दुनिया में कोई और फायदा उस थोड़े से फायदे के सिवा मुकद्दर नहीं जो इम्तेहान की मस्तेहत के तहत उन्हें महदूद मुद्दत के लिए हासिल हुआ था।

وَالسَّمَاءَ بَيْنَهُمَا يَأْتِي وَرَأَيْنَا الْمَوْسِعُونَ ۚ وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَاهِدُونَ ۚ
وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۚ فَذَرُوا إِلَى اللَّهِ إِلَيْنَا لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ
مُّبِينٌ ۚ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ إِلَيْنَا لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۚ

और हमने आसमान को अपनी कुदरत से बनाया और हम कुशादा (व्यापक) करने वाले हैं। और जमीन को हमने बिछाया, पस क्या ही खूब बिछाने वाले हैं। और हमने हर चीज को जोड़ा जोड़ा बनाया है ताकि तुम ध्यान करो। पस दौड़ो अल्लाह की तरफ, मैं उसकी तरफ से एक खुला डराने वाला हूँ। और अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) न बनाओ, मैं उसकी तरफ से तुम्हारे लिए खुला डराने वाला हूँ। (47-51)

‘हम आसमान को कुशादा करने वाले हैं’ इस फिकरे में ग़ालिबन कायनात की उस नौइयत की तरफ इशारा है जो सिर्फ हाल में दरयापत हुई है। यानी कायनात का मुसलसल अपने चारों तरफ फैलना। कायनात का इस तरह फैलना इस बात का सुबूत है कि उसे किसी पैदा करने वाले ने पैदा किया है। क्योंकि इस फैलाव का मतलब यह है कि अपनी इब्तिदा (प्रारंभ) में वह सुकड़ी हुई थी। मालूम माददी कानून के मुताबिक, कायनात के इस इब्तिदाई गोले के तमाम अज्जा अंदर की तरफ खिंचे हुए थे। ऐसी हालत में उनका बाहर की तरफ सफर करना किसी ख़ारजी मुदाख़लत (वाह्य हस्तक्षेप) के बग़ैर नहीं हो सकता। और ख़ारजी मुदाख़लत को मानने के बाद खुदा का मानना लाजिम हो जाता है।

हमारी दुनिया का निजाम इतिहाई बामअना निजाम है। इससे साबित होता है कि मौजूदा दुनिया की तख़्कीक किसी आला मकसद के तहत हुई है। मगर हम देखते हैं कि इंसान ने जमीन को फ़साद से भर रखा है। बामअना कायनात में यह बेमअना वाक्या बिल्कुल बेजोड़ है। यह सूरतेहाल तकाजा करती है कि एक ऐसी दुनिया बने जो हर किस्म की बुराइयों से पाक हो।

यहां दुबारा मौजूदा दुनिया के अंदर एक ऐसा वाक्या मौजूद है जो इस सवाल का जवाब देता है। और वह है यहां की तमाम चीजों का जोड़े-जोड़े होना। मादद् (Element) में मुसबत (Positive) और मनी (Negative) ज़र्रे, नबातात (वनस्पति) में नर और मादा, इंसान में औरत और मर्द। इससे कायनात का यह मिजाज मालूम होता है कि यहां अशया (चीजों) की कमी को उसके जोड़े के जरिए मुकम्मल करने का कानून राज़ है। यह एक करीना है जो आखिरत के इम्कान को साबित करता है। आखिरत की दुनिया गोया मौजूदा दुनिया का दूसरा जोड़ा है जिससे मिलकर हमारी दुनिया अपने आपको मुकम्मल करती है।

كَذَٰلِكَ مَا آتَىٰ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مُجْنُونٌ ۚ أَتَوْا
يَهُ ۖ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَٰغَوْنَ ۚ فَتَوَلَّوْهُمْ فَأَمَّتْ مَلَكُومٌ ۚ وَذَكَرْنَا لِلَّذِينَ
تَنفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ

इसी तरह उनके अगलों के पास कोई पैगम्बर ऐसा नहीं आया जिसे उन्होंने साहिर (जादूगर) या मजनून न कहा हो। क्या ये एक दूसरे को इसकी वसीयत करने चले आ रहे हैं, बल्कि ये सब सरकश लोग हैं। पस तुम उनसे एराज (विमुखता) करो, तुम पर कुछ इल्जाम नहीं। और समझाते रहो क्योंकि

समझाना ईमान वालों को नफा देता है। (52-55)

एक संजीदा आदमी अगर किसी बात की दलील मांगे तो दलील सामने आने के बाद वह उसे मान लेता है। मगर जो लोग सरकशी का मिजाज रखते हैं उन्हें किसी भी दलील से चुप नहीं किया जा सकता। वे हर दलील को न मानने के लिए दुबारा कुछ नए अल्फाज पा लेंगे। यहां तक कि अगर उनके सामने ऐसी दलील पेश कर दी जाए जिसका तोड़ मुमकिन न हो तो वे यह कहकर उसे नजरअंदाज कर देंगे कि यह तो जादू है।

यह उन लोगों का हाल है जिन्हें कौम के अंदर बड़ाई का दर्जा मिल गया हो। ऐसे लोगों के लिए उनकी बड़ाई का एहसास इसमें रुकावट बन जाता है कि वे किसी दूसरे शख्स की जवान से जारी होने वाली सच्चाई को मान लें। ऐसे लोग अगर हक की दावत को न मानें तो दाआी को मायूस न होना चाहिए। वह उन दूसरे लोगों में अपने हामी पा लेगा जो झूठी बड़ाई के एहसास में मुब्तिला होने से बचे हुए हों।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِعِبَادُونَ ۚ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۚ فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ۚ قَوْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۚ

और मैंने जिन और इंसान को सिर्फ इसीलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें। मैं उनसे रिक नहीं चाहता और न यह चाहता हूं कि वे मुझे खिलाएं। बेशक अल्लाह ही रोजी देने वाला है, जोरआवर (सशक्त), जबरदस्त है। पस जिन लोगों ने जुम किया उनका डोल भर चुका है जैसे उनके साथियों के डोल भर चुके थे, पस वे जल्दी न करें। पस मुंकिरों के लिए ख़राबी है उनके उस दिन से जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। (56-60)

खुदा हर किस्म का जाती इख्तियार रखता है। ताहम परशितों को उसने अपनी वसीअ सलतनत का इतिजाम करने के लिए पैदा किया है। मगर इंसानों का मामला इससे मुख़लिफ है। इंसान इसलिए पैदा नहीं किए गए कि वे खुदा की किसी शख़सी या इतिजामी जरूरत को पूरा करें। उनकी पैदाइश का वाहिद मक्सद खुदा की इबादत है। इबादत का मतलब अपने आपको खुदा के आगे झुकाना है, अपने आपको पूरी तरह खुदा का परस्तार बना देना है।

इस इबादत का ख़ुलासा मअरफत है। चुनांचे इब्ने जुरैह ने इल्ला लियअबुदुन की तशरीह इल्लालि यअरिफूत से की है (तप्सीर इब्ने कसीर)। यानी इंसान से यह मलूब है कि वह खुदा को बतौर दरयाप्त के पाए। वह बिना देखे खुदा को पहचाने। इसी का नाम मअरफत है। इस

मअरफत के नतीजे में आदमी की जो ज़िंदगी बनती है उसी को इबादत व बंदगी कहा जाता है।

पानी का डोल भरने के बाद डूब जाता है इसी तरह आदमी की मोहलते अमल पूरी होने के बाद फौरन उसकी मौत आ जाती है। जो शख्स डोल भरने से पहले अपनी इस्लाह (सुधार) कर ले उसने अपने आपको बचाया। और जो शख्स आखिर वक्त तक ग़ाफिल रहा वह हलाक हो गया।

जालिम लोग अगर पकड़े न जा रहे हों तो उन्हें यह न समझना चाहिए कि वे छोड़ दिए गए हैं। वे इसलिए आज़ाद हैं कि खुदा का तरीका जल्दी पकड़ने का तरीका नहीं, न इसलिए कि खुदा उन्हें पकड़ने वाला नहीं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ اِنَّا نَحْنُ غَدَاةٌ ۚ وَنَحْنُ الْمُنِفِكُونَ ۚ وَالْطُّورُ ۚ وَكِتَابٌ مُّسْتُطَوِّرٌ ۚ فِي رَقٍّ مَّنشُورٌ ۚ وَالْبَيْتُ الْمَعْمُورُ ۚ وَالسَّقْفُ الْمَرْفُوعُ ۚ وَالْبَحْرُ الْمَسْجُورُ ۚ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۚ مَّالَهُ مِنْ دَافِعٍ ۚ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۚ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۚ قَوْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۚ يَوْمَ يُدْعَوْنَ اِلٰى نَارِجَهَتْمُ دَعَا ۚ هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۚ اَفَسِحْرُ هٰذَا اَمْ اَنْتُمْ لَا تَبْصُرُونَ ۚ اَصْلَوْهَا فَاَصْبِرُوا ۚ اَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ اِنَّا نَحْنُ مُخْرَجُونَ ۚ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है तूर की। और लिखी हुई किताब की, कुशादा वरक में। और आवाद घर की। और ऊंची छत की। और उबलते हुए समुद्र की। बेशक तुम्हारे रब का अज़ाब वाकेअ होकर रहेगा। उसे कोई टालने वाला नहीं। जिस दिन आसमान डगमगाएगा और पहाड़ चलने लगेंगे। पस ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए जो बातें बनाते हैं खेलते हुए। जिस दिन वे जहन्नम की आग की तरफ धकेले जाएंगे। यह है वह आग जिसे तुम झुठलाते थे। क्या यह जादू है या तुम्हें नजर नहीं आता। इसमें दाख़िल हो जाओ। फिर तुम सब करो या सब न करो। तुम्हारे लिए एकसां (समान) है। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे। (1-16)

तूर सहराए सीना का वह पहाड़ है जहां हजरत मूसा को पैगम्बरी दी गई। किताबे मस्तूर

सूरह-52. अत-तूर

1383

पारा 27

से मुराद तैरात है। बैत मअमूर से मुराद जमीन और सक्क मरफूअ से मुराद आसमान है।
बहर मस्जूर से मुराद मौजें मारता हुआ समुद्र है। ये चीजें शाहिद (साक्ष्य) हैं कि खुदा की पकड़ का दिन यकीनन आने वाला है। अल्लाह तआला यही खबर पैगम्बरों के जरिए देता रहा है। कदीम आसमानी किताबों में यही बात दर्ज है। जमीन व आसमान अपनी खामोश जवान में इसका एलान कर रहे हैं। समुद्र की मौजें हर सुनने वाले को उसकी कहानी सुना रही हैं।

इंसान को अपने अमल का नतीजा भुगतना होगा, यह बात आज पेशगी इत्तिलाअ की सूरत में बताई जा रही है। जो लोग पेशगी इत्तिलाअ से होश में न आएँ उन पर उनकी गफलत और सरकशी कल के दिन एक दर्दनाक अजाब की सूरत में आ पकड़ेगी और फिर वे उससे भागना चाहेंगे मगर वे उससे भाग कर कहीं न जा सकेंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُودٍ ۖ وَكَاهِنِينَ يَمُوتُونَ بِنَاءِ رَبِّهِمْ وَأَقْلَامُ رَبِّهِمْ
عَذَابُ الْحَرِيمِ ۖ كَانُوا أَشْرَكُوهَا إِنَّمَا أَنْتُمْ تُعْبَدُونَ ۖ مُقَرَّبِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ
مَّصْنُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ

बेशक मुत्तकी (ईश-परायण) लोग बागों और नेमतों में होंगे। वे खुशदिल होंगे उन चीजों से जो उनके ख ने उन्हें दी होंगी, और उनके ख ने उन्हें दोख के अजाब से बचा लिया। खाओ और पियो मजे के साथ अपने आमाल के बदले में। तकिया लगाए हुए सफ-ब-सफ तख्तों के ऊपर। और हम बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें उनसे ब्याह देंगे। (17-20)

इंसान का सबसे बड़ा जुर्म हक को झुठलाना है। इसी से बकिया तमाम जराइम पैदा होते हैं। इसी तरह इंसान की सबसे बड़ी नेकी हक का एतराफ है, तमाम दूसरी नेकियां इसी से बतौर नतीजा जाहिर होती हैं।

हक को मानने से आदमी की बड़ाई टूटती है। यह किसी इंसान के लिए सबसे ज्यादा मुश्किल काम है। इस पर वही लोग पूरे उतरते हैं जिन्हें अल्लाह के डर ने आखिरी हद तक संजीदा बना दिया हो। जो लोग इस सबसे बड़ी नेकी का सुबूत दें वे इसी के मुस्तहिक हैं कि उनके लिए जन्नत की अबदी नेमतों के दरवाजे खोल दिए जाएँ।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَابْتَغَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِذْنِ الْحَقِّ بِنَاهَانِ الْفَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا لَنَهُمْ مِنْ
عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ۖ وَامْدُدْ لَهُمْ رَبُّكَ يَفَاةً ۖ وَلَحْمٍ مِّمَّا
يَشْتَهُونَ ۖ يَتَنَزَّاعُونَ فِيهَا كَأَسَا لَا تَعُوفُ فِيهَا وَلَا تُلِيمُ ۖ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ
لَهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكَنُونٌ ۖ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّا كُنَّا

पारा 27

1384

सूरह-52. अत-तूर

قَبْلَ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ۖ فَمَنْ أَلَّهِ عَلَيْهِنَا وَوَقْنَا عَذَابَ السَّمُورِ ۖ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ
نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۖ

और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी उनकी राह पर ईमान के साथ चली, उनके साथ हम उनकी औलाद को भी जमा कर देंगे, और उनके अमल में से कोई चीज कम नहीं करेंगे।
हर आदमी अपनी कमाई में फंसा हुआ है। और हम उनकी पसंद के मेवे और गोश्त उन्हें बराबर देते रहेंगे। उनके दर्मियान शराब के प्यालों के तबादले हो रहे होंगे जो लगवियत (बेहदगी) और गुनाह से پاک होगी। और उनकी खिदमत में लड़के दौड़ते फिर रहे होंगे। गोया कि वे हिफाजत से रखे हुए मोती हैं। वे एक दूसरे की तरफ मुतवज्जह होकर बात करेंगे। वे कहेंगे कि हम इससे पहले अपने घर वालों में डते रहते थे। पस अल्लाह ने हम पर फल फरमाया और हमें लू के अजाब से बचा लिया। हम इससे पहले उसी को पुकारते थे, बेशक वह नेक सुलूक वाला, महरबान है। (21-28)

आखिरत में ऐसा नहीं होगा कि एक शख्स का गुनाह दूसरे शख्स के ऊपर डाल दिया जाए। और न कोई शख्स ईमान व अमल के बगैर जन्नत में दाखिला पा सकेगा। अलबत्ता अहले जन्नत के साथ एक खास फल का मामला यह होगा कि वालिदेन अगर जन्नत के बुलन्द दर्जे में हों और उनकी औलाद किसी और दर्जे में तो औलाद को भी उनके वालिदेन के साथ मिला दिया जाएगा ताकि उन्हें मजीद खुशी हासिल हो सके।

जन्नत की लतीफ दुनिया में दाखिले का मुस्तहिक सिर्फ वह शख्स होगा जिसका हाल यह था कि अपने बीवी बच्चों के दर्मियान रहते हुए भी उसे अल्लाह का खौफ तड़पाए हुए था, और जिसने अपनी उम्मीदों और अपने अदिशों को सिर्फ एक अल्लाह के साथ वाबस्ता कर रखा था।

فَذَرِّهَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ۖ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَتَرَبَّصُ بِهِ
رَبِّ الْمُنُونِ ۖ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَرِبِينَ ۖ أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَخْلَاؤُهُمْ
بِهَذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۖ أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ فَلْيَاثُبُوا
بِحَدِيثِ مَثِلِهِ إِنَّا كَانُوا أَصْدِقِينَ ۖ

पस तुम नसीहत करते रहो, अपने ख के फल से तुम न काहिन (भविष्यवक्ता) हो और न मजनून। क्या वे कहते हैं कि यह एक शायर है, हम इस पर गर्दिशे जमाना (काल-चक्र) के मुंतजिर हैं। कहो कि इतिजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इतिजार करने वालों में हूँ। क्या उनकी अक्लें उन्हें यही सिखाती हैं या ये सरकश लोग हैं। क्या वे कहते हैं कि यह कुरआन को खुद

सूरह-52. अत-तूर

1385

पारा 27

बना लाया है। बल्कि वे ईमान नहीं लाना चाहते। पस वे इसके मानिंद कोई कलाम ले आएँ, अगर वे सच्चे हैं। (29-34)

जब आदमी एक दावत के मुकाबले में अपने आपको बेदलील पाए, इसके बावजूद वह उसे मानना न चाहे तो वह यह करता है कि दाओ की जात में ऐब लगाना शुरू कर देता है। वह कलाम के बजाए मुतकल्लिम (कहने वाला) को अपना निशाना बनाता है। यही वह नफिसयात थी जिसके तहत पैगम्बर के मुखातबीन ने आपको शायर और मजनून कहना शुरू किया। वे आपकी दावत को दलील से रद्द नहीं कर सकते थे, इसलिए वे आपके बारे में ऐसी बातें कहने लगे जिनसे आपकी शख्सियत मुशतबह (संदिग्ध) हो जाए।

मगर पैगम्बर खुदा से लेकर बोलता है। और जो इंसान खुदा से लेकर बोले उसका कलाम इतना मुमताज तौर पर दूसरों के कलाम से मुखलिफ होता है कि उसके मिस्त कलाम पेश करना किसी के लिए मुमकिन नहीं होता। और यह वाक्या इस बात का सबसे बड़ा सबूत होता है कि उसका कलाम खुदाई कलाम है, वह आम मअनों में महज इंसानी कलाम नहीं।

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٢٩﴾ أَمْ خُلِقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ بَلْدٌ لَا يَوْمُوتُونَ ﴿٣٠﴾ أَمْ عِنْدَ رَبِّكَ أَمْ لَهُمُ الْمَصْيُطَرُونَ ﴿٣١﴾ أَمْ لَهُمْ سُلَاطِينُ مُبِينٌ ﴿٣٢﴾ أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٣٣﴾

क्या वे किसी खालिक (सृष्टा) के वगैर पैदा हो गए या वे खुद ही खालिक हैं। क्या जमीन व आसमान को उन्होंने पैदा किया है, बल्कि वे यकीन नहीं रखते। क्या उनके पास तुम्हारे रब के खजाने हैं या वे दारोगा (संरक्षक) हैं। क्या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर वे बातें सुन लिया करते हैं, तो उनका सुनने वाला कोई खुली दलील ले आए। क्या अल्लाह के लिए बेटियां हैं और तुम्हारे लिए बेटे। (35-39)

खुदा की तरफ से जिन सदाकतों का एलान हुआ है वे सब पूरी तरह माकूल (तर्कपूर्ण) हैं। आदमी अगर ध्यान दे तो वह बाआसानी उन्हें समझ सकता है। फिर भी लोग क्यों उनका इंकार करते हैं। इसकी वजह आखिरत के बारे में लोगों की बेयकीनी है। लोगों को जिंदा यकीन नहीं कि आखिरत में उनसे हिसाब लिया जाएगा। इसलिए वे इन उमूर (मामलों) में संजीदा नहीं, और इसीलिए वे उन्हें समझ भी नहीं सकते। अगर जजाए आमाल का यकीन हो तो आदमी फौरन उन बातों को समझ जाए जिन्हें समझना उसके लिए निहायत मुश्किल हो रहा है।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرُومٍ مُثْقَلُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ لَا يَخْتَبُونَ ﴿٣٥﴾

पारा 27

1386

सूरह-52. अत-तूर

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ﴿٣٦﴾ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمْ الْمَكِيدُونَ ﴿٣٧﴾ أَمْ لَهُمْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ ﴿٣٨﴾ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣٩﴾

क्या तुम उनसे मुआवजा मांगते हो कि वे तावान (अधिभार) के बोझ से दबे जा रहे हैं। क्या उनके पास षैब है कि वे लिख लेते हैं। क्या वे कोई तदबीर करना चाहते हैं, पस इंकार करने वाले खुद ही उस तदबीर में गिरफ्तार होंगे। क्या अल्लाह के सिवा उनका और कोई माबूद (पूज्य) है। अल्लाह पाक है उनके शरीक बनाने से। (40-43)

मदऊ गिरोह हमेशा माद्दापरस्ती की सतह पर होता है। ऐसी हालत में मदऊ को अगर यह एहसास हो कि दाओ उससे उसकी कोई माद्दी चीज लेना चाहता है तो वह फौरन उसकी तरफ से मुतवहिहश (भयभीत) हो जाएगा। यही वजह है कि पैगम्बर अपने और मुखातबीन के दर्मियान किसी किस्म के माद्दी मुतालबे की बात कभी नहीं आने देता। वह अपने और मुखातबीन के दर्मियान आखिर वक्त तक बेपर्जी की फज बाकी रखता है। चाहे इसके लिए उसे यकतरफा तौर पर माद्दी नुक्सान बर्दाश्त करना पड़े।

दाओ जब अपनी दावत के हक में इस हद तक संजीदगी का सबूत दे दे तो इसके बाद वह खुदा की उस नुसरत का मुस्तहिक हो जाता है कि मुकिरीन की हर तदबीर उनके ऊपर उल्टी पड़े। वे किसी भी तरह दाओ को मगलूब (परास्त) करने में कामयाब न हों।

وَأَنْ يَرَوْا كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَرْكُومٌ ﴿٤٠﴾ فَذَرْهُمْ حَتَّى يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤١﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

और अगर वे आसमान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वे कहेंगे कि यह तह-ब-तह बादल है। पस उन्हें छोड़ो, यहां तक कि वे अपने उस दिन से दो चार हों जिसमें उनके होश जाते रहेंगे। जिस दिन उनकी तदबीरों उनके कुछ काम न आएंगी और न उन्हें कोई मदद मिलेगी। और उन जालिमों के लिए इसके सिवा भी अजाब है, लेकिन उनमें से अक्सर नहीं जानते। (44-47)

कदीम मक्का के लोगों का यह हाल क्यों था कि अगर वे आसमान से कोई अजाब का टुकड़ा गिरते हुए देखें तो कह दें कि यह बादल है। इसकी वजह यह थी कि वे खुदा को या खुदाई ताकतों को मानते न थे। इसकी अस्त वजह यह थी कि उन्हें पैगम्बर के पैगम्बर होने में शक था। उन्हें यकीन न था कि उनके सामने बजाहिर उन्हीं जैसा जो एक शख्स है, उसका इंकार करना ऐसा जुर्म है कि इसकी वजह से हलाकत का पहाड़ गिर पड़ेगा।

पैगम्बर इस्लाम की शख्सियत अपने जमाने में लोगों के लिए एक निजाई (विवादित) शख्सियत थी। वह इस तरह एक साबितशुदा शख्सियत न थी जिस तरह आज वह लोगों को नजर आती है। मगर इस दुनिया में आदमी का इम्तेहान यही है कि वह शुबहात के पर्दे को फाड़कर हकीकत को देखे। वह बजाहिर एक निजाई शख्सियत को साबितशुदा शख्सियत के रूप में दर्शाए।

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ۖ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۝

और तुम सब्र के साथ अपने रब के फैसले का इंतजार करो। बेशक तुम हमारी निगाह में हो। और अपने रब की तस्बीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ, जिस वक्त तुम उठते हो। और रात को भी उसकी तस्बीह करो, और सितारों के पीछे हटने के वक्त भी। (48-49)

‘खुदा का फैसला आने तक सब्र करो’ का मतलब यह है कि मुखातब की तरफ से हर किस्म की नागवार बातों के पेश आने के बावजूद दावत (आह्वान) का काम उस वक्त तक जारी रखो जब तक खुद खुदा के नजदीक उसकी हद न आ जाए। जब यह हद आती है तो उस वक्त खुदा का फैसला जल्द होकर हक और नाहक के फर्क को अमली तौर पर जहिर कर देता है जिसे इससे पहले सिर्फ नजरी (बिचारिक) तौर पर जहिर करने की कोशिश की जा रही थी। इस पूरी मुद्दत में दाजी मुकम्मल तौर पर खुदा की हिफाजत में होता है। दाजी का काम यह है कि वह अल्लाह की तरफ मुतवज्जह रहे। और यह यकीन रखे कि अल्लाह उसे हर आन अपनी हिफाजत में लिए हुए है।

سُبْحَانَكَ رَبِّيَ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ وَسُبْحَانَكَ إِلَهِي ۝ وَإِنِّ هُوَ الْإِلَهِ ۝ إِذَا هَوَىٰ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ۝ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۚ عَلَّمَكَ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۚ ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ۚ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ۚ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۚ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۚ فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۚ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ۚ أَفَتَسْمُرُونَ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۚ وَلَقَدْ رَأَاهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۚ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ۚ عِنْدَ هَا جَعَتِ الْمَأْوَىٰ ۚ إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ۚ مَا رَأَىٰ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ۚ لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ۝

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है सितारे की जबकि वह गुरुब (अस्त) हो। तुम्हारा साथी न भटका है और न गुमराह हुआ है। और वह अपने जी से नहीं बोलता। यह एक ‘वही’ (ईश्वरीयवाणी) है जो उस पर भेजी जाती है। उसे जबरदस्त कुव्वत वाले ने तालीम दी है, आकिल (प्रबुद्ध) व दाना (विवेकशील) ने। फिर वह नमूदार हुआ और वह आसमान के ऊंचे किनारे पर था। फिर वह नजदीक हुआ, पस वह उतर आया। फिर दो कमानों के बराबर या इससे भी कम फासला रह गया। फिर अल्लाह ने ‘वही’ की अपने बंदों की तरफ जो ‘वही’ (प्रकाशना) की। झूठ नहीं कहा रसूल के दिल ने जो उसने देखा। अब क्या तुम उस चीज पर उससे झगड़ते हो जो उसने देखा है। और उसने एक बार और भी उसे सिदरतुल मुंतहा के पास उतरते देखा है। उसके पास ही बहिश्त है आराम से रहने की, जबकि सिदरह पर छा रहा था जो कुछ कि छा रहा था। निगाह बहकी नहीं और न हद से बढ़ी। उसने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं। (1-18)

सितारों का गुरुब (अस्त) एक अलामती लफ्ज है जिसके जरिए सितारों की गर्दिश के मोहकम निजाम की तरफ इशारा किया गया है। माददी दुनिया में सितारों का निजाम एक बेखता (अचूक) निजाम है, यह इस बात का करीना है कि ‘वही’ व नुबुव्वत की सूरत में खुदा ने जो रूहनी निजाम वकय किया है वह भी एक बेखता निजाम हो।

फरिश्ता और ‘वही’ की सूरत में रसूल का तजर्बा हकीकी तजर्बा है, इसके सबूत के लिए कुरआन का बयान काफी है। कुरआन का मेजिजना कलाम कुरआन को खुदा की किताब साबित करता है। और जिस किताब का खुदा की किताब होना साबित हो जाए उसका हर बयान खुद कुरआन के जोर पर मुस्तनद (प्रमाणिक) तस्लीम किया जाएगा।

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ۖ وَمَنْوَةَ الثَّالِثَةِ الْآخِرَىٰ ۖ أَكُنَّ لَكُمْ ذَكْرًا ۚ أَلَمْ تَكُنَّ أَفْأَنَّا ۖ إِذْ أَقْسَمُ ضَيْزَىٰ ۖ إِنَّ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءُ سَبَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ ۖ ثُمَّ أَتَزَلَّ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ رَبِّهِمْ الْهُدَىٰ ۖ أَمْرٌ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَسَّىٰ ۖ فَلِللَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ۖ

भला तुमने लात और उज्जा पर गौर किया है। और तीसरे एक और मनात पर। क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और खुदा के लिए बेटियां। यह तो बहुत बेहंगी तक्सीम हुई। ये महज नाम हैं जो

तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं अल्लाह ने इनके हक में कोई दलील नहीं उतारी। वे महज गुमान की पैरवी कर रहे हैं। और नफ्स की ख्वाहिश की। हालांकि उनके पास उनके रब की जानिव से हिदायत आ चुकी है। क्या इंसान वह सब पा लेता है जो वह चाहे। पर अल्लाह के इख्तियार में है आखिरत और दुनिया। (19-25)

लात और उज्ज और मनात कद्रीम अरब के कुत थे। लात ताइफ में था। उज्ज मक्का के करीब नख्ला में और मनात मदीना के करीब कुद्रेद में। ये तीनों उनके अक़ीदे के मुताबिक खुदा की बेटियां थीं और वे उन्हें पूजते थे। इस किस्म का अक़ीदा विलाशुबह एक बेबुनियाद मफरूज़ा (कल्पना) है। मगर इसी के साथ वह खुद अपनी तरदीद (खंडन) आप है। उन मुश्रिकीन का हाल यह था कि वे बेटियों को अपने लिए ज़िल्लत की चीज समझते थे। फरमाया कि गौर करो, खुदा जो बेटा और बेटी दोनों का ख़ालिक है, वह अपने लिए औलाद बनाता तो बेटियां बनाता।

‘क्या इंसान वह सब पा लेता है जो वह चाहे’ इसकी तशरीह करते हुए शाह अब्दुल कादिर देहलवी लिखते हैं ‘यानी वुत पूजे से क्या मिलता है। मिले वह जो अल्लाह दे।’

وَكَمْ مِنْ مَّكَلٍ فِي السَّمَوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُضَيِّقُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيَسْتَسْمُونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةً ۝ الْأُنثَىٰ وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ الظَّنُّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۝ فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝ ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ

और आसमानों में कितने फरिश्ते हैं जिनकी सिफारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती। मगर बाद इसके कि अल्लाह इजाजत दे जिसे वह चाहे और पसंद करे। बेशक जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, वे फरिश्तों को औरतों के नाम से पुकारते हैं। हालांकि उनके पास इस पर कोई दलील नहीं। वे महज गुमान पर चल रहे हैं। और गुमान हक बात में जरा भी मुफ़ीद नहीं। पर तुम ऐसे शख्स से एराज (उपेक्षा) करो जो हमारी नसीहत से मुंह मोड़े। और वह दुनिया की ज़िंदगी के सिवा और कुछ न चाहे। उनकी समझ बस यहीं तक पहुंची है। तुम्हारा रब खूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटका हुआ है। और वह उसे भी खूब जानता है जो राहेरास्त (सन्मार्ग) पर है। (26-30)

पत्थर के वुत बनाकर उन्हें पूजना, फरिश्तों को खुदा की बेटी बताना, सिफारिशों की बुनियाद पर जन्नत की उम्मीद रखना ये सब ग़ैर संजीदा अक़ीदे हैं। और ग़ैर संजीदा अक़ीदे हमेशा उस ज़ेहन में पैदा होते हैं जो पकड़ का ख़ौफ न रखता हो। ख़ौफ लायअनी (निरर्थक) कलाम का कातिल है। और जो शख्स बेख़ौफ हो उसका दिमाग़ लायअनी कलाम का कारख़ाना बन जाएगा।

जो लोग बेख़ौफ़ी की नफ़िसयात में मुब्तिला हों उनसे बहस करने का कोई फायदा नहीं। ऐसे लोग दलील और माकूलियत पर ध्यान नहीं देते, इसलिए वे अग्रे हक को मानने के लिए भी तैयार नहीं होते। उनसे मुकाबला करने की एक ही मुमकिन तदबीर है। वह यह कि उनसे एराज किया जाए। ताहम अल्लाह तआला हर शख्स की अंदरूनी हालत को जानता है और वह उसके मुताबिक हर शख्स से मामला फरमाएगा।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَىٰ ۝ الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْأَثْمِ وَالْفَوَاحِشِ إِلَّا اللَّمَمَ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۝ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ۝

और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है, ताकि वह बदला दे बुरा काम करने वालों को उनके किए का और बदला दे भलाई वालों को भलाई से। जो कि बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं मगर कुछ आलूदगी (छोटी बुराई)। बेशक तुम्हारे रब की बख़्शिश की बड़ी समाई है। वह तुम्हें खूब जानता है जबकि उसने तुम्हें जमीन से पैदा किया। और जब तुम अपनी मांओं के पेट में जनीन (भ्रूण) की शक्ल में थे। तो तुम अपने को मुकद्दस (पवित्र) न समझो। वह तकवा (ईश-भय) वालों को खूब जानता है। (31-32)

कायनात अपने हददर्जा मोहकम (सुदृढ़) निजाम के साथ बता रही है कि उसका ख़ालिक व मालिक बेहद ताक़तवर है। यही वाक्य़ा यह समझने के लिए काफ़ी है कि वह इंसान को पकड़ेगा और जब वह इंसान को पकड़ेगा तो किसी भी शख्स के लिए उसकी पकड़ से बचना मुमकिन न होगा।

इंसान को बशरी (इंसानी) कमजोरियों के साथ पैदा किया गया है। इसलिए इंसान से फरिश्तों जैसी पाकीजगी का मुतालबा नहीं किया गया। अल्लाह तआला ने इंसान को पूरी तरह बता दिया है कि उसे क्या करना है और क्या नहीं करना है। ताहम इंसान के लिए ‘लमम’ की माफ़ी है। यानी वक्ती जज्बे के तहत किसी बुराई में पड़ जाना, बशर्ते कि आदमी फौरन बाद ही उसे महसूस करे और शर्मिदा होकर अपने रब से माफ़ी मांगे।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّى ۖ وَءَعْطَى قَلِيلًا ۖ أَكْذَى ۚ ۖ أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ
يُرَى ۚ ۖ أَمْ لَمْ يُنَبِّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَى ۖ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّى ۚ ۖ أَلَا تَزِرُ
وِزْرَهُ ۖ وَزُرُّ أَخْرَى ۚ ۖ وَأَنْ يُنْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَى ۚ ۖ وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ
يُرى ۚ ۖ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَى ۚ ۖ وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَى ۚ ۖ

भला तुमने उस शख्स को देखा जिसने एराज (उपेक्षा) किया। थोड़ा सा दिया और रुक गया।
क्या उसके पास ग़ैब का इल्म है। पस वह देख रहा है। क्या उसे ख़बर नहीं पहुंची उस बात
की जो मूसा के सहीफों (ग्रंथों) में है, और इब्राहीम के, जिसने अपना कौल पूरा कर दिया।
कि कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और यह कि इंसान के लिए वही है
जो उसने कमाया। और यह कि उसकी कमाई अनकरीब देखी जाएगी। फिर उसे पूरा बदला
दिया जाएगा। और यह कि सबको तुम्हारे रब तक पहुंचना है। (33-42)

बहुत से लोग हैं जो थोड़ा सा हक की तरफ रागिब होते हैं। फिर उनके मफ़ादात (स्वाधी)
उन पर ग़ालिब आते हैं और वे दुबारा अपनी पिछली हालत की तरफ लौट जाते हैं। ऐसे लोग
अपनी ग़लत रविश की तावील (औचित्य) के लिए तरह-तरह के ख़ूबसूरत अकीदे बना लेते हैं।
मगर यह सिर्फ उनके जुर्म को बढ़ाता है, क्योंकि यह ग़लती पर सरकशी के इजाफे के हममअना
है।

पैगम्बरों के जरिए अल्लाह तआला ने जो हकीकत खोली है उसका खुलासा यह है कि हर
आदमी को लाजिमन अपने अमल का बदला पाना है। न कोई शख्स अपने अमल के अंजाम
से बच सकता और न कोई दूसरा शख्स किसी को बचाने वाला बन सकता। जो लोग इस
पैगम्बराना चेतावनी से मुतनब्बह (सतर्क) न हों उनसे बड़ा नादान खुदा की इस दुनिया में कोई
नहीं।

وَإِنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى ۚ ۖ وَإِنَّهُ هُوَ آمَاتٌ وَآخِيَا ۚ ۖ وَإِنَّهُ خَلَقَ الزُّوجَيْنِ
الذِّكْرَ وَالْأُنثَى ۚ ۖ مِنْ نُطْفَةٍ إِذَا تُمْنَى ۚ ۖ وَإِنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْآخِرَى ۚ ۖ وَإِنَّهُ هُوَ
أَعْنَى وَأَقْنَى ۚ ۖ وَإِنَّهُ هُوَ رَبُّ الشَّعْرَى ۚ ۖ

और बेशक वही हंसाता है और रुलाता है। और वही मारता है और जिलाता है। और उसी ने
दोनों किस्म, नर और मादा को पैदा किया, एक बूंद से जबकि वह टपकाई जाए। और उसी
के जिम्मे है दूसरी बार उठाना। और उसी ने दौलत दी और सरमायादार बनाया। और वही शिअरा
(नाम के तारे) का रब है। (43-49)

दुनिया के हर वाकये का तअल्लुक ऐसे मावराई असबाब (आलौकिक कारकों) से होता
है कि खुदा के सिवा कोई और उसके जुहूर पर कादिर नहीं हो सकता। खुशी और ग़म, मौत
व हयात, तख़्तीकी निजाम, अमीरी और ग़रीबी, सब एक बुलन्द व बरतर ताक़त का करिश्मा
हैं। कदीम इंसान सितारों को सबवे हयात (जीवन का कारक) समझता था, मौजूदा जमाने में
क़मूने फ़ितरत (फ़क़्रि के नियम) को सबवे हयात समझ लिया गया है। मगर हकीकत यह है
कि इन असबाब के ऊपर भी एक सबब है और वह खुदाए रब्बुल आलमीन है। फिर उसके
सिवा किसी और को मक़ज्जे तवज्जोह बनाना इंसान के लिए किस तरह जाइज हो सकता है।

وَإِنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۚ ۖ وَشُودًا فَمَا أَبْقَىٰ ۚ ۖ وَقَوْمُ نُوحٍ ۖ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا
هُمُ الظَّالِمِينَ ۚ ۖ وَالْمُؤْتَفِكَةَ ۚ ۖ أَهْوَىٰ ۚ ۖ فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ۚ ۖ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكَ تَتِمَارَىٰ ۚ ۖ

और अल्लाह ही ने हलाक किया आदे अब्ल को और समूद को। फिर किसी को बाकी न छोड़ा।
और कौमे नूह को उससे पहले, बेशक वे निहायत जालिम और सरकश थे। और उलटी हुई
बस्तियों को भी फेंक दिया। पस उन्हें ढांक लिया जिस चीज ने ढांक लिया। पस तुम अपने
रब के किन-किन करिश्मों को झुठलाओगे। (50-55)

एक कैम तरक़्की करती है। वह दूसरी कैमों से ऊपर उठ जाती है। बज़हिर नामुमकिन
नजर आने लगता है कि कोई उसे मग़लूब (परास्त) कर सके। इसके बाद ऐसे असबाब होते हैं
कि वह कैम हलाक हो जाती है या तनज़ुल (पतन) का शिकार होकर तारीख़े गुज़िशता (बीते
इतिहास) का मौजूअ बन जाती है। यह वाक़्या जाहिर करता है कि इंसानों के ऊपर भी कोई
ताक़त है जो कैमों के मुस्तक़बिल का फैसला करती है। तारीख़ के ये वाज़ेह वाक़ियात भी अगर
इंसान को सबक न दें तो वह कौन सा वाक़्या होगा जिससे इंसान अपने लिए सबक ले।

هَذَا نَذِيرٌ ۖ مِنَ النَّذْرِ الْأُولَىٰ ۚ ۖ أَرْفَتِ الْأَرْفَةَ ۚ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ
كَاشِفَةٌ ۚ ۖ أَفَبِنَ هَذَا الْحَدِيثِ تَعْبُونَ ۚ ۖ وَتَصْحَكُونَ ۚ ۖ وَلَا تَتَّبِعُونَ ۚ ۖ وَأَنْتُمْ
سَامِدُونَ ۚ ۖ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۚ ۖ

سُجَّدًا

यह एक डराने वाला है पहले डराने वालों की तरह। करीब आने वाली करीब आ गई। अल्लाह
के सिवा कोई उसे हटाने वाला नहीं। क्या तुम्हें इस बात से तअज्जुब होता है। और तुम हंसते
हो और तुम रोते नहीं। और तुम तकबुर करते हो। पस अल्लाह के लिए सज्दा करो और उसी
की इबादत करो। (56-62)

पैगम्बरों की तारीख जो कुरआन में बताई गई है, उससे जाहिर होता है कि हक का इंकार और उसका बुरा अंजाम दोनों हाथ की दो उंगलियों की तरह एक दूसरे से करीब हैं। आदमी के अंदर अगर एहसास हो तो वह इंकार और सरकशी का रवैया इस्तिथार करते ही खुदा की पकड़ को अपनी तरफ आता हुआ देखने लगे, और सरकशी का तरीका छोड़कर इताअत का तरीका इस्तिथार कर ले। मगर इंसान इतना ज्यादा मदहोश है कि अपने सामने की चीज भी उसे नजर नहीं आती।

سُبْحَانَكَ يَا وَحْدَهُ ۥ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۚ قَدْ جَاءَ الْإِنشَاءَ ۚ وَأَنْشَقَّ الْقَمَرُ ۚ وَلَنْ يُرَوِّا إِلَهَ يُعْرَضُونَ وَيَقُولُوا سَحَابٌ مُمَرَّرٌ ۚ وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُسْتَقَرٌّ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۚ حَكِيمَةً بَالِغَةً فَمَا تَغْنِ الْتُدُّرُ ۚ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَى شَيْءٍ شَكْرٌ ۚ خُشْعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ ۚ مَهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا يَوْمُ عَسِيرٍ ۚ

आयतें-55

सूह-54. अल-कमर

रुकूअ-3

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कियामत करीब आ गई और चांद फट गया। और वे कोई भी निशानी देखें तो वे एराज (उपेक्षा) ही करेंगे। और कहेंगे कि यह तो जादू है जो पहले से चला आ रहा है। और उन्होंने झुठला दिया और अपनी ख्वाहिशों की पैरवी की और हर काम का वक्त मुकर्रर है। और उन्हें वे ख़बरें पहुंच चुकी हैं जिसमें काफी इबरत (सीख) है। निहायत दर्जे की हिक्मत (तत्वदर्शिता) मगर तंबीहात (चेतावनियाँ) उन्हें फायदा नहीं देतीं। पस उनसे एराज करो, जिस दिन पुकारने वाला एक नागवार चीज की तरफ पुकारेगा। आंखें झुकाए हुए कब्रों से निकल पड़ेंगे। गोया कि वे बिखरी हुई टिड़्डियाँ हैं, भागते हुए पुकारने वाले की तरफ, मुँकिर कहेंगे कि यह दिन बड़ा सख्त है। (1-8)

खुदा मौजूदा दुनिया में ऐसे वाक़ेयात बरपा करता है जो कियामत को पेशगी तौर पर क़बिलेफ़हम बनाने वाले हैं। इसी क्रिम का एक वाक़या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में हिजरत से चन्द साल पहले पेश आया। जबकि लोगों ने देखा कि चांद फटकर दो टुकड़े हो गया। उस वक्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों

से कहा कि देखो, जिस तरह चांद टूटा है इसी तरह पूरी दुनिया टूटेगी और फिर नई दुनिया बनाई जाएगी।

इस तरह के वाक़ेयात मेंबिलाशुबह सबक है। मगर इन वाक़ेयात से सबक लेना उसी वक्त मुमकिन है जबकि आदमी अपनी अक्ल से उसके बारे में सोचे। जिन लोगों के ऊपर उनकी ख्वाहिशात ग़ालिब आ गई हों वे उन्हें देखकर कह देंगे कि 'यह जादू है।' वे वाक़ेयात की तौजीह अपनी ख्वाहिश के मुताबिक करके उन्हें अपने लिए ग़ैर मुअस्सिर (अप्रभावी) बना लेंगे। ऐसे लोगों के लिए बड़ी से बड़ी दलील भी बेमअना है। वे उसी वक्त होश में आएं जबकि कियामत की चिंथाड़ जाहिर हो और उनसे होश में आने का मौका छीन ले।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدَجَرُوا ۚ فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ۚ فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ ۚ وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَى أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۚ وَحَمَلْنَاهُ عَلَى ذَاتِ الْأَوَّارِ وَدُسِّرَ ۚ فَجَرَى بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِمَنْ كَانَ كُفِرَ ۚ وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۚ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ۚ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۚ

उनसे पहले नूह की कौम ने झुठलाया, उन्होंने हमारे बंदे की तकजीब की (झुठलाया) और कहा कि दीवाना है और झिड़क दिया। पस उसने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब (दबाव-ग्रस्त) हूँ, तू बदला ले। पस हमने आसमान के दरवाजे मूसलाधार बारिश से खोल दिए। और जमीन से चशमे (स्रोत) बहा दिए। पस सब पानी एक काम पर मिल गया जो मुकद्दर हो चुका था। और हमने उसे एक तख़्तों और कीलों वाली पर उठा लिया, वह हमारी आंखों के सामने चलती रही। उस शख्स का बदला लेने के लिए जिसकी नाकद्री की गई थी। और उसे हमने निशानी के लिए छोड़ दिया। फिर कोई है सोचने वाला। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (9-17)

हजरत नूह की कौम के अकाबिर (बड़े) अपनी झूठी अज्मतों में गुम थे। वे हजरत नूह का एतराफ करने के लिए तैयार न हो सके। इसका नतीजा यह हुआ कि वे अजाबे इलाही की जद में आ गए। उन पर यह अजाब हैलनाक सैलाब की सूत में आया। सारी कौम अपनी आबादियों सहित उसमें ग़र्क हो गई। अलबत्ता हजरत नूह और उनके साथी खुदा के हुक्म से एक कश्ती में सवार हो गए। यह कश्ती चलती हुई अरारात पहाड़ पर ठहर गई।

अरारात टर्की में वाकेअ है। वह वहां का सबसे ऊंचा पहाड़ है। उसकी चोटी 16853 फिट ऊंची है। कुछ हवाबाजों का कहना है कि उन्होंने अरारात की बरफानी चोटी के ऊपर से उड़ते हुए वहां कश्ती जैसी एक चीज बर्फ में धंसी हुई देखी है। अगर यह सही हो तो इसका मतलब यह है कि फिरऔने मूसा की लाश जिस तरह अहराम के अंदर दफन थी और उन्नीसवीं सदी के आखिर में बरामद होकर खुदा की निशानी (यूसुस 92) बन गई, इसी तरह शायद किसी वक्त कश्ती नूह भी दरयाफ्त हो और वह लोगों के लिए खुदा की निशानी बन जाए।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَدِىُّ وَنُذِرٍ ۖ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا
فِي يَوْمٍ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۖ تَنزِعُ النَّاسَ ۖ كَالْهَرَمِ أَجْزَا نَحْلٍ مُّنتَقِعٍ ۖ فَكَيْفَ
كَانَ عَدِىُّ وَنُذِرٍ ۖ وَلَقَدْ يَسِّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۚ

आद ने झुठलाया तो कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। हमने उन पर एक सख्त हवा भेजी मुसलसल नहसत के दिन में। वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी जैसे कि वे उखड़े हुए खजूरों के तने हों। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (18-22)

कैसा आद जब खुदा के अजाब की मुस्तहिक हो गई तो खुदा ने उन पर ऐसी तेज आंधी भेजी जिसमें लोगों का जमीन पर ठहरना मुश्किल हो गया। आंधी उन्हें इस तरह उठा-उठाकर फेंक रही थी कि कोई दीवार से जाकर टकराता था और कोई दरख्त से। किसी की छत उसके सर पर गिर पड़ी। यह इस बात का मुजाहिरा था कि इंसान बिल्कुल बेबस है, खुदा के मुकाबले में उसे किसी किस्म का इख्तियार हासिल नहीं।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۖ فَقَالُوا ابْشِرُوا مِنَّا وَاحِدًا تَتَّبِعُهُ إِنَّا إِذَا تَفَعَّلْنَا شَيْئًا وَسِعَهُ
الْقَوَىٰ أَلَمٌ ۖ عَلَيْنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌّ ۖ سَيَعْلَبُونَ غَدًا مِّنَ الْكَذَّابِ
الْأَشِرِّ ۖ إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۖ وَبَيْنَهُمْ أَنَّ
الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُحْتَضَرٌ ۖ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ۖ فَكَيْفَ
كَانَ عَدِىُّ وَنُذِرٍ ۖ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ
الْمُحْتَضِرِ ۖ وَلَقَدْ يَسِّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۚ

समूद ने डर सुनाने को झुठलाया। पस उन्होंने कहा क्या हम अपने ही अंदर के एक आदमी के कहे पर चलेंगे, इस सूरत में तो हम गलती और जुनून में पड़ जाएंगे। क्या हम सब में से उसी पर नसीहत उतरी है, बल्कि वह झूठा है, बड़ा बनने वाला। अब वे कल के दिन जान लेंगे कि कौन झूठा है और बड़ा बनने वाला। हम ऊंटनी को भेजने वाले हैं उनके लिए आजमाइश बनाकर, पस तुम उनका इतिजार करो। और सब्र करो। और उन्हें आगाह कर दो कि पानी उन में बांट दिया गया है, हर एक बारी पर हाजिर हो। फिर उन्होंने अपने आदमी को पुकारा, पस उसने वार किया और ऊंटनी को काट डाला। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। हमने उन पर एक चिंघाड़ भेजी, तो वे बाढ़ वाले की रेंदी हुई बाढ़ की तरह होकर रह गए। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (23-32)

पैगम्बर हमेशा आम इंसान के रूप में आता है, इसलिए इंसान उसे पहचान नहीं पाता। इसी तरह खुदा की ऊंटनी भी बजाहिर आम ऊंटनी की तरह थी। इसलिए समूद के लोग उसे पहचान न सके। और उसे मार डाला। मौजूदा दुनिया इसी बात का इम्तेहान है। यहां लोगों को बजाहिर एक आम आदमी में खुदा के नुमाइदे को देखना है। बजाहिर एक आम ऊंटनी में खुदा की ऊंटनी को पहचान लेना है। जो लोग इस इम्तेहान में नाकाम रहें वे कभी हिदायत के रास्ते को नहीं पा सकते।

कुरआन अगरचे गहरे मआनी की किताब है। मगर उसके अंदर बयान में हददर्जा वुजूह (Clarity) है। इस वुजूह (स्पष्टता) की बिना पर कुरआन का समझना हर आदमी के लिए आसान हो गया है, चाहे वह एक आम आदमी हो या एक आला तालीमयाफता आदमी।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ۖ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ ۖ
نَّعْبَهُ ۖ مِّنْ عِنْدِنَا كَذَّابٌ مُّجْرِمٌ ۖ وَلَقَدْ أَتَدْرَهُمْ بِطِشْتِنَا فَاكْتَمَرُوا
بِالنُّذُرِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِى وَنُذِرٍ ۖ
وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقَرٌّ ۖ فَذُوقُوا عَذَابِى وَنُذِرٍ ۖ وَلَقَدْ يَسِّرْنَا
الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۚ

लूत की कौम ने डर सुनाने वालों को झुठलाया। हमने उन पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजी, सिर्फ लूत के घर वाले उससे बचे, उन्हें हमने बचा लिया सहर (भोर) के वक्त। अपनी जानिव से फल कके। हम इसी तरह बदला देते हैं उसे जो शुक करे। और लूत ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया, फिर उन्होंने उस डराने में झगड़े पैदा किए। और वे उसके मेहमानों को उससे लेने लगे। पस हमने उनकी आंखें मिटा दीं। अब चखो मेरा अजाब और मेरा डराना। और

सुबह सवेरे उन पर अज़ाब आ पड़ा जो ठहर चुका था। अब चखो मेरा अज़ाब और मेरा डराना। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (33-40)

हजरत लुत अलैहि० की दावत उठी तो कुछ लोगों ने उसका एतराफ कर लिया, वे हक को बड़ा मान कर अपने आपको उसके मुकाबले में छोटा करने पर राजी हो गए। मगर अक्सर अफराद ने ऐसा नहीं किया। वे दलाइल का एतराफ करने के बजाए उसे रद्द करने के लिए झूठी बहसें निकालते रहे। हक की दावत के मुकाबले में इस किस्म की रविश बहुत बड़ा जुर्म है, चुनांचे एतराफ करने वालों को छोड़कर इंकार करने वाले पकड़ लिए गए। यह एक मिसाल है कि इस दुनिया में हक का इंकार करने वालों के लिए हलाकत है और हक का एतराफ करने वालों के लिए नजात।

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ الذُّرُّ ۖ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُذَّابًا ۖ فَآخَذْنَاهُمْ أَخَذَ عَزِيزٌ مُّقْتَدِرٌ ۝٤١

और फिरऔन वालों के पास पहुंचे डराने वाले। उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुटलाया तो हमने उन्हें एक ग़ालिब (प्रभावशाली) और कुव्वत वाले के पकड़ने की तरह पकड़ा। (41-42)

फिरऔन अपने वक्त का इतिहाई ताकतवर बादशाह था। मगर हक का इंकार करने के बाद वह अल्लाह की नजर में बेक़ीमत हो गया। इसके बाद वह एक आजिज इंसान की तरह हलाक कर दिया गया। इस दुनिया में हक के साथ खड़ा होने वाला आदमी जोरआवर है और हक के खिलाफ खड़ा होने वाला आदमी बेजेर।

اَلْقَالُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكَ ۚ اَفَرَأٰتُمْ فِي الزُّبُرِ ۝٤٢ اَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّتَّحِفُونَ ۝٤٣ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۝٤٤ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَذٰهٰى وَاَمَرٌ ۝٤٥ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِي ضَلٰلٍ وَّسْعٍ ۝٤٦ يَوْمَ يُسْعَبُونَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ذُقُوْا مَسَّ سَقَرٍ ۝٤٧

क्या तुम्हारे मुँह पर उन लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिए आसमानी किताबों में माफी लिख दी गई है। क्या वे कहते हैं कि हम ऐसी जमाअत हैं जो ग़ालिब रहेंगे। अनकरीब यह जमाअत शिकस्त खाएगी और पीट फेंकर भागेगी। बल्कि कियामत उनके वादे का वक्त है और कियामत बड़ी सख्त और बड़ी कड़वी चीज है। बेशक मुजरिम लोग गुमराही में और बेअवली में हैं। जिस दिन वे मुंह के बल आग में घसीटे जाएंगे। चखो मजा आग का। (43-48)

पिछले पैगम्बरों का इंकार करने वालों के साथ जो वाक्यात पेश आए उनमें पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का इंकार करने वालों के लिए नसीहत थी। मगर उन्होंने इससे नसीहत न ली। यही तमाम कैमों का हाल है। खुली निशानियों के बावजूद हर कैम अपने आपको महफूज और मुस्तसना (अपवाद) कैम समझ लेती है। हर कैम दुबारा वही सरकशी करती है जो पिछली कैमों ने की और उसके नतीजे में वह खुदाई अजाब की मुस्तहिक हो गई।

اِنَّا كُلُّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ۝٤٨ وَمَا اَمْرُنَا اِلَّا وَاَحَدَةٌ ۚ كَلِمَةٌ يَّالْبَصِرَ ۝٤٩ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا اَشْيَاعًا مِّنْ قَبْلُ ۚ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الرَُّّبْرِ ۝٥٠ وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّاَكْبَرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝٥١ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَدَّتٍ وَّهَمٍ ۝٥٢ فِيْ مَقْعَدٍ صٰدِقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝٥٣

हमने हर चीज को पैदा किया है अंदाजे से। और हमारा हुक्म बस एकबारगी आ जाएगा जैसे आंख का झपकना। और हम हलाक कर चुके हैं तुम्हारे साथ वालों को, फिर क्या कोई है सोचने वाला। और जो कुछ उन्होंने किया सब किताबों में दर्ज है। और हर छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है। बेशक डरने वाले बाग़ों में और नहरों में होंगे। बैठे सच्ची बैठक में, कुदरत वाले बादशाह के पास। (49-55)

दुनिया की हर चीज का एक मुक़रर जाब्ता (नियम) है। यही उसूल इंसान के मामले में भी है। इंसान को एक मुक़रर जाब्ते के तहत मौजूदा दुनिया में अमल का मौक़ा दिया गया है। और मुक़रर जाब्ते ही के तहत उसे अमल के मक़म से हटाकर अंजाम के मक़म में पहुंचा दिया जाता है। ख़ालिक की कुदरत जो मौजूदा कायनात में जाहिर हुई है वह यह यकीन दिलाने के लिए काफी है कि यह मामला ऐन अपने वक्त पर बिलाताख़ीर (अविलंब) पेश आएगा। इसी तरह मौजूदा दुनिया में रिकॉर्डिंग का निज़ाम इस हकीकत का पेशगी एलान है कि हर एक के साथ ऐन वही मामला किया जाएगा जो उसके अमल के मुताबिक हो। ताहम ये बातें उसी शख्स की समझ में आएंगी जो अपने अंदर यह मिजाज रखता हो कि वह वाक़ेयात पर ग़ौर करे। और जाहिर से गुज़र कर बातें में छुपी हुई हकीकतों को देख सके।

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। यहां हर एक को पूरी आजादी हासिल है। इसलिए मौजूदा दुनिया में यह मुमकिन है कि आदमी 'झूठी नशिस्त (बैठक)' पर भी बैठकर नुमायां हो सके। वह झूठ की जमीन पर इज्जत और मर्बू का मक़म हासिल कर ले। मगर आख़िरत में किसी के लिए ऐसा मुमकिन न होगा। आख़िरत में इज्जत और कामयाबी सिर्फ़ उन लोगों को मिलेगी जो सच्ची नशिस्त पर बैठने वाले हों। जिन्होंने फिलवाक़अ अपने आपको सच की जमीन पर खड़ा किया हो। आख़िरत में खुदा की कुदरत का मक़म का ज़ुहूर

1399

पारा 27

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ قُلْ إِنِّي أَعْلَمُ الْقُرْآنَ ۝ خُلِقَ الْإِنْسَانُ ۝ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝ يَحْسِبَانِ ۝ وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ۝ وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۝ أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۝ وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ۝

सूरह-55. अर-रहमान

रुकूअ-3

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
रहमान ने, कुरआन की तालीम दी। उसने इंसान को पैदा किया। उसे बोलना सिखाया। सूरज और
चांद के लिए एक हिसाब है। और सितारे और दरख्त सज्दा करते हैं। और उसने आसमान को ऊंचा
किया और उसने तराजू रख दी। कि तुम तोलने में ज्यादाती न करो। और इंसाफ के साथ सीधी
तराजू तोलो और तोल में न घटाओ। (1-9)

अल्लाह तआला ने इंसान को बनाया। उसे नुक्त (बोलने) की अनोखी सलाहियत दी जो सारी मालूम कायनात में किसी को हासिल नहीं। फिर इंसान से जो आदिलाना (न्यायपूर्ण) रविश मत्लूब थी उसका अमली नमूना उसने कायनात में कायम कर दिया। इंसान के गिर्द व पेश की पूरी दुनिया ऐन उसी उम्तूले अदूल पर कायम है जो इंसान से अल्लाह तआला को मत्लूब है और कुरआन में इसी अदूल (न्याय) को लफ्जी तौर पर बयान कर दिया गया है।

कुरआन खुदाई अदूल का लफ्जी इश्ार है और कायनात खुदाई अदूल का अमली इश्ार।

बंदों के लिए जरूरी है कि वह अपने कौल व अमल को इसी तराजू से नापते रहें। वे न लेने में बेइसाफी करें और न देने में।

وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنْعَامِ ۚ فِيهَا فَاكِهَةٌ ۚ وَالتَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۚ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ ۚ وَالرَّيْحَانُ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿١٧﴾ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۚ وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَارِجٍ مِنْ نَارٍ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿١٨﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿١٩﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ۚ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢٠﴾

1400

يُخْرِجُ مِنْهُمَا التُّلُوءَ وَالْمَرْجَانَ ﴿٥٧﴾ فَيَأْتِي الْأَرْضَ يَكْذِبُ بَيْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشِئَاتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٥٩﴾ فَيَأْتِي الْأَرْضَ يَكْذِبُ بَيْنَ ﴿٦٠﴾

और जमीन को उसने खूबक (प्राणियों) के लिए रख दिया। उसमें मेवे हैं और खजूर हैं जिनके ऊपर शिलाफ होता है। और भुस वाले अनाज भी हैं और खुशबूदार फूल भी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसने पैदा किया ईसान को ठीकरे की तरह खंखनाती मिट्टी से और उसने जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वह मालिक है दोनों मशिक (पूर्व) का और दोनों मरिब का (पश्चिम)। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसने चलाए दो दरिया, मिलकर चलने वाले। दोनों के दरमियान एक पर्दा है जिससे वे आगे नहीं बढ़ते। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उन दोनों से मोती और मूंगा निकलता है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। और उसी के हैं जहाज समुद्र में ऊंचे खड़े हुए जैसे पहाड़, फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (10-25)

इस दुनिया का बेशतर हिस्सा सितारों पर मुशतमिल है जो सरापा आग हैं। जिन्नात उसी आग के मादूदा से बनाए गए हैं। मगर इंसान के साथ अल्लाह तआला का यह खुसूसी मामला है कि उसे 'मिट्टी' से बनाया गया है जो वसीअ कायनात में इतिहाई नादिर चीज है।

जमीन सारी कायनात में एक अनोखा इस्तिसना (अपवाद) है। यहां वे तमाम असबाब हददर्जा तवाजुन (संतुलन) और तनासुब (अनुपात) के साथ मुहय्या किए गए हैं जिनके जरिए इंसान जैसी मख़्जूक के लिए रहना और तमद्दुन (सम्भ्यता) की तामीर करना मुमकिन हो सके। इन्हें इतिजमात में से एक इतिजाम जमीन में मश्क़ैन और मश्बैन का होना है। जाड़े के मौसम में सूरज के तुलूअ व गुरुब के मकामात दूसरे होते हैं। और गर्मी के मौसम में दूसरे। इस लिहज़ से उसके मश्क़ व मश्ब कई हो जाते हैं। यह मेसामी फ़र्क़फ़ज़ मेजमीन के महव्वी झुकाव (Axial tilt) की वजह से पैदा होता है। यह झुकाव कायनात का एक इतिहाई अनोखा वाक्या है। और इससे बेशमार तमद्दुनी फायदे इंसान को हासिल होते हैं।

नाकाबिले क्यास हद तक वसीअ कायनात में इंसान और जमीन का यह इस्तिस्ना खुदा की नेमत व कदरत का ऐसा अजीम मामला है कि इंसान किसी भी तरह उसका शुक्र अदा करने पर कदिर नहीं।

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَإِنَّ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۖ فَيَأْتِي آلَهُ
رَبُّكُمْ فَتُكَذَّبُ ۖ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۖ

فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا

जो भी जमीन पर है वह फना होने वाला है। और तब रब की जात बाकी रहेगी, अमृत वाली और इज्जत वाली। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। उसी से मांगते हैं जो आसमानों और जमीन में हैं। हर रोज उसका एक काम है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। (26-30)

दुनिया का मुतालआ बताता है कि हर चीज फनापजैर (पतनशील) है। अश्या (चीजों) का फनापजैरी के बावजूद मौजूद होना यह साबित करता है कि उनका खालिक और मुंजिम गैर फानी है। अगर वह गैर फानी न होता तो अश्या का वजूद ही न होता। या अगर होता तो अब तक उनका वजूद मिट चुका होता।

दुनिया का मुतालआ यह भी बताता है कि दुनिया की किसी चीज के अंदर तख्लीक (सृजन) की ताकत नहीं। इसका मतलब यह है कि अश्या अपनी बका (अस्तित्व) के लिए जिन चीजों की मोहताज हैं वे उनकी अपनी पैदाकरदा नहीं हैं। यह वाक्या दुबारा खालिक के बेपायां क़दरत को बताता है। ये हकीकतें इतनी वाजेह हैं कि किसी संजीदा आदमी की लिए इनका इंकार मुमकिन नहीं।

ख़ुदा की निशानियां इस दुनिया में इतनी ज्यादा हैं कि एक संजीदा इंसान के लिए उन्हें नजरअंदाज करना किसी तरह मुमकिन नहीं। मगर इंसान इतना जालिम है कि वह निशानियों के हज़ूम में भी निशानियों का इंकार करता है।

سَنَفَرُّكُمْ أَيُّهَا الثَّقَلَيْنِ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يَمْعُرُ الْجَنِّ وَالْإِنْسِ
إِنْ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا
بِإِذْنِ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يُرْسَلُ عَلَيْكُمُ شَوَاظُ مِنَ النَّارِ دُونَ حَسٍّ
فَلَا تَنْتَصِرُونَ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ

हम जल्द ही फ़ारिग होने वाले हैं तुम्हारी तरफ से, ऐ दो भारी क़फ़िलो! फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। ऐ ज़िन्नों और इंसानों के गिरोह, अगर तुमसे हो सके कि तुम आसमानों और जमीन की हदों से निकल जाओ तो निकल जाओ, तुम नहीं निकल सकते बग़ैर सनद के। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। तुम पर छोड़े जाएंगे आग के शोले और धुवां तो तुम बचाव न कर सकोगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। (31-36)

मौजूदा दुनिया इस्तेहान की दुनिया है। जब तक इस्तेहान की दुनिया ख़त्म नहीं होती हर शख्स सरकशी करने के लिए आजाद है। मगर कामिल आजादी के बावजूद कोई ज़िन्न व इस पर कादिर नहीं कि वह कायनात की हद से बाहर चला जाए। यही वाक्या यह साबित करने के लिए काफी है कि इंसान पूरी तरह ख़ुदा की गिरफ्त में है। इस्तेहान की मुददत ख़त्म होने पर जब वह लोगों को पकड़ेगा तो किसी के लिए मुमकिन न होगा कि उससे अपने आपको बचा सके।

وَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ
فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ
يُعْرِفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمِهِمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ۖ فَيَا أَيُّهَا
رَبِّكُمْ تُكَذِّبُونَ ۖ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ۖ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَ
بَيْنَ حَمِيمٍ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ

फिर जब आसमान फटकर खाल की मानिंद सुख हो जाएगा। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। पस उस दिन किसी इंसान या ज़िन्न से उसके गुनाह की बाबत पूछ न होगी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। मुजरिम पहचान लिए जाएंगे अपनी अलामतों से, फिर पकड़ा जाएगा पेशानी के बाल से और पांव से। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। यह जहन्नम है जिसे मुजरिम लोग झूट बताते थे। वे फिरंगे उसके दर्मियान और खोलते पानी के दर्मियान। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। (37-45)

इंकार और सरकशी की वजह हमेशा बेख़ौफी होती है। क़ियामत का हौलनाक लम्हा जब सामने आएगा तो मुजरिम अपनी सरकशी भूल जाएंगे। मौजूदा दुनिया में जिस हक को वे ताकतवर दलाइल के बावजूद मानने के लिए तैयार न होते थे, क़ियामत में उसे बिला बहस मान लेंगे। मगर उस वक्त का मानना किसी के कुछ काम न आएगा। अल्लाह की क़दरतों को ग़ैब में मानना मोतबर है न कि उसके जाहिर हो जाने के बाद।

وَكُنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّاتٍ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ ذُوقُوا أَفْوَاجًا ۖ
فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فِيهِمَا عَيْنٌ تَجْرِي ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ
فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٌ ۖ فَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ مُكِيدِينَ عَلَى

فُرُشٍ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ وَجَنَ الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ فِيهِمْ نَضْرِبُ الطَّرْفَ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ كَانَهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ هَلْ جَزَاءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ

और जो शर्रस अपने रब के सामने खड़ा होने से डरे उसके लिए दो बाग हैं। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों बहुत शाखों वाले। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनके अंदर दो चशमे (स्रोत) जारी होंगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों बागों में हर फल की दो किस्में। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वे तकिया लगाए ऐसे बिछौनों पर बैठें होंगे जिनके अस्तर दबीज (गाढ़े) रेशम के होंगे। और फल उन बागों का झुक रहा होगा। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें नीची निगाह वाली औरतें होंगी। जिन्हें उन लोगों से पहले न किसी इंसान ने छुवा होगा न किसी जिनन ने। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वे ऐसी होंगी जैसे कि याकूत (लालमणि) और मरजान (मृंगा)। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। नेकी का बदला नेकी के सिवा और क्या है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (46-61)

वसीअ तक्सीम के एतबार से जन्नत के दो बड़े दर्जे हैं। इन आयात में दो बागों वाली जिस जन्नत का जिक्र है वह पहले दर्जे वाली जन्नत है। उस जन्नत में शाहाना दर्जे की नेमतें मुहय्या होंगी। ये आला नेमतें उन लोगों को मिलेंगी जिन पर अल्लाह का फिक्र इतना गालिब हुआ कि मौजूदा दुनिया में ही उन्होंने अपने आपको अल्लाह के सामने खड़ा कर लिया। उन्होंने एहसान (उच्चतम) के दर्जे में अल्लाह से तअल्लुक का सुबूत दिया।

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَيْنِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ مُدْهَامَتَيْنِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَيْنِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حَسَنَاتٌ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ حُورٌ مُّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

تُكَذِّبَانِ ۚ مُتَكَيِّفِينَ ۚ عَلَى رُفْرُفٍ خُضِرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۚ تَبَرَّكَ اِسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ۚ

और उनके सिवा दो बाग और हैं। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों गहरे सब्ज स्याही मायल। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें दो चशमे (स्रोत) होंगे उबलते हुए। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें फल और खजूर और अनार होंगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें खूबसीरत (सुशील), खूबसूरत औरतें होंगी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। हूरें खेमों में रहने वालीयां। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनसे पहले उन्हें न किसी इंसान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिनन ने। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। तकिया लगाए सब्ज मरनदों (हरित आसनो) पर और कीमती नफीस बिछौने पर। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। बड़ा बाबरकत है तेरे रब का नाम बड़ाई वाला और अज्मत वाला। (62-78)

इन आयात में दूसरी जन्नत का जिक्र है। वह भी पहली जन्नत की तरह दो बागों वाली होगी। यह जन्नत आम अहले तकवा के लिए होगी। मौजूदा दुनिया की नेमतों के एतबार से इस जन्नत की नेमतें भी अगरचे नाकबिले कयास हद तक ज्यादा होंगी मगर पहली जन्नत के मुकाबले में वह दूसरे दर्जे की जन्नत है। ये जन्नतें उस खालिक व मालिक के शायाने शान होंगी जिसकी अज्मतों और कुदरतों के नमूने मौजूदा दुनिया में जाहिर हुए हैं और जिन्हें देखने वाले आज ही देख रहे हैं।

سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ بِرَبِّكَ تَرَاهِ سِتًّا تَسْعُوْا اِيْمًا تَكُنْ لَكَ بَوَقَعَةٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۚ لَيْسَ لَوْقَعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۚ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۚ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًا ۚ وَبَسَّتِ الْجِبَالُ بَسًا ۚ فَكَانَتْ هَبًا مُّتَبَدِّلًا ۚ وَكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ۚ

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। जब वाकेअ (घटित) होने वाली वाकेअ हो जाएगी। उसके वाकेअ होने में कुछ झूठ नहीं। वह

पस्त करने वाली, बुलन्द करने वाली होगी। जबकि जमीन हिला डाली जाएगी। और पहाड़ टूट कर रेजा-रेजा हो जाएंगे। फिर वे परगंदा गुबार (मलिन धुंध) बन जाएंगे। और तुम लोग तीन किस्म के हो जाओगे। (1-7)

मौजूदा दुनिया में आदमी देखता है कि उसे आजादी हासिल है कि जो चाहे करे। इसलिए आखिरत की पकड़ की बात उसके जेहन में नहीं बैठती। मगर अगली दुनिया का बनना इतना ही मुमकिन है जितना मौजूदा दुनिया का बनना। जब वह वक्त आएगा तो सारा निजाम पलट हो जाएगा। ऊपर के लोग नीचे हो जाएंगे। और नीचे के लोग ऊपर दिखाई देंगे। उस वक्त इंसान अपने-अपने अमल के एतबार से तीन गिरोहों में तक्सीम हो जाएंगे। अससाबिकून (आगे वाले), असहाबुल्यमीन (दाईं तरफ वाले) और असहाबुश्शमाल (बाईं तरफ वाले)।

فَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۖ وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمِ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمِ ۚ
وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ ۖ أُولَٰئِكَ الْمُقَدَّمُونَ ۖ فِي جَدَّتِ الْعَوْدُ ۖ ثَلَاثَةٌ ۚ وَمَنْ
الْأَوَّلِينَ ۖ وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ۖ عَلَىٰ سُرٍّ مَّوْضُوعَةٍ ۖ مُتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقَبِّلِينَ ۖ
يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وُلْدَانٌ فَخَلَّدُونَ ۖ يَكُوبُ وَابْرَاقُ ۖ وَكَأْسٌ مِنْ مَّعِينٍ ۖ
لَا يَصْدَعُونَ عَنْهَا وَلَا يُزْفُونَ ۖ وَفَالِكِهَاتِ مَبَايِتُ خَيْرُونَ ۖ وَحُجُوطٌ مِمَّا
يَشْتَهُونَ ۖ وَحُورٌ عِينٌ ۖ كَأَمْثَالِ الْلُؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۖ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۖ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۖ إِلَّا ذِكْرًا سَلَامًا ۖ

फिर दाएं वाले, पस क्या खूब हैं दाएं वाले। और बाएं वाले कैसे बुरे लोग हैं बाएं वाले। और आगे वाले तो आगे ही वाले हैं। वे मुकर्रब लोग हैं। नेमत के बागों में। उनकी बड़ी तादाद अगलों में से होगी। और थोड़े पिछलों में से होंगे। जड़ाऊ तख्तों पर। तकिया लगाए आमने सामने बैठे होंगे। फिर रहे होंगे उनके पास लड़के हमेशा रहने वाले। आबखोरे और कूजे लिए हुए और प्याला साफ शराब का। उससे न सर दर्द होगा और न अखल में फुटूर आएगा। और मेवे कि जो चाहें चुन लें। और परिंदों का गोश्त जो उन्हें मसखूब (पसंद) हो। और बड़ी आंखों वाली हूँ। जैसे मोती के दाने अपने गिलाफ के अंदर। बदला उन कामों का जो वे करते थे। उसमें वे कोई लज्ब (घटिया, निरर्थक) और गुनाह की बात नहीं सुनेंगे। मगर सिर्फ सलाम-सलाम का बोल। (8-26)

अससाबिकून (आगे वाले) वे लोग हैं जो हक के सामने आते ही फौरन उसे कुबूल कर लें। वे बिला ताखीर (अविलंब) अपने आपको हक के हवाले कर दें। हजरत आइशा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : क्या तुम जानते हो कि क्रियामत के दिन कौन लोग अल्लाह के साथे में सबसे पहले जगह पाएंगे। लोगों ने कहा कि अल्लाह और उसका रसूल ज्यादा बेहतर जानते हैं। आपने फरमाया कि वे लोग कि जब उनके सामने हक आया तो उन्होंने उसे कुबूल कर लिया। और जब उनसे हक मांगा गया तो उन्होंने उसे दिया। और दूसरों के मामले में उन्होंने वही फैसला किया जो फैसला उनका खुद अपने बारे में था। (तफसीर इब्ने कसीर)

दावत के दौर अव्वल में जो अफराद आगे बढ़कर इस्लाम कुबूल करते हैं उनके लिए इस्लाम एक दरयाफ्त होता है। इसके बाद उनकी जो नस्लें हैं वे इस्लाम को विरासत के तौर पर पाती हैं। दरयाफ्त और विरासत का यही फर्क है जो पहले गिरोह का मर्तबा दूसरे गिरोह से बुलन्द कर देता है। कुदरती तौर पर दूसरा गिरोह तादाद में ज्यादा होता है और पहला गिरोह कम। आखिरत में दूसरे गिरोह के लिए अगर आम इनामात हैं तो पहले गिरोह के लिए शाहाना इनामात।

وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۖ فِي سِدْرٍ فَخْضُودٍ ۖ وَطَلْحٍ
مَنْضُودٍ ۖ وَخِلٌّ مَبْدُودٍ ۖ وَمَاءٌ مَسْكُوبٌ ۖ وَفَالِكِهَاتِ كَثِيرَةٍ ۖ لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا
مَنْوَعَةٍ ۖ وَفُرُشٌ مَرْفُوعَةٍ ۖ إِنَّا أَنشَأْنَهُنَّ إِنشَاءً ۖ فَجَعَلْنَهُنَّ أَبْكَارًا ۖ عُرْبًا
أَشْرَابًا ۖ لَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۖ ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ۖ وَثَلَاثَةٌ مِنَ الْآخِرِينَ ۖ

और दाहिने वाले, क्या खूब हैं दाहिने वाले। बेरी के दरख्तों में जिनमें कांटा नहीं। और केले तह-ब-तह। और फैले हुए साये। और बहता हुआ पानी। और कसरत (बहुलता) से मेवे। जो न खत्म होंगे और न कोई रोकटोक होगी। और ऊंचे बिछौने। हमने उन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है। फिर उन्हें कुंवारी रखा है। दिलरुबा और हमउम्र। दाहिने वालों के लिए। अगलों में से एक बड़ा गिरोह होगा और पिछलों में से भी एक बड़ा गिरोह। (27-40)

असहाबुल्यमीन (दाईं तरफ वाले) से मुराद आम अहले जन्नत हैं। इसमें वे तमाम लोग शामिल हैं जो अपने अक़ीदे और किरदार के एतबार से सालेह थे। उन्हें ईमानी एतबार से अगरचे आला शुऊरी दर्जा हासिल न था ताहम वे खुदा व रसूल के लिए मुख़िलस थे और अपनी जिंदगी में ईसाफ और खुदातरसी के रास्ते पर कायम रहे। इस गिरोह में दौरे अव्वल के भी काफी लोग होंगे और दौरे सानी के भी काफी लोग।

وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ءَ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ۖ فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۖ وَظِلٍّ مِّنْ يَّحُمُومٍ ۖ لَا يَارِدُهُ لَآكِرِيْمٍ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ۖ وَكَانُوا يُصْرُونَ عَلَى الْيَدِ الْعَظِيمِ ۖ وَكَانُوا يَقُولُونَ ءَ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ءَ إِنَّا لَنَبْعُوْنُ ۖ أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۖ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ لَجَبْمُوعُونَ ۖ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۖ ثُمَّ إِنَّكُمْ إِلَيْهَا لَصَّالُونَ الْمَكْدُوبُونَ ۖ لَا كُفُوفٌ مِّنْ شَجَرٍ مِّنْ رَّقُومٍ ۖ فَمَا لُونُ مِنْهَا الْبُطُونَ ۖ فَشَارِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۖ فَشَارِبُونَ شُرْبَ الْهَيْمِ ۖ هَذَا نَزْلُ لَهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۖ

और बाएं वाले, कैसे बुरे हैं बाएं वाले। आग में और खौलते हुए पानी में। और स्याह धुवें के साये में। न ठंडा और न इज्जत का। ये लोग इससे पहले खुशहाल थे। और भारी गुनाह पर इसरार करते रहे। और वे कहते थे, क्या जब हम मर जाएंगे। और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे। और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। कहे कि अगले और पिछले सब, जमा किए जाएंगे। एक मुकर्रर दिन के वक्त पर। फिर तुम लोग, ऐ बहके हुए और झुलाने वाले। जक्कस के दरख्त में से खाओगे। फिर उससे अपना पेट भरेगे। फिर उस पर खौलता हुआ पानी पियोगे। फिर प्यासे ऊंटों की तरह पियोगे। यह उनकी मेहमानी होगी इंसान के दिन। (41-56)

असहाबुशिशमाल (बाईं तरफ वाले) से मुगद वे लोग हैं जिनके लिए अजाब का फैसला किया जाएगा। दुनिया में उन्हें जो चीजें मिली थीं उन्होंने उन्हें धोखे में डाल दिया। वे अल्लाह के सिवा दूसरी चीजों को अपना मर्कजे तवज्जोह बनाए रहे। जो इस दुनिया में किसी इंसान का सबसे बड़ा जुर्म है। वे आखिरत को इस तरह भूले रहे गोया कि वह आने वाली ही नहीं। ऐसे लोग फैसले के दिन सख्त अजाब के मुस्तहक करार दिए जाएंगे।

نَحْنُ خَلَقْنَكُمْ كَمَا لَا تُصَدِّقُونَ ۖ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ۖ ءَ أَنْتُمْ تَخْلُقُونَهُ ۖ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ۖ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۖ عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ وَلَقَدْ عَلِمْتُمْ

النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۖ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ۖ ءَ أَنْتُمْ تَرْعَوْنَهُ ۖ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ۖ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ۖ إِنَّا الْمَغْرُمُونَ ۖ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۖ أَفَرَأَيْتُمْ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۖ ءَ أَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ۖ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ جُبًا جَا فَا لَوْلَا تَشْكُرُونَ ۖ أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۖ ءَ أَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا ۖ أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ۖ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذَكُّرًا وَفِتْنًا ۖ وَاللَّهُ يَتْلُو فِي سُبْحٍ بِإِسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۖ

हमने तुम्हें पैदा किया है। फिर तुम तस्दीक (पुष्टि) क्यों नहीं करते। क्या तुमने गौर किया उस चीज पर जो तुम टपकाते हो। क्या तुम उसे बनाते हो या हम हैं बनाने वाले। हमने तुम्हारे धर्मियान मौत मुकद्दर की है और हम इससे आजिज नहीं कि तुम्हारी जगह तुम्हारे जैसे पैदा कर दें और तुम्हें ऐसी सूरत में बना दें जिन्हें तुम जानते नहीं। और तुम पहली पैदाइश को जानते हो फिर क्यों सबक नहीं लेते। क्या तुमने गौर किया उस चीज पर जो तुम बोते हो। क्या तुम उसे उगाते हो या हम हैं उगाने वाले। अगर हम चाहें तो उसे रेजा-रेजा कर दें, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। हम तो तावान (दंड) में पड़ गए। बल्कि हम बिल्कुल महरूम हो गए। क्या तुमने गौर किया उस पानी पर जो तुम पीते हो। क्या तुमने उसे बादल से उतारा है। या हम हैं उतारने वाले। अगर हम चाहें तो उसे सख्त खारी बना दें। फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते। क्या तुमने गौर किया उस आग पर जिसे तुम जलाते हो। क्या तुमने पैदा किया है उसके दरख्त को या हम हैं उसके पैदा करने वाले। हमने उसे याददिहानी बनाया है। और मुसाफिरों के लिए फायदे की चीज। पस तुम अपने अजीम (महान) ख के नाम की तस्वीह करो। (57-74)

मां के पेट से इंसान का पैदा होना, जमीन से खेती का उगना, बारिश से पानी का बरसना, ईंधन से आग का हासिल होना, ये सब चीजें बराहेरास्त खुदा की तरफ से हैं। आदमी को उनके मिलने पर खुदा का शुक्रगुजार होना चाहिए। उन्हें खुदा का अतिया समझना चाहिए न कि अपने अमल का नतीजा।

इन वाक्यात में गौर करने वाले के लिए वेशुमार नसीहतें हैं। इनमें मौजूदा ज़िंदगी के बाद दूसरी ज़िंदगी का सुबूत है। इसी तरह इनमें यह निशानी है कि जिसने उन्हें दिया है वह उन्हें छीन भी सकता है। फिर इसी का एक नमूना पानी का मामला है। पानी का जख़ीरा समुद्रों की शकल में है जो कि ज्यादातर खारी हैं। पानी का तकरीबन 98 फीसद

सूरह-56. अल-वाकिअह

1409

पारा 27

हिस्सा समुद्र में है। और समुद्र के पानी का 1/10 हिस्सा नमक होता है। यह खुदा के कानून का करिश्मा है कि समुद्र से जब पानी के बुखारात (वाष्प) उठते हैं तो ख़ालिस पानी ऊपर उड़ जाता है और नमक नीचे रह जाता है। हकीकत यह है कि बारिश का अमल इजालए नमक (Desalination) का एक अज़ीम अम्ल (नैसर्गिक) अमल है। अगर यह कुररती एहतिमाम न हो तो सारा का सारा पानी वैसा ही खारी हो जाए जैसा समुद्र का पानी होता है। पहाड़ों पर जमी हुई बर्फ और दरियाओं में बहने वाला पानी सबके सब सख्त खारी हों, जमीन पर पानी के अथाह ज़ख़ीरे के बावजूद मीठे पानी का हुसूल इंसानियत के लिए सख्त नाकाबिले हल मसला बन जाए। आदमी अगर इसे सोचे तो उसका सीना हम्दे खुदावंदी (ईश-प्रशंसा) के जच्चे से भर जाएगा।

فَلَا أُقْسِمُ بِمَوْقِعِ النُّجُومِ ۖ وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لِّوَتَّعَلَمُونَ عَظِيمٌ ۚ إِنَّهُ لَفَرَزٌ مِنْ رَبِّهِ ۖ فِي كِتَابٍ مَّكُونٍ ۚ لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ۚ تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَفِهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ ۖ وَتَجْعَلُونَ رُسُلَكُمْ أَنْتُمْ تَكْذِبُونَ ۝

पस नहीं, मैं कसम खाता हूँ सितारों के मवाकेअ (स्थितियों) की। और अगर तुम ग़ौर करो तो यह बहुत बड़ी कसम है। बेशक यह एक इज्जत वाला कुआन है। एक महफूज़ किताब में। इसे वही छूते हैं जो पाक बनाए गए हैं। उतारा हुआ है परवरदिगारे आलम की तरफ से। फिर क्या तुम इस कलाम के साथ बेएतनाई (बेपरवाही) बरतते हो। और तुम अपना हिस्सा यही लेते हो कि तुम उसे झुठलाते हो। (75-82)

मवाकेअ का लफ्ज मौन्न का बहुवचन है। इसके मअना है गिरने की जगह। चुनावे बारिश होने की जगह को मवाकिउलक़त्तर कहा जाता है। यहां सितारों के मवाकेअ से मुराद ग़ालिबन सितारों के मदार (Orbits) हैं। कायनात में बेशुमार निहायत बड़े-बड़े सितारे हैं। वे हददर्जा सेहत के साथ अपने अपने मदार (कक्ष) पर घूम रहे हैं।

यह वाक्या दहशतनाक हद तक अजीम है। जो शख्स इस ख़लाई निजाम पर ग़ौर करेगा वह यह मानने पर मजबूर होगा कि इस कायनात का ख़ालिक नाकाबिले क्यास हद तक अजीम है। फिर ऐसे ख़ालिक की तरफ से जो किताब आए वह भी यकीनन अजीम होगी। और कुरआन बिलाशुबह ऐसी ही एक अजीम किताब है।

कुआन जिस तरह लोहे महफूज़ में था, ठीक उसी तरह वह फ़रिश्तों के ज़रिए पैम्बर तक पहुंचा। और आज तक वह उसी तरह महफूज़ है। कदीम जमाने में कोई भी दूसरी किताब नहीं जो इस तरह कामिल तौर पर महफूज़ हो। यह वाक्या खुद इस किताब की अस्त (महानता) का सुबूत है। ऐसी एक किताब से जो शख्स हिदायत हासिल न करे उसकी महरूमी का कोई ठिकाना नहीं।

पारा 27

1410

सूरह-56. अल-वाकिअह

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ۖ وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ ۖ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ۖ فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۖ تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۖ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٌ ۖ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۖ فَسَلَامٌ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۖ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمَكِيدِينَ ۖ الْفَالِكِينَ ۖ فَزُلْ مِنْ حَمِيمٍ ۖ وَتَصْلِيَةٌ جَحِيمٍ ۖ إِنَّ هَذَا هُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۖ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

फिर क्यों नहीं, जबकि जान हलक में पहुंचती है। और तुम उस वक्त देख रहे होते हो। और हम तुमसे ज्यादा उस शख्स से करीब होते हैं मगर तुम नहीं देखते। फिर क्यों नहीं, अगर तुम महकूम (अधीन) नहीं हो तो तुम उस जान को क्यों नहीं लौटा लाते, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर वह मुकरबीन (निकटवर्तियों) में से हो तो राहत है और उम्दा रोजी है और नेमत का बाग़ है। और अगर वह असहाबुलयमीन (दाई तरफ वाले) में से हो तो तुम्हारे लिए सलामती, तू असहाबुलयमीन में से है। और अगर वह झुठलाने वाले गुमराह लोगों में से हो। तो गर्म पानी की जियाफ्त (सत्कार) है, जहन्नम में दाख़िल होना। बेशक यह कतई हक़ है। पस तुम अपने अजीम ख के नाम की तस्बीह करो। (83-96)

मौत का वाक्या इस बात का आखिरी सुबूत है कि इंसान खुदाई ताकतों के आगे बिल्कुल बेबस है। हर आदमी लाजिमन एक मुकररह वक्त पर मर जाएगा, और कोई नहीं जो उसे मौत के फ़रिश्ते से बचा सके। ऐसी हालत में आदमी को सबसे ज्यादा मौत के बाद के मसले के बारे में फ़िक्रमंद हो जाना चाहिए। मौत से पहले की ज़िंदगी में जिन लोगों ने जन्नत वाले आमाल किए हैं उन्हें मौत के बाद की ज़िंदगी में जन्नत मिलेगी। इसके बरअक्स, जो लोग दुनिया में खुदा से दूर थे वे आखिरत में भी खुदा की रहमतों से दूर रहे जाएंगे। उनकी जियाफ्त (सत्कार) की लिए वहां गर्म पानी है और उनके रहने के लिए वहां आग की दुनिया।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَفِي الزُّبُرِ ۖ سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۖ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۖ هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ

أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّا جَاءْنَا بِالْبَيِّنَاتِ لِنُظَاهِرَ أَقْسَامًا مِمَّنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يُغْزِيهِمْ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرِجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की तरबीह करती है हर चीज जो आसमानों और जमीन में है और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। आसमानों और जमीन की सल्तनत उसी की है। वह जिलाता है और मारता है और वह हर चीज पर कादिर है। वही अब्बल भी है और आखिर भी और जहिर (व्यक्त) भी है और बातिन (अव्यक्त) भी। और वह हर चीज का जानने वाला है। वही है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया छः दिनों में, फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। वह जानता है जो कुछ जमीन के अंदर जाता है और जो उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहां भी तुम हो, और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो। आसमानों और जमीन की सल्तनत उसी की है, और अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं सारे मामले। वह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है, और वह दिल की बातों को जानता है। (1-6)

कायनात जवाने हल (वस्तुस्थिति) से अपने खलिक की जिन सिफत (गुणों) की खबर दे रही है, कुरआन में उन्हीं सिफत को अल्फज की सूत दे दी गई है। यहां जब एक चीज जाहिर होती है तो वह अमल की जवान में कह रही होती है कि कोई उसका जाहिर करने वाला है। और जब वह चीज खत्म होती है तो वह इस बात का अमली एलान कर रही होती है कि कोई उसका खत्म करने वाला है। इसी तरह दूसरी तमाम सिफतें। हकीकत यह है कि कायनात अगर खुदा की अमली तस्बीह है तो कुरआन खुदा की लफ्जी तस्बीह।

إِنَّا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ الْإِنْفِقُوا إِنَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالرَّسُولِ يَدْعُوَكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِهِ ۖ وَمَا كُنْتُمْ تُبْشِرُونَ إِلَّا أَنْفُسَكُمْ ۚ فَذُكِّرْتُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّشْرِكُونَ ۝ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدٍ

أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّا جَاءْنَا بِالْبَيِّنَاتِ لِنُظَاهِرَ أَقْسَامًا مِمَّنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يُغْزِيهِمْ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرِجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और खर्च करो उसमें से जिसमें उसने तुम्हें अमीन (साधिकार) बनाया है। पस जो लोग तुम में से ईमान लाएं और खर्च करें उनके लिए बड़ा अज्र है। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, हालांकि रसूल तुम्हें बुला रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और वह तुमसे अहद (वचन) ले चुका है, अगर तुम मोमिन हो। वही है जो अपने बंदे पर वाजह आयतें उतारता है ताकि तुम्हें तारीकियों से रोशनी की तरफ ले आए और अल्लाह तुम्हारे ऊपर नर्मी करने वाला है, महरबान है। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते हालांकि सब आसमान और जमीन आखिर में अल्लाह ही का रह जाएगा। तुम में से जो लोग फतह के बाद खर्च करें और लड़े वे उन लोगों के बराबर नहीं हो सकते जिन्होंने फतह से पहले खर्च किया और लड़े, और अल्लाह ने सबसे भलाई का वादा किया है, अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (7-10)

इस्लाम की दावत जब उठती है तो वह अपने इब्तिदाई मरहले में 'आयात बय्यिनात' (सुस्पष्ट तर्कों) के ऊपर खड़ी होती है। दूसरा दौर वह है जबकि उसे माहौल में 'फतह' हासिल हो जाए। पहले दौर में सिर्फ वे लोग इस्लाम के लिए कुर्बानी देने का हौसला करते हैं जो दलादल की सतह पर किसी चीज की अजमत को देखने की सलाहियत रखते हों। मगर जब इस्लाम को फतह व ग़लबा हासिल हो जाए तो हर आदमी उसकी अजमत को देख लेता है। और हर आदमी आगे बढ़कर उसके लिए जान व माल पेश करने में फख्र महसूस करता है।

इब्तिदाई दौर में इस्लाम के लिए खर्च करने वाले को यकतरफा तौर पर खर्च करना पड़ता है। जबकि दूसरे दौर में यह हाल हो जाता है कि आदमी जितना खर्च करता है उससे ज्यादा वह मुख्तलिफ शक्तों में उसका इनाम इसी दुनिया में पा लेता है। यही वजह है कि दोनों का दर्जा अल्लाह के यहां एकसा (एक जैसा) नहीं।

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفُهُ لَهُ ۚ وَالْأَجْرُ كَرِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرًا مِّنْكَ ۖ أَلَمْ يَجْعَلْ لَّكَ الْفَوْزَ الْعَظِيمَ ۚ

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنِفِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُوا نَفْسِنَا مِنْ نُورِكُمْ
قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورَةٍ ۚ بَابٌ بَاطِنُهُ
فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۚ يُنَادُوا لَهُمُ الْمَكَانُ مَعَكُمْ
قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ
حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ ۚ وَغَرَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۚ ۝ فَالْيَوْمَ لَا يُخَذُّ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ
وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مَا وَلَكُمْ الشَّارِهُنَّ مِنْكُمْ وَلَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ۚ الْمَصِيدُ ۝

कौन है जो अल्लाह को कर्ज दे, अच्छा कर्ज, कि वह उसे उसके लिए बढ़ाए, और उसके लिए बाइज्जत अन्न है। जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाएं चल रही होगी। आज के दिन तुम्हें खुशखबरी है बाइज्जत की जिनके नीचे नहीं जारी होंगी, यह बड़ी कामयाबी है। जिस दिन मुनाफिक (पाखंडी) मर्द और मुनाफिक औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमें मौका दो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ फायदा उठा लें। कहा जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ। फिर रोशनी तलाश करो। फिर उनके दर्मियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाजा होगा। उसके अंदर की तरफ रहमत होगी। और उसके बाहर की तरफ अजब होगा। वे उन्हें पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। वे कहेंगे कि हां, मगर तुमने अपने आपको फितने में डाला और राह देखते रहे और शक में पड़े रहे और झूठी उम्मीदों ने तुम्हें धोखे में रखा, यहां तक कि अल्लाह का फैसला आ गया और धोखेबाज ने तुम्हें अल्लाह के मामले में धोखा दिया। पस आज न तुमसे कोई फिदया (मुक्ति-मुआवजा) कुबूल किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ्र किया। तुम्हारा ठिकाना आग है। वही तुम्हारी रफीक (साथी) है। और वह बुरा ठिकाना है। (11-15)

सच्चा इस्लाम जब माहिल में अजनबी हो, उस वक्त सच्चे इस्लाम की तरफ बढ़ना अपने आपको आजमाइश में डालने के हममअना होता है। उस वक्त इस्लाम की हकीकत पर शुबहात के पर्दे पड़े होते हैं। उस वक्त इस्लाम की राह में खर्च करना ऐसा होता है गोया उम्मीदे मौहूम (अनिश्चितता) पर किसी को कर्ज देना। शक और तरदुद (असमंजस) की फिजा हर तरफ लोगों को घेर हुए होती है। खुदा के वादों के मुक़ाबले में लोगों को अपने सामने के फायदे ज्यादा यकीनी मालूम होते हैं। ऐसे वक्त में अपनी जान व माल को इस्लाम के हवाले करना जबरदस्त कुव्वते फैसला चाहता है। ऐसे वक्त में वही शख्स आगे बढ़ने की हिम्मत करता है जो अकल व बसीरत (सूझबूझ) की ताकत से चीजों को पहचानने की सलाहियत रखता हो।

जो लोग दुनिया में इस बसीरत का सुबूत दें उनकी बसीरत कियामत के दिन उनके लिए रोशनी बन जाएगी जिसमें वे वहां के मुश्किल मराहिल में अपना सफर तै कर सकें। जो बसीरत दुनिया में उनकी रहनुमा बनी थी वही बसीरत आखिरत में भी अल्लाह की मदद से उनके लिए रहनुमा का काम अंजाम देगी।

اَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ اَعْلَمُوا اَنَّ اللَّهَ يُحْيِي الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

क्या ईमान वालों के लिए वह वक्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की नसीहत के आगे झुक जाएं। और उस हक के आगे जो नाजिल हो चुका है। और वे उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें पहले किताब दी गई थी, फिर उन पर लम्बी मुददत गुजर गई तो उनके दिल सख्त हो गए। और उनमें से अक्सर नाफरमान हैं। जान लो कि अल्लाह जमीन को जिंदगी देता है उसकी मौत के बाद, हमने तुम्हारे लिए निशानियां बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो। (16-17)

ये आयतें जिस वक्त नाजिल हुईं उस वक्त इस्लाम अगरचे मादूदी कुव्वत (भौतिक शक्ति) नहीं बना था। मगर दलाइल और तंबीहात का जोर उस वक्त भी पूरी तरह उसकी पुश्त पर मौजूद था। ऐसी हालत में जो शख्स दलाइल का जोर महसूस न करे और खुदाई तंबीहात जिसे हिलाने वाली न बन सकें वह अपने इस अमल से सिर्फ यह सुबूत दे रहा है कि वह बेहिंसी के मरज में मुक्किला है। मिट्टी में पानी मिलने के बाद तरताजगी पैदा हो जाती है। फिर इंसान अगर खुले-खुले दलाइल सुनकर भी न जागे तो यह कैसी अजीब बात होगी।

اِنَّ الْمَصْدَقَيْنِ وَالْمُصَدِّقَاتِ وَاَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضَعْفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ اُولَٰئِكَ هُمُ الصِّدِّيقُونَ وَالشَّهَادَةُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا اُولَٰئِكَ اصْطَبُ الْبُحْيُومُ ۝

1414

बेशक सदका देने वाले मर्द और सदका देने वाली औरतें। और वे लोग जिन्होंने अल्लाह को कर्ज दिया, अच्छा कर्ज वह उनके लिए बढ़ाया जाएगा और उनके लिए बाइज्जत अन्न (प्रतिफल) है। और जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर और उसके रसूलों पर। वही लोग अपने

सूरह-57. अल-हदीद

1415

पारा 27

रब के नजदीक सिद्दीक (सच्चे) और शहीद (सत्य के साक्षी) हैं, उनके लिए उनका अज्र और उनकी रोशनी है, और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे दोज़ख के लोग हैं। (18-19)

अल्लाह की रज़ा के लिए दूसरों को माल देना और दीन की ज़रूरतों पर खर्च करना बहुत बड़ा अमल है। जो मर्द और औरत इस तरह खर्च करें वही वे लोग हैं जिन्होंने अपने ईमान का सुबूत दिया। उन्होंने हक के खिलाफ़ शूबहात के माहौल में हक को देखा। इसलिए उनका यह अमल आखिरत में उनके लिए रोशनी बन जाएगा। वे खुदा की निशानियों को मानने वाले करार पाएंगे। उन्हें अल्लाह के गवाह का दर्जा दिया जाएगा, यानी आखिरत की अदालत में लोगों के अहवाल बताने वाला।

اعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۝ سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

जान लो कि दुनिया की ज़िंदगी इसके सिवा कुछ नहीं कि खेल और तमाशा है और जीनत (साज-सज्जा) और बाहमी (आपसी) फख्र और माल और औलाद में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करना है। जैसे कि बारिश की उसकी पैदावार किसानों को अच्छी मालूम होती है। फिर वह शुष्क हो जाती है। फिर तू उसे जर्द देखता है, फिर वह रेज़ा-रेज़ा हो जाती है। और आखिरत में सज़ा अजब है और अल्लाह की तरफ से माफ़ी और रज़ामंदी भी। और दुनिया की ज़िंदगी धोखे की पूंजी के सिवा और कुछ नहीं। दौड़ो अपने रब की माफ़ी की तरफ और ऐसी जन्नत की तरफ जिसकी वरुअत (ब्यापकता) आसमान और ज़मीन की वरुअत के बराबर है। वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाएं, यह अल्लाह का फज़ल (अनुग्रह) है। वह उसे देता है जिसे वह चाहता है और अल्लाह बड़ा फज़ल वाला है। (20-21)

दुनिया में अल्लाह ने आखिरत (परलोक) की मिसालें कायम कर दी हैं। उनमें से एक मिसाल खेती की है। खेती जब पानी पाकर तैयार होती है तो थोड़े दिनों के लिए उसकी सरसब्जी निहायत पुरकशिश मालूम होती है। मगर बहुत जल्द गर्म हवाएं चलती हैं। सारी सरसब्जी

पारा 27

1416

सूरह-57. अल-हदीद

अचानक खत्म हो जाती है। और फिर उसे काट कर उसे चूरा-चूरा कर दिया जाता है।

इसी तरह मौजूदा दुनिया की रैनक भी चन्द रोज़ा है। आदमी उसे पाकर धोखे में मुब्तिला हो जाता है। वह उसी को सब कुछ समझ लेता है। मगर इसके बाद जब वह खुदा की तरफ लौटाया जाएगा तो उस पर खुलेगा कि दुनिया की रैनकों की कोई हकीकत न थी।

مَا أَصَابَ مِنْ مُّصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُفْتَالٍ فَخُورٍ ۝ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝

कोई मुसीबत न ज़मीन में आती है और न तुम्हारी जानों में मगर वह एक किताब में लिखी हुई है इससे पहले कि हम उन्हें पैदा करें, बेशक यह अल्लाह के लिए आसान है ताकि तुम ग़म न करो उस पर जो तुमसे खोया गया। और न उस चीज़ पर फख्र करो जो उसने तुम्हें दिया, और अल्लाह इतराने वाले फख्र करने वाले को पसंद नहीं करता जो कि बुख़ल (कंजूसी) करते हैं और दूसरों को भी बुख़ल की तालीम देते हैं। और जो शख्स एराज़ (उपेक्षा) करेगा तो अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है खूबियों वाला है। (22-24)

दुनिया में किसी चीज़ का मिलना या किसी चीज़ का छिनना दोनों इस्तेहान के लिए हैं। अल्लाह तआला ने पेशगी तौर पर मुकर्रर फरमा दिया है कि किस शख्स को उसके इस्तेहान का पर्चा किन-किन सूरतों में दिया जाएगा। आदमी को अस्लन जिस चीज़ पर तवज्जोह देना चाहिए वह यह नहीं कि उसे क्या मिला और उससे क्या छीना गया बल्कि यह कि उसने किस मौके पर किस किस्म का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) पेश किया। सही और मत्लूब रद्देअमल यह है कि आदमी से खोया जाए तो वह दिलबरदाश्ता (हताश) न हो और जब उसे मिले तो वह उसकी बिना पर फख्र व ग़ुरूर में मुब्तिला न हो जाए।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ وَأَنزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

٢٤

हमने अपने रसूलों को निशानियों के साथ भेजा और उनके साथ उतारा किताब और तराजू, ताकि लोग इंसाफ़ पर कायम हों। और हमने लोहा उतारा जिसमें बड़ी कुव्वत है और लोगों के लिए फायदे

हैं और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उसकी और उसके रसूलों की मदद करता है बिना देखे, बेशक अल्लाह तावत वाला, जबरदस्त है। (25)

दीन में दो चीजें मलूब हैं। एक दीन की पैरवी, और दूसरी दीन की हिमायत। तराजू गोया दीन की पैरवी की अलामती तमसील है। जिस तरह तराजू पर किसी चीज का कम व बेश होना मालूम होता है। उसी तरह खुदा की किताब भी हक की तराजू है। लोगों को चाहिए कि अपने आमाल खुदा की किताब पर जांच कर देखते रहें कि वे किसी हद तक दुरुस्त हैं और किस हद तक दुरुस्त नहीं।

इसी तरह लोहा गोया हिमायते दीन की अलामती मिसाल है। जब भी दीन का कोई मामला पड़े तो वहां आदमी को लोहे की तरह मजबूत साबित होना चाहिए। उसे फौलादी कुव्वत के साथ दीन का दिफ्अ करना चाहिए।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ فَمِنْهُمْ مُنْتَدٍ
وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ
وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً
ابْتَدَأُ عُومَهَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ
فَاتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝

और हमने नूह को और इब्राहीम को भेजा। और उनकी औलाद में हमने पैगम्बरी और किताब रख दी। फिर उनमें से कोई राह पर है और उनमें से बहुत से नाफरमान हैं। फिर उन्हीं के नक्शेकदम पर हमने अपने रसूल भेजे और उन्हीं के नक्शेकदम पर ईसा बिन मरयम को भेजा और हमने उसे इंजील दी। और जिन लोगों ने उसकी पैरवी की हमने उनके दिलों में शफकत (करुणा) और रहमत (दया) रख दी। और रहबानियत (सन्ध्यास) को उन्होंने खुद ईजाद किया है। हमने उसे उन पर नहीं लिखा था। मगर उन्होंने अल्लाह की रिजामंदी के लिए उसे इख्तियार कर लिया, फिर उन्होंने उसकी पूरी रियायत (निर्वाह) न की, पस उनमें से जो लोग ईमान लाए उन्हें हमने उनका अज्र (प्रतिफल) दिया, और उनमें से अक्सर नाफरमान हैं। (26-27)

अल्लाह की तरफ से जितने पैगम्बर आए सब एक ही दीन लेकर आए। मगर बाद के जमाने में लोगों ने पैगम्बर के नाम पर बिदअतें ईजाद कर लीं। इसकी एक मिसाल हजरत मसीह अलैहिस्सलाम के पैरोकार हैं। हजरत मसीह के जिम्मे सिर्फ दावत का काम था। आपकी पैगम्बराना जिम्मेदारी में किताल (जंग) शामिल न था। चुनांचे आपने सबसे ज्यादा दाअियाना

अख्लाक पर जोर दिया। और दाअियाना अख्लाक सरासर राफ्त व रहमत पर मबनी होता है। आपने अपने पैरोकारों से कहा कि वे लोगों के मुक़बले में यक़तरफ़ तौर पर राफ्त व रहमत का तरीक़ा इख्तियार करें। मगर हजरत मसीह के बाद आपके पैरोकार इस मस्लेहत को समझ न सके। उनका यह मिजाज उन्हें रहबानियत (सन्ध्यास) की तरफ बहा ले गया। दुनिया से एराज़ (उपेक्षा) की जो तालीम उन्हें दावत के मक़सद से दी गई थी उसे उन्होंने मजीद मुबालग़े (अतिरंजना) के साथ तर्क दुनिया (संसार त्याग) के लिए इख्तियार करना शुरू कर दिया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرُسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ لَيْسَ لَكَ يَاعْلَمُ أَهْلُ
الْكِتَابِ الْأَيْقِدُرُونَ عَلَى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ
يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत से दो हिस्से अता करेगा। और तुम्हें रोशनी अता करेगा जिसे लेकर तुम चलोगे। और तुम्हें बख़्श देगा। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। ताकि अहले किताब जान लें कि वे अल्लाह के फल (अनुग्रह) में से किसी चीज पर इख्तियार नहीं रखते और यह कि फल अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है अता फरमाता है। और अल्लाह बड़े फल वाला है। (28-29)

‘ऐ ईमान लाने वालो’ से मुराद हजरत मसीह पर ईमान लाने वाले हैं। जो लोग पिछले पैगम्बर को मानते हों, और अब वे पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की सदाक़त को दरयापत करके उन पर ईमान लाएं तो उनके लिए दोहरा अज्र है। इसी तरह जो लोग नस्ली तौर पर मुसलमान हैं वे दुबारा इस्लाम का मुतालआ करें और अपने अंदर इस्लामी शुऊर पैदा करके नए सिरे से मोमिन व मुस्लिम बनें तो वे भी अल्लाह के यहां दोहरे अज्र के मुस्तहिक़ क़ार पाएंगे।

سَوِّفُ الْمَجَادِلِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَنَانٌ عَشْرُونَ يَوْمًا تَكُونُ لَكُمْ رُكُوعًا
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝
قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ
يَسْمَعُ تَحَاوَرَكُمَا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝

सूरह-58. अल-मुजादलह

1419

पारा 28

आयतें-22

सूरह-58. अल-मुजादलह

रुकूअ-3

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने शौहर के मामले में तुमसे झगड़ती थी और अल्लाह से शिकायत कर रही थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ्तगू सुन रहा था, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

इस्लाम से पहले अरब में रवाज था कि कोई मर्द अगर अपनी बीवी से कह देता कि 'तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी माँ की पीठ' तो वह औरत हमेशा के लिए उस मर्द पर हराम हो जाती। इसे जिहार कहा जाता था। मदीना के एक मुसलमान औस बिन सामित अंसारी ने अपनी बीवी खौला बिनत सालबा को एक बार यही लफ्ज कह दिया। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और वाकया बताया। आपने कदीम रवाज के एतबार से फरमा दिया कि मैं ख्याल करता हूँ कि तुम उस पर हराम हो गई हो। खौला को पेशानी हुई कि मेरे घर और मेरे बच्चे बर्बाद हो जाएंगे। वह फरयाद व जारी (विलाप) करने लगीं। इस पर ये आयतें उतरीं और बताया गया कि जिहार के बारे में इस्लामी हुक्म क्या है।

الَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْكُمْ مَنْ سَاءَ بِهِمْ قَاهُتْ أُمَّهَاتُهُمْ إِنَّ أُمَّهَاتُهُمْ إِلَّا الْآلُ وَلَدْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِنَ الْقَوْلِ وَرُؤُوسًا وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُؤٌ غَفُورٌ ۝ وَالَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْ سَاءِ بِهِمْ ثُمَّ يَعُوذُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ مَنْ قَبْلُ أَنْ يَتِمَّ آسَاءُ ذَلِكَ تُوعَظُونَ بِهِ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتِمَّ آسَاءُ فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَاطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذَلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से जिहार (तलाक देने की एक सूरत जिसमें शौहर अपनी बीवी से कहता है कि तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो) करते हैं वे उनकी माएं नहीं हैं। उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जना। और ये लोग बेशक एक नामाकूल और झूठ बात कहते हैं, और अल्लाह माफ करने वाला बख्शने वाला है। और जो लोग अपनी बीवियों से जिहार करें फिर उससे रुजूअ करें जो उन्होंने कहा था तो एक गर्दन को आजाद करना (गुलाम आजाद करना) है, इससे पहले कि वे आपस में हाथ लगाएं। इससे तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। फिर

पारा 28

1420

सूरह-58. अल-मुजादलह

जो शख्स न पाए तो रोजे हैं दो महीने के लगातार, इससे पहले कि आपस में हाथ लगाएं। फिर जो शख्स न कर सके तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और ये अल्लाह की हदें हैं और मुंकिरों के लिए दर्दनाक अजाब है। (2-4)

इस्लाम में सूरत और हकीकत के दर्मियान फर्क किया गया है। यही वजह है कि इस्लाम ने इस कदीम रवाज को तस्लीम नहीं किया कि जो औरत हकीकी मां न हो वह महज मां का लफ्ज बोल देने से किसी की मां बन जाए। इस किस्म का फेअल एक लघ (निरर्थक) बात तो जरूर है मगर इसकी वजह से फितरत के क्वानीन (नियम) बदल नहीं सकते।

कुरआन में बताया गया कि महज जिहार से किसी आदमी की बीवी पर तलाक नहीं पड़ेगी। अलबत्ता उस आदमी पर लाजिम किया गया कि वह पहले कफफारा (प्रायश्चित्त) अदा करे। इसके बाद वह दुबारा अपनी बीवी के पास जाए। किसी गलती के बाद जब आदमी इस तरह कफफारा अदा करता है तो वह दुबारा अपने यकीन को जिंदा करता है। वह इस उसूल में अपने अक्रीदे को नए सिरे से मुस्तहकम (सुदृढ़) बनाता है जिसे वह गफलत या नादानी से छोड़ बैठा था।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كَيْتُوا كَمَا كَيْتَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَذَلِكَ آتَتْ بَنَاتٍ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۖ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफत करते हैं वे जलील होंगे जिस तरह वे लोग जलील हुए जो इनसे पहले थे और हमने वाजेह (स्पष्ट) आयतें उतार दी हैं, और मुंकिरों के लिए जिल्लत का अजाब है। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा और उनके किए हुए काम उन्हें बताएगा। अल्लाह ने उसे गिन रखा है। और वे लोग उसे भूल गए, और अल्लाह के सामने है हर चीज। (5-6)

हक की मुखालिफत करना खुदा की मुखालिफत करना है। और खुदा की मुखालिफत करना उस हस्ती की मुखालिफत करना है जिससे मुखालिफत करके आदमी खुद अपना नुक्सान करता है। खुदा से आदमी न अपनी किसी चीज को छुपा सकता और न किसी के लिए यह मुमकिन है कि वह खुदा की पकड़ से अपने आपको बचा सके।

الْمُتَرَاتِنَ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَا يَكُونُ مِنْ

تَجَوَّى ثَلَاثَةً إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خُمْسَةَ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَى
مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا
عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ
نُهِوا عَنِ النَّجْوَى ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْأَثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ ۖ وَإِذَا جِئُواكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ ۖ وَ
يَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۖ حَسْبُكُمْ جَهَنَّمُ
يَصْلَوْنَهَا فَيُفْسِسُ الْبَصِيرُ ۝

तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। कोई सरगोशी (गुप्त वाती) तीन आदमियों की नहीं होती जिसमें चौथा अल्लाह न हो। और न पांच की होती है जिसमें छठा वह न हो। और न इससे कम की या ज्यादा की। मगर वह उनके साथ होता है जहां भी वे हों, फिर वह उन्हें उनके किए से आगाह करेगा कियामत के दिन। बेशक अल्लाह हर बात का इल्म रखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा जिन्हें सरगोशियों से रोका गया था, फिर भी वे वही कर रहे हैं जिससे वे रोके गए थे। और वे गुनाह और ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियां करते हैं, और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हें ऐसे तरीके से सलाम करते हैं जिससे अल्लाह ने तुम्हें सलाम नहीं किया। और अपने दिलों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमें अजाब क्यों नहीं देता। उनके लिए जहन्नम ही काफी है, वे उसमें पड़ेंगे, पस वह बुरा ठिकाना है। (7-8)

कायनात अपने इतिहाई पेचीदा निजाम के साथ यह गवाही दे रही है कि वह हर आन किसी बालातर (उच्चतर) ताकत की निगरानी में है। कायनात में निगरानी की शहादत यह साबित करती है कि इंसान भी मुसलसल तौर पर अपने खालिक की निगरानी में है। ऐसी हालत में हक के खिलाफ खुफिया सरगमियां दिखाना सिर्फ ऐसे अधे लोगों का काम हो सकता है जो खुदा की सिफ्तों को न बराहरेस्त (प्रत्यक्ष) तौर पर मत्फूज (शाब्दिक) कुरआन में पढ़ सकें और न बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर गैर मत्फूज कायनात में।

कुछ यहूद और मुनाफिकीन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में आते तो वे अस्सलामु अलैकुम (आप पर सलामती हो) कहने के बजाए अस्सामु अलैकुम (आप पर मौत आए) कहते। यह हमेशा से सतही (निम्न स्तरीय) इंसानों का तरीका रहा है।

सतही लोग एक सच्चे इंसान को बेकदर करके अपने जेहन में खुश होते हैं। वे भूल जाते हैं कि सारी फैली हुई खुदाई ऐन उस वक्त भी उस सच्चे इंसान का एतराफ कर रही होती है जबकि अपने महदूद जेहन के मुताबिक वे उसकी तहकीर (अनादर) व तरदीद के लिए अपना आखिरी लफज इस्तेमाल कर चुके हों।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْأَثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَ
مَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَى ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ۝ إِنَّمَا النَّجْوَى مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ
بِضَرَّائِهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

ऐ ईमान वालो जब तुम सरगोशी (गुप्त वाती) करो तो गुनाह और ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशी न करो। और तुम नेकी और परहेजगारी की सरगोशी करो। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम जमा किए जाओगे। यह सरगोशी शैतान की तरफ से है ताकि वह ईमान वालों को रंज पहुंचाए, और वह उन्हें कुछ भी रंज नहीं पहुंचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (9-10)

खुफिया सरगोशियां करना आम हालात में एक नापसंदीदा फेअल (कृत्य) है। ताहम कभी कोरेखर के लिए भी खुफिया सरगोशी की जरूरत होती है। इस सिलसिले में अस्ल फैसलाकुन चीज नियत है। खुफिया सरगोशी अगर अच्छी नियत से की जाए तो जाइज है और अगर वह बुरी नियत से की जाए तो नाजाइज।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ
اللَّهُ لَكُمْ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا فَانْشُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

ऐ ईमान वालो जब तुम्हें कहा जाए कि मजलिसों में खुलकर बैठो तो तुम खुलकर बैठो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी (खुलापन) देगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो तुम उठ जाओ। तुम में से जो लोग ईमान वाले हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह उनके दर्जे बुलन्द करेगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाखबर है। (11)

मजलिस के आदाब के तहत कभी ऐसा होता है कि एक शख्स को पीछे करके दूसरे शख्स को आगे बिठाया जाता है। इसी तरह कभी ऐसा होता है कि लोगों को उम्मीद के खिलाफ

कह दिया जाता है कि अब आप लोग तशरीफ ले जाएं। ऐसी बातों को इज्जत का सवाल बनाना शुऊरी पस्ती का सबूत है। और जो शख्स इन बातों को इज्जत का सवाल न बनाए उसने यह सबूत दिया कि शुऊरी एतबार से वह बुलन्द दर्जे को पहुंचा हुआ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ
صَدَقَةٌ ۚ ذَلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ۝ أَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقْتُمْ ۚ وَإِذَا لَمْ تَفْعَلُوا
وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ ۚ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَ
رَسُولَهُ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, जब तुम रसूल से राजदाराना बात करो तो अपनी राजदाराना बात से पहले कुछ सदका दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है और ज्यादा पाकीजा है। फिर अगर तुम न पाओ तो अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। क्या तुम डर गए इस बात से कि तुम अपनी राजदाराना गुफ्तगू से पहले सदका दो। पस अगर तुम ऐसा न करो, और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया, तो तुम नमाज कयम करो और जफ़ात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (12-13)

अल्लाह तआला को यह मल्लूब था कि रसूल से सिर्फ वही लोग मिलें जो फिलवाकअ संजीदा मक्सद के तहत आपसे मिलना चाहते हैं। ग़ैर जरूरी किस्म के लोग छंट दिए जाएं जो अपनी बेमयदा बातों से सिर्फ वक्त जाया करने का सबब बनते हैं। इसलिए यह उसूल मुकरर किया गया कि जब रसूल से मिलने का इरादा करो तो पहले अल्लाह के नाम पर कुछ सदका करो। और अगर इसकी कुदरत न हो तो कोई दूसरी नेकी करो।

यह हुकम अगरचे अस्लन रसूल के लिए मल्लूब था। मगर रसूल के बाद भी उम्मत के रहनुमाओं के हक में वह हालात के एतबार से दर्जा-ब-दर्जा मल्लूब होगा।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ مَا هُمُ مِنْكُمْ وَلَا مِنْكُمْ وَلَا
يَحْفَظُونَ عَلَى الْكَذِبِ ۚ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ
إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً ۚ فَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ। वे न तुम में से हैं और न उनमें से हैं और वे झूठी बात पर कसम खाते हैं हालांकि वे जानते हैं। अल्लाह ने उन लोगों के लिए सज़ा अजाब तैयार कर रखा है, बेशक वे बुरे काम हैं जो वे करते हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, पस उनके लिए जिल्लत का अजाब है। (14-16)

मदीना के मुनाफिकीन इस्लाम की जमाअत में शामिल थे। इसी के साथ वे यहूद से भी मिले हुए थे। यही हमेशा उन लोगों का हाल होता है जो हक को पूरी यकसूई (एकाग्रता) के साथ इख़्तियार न कर सकें। ऐसे लोग बजाहिर सबसे मिले हुए होते हैं मगर हकीकतन वे सिर्फ अपने मफ़द (स्वाथ) के वफ़दार होते हैं। चाहे वे कसमें खाकर अपने हक़मस्त होने का यकीन दिला रहे हों।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا
يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝
اسْتَوْذَعُوا عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانَ ۚ فَأَنسَهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۚ أَلَا
إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ۝ كَتَبَ اللَّهُ لَأَعْلَبَنَ آدَمُ وَرُسُلُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ
عَزِيزٌ ۝

उनके माल और उनकी औलाद उन्हें जरा भी अल्लाह से बचा न सकेंगे। ये लोग दोज़ख़ वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उससे भी इसी तरह कसम खाएंगे जिस तरह तुमसे कसम खाते हैं। और वे समझते हैं कि वे किसी चीज़ पर हैं, सुन लो कि यही लोग झूठे हैं। शैतान ने उन पर काबू हासिल कर लिया है। फिर उसने उन्हें ख़ुदा की याद भुला दी है। ये लोग शैतान का गिरोह हैं। सुन लो कि शैतान का गिरोह जरूर बर्बाद होने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करते हैं वही जलील लोगों में हैं। अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। बेशक अल्लाह कुव्वत वाला, जबरदस्त है। (17-21)

मफ़दपरस्त आदमी जब हक की दावत की मुख़ालिफ़त करता है तो वह समझता है कि इस तरह वह अपने आपको महफूज़ कर रहा है। मगर उस वक़्त वह दहशतजदा होकर रह जाएगा जब आख़िरत में वह देखेगा कि जिन चीज़ों पर उसने भरोसा कर रखा था वे फ़ैसले के उस वक़्त में उसके कुछ काम आने वाली नहीं।

मुनाफ़िक़ (पाखंडी) आदमी अपने मौक़िफ़ को सही साबित करने के लिए बढ़-बढ़कर बातें करता है। यहां तक कि वह कसमें खाकर अपने इख़्लास (निष्ठा) का यकीन दिलाता है। ये सब करके वह समझता है कि 'वह किसी चीज़ पर है।' उसने अपने हक में कोई वाकई बुनियाद फ़ाहम कर ली है। मगर क़ियामत का वक़ाफ़ा जब हकीक़तों को खेलेगा उस वक़्त वह जान लेगा कि यह महज शैतान के सिखाए हुए झूठे अल्फ़ज़ थे जिन्हें वह अपने बेक़सूर होने का यकीनी सुबूत समझता रहा।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ
فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِنْهُ فَيُؤَيِّدُ خَلْفَهُمْ جَدَّتِ تَجَرُّبِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَلِيدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَئِكَ
حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٥٨

तुम ऐसी कौम नहीं पा सकते जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो और वह ऐसे लोगों से दोस्ती रखे जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं। अगरचे वे उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके ख़ानदान वाले क्यों न हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और उन्हें अपने फ़ैज से कुव्वत दी है। और वह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनके राजी हुआ और वे अल्लाह से राजी हुए। यही लोग अल्लाह का ग़िरोह हैं और अल्लाह का ग़िरोह ही फ़लाह (कल्याण, सफलता) पाने वाला है। (22)

इस दुनिया में कामयाबी हिज़्बुल्लाह के लिए है। हिज़्बुल्लाह (अल्लाह की जमाअत) कौन लोग हैं। ये वे लोग हैं जिनके दिलों में ईमान सबसे बड़ी हकीक़त के तौर पर रासिख़ (घनीभूत) हो गया हो। जिन्हें अल्लाह से इतनी गहरी निस्वत हासिल हो कि उन्हें अल्लाह की तरफ से रूख़नी फ़ैज पहुंचने लगे। फिर यह कि खुदाई हकीक़तों से उनकी वाबस्तगी इतनी गहरी हो कि उसी की बुनियाद पर उनकी दोस्तियां और दुश्मनियां कायम हों। वे सबसे ज्यादा उन लोगों से करीब हों जो खुदाई सदाक़त (सच्चाई) को अपनाए हुए हैं। और जो लोग खुदाई सदाक़त से दूर

हैं वे भी उनसे दूर हो जाएं, चाहे वे उनके अपने अजीज और रिश्तेदार क्यों न हों।

سُوْرَةُ الْحٰثِرَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعَةٌ وَخَمْسُونَ آيَةً بِمِائَةٍ وَخَمْسِينَ كَلِمَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيْمُ ۝ هُوَ الَّذِي
اَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَخْرُجُوْا وَظَنُّوا اَنْهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَآتَتْهُمْ
اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِي قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ ۚ يُجْرِبُوْنَ
بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيهِمْ وَاَيْدِی الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوْا يٰۤاُولِی الْاَبْصٰرِ ۝

आयतें-24

सूरह-59. अल-हथ्र

रुकूअ-3

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की पाकी बयान करती हैं सब चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने अहले किताब मुंकिरों को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया। तुम्हारा गुमान न था कि वे निकलेंगे और वे ख़्याल करते थे कि उनके किले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, फिर अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां से उन्हें ख़्याल भी न था। और उनके दिलों में रौब डाल दिया, वे अपने घरों को खुद अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी। पस ऐ आंख वालो, इबरत (सीख) हासिल करो। (1-2)

मदीना के मशिक में यहूदी कबीला बनू नजीर की आबादी थी। उनके और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान सुलह का मुआहिदा था। मगर उन्होंने बार-बार अहदशिकनी की। आखिरकार 4 हि० में अल्लाह तआला ने ऐसे हालात पैदा किए कि मुसलमानों ने उन्हें मदीना से निकलने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद वे ख़ैबर और अजरिआत में जाकर आबाद हो गए। मगर उनकी साजिशों सरगर्मियां जारी रहीं। यहां तक कि हज़रत उमर फारूक की ख़िलाफ़त की ज़माने में वे और दूसरे यहूदी क़ब़ाइल जज़िरा अरब से निकलने पर मजबूर कर दिए गए। इसके बाद वे लोग शाम में जाकर आबाद हो गए। 'अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां उन्हें गुमान भी न था' की तशरीह अगले फ़िकरे में मौजूद है। यानी अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया। उन्होंने बेरुनी (वाह्य) तौर पर हर किस्म की तैयारियां कीं। मगर जब मुसलमानों की फौज ने उनकी आबादी को घेर लिया

तो सारी ताकत के बावजूद उन पर ऐसी दहशत तारी हुई कि उन्होंने लड़ने का हौसला खो दिया। और बिला मुकाबले हथियार डाल दिया।

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمُ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِّ
اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ مَآ قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا
قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ۝

और अगर अल्लाह ने उन पर जलावतनी (देश-निकाला) न लिख दी होती तो वह दुनिया ही में उन्हें अजाब देता, और आखिरत में उनके लिए आग का अजाब है। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफत की। और जो शख्स अल्लाह की मुखालिफत करता है तो अल्लाह सख्त अजाब वाला है। खजूरों के जो दरख्त तुमने काट डाले या उन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह के हुक्म से, और ताकि वह नाफरमानों को रुसवा करे। (3-5)

यहूद को जो सजा दी गई, वह अल्लाह के कानून के तहत थी। यह सजा उन लोगों के लिए मुकद्दर है जो पैगम्बर के मुखालिफ बनकर खड़े हों। बनू नजीर के मुहासिर (घेराव) के वक्त उनके बागात के कुछ दरख्त जंगी मस्तेहत के तहत काटे गए थे। यह भी बराहेरास्त खुदा के हुक्म से हुआ। ताहम यह कोई आम उसूल नहीं। यह एक इस्तिस्नाई (अपवाद स्वरूप) मामला है जो पैगम्बर के बराहेरास्त मुखातबीन के साथ एक या दूसरी शकल में इख्तियार किया जाता है।

وَمَا آفَاءَ اللَّهِ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا
رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
مَا آفَاءَ اللَّهِ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي
الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ كُنْ لَا يَكُونَ دُولَةً
بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنكُمْ ۚ وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ
فَانْتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ
الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالُهُمْ يُبْتَغُونَ فَرَضًا مِّنَ اللَّهِ وَ
رِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّدِيقُونَ ۝

और अल्लाह ने उनसे जो कुछ अपने रसूल की तरफ लौटाया तो तुमने उस पर न थोड़े दौड़ाए और न ऊंट और लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है तसल्लुत (पृथुत्व) दे देता है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। जो कुछ अल्लाह अपने रसूल को बस्तियों वालों की तरफ से लौटाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए है और रिश्तेदारों और यतीमों (अनाथों) और मिस्कीनों (असहाय जनों) और मुसाफिरों के लिए है। ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दर्मियान गर्दिश न करता रहे। और रसूल तुम्हें जो कुछ दे वह ले लो और वह जिस चीज से तुम्हें रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो, अल्लाह सख्त सजा देने वाला है। उन मुफ्लिस मुहाजिरों के लिए जो अपने घरों और अपने मालों से निकले गए हैं। वे अल्लाह का फरस और रिजामंदी चाहते हैं। और वे अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं। (6-8)

दुश्मन का जो माल लड़ाई के बाद मिले वह गनीमत है और जो माल लड़ाई के बगैर हाथ लगे वह फई है। गनीमत में पांचवां हिस्सा निकालने के बाद बकिया सब लश्कर का है। और फई सबका सब इस्लामी हुक्मत की मिल्कियत है जो मसालेहे आम्मा (जन-हित) के लिए खर्च किया जाएगा।

इस्लाम चाहता है कि माल किसी एक तबके में महदूद होकर न रह जाए। बल्कि वह हर तबके के दर्मियान पहुंचे। इस्लाम में मआशी (आर्थिक) जन्न नहीं है। ताहम उसके मआशी कवानीन इस तरह बनाए गए हैं कि दौलत मुरतकिज (केन्द्रित) न होने पाए। वह हर तबके के लोगों में गर्दिश करती रहे।

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُجْزَوْنَ مِمَّنْ هَاجَرُوا إِلَيْهِمْ
لَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ
وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقِ شَهْنَفَهُ فَإِنَّكَ لَهُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا
الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا
إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝

और जो लोग पहले से दार (मदीना) में करार पकड़े हुए हैं और इमान अस्तवार किए हुए हैं, जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे वे मुहब्बत करते हैं और वे अपने दिलों में उससे तंगी नहीं पाते जो मुहाजिरीन को दिया जाता है। और वे उन्हें अपने ऊपर मुकद्दम रखते हैं। अगरचे उनके ऊपर फाव हो। और जो शख्स अपने जी के

लालच से बचा लिया गया तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो उनके बाद आए वे कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें बख्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं। और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना (द्वेष) न रख, ऐ हमारे रब, तू बड़ा शफीक (कृणामय) और महरबान है। (9-10)

हिजरत के बाद जो मुसलमान अपना वतन छोड़कर मदीना पहुंचे, उनका मदीना आना मदीने के वाशियों (अंसार) पर एक बोझ था। मगर उन्होंने निहायत खुशदिली के साथ उनका इस्तकबाल किया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जब अमवाल (धन-सम्पत्ति) आए तो आपने उनका हिस्सा मुहाजिरीन के दर्मियान तकसीम किया। इस पर भी अंसारे मदीना के अंदर उनके लिए कोई रंजिश पैदा न हुई। इसके बाद भी वे उनके इतने कद्रदान रहे कि उनके हक में उनके दिल से बेहतरीन दुआएं निकलती रहीं। यही वह आली हौसलगी है जो किसी गिरोह को तारीखसाज (इतिहास-निर्माता) गिरोह बनाती है।

الْمُتَرَكِّ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَیْنُ أَخْرَجْتُمْ لِخُرُوجِنَا مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِیكُمْ أَحَدًا أَبَدًا ۖ وَإِنْ قُوَّتُمْ لِنَصْرِكُمْ وَاللَّهُ یَشْهَدُ أَنَّهُمْ لَكَذِبُونَ ۝ لَیْنُ أَخْرَجُوا لَا یَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَیْنُ قُوتُوا لَا یَنْصُرُونَهُمْ ۖ وَلَیْنُ نَصْرُوهُمْ لَیُؤْنِنَ الْأُذُنَ بَآرِئَةً لِّیُنْصَرُونَ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो निफाक (पाखंड) में मुत्तिला हैं। वे अपने भाइयों से कहते हैं जिन्होंने अहले किताब में से कुफ्र किया है, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे। और तुम्हारे मामले में हम किसी की बात न मानेंगे। और अगर तुमसे लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं। अगर वे निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे। और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे। और अगर उनकी मदद करेंगे तो जरूर वे पीठ फेरकर भागेंगे, फिर वे कहीं मदद न पाएंगे। (11-12)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू नजीर की जलावतनी (दिश निकाला) का एलान किया तो मुनाफिक्रीन उनकी हिमायत पर आ गए। उन्होंने बनू नजीर से कहा कि तुम अपनी जगह जमे रहो, हम हर तरह तुम्हारी मदद करेंगे। मगर मुनाफिक्रीन की ये बातें महज उन्हें मुसलमानों के खिलाफ उकसाने के लिए थीं। वे इस पेशकश में हरगिज मुख़्लिस न थे। चुनांचे जब मुसलमानों ने बनू नजीर को घेर लिया तो मुनाफिक्रीन में से कोई भी उनकी मदद पर न आया। मफ़ादपरस्त (स्वार्थी) गिरोह का हर जमाने में यही किरदार रहा है।

لَا أَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِی صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ۚ ذَٰلِك بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا یَفْقَهُونَ ۝ لَا یَقَاتِلُونَكُمْ جَمِیعًا إِلَّا فِی قَرْیَ مُحْصَنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَیْنَهُمْ شَدِیدٌ ۖ تَحْسَبُهُمْ جَمِیعًا وَقَلُوبُهُمْ شَتَّى ۚ ذَٰلِك بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا یَعْقِلُونَ ۝

बेशक तुम लोगों का डर उनके दिलों में अल्लाह से ज्यादा है, यह इसलिए कि वे लोग समझ नहीं रखते। ये लोग सब मिलकर तुमसे कभी नहीं लड़ेंगे। मगर हिफाजत वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ में। उनकी लड़ाई आपस में सज़त है। तुम उन्हें मुत्तहिद (एकजुट) ख्याल करते हो और उनके दिल जुदा-जुदा हो रहे हैं, यह इसलिए कि वे लोग अक्ल नहीं रखते। (13-14)

खुदा की ताक़्त बजाहिर दिखाई नहीं देती। मगर इंसानों की ताक़्त खुली आंख से नजर आती है। इस बिना पर जाहिरपरस्त लोगों का हाल यह होता है कि वे अल्लाह से तो बेखौफ रहते हैं मगर इंसानों में अगर कोई जोरआवर दिखाई दे तो वे फ़ौरन उससे डरने की जरूरत महसूस करने लगते हैं। खुदा के बारे में उनकी बेशुक्करी उन्हें उनकी दुनिया के बारे में भी बेशुक्करी बना देती है।

ऐसे लोग जिन्हें सिर्फ मंफ़ी (नकारात्मक) मक़सद ने मुत्तहिद किया हो वे ज्यादा देर तक अपना इत्तिहाद बाकी नहीं रख पाते। क्योंकि देरपा इत्तहाद के लिए मुस्वत (सकारात्मक) बुनियाद दरकार है और वह उनके पास मौजूद ही नहीं।

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ ۖ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّی بَرِئٌ مِّنْكَ إِنِّی أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِیْنَ ۝ فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِی النَّارِ خَالِدِیْنَ فِیْهَا ۚ وَ ذَٰلِكَ جَزَاُ الظَّالِمِیْنَ ۝

ये उन लोगों की मानिंद हैं जो उनके कुछ ही पहले अपने किए का मजा चख चुके हैं, और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। जैसे शैतान जो इंसान से कहता है कि मुंकिर हो जा, फिर जब वह मुंकिर हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुमसे बरी हूं। मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब है। फिर अंजाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोजख में गए जहां वे हमेशा रहेंगे, और जालिमों की सजा यही है। (15-17)

मदीना के मुनाफिकीन बनू नजीर को मुसलमानों के खिलाफ उभार रहे थे। उन्होंने उस वाक्य से सबक नहीं लिया कि जल्द ही पहले क़ैल और क़ीला बनू क़ैलम उनका खिलाफ उठे। मगर उन्हें जबरदस्त शिकस्त हुई। जो लोग शैतान को अपना मुशिर (सलाहकार) बनाएं उनका हाल हमेशा यही होता है। वे वाक़ेयात से नसीहत नहीं लेते। पहले वे जोश व ख़रोश के साथ लोगों को मुजरिमाना अफ़आल पर उभारते हैं। फिर जब उसका भयानक अंजाम सामने आता है तो वे तरह-तरह के अल्फ़ाज बोलकर यह चाहते हैं कि उसकी जिम्मेदारी से अपने आपको बरी कर लें। मगर इस किस्म की कोशिशें ऐसे लोगों को अल्लाह की पकड़ से बचाने वाली साबित नहीं हो सकतीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो, और हर शय्स देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह वाख़बर है जो तुम करते हो। और तुम उन लोगों की तरह न बन जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन्हें खुद उनकी जानों से ग़ाफ़िल कर दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं। देखने वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते। जन्नत वाले ही अस्ल में कामयाब हैं। (18-20)

इंसानी ज़िंदगी को 'आज' और 'कल' के दर्मियान तक्सीम किया गया है। मौजूदा दुनिया इंसान का आज है और आख़िरत की दुनिया उसका कल है। इंसान मौजूदा दुनिया में जो कुछ करेगा उसका लाज़िमी अंजाम उसे आने वाली तबीलतर (दीर्घतर) ज़िंदगी में भुगतना पड़ेगा।

यही अस्ल हकीकत है और इसी हकीकत का दूसरा नाम इस्लाम है। इंसान की कामयाबी इसमें है कि वह इस हकीकत वाक़ई को ज़हन में रखे। जो शय्स इस हकीकत वाक़ई से ग़ाफ़िल हो जाए उसकी पूरी ज़िंदगी ग़लत होकर रह जाएगी। इस मामले में मुसलमान और ग़ैर मुसलमान का कोई फ़र्क नहीं। मुसलमानों को इसका फ़ायदा उसी वक़्त मिलेगा जबकि वाक़येतन वे उस पर कायम हों। मुसलमान अगर ग़फलत में पड़ जाएं तो उनका अंजाम भी वही होगा जो इससे पहले ग़फलत में पड़ने वाले यहूद का हुआ।

لَوْ أَنزَلْنَاهُ هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَّرَأَيْنَاهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

अगर हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह खुदा के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता, और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, पोशीदा और जाहिर को जानने वाला, वह बड़ा महरबान है। निहायत रहम वाला है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। बादशाह, सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, जोरआवर, अज्मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं। वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वुजूद में लाने वाला, सूरतगरी (संरचना) करने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम। हर चीज जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तस्बीह कर रही है, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (21-24)

क़ुरआन इस अजीम हकीकत का एलान है कि इंसान आजद नहीं है बल्कि उसे अपने तमाम आमाल की जवाबदेही अल्लाह के सामने करनी है जो इतिहाई ताकतवर है। और हर एक के आमाल को बजातेखुद पूरी तरह देख रहा है। यह ख़बर इतनी संगीन है कि पहाड़ तक को लरजा देने के लिए काफी है। मगर इंसान इतना ग़ाफ़िल और बेहिस है कि वह इस हौलनाक ख़बर को सुनकर भी नहीं तड़पता।

अल्लाह के नाम जो यहां बयान किए गए हैं वे एक तरफ़ अल्लाह की जात का तआरुफ़ (परिचय) हैं। दूसरी तरफ़ वे बताते हैं कि वह हस्ती कैसी अजीम हस्ती है जो इंसानों की ख़ालिक है और उनके ऊपर उनकी निगरानी कर रही है। अगर आदमी को वाक़येतन इसका एहसास हो जाए तो वह अल्लाह की हम्द व तस्बीह में सरापा ग़र्क हो जाएगा।

कायनात अपनी तख़्नीकी मअनवियत की सूरत में खुदा की सिफ़ात का आइना है। वह खुद हम्द व तस्बीह में मसरूफ़ होकर इंसान को भी हम्द व तस्बीह का सबक देती है।

سُورَةُ الْمُتَمِّتَةِ بِكَسْبِ وَهِيَ ثَلَاثُ عَشْرَةِ آيَاتٍ وَفِيهَا زَكَاةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمْ
بِالنُّصَرَةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ
أَنْ تَتُومِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَ
ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْمُودَةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ
وَمَا أَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ إِنْ
يَشْكُرُوا يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَسْطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَسْنتَهُمْ بِالسُّوۥ
وَوَدُّوا أَنْ تُكْفَرُوا ۝ لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُهُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ
يَقْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

مع
عبداللہ الحارثی

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ ईमान वाले, तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे
दोस्ती का इच्छा करते हो हालांकि उन्होंने उस हक (सत्य) का इंकार किया जो तुम्हारे
पास आया, वे रसूल को और तुम्हें इस वजह से जलावतन (निर्वासित) करते हैं कि तुम
अपने रब, अल्लाह पर ईमान लाए। अगर तुम मेरी राह में जिहाद और मेरी रिजामंदी
की तलब के लिए निकले हो, तुम छुपाकर उन्हें दोस्ती का पैगाम भेजते हो। और मैं
जानता हूं जो कुछ तुम छुपाते हो। और जो कुछ तुम जाहिर करते हो। और जो शय
तुम में से ऐसा करेगा वह राहेरास्त से भटक गया। अगर वे तुम पर काबू पा जाएं तो
वे तुम्हारे दुश्मन बन जाएंगे। और अपने हाथ और अपनी जबान से तुम्हें आजार (पीड़ा)
पहुंचाएंगे। और चाहेंगे कि तुम भी किसी तरह मुंकिर हो जाओ। तुम्हारे रिश्तेदार और
तुम्हारी औलाद कियामत के दिन तुम्हारे काम न आएंगे, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला
करेगा, और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का की तरफ इक्दाम करने

का फैसला किया तो आपने उसका पूरा मंसूबा निहायत खामोशी के साथ बनाया ताकि मक्का
वाले मुकाबले की तैयारी न कर सकें। उस वक्त एक बंदी सहाबी हातिब बिन अबी बलतआ
ने इस मंसूबे को एक खत में लिखा और उसे खुफिया तौर पर मक्का वालों के नाम रवाना
कर दिया। ताकि मक्का वाले उनसे खुश हो जाएं और उनके अहल व अयाल (परिवारजनों)
को न सताएं जो मक्का में मुकीम हैं। मगर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए इसकी इत्तिला
हो गई और कासिद को रास्ते ही में पकड़ लिया गया। इस क्रिम का हर फेअल ईमानी
तक़्केल है।

जब यह सूरतेहाल हो कि इस्लाम और ग़ैर इस्लाम के अलग-अलग महाज बन जाएं तो
उस वक्त अहले इस्लाम की जिम्मेदारी होती है कि वे ग़ैर इस्लामी महाज से दिलचस्पी का
तअल्लुक तोड़ लें। चाहे ग़ैर इस्लामी महाज में उनके अजीज और रिश्तेदार ही क्यों न हों।
हक को मानना और हक का इंकार करने वालों से कत्बी तअल्लुक रखना दो मुतजाद (परस्पर
विरोधी) चीजें हैं जो एक साथ जमा नहीं हो सकती।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا
لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءُكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَ
بَدَّأ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ
إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ
مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنْتَبْنَا وَلِلَّهِ الْمَصِيرُ ۝ رَبَّنَا لَا
تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفُ رَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ
الْآخِرَ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوْدَّةً وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَحِيمٌ

तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी कौम
से कहा कि हम अलग हैं तुमसे और उन चीजों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत
करते हो, हम तुम्हारे मुंकिर हैं और हमारे और तुम्हारे दर्मियान हमेशा के लिए अदावत
(बैर) और बेजारी (दुराव) जाहिर हो गई यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान
लाओ। मगर इब्राहीम का अपने बाप से यह कहना कि मैं आपके लिए माफी मांगूंगा,
और मैं आपके लिए अल्लाह के आगे किसी बात का इख्तियार नहीं रखता। ऐ हमारे

सूरह-60. अल-मुमत्तहिनह

1435

पारा 28

रब, हमने तेरे ऊपर भरोसा किया और हम तेरी तरफ रुजूअ हुए और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ हमारे रब, हमें मुंकिरों के लिए फितना न बना, और ऐ हमारे रब, हमें बख्श दे, बेशक तू जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। बेशक तुम्हारे लिए उनके अंदर अच्छा नमूना है, उस शख्स के लिए जो अल्लाह का और आखिरत के दिन का उम्मीदवार हो। और जो शख्स रूगदानी (अवहेलना) करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तरीफों वाला है। उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान दोस्ती पैदा कर दे जिनसे तुमने दुश्मनी की। और अल्लाह सब कुछ कर सकता है, और अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। (4-7)

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इब्तिदा में खैरख़ाहाना अंदाज में अपने ख़ानदान को तौहीद का पैग़ाम दिया। जब इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद वे लोग मुंकिर बने रहे तो आप उनसे बिल्कुल जुदा हो गए। मगर यह बड़ा सख्त मरहला था। क्योंकि एलाने बरा-त (विरक्ति) का मतलब मुंकिरीने हक को यह दावत देना था कि वे हर मुमकिन तरीके से अहले ईमान को सताएं। दलील के मैदान में शिकस्त खाने के बाद ताकत के मैदान में अहले ईमान को जलील करें। यही वजह है कि इसके बाद हजरत इब्राहीम ने जो दुआ कि उसमें ख़ास तौर से फ़रमाया कि ऐ हमारे रब हमें इन जालिमों के जुम का तख़्त मश्क (निशाना) न बना।

अजीजों और रिश्तेदारों से एलाने बरा-त आम मजनों में एलाने अदावत नहीं है। यह दाजी की तरफ से अपने यकीन का आखिरी इज़हार है। इस एतबार से उसमें भी एक दावती (Value) शामिल हो जाती है। चुनांचे कभी ऐसा होता है कि जो शख्स 'पैग़ाम' की जवान से मुतअस्सिर नहीं हुआ था 'यकीन' की जवान उसे जीतने में कामयाब हो जाती है।

لَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

अल्लाह तुम्हें उन लोगों से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग नहीं की। और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला कि तुम उनसे भलाई करो और तुम उनके साथ इंसाफ करो। बेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। अल्लाह बस उन लोगों से तुम्हें मना करता है जो दीन के मामले में तुमसे लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। और तुम्हारे निकालने में मदद की कि तुम उनसे दोस्ती करो, और जो उनसे

पारा 28

1436

सूरह-60. अल-मुमत्तहिनह

दोस्ती करे तो वही लोग जालिम हैं। (8-9)

जहां तक अदुल व इंसाफ का तअल्लुक है वह हर एक से किया जाएगा, चाहे फ़रीक सानी (प्रतिपक्षी) दुश्मन हो या ग़ैर दुश्मन। मगर दोस्ती का तअल्लुक हर एक से दुरुस्त नहीं। दोस्ती सिर्फ उसी के साथ जाइज है जो अल्लाह का दोस्त हो या कम से कम यह कि वह अल्लाह का दुश्मन न हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ فَاجْرِبْنَ لَهُنَّ مَا نَفَقْنَ إِلَى الْكُفَّارِ لَعَلَّهُنَّ حِلٌّ لَهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۚ وَأَتُوهُنَّ مَا نَفَقْنَ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تَنْسِكُوا بِعَصَمِ الْكُوفَرِ وَسَأَلُوا مَا نَفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمُ أَنْ تَنْفِقُوا فِي دِينِكُمْ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَلَيْكُمْ فَاتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِثْلَ مَا نَفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत (स्थान-परिवर्तन) करके आए तो तुम उन्हें जांच लो, अल्लाह उनके ईमान को खूब जानता है। पस अगर तुम जान लो कि वे मोमिन हैं तो उन्हें मुंकिरों की तरफ न लौटाओ। न वे औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वे उन औरतों के लिए हलाल हैं। और मुंकिर शोहरों ने जो कुछ खर्च किया वह उन्हें अदा कर दो। और तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम उनसे निकाह कर लो जबकि तुम उनके महर उन्हें अदा कर दो। और तुम मुंकिर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो। और जो कुछ तुमने खर्च किया है उसे मांग लो। और जो कुछ मुंकिरों ने खर्च किया वे भी तुमसे मांग लें। यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। और अगर तुम्हारी वीवियों के महर में से कुछ मुंकिरों की तरफ रह जाए, फिर तुम्हारी नौबत आए तो जिनकी वीवियां गई हैं उन्हें अदा कर दो जो कुछ उन्होंने खर्च किया। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। (10-11)

यहां सुलह हुदैबिया के बाद पैदाशुदा हालात की रोशनी में इस्लाम के कुछ उन कानूनों

सूरह-60. अल-मुमतेहिनह

1437

पारा 28

को बताया गया है जिनका तअल्लुक दारुल हरब और दारुल इस्लाम के दर्मियान पेश अपने वाले आइली (पारिवारिक) मसाइल से है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَى أَنْ لَا يُنْفِرْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَنْفِرْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ فَلَا يَعْنُ لَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ⑤

ऐ नबी जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) के लिए आए कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज को शरीक न करेंगी। और वे चोरी न करेंगी। और वे बदकारी न करेंगी। और वे अपनी औलाद को कत्ल न करेंगी। और वे अपने हाथ और पांव के आगे कोई बोहतान गढ़कर न लाएंगी। और वे किसी मारुफ (सत्कर्म) में तुम्हारी नाफरमानी न करेंगी तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से बख्शिश की दुआ करो, बेशक अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। (12)

इस आयत में वे शर्तें बताई गई हैं जिनका इकरार लेकर किसी औरत को इस्लाम में दाखिल किया जाता है। इन शर्तों में दो शर्त की हैसियत बुनियादी है। यानी शिर्क न करना और रसूल की नाफरमानी न करना। बाकी तमाम मयूर (उल्लिखित) और मयूर तमाम अपने आप इन दो शर्तों में शामिल हो जाते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَكْسُوا مِنْ
الْآخِرَةِ كَمَا يَكْسِ الْكُفَّارُ مِنَ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ⑥

ऐ ईमान वाले तुम उन लोगों को दोस्त न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे आखिरत से नाउम्मीद हो गए हैं जिस तरह कफ़रों में पड़े हुए मुंकिर नाउम्मीद हैं। (13)

आसमानी किताब को मानने वाले यहूद और उसे न मानने वाले मुंकिर आखिरत के एतबार से एक सतह पर हैं। खुले हुए मुंकिरों को उम्मीद नहीं होती कि कोई शख्स दुबारा अपनी कब्र से उठेगा। यही हाल उन लोगों का भी होता है जो यहूद की तरह ईमान लाने के बाद मफ़लत और बेहिंसी में मुक्किला हो गए हैं। आखिरत का लफ़्ज़ी इकरार करने के बावजूद उनकी अमली जिंदगी वैसी ही हो जाती है जैसी खुले हुए मुंकिरीन की जिंदगी।

पारा 28

1438

सूरह-61. अस-सफ़क

سُوْرَةُ الصَّفِّ كَذَبْتُمْ وَهُوَ أَرْبَعٌ عَشْرَةٌ آيَاتٌ وَفِيهَا الْكُوفَةُ ①

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ②

سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ④ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ⑤ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُورٌ ⑥

आयतें-14

सूरह-61. अस-सफ़क

रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की तस्वीह करती है हर चीज जो आसमानों और जमीन में है। और वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हकीम (तत्वदर्शी) है। ऐ ईमान वाले, तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं। अल्लाह के नजदीक यह बात बहुत नाराजी की है कि तुम ऐसी बात कहो जो तुम करो नहीं। अल्लाह तो उन लोगों को पसंद करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं गोया वे एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। (1-4)

इंसान के सिवा जो कायनात है उसमें कहीं तजाद (अन्तर्विरोध) नहीं। इस दुनिया में लकड़ी हमेशा लकड़ी रहती है। और जो चीज अपने आपको लोहा और पत्थर के रूप में जाहिर करे वह हकीकी तजर्वे में भी लोहा और पत्थर ही साबित होती है। इंसान को भी ऐसा ही बनना चाहिए। इंसान के कहने और करने में मुताबिकत होनी चाहिए। यहां तक कि उस वक्त भी जबकि आदमी को अपने कहने की यह कीमत देनी पड़े कि हर किस्म की दुश्वारियों के बावजूद वह सत्र का पहाड़ बन जाए।

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ لِمَ تَقُولُونَ لِمَ تَقُولُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ ⑦

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम लोग क्यों मुझे सतते हो, हालांकि तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं। पस जब वे फिर गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया। और अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (5)

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के दर्मियान आए। बनी इस्राईल उस वक्त एक जवालायफता कौम थे। उनके अंदर यह हौसला बाकी नहीं रहा था कि जो कहें वही करें। और करें वही कहें। चुनांचे उनका हाल यह था कि वे हजरत मूसा के हाथ पर ईमान का इकरार भी करते थे और इसी के साथ हर किसम की बदअहदी और नाफरमानी में भी मुव्तिला रहते थे। यहां तक कि हजरत मूसा के साथ अपने बुरे सुलूक को जाइज साबित करने के लिए वे खुद हजरत मूसा पर झूठे झूठे इल्जाम लगाते थे। बाइबल में खुर्रुज और गिनती के अववाब (अध्यायों) में इसकी तपसील देखी जा सकती है।

अहद करने के बाद अहद की ख़िलाफ़तजी आदमी को पहले से भी ज्यादा हक से दूर कर देती है।

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّضْمِنٌ ۖ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ يَرْيَدُونَ لِيُطْفِقُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝

और जब ईसा बिन मरयम ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं, तस्दीक (पुष्टि) करने वाला हूं उस तौरात की जो मुझसे पहले से मौजूद है, और खुशखबरी देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे हालांकि वह इस्लाम की तरफ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें, हालांकि अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा करके रहेगा, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। वही है जिसने भेजा अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ ताकि उसे सब दीनों पर ग़ालिब कर दे चाहे मुशिरकों (बहुदेववादियों) को यह कितना ही नागवार हो। (6-9)

हजरत मसीह अलैहिस्सलाम के मौजिजात इस बात का सुबूत थे कि आप खुदा के पैगम्बर

हैं। मगर यहूद ने उन मौजिजात को जादू का करिश्मा कहकर उन्हें नजरअंदाज कर दिया। इसी तरह कदीम आसमानी किताबों में वाजेह तौर पर पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की पेशगी ख़बर मौजूद थी। मगर जब आप आए तो यहूद और नसारा दोनों ने आपका इंकार कर दिया। इंसान इतना जालिम है कि वह खुली-खुली हकीकतों का एतराफ करने के लिए भी तैयार नहीं होता।

इस आयत में ग़लबे से मुराद फिक्री ग़लबा (वैचारिक वर्चस्व) है। यानी खुदा और मजहब के बारे में जितने ग़ैर मुवह्हिदाना (ग़ैर-एकेश्वरवादी) अकाइद दुनिया में हैं उन्हें जेर करके तौहीद (एकेश्वरवाद) के अक्दीद को ग़ालिब फ़िक्र की हैसियत दे दी जाए। बकिस्मा तमाम अकाइद हमेशा के लिए फ़िक्री तौर पर मग़लूब होकर रह जाएं। कुरआन में यह पेशीनगोई इतिहाई नामुवाफ़िक़ हालात में सन् 3 हि० में नाजिल हुई थी। मगर बाद को वह हर्फ़बर्फ़ पूरी हुई।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ۝ تَوَمِّنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَعْلَمُ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٌ طَيِّبٌ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۖ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۖ وَآخِرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۖ وَبَشِيرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

ऐ ईमान वाले, क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारात बताऊं जो तुम्हें एक दर्दनाक अजाब से बचा ले। तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपने जान से जिहाद (जद्दोजहद) करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में जो हमेशा रहने के बाग़ों में होंगे, यह है बड़ी कामयाबी और एक और चीज भी जिसकी तुम तमन्ना रखते हो, अल्लाह की मदद और फतह जल्दी, और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (10-13)

तिजारात में आदमी पहले देता है, इसके बाद उसे वापस मिलता है। दीन की जद्दोजहद में भी आदमी को अपनी कुव्वत और अपना माल देना पड़ता है। इस एतबार से यह भी एक क़िस्म की तिजारात है। अलबत्ता दुनियावी तिजारात का नफ़ा सिर्फ़ दुनिया में मिलता है और दीन की तिजारात का नफ़ा मजिद इजाफे के साथ दुनिया में भी मिलता है और आख़िरत में भी। फिर इसी 'तिजारात' से ग़लबा की राह भी खुलती है जो मौजूदा दुनिया में किसी गिरोह को बाइज्जत ज़िद्दी हसिल करने का सबसे बड़ा जरिया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ
مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَأَمَنْتَ طَائِفَةٌ
مِّنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرْتُ طَائِفَةٌ ۚ فَأَيُّ دَنَاءٍ لِّلَّذِينَ آمَنُوا عَلَى
عَدُوِّهِمْ فَاصْبِرُوا ظَاهِرِينَ ۝

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि ईसा बिन मरयम ने हवारियों (साथियों) से कहा, कौन अल्लाह के वास्ते मेरा मददगार बनता है। हवारियों ने कहा हम हैं अल्लाह के मददगार, पस बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इंकार किया। फिर हमने ईमान लाने वालों की उनके दुश्मनों के मुकाबले में मदद की, पस वे ग़ालिब हो गए। (14)

यहूद की अक्सरियत ने अगरचे हजरत मसीह अलैहिस्सलाम को रद्द कर दिया मगर उनमें से कुछ लोग (हवारिय्यीन) ऐसे थे जिन्होंने पूरे इख़्लास और वफादारी के साथ आपका साथ दिया। और आपके पैग़म्बराना मिशन को आगे बढ़ाया। यही चन्द लोग अल्लाह की नजर में मोमिन करार पाए और बक़िया तमाम यहूद पिछले पैग़म्बरों को मानने के बावजूद मुँकर करार पा गए।

यहां जिस ग़लबे का जिक्र है वह फ़िल जुमला (वस्तुतः) मोमिनीने मसीह का फ़िल जुमला मुँकिरीने मसीह पर ग़लबा है। हजरत मसीह के बाद रूमी शहंशाह कुस्तुतीन दोम (272-337 ई०) ने नसरानियत (ईसाइयत) कुबूल कर ली जिसकी सल्लनत शाम और फ़िलिस्तीन तक फैली हुई थी। इसके बाद रूमी रियाया बहुत बड़ी तादाद में ईसाई हो गई। चुनांचे यहूद उनके महकूम (शासनाधीन) हो गए। मौजूदा जमाने में भी यहूदियों की हुकूमते इस्राईल हर एतबार से ईसाइयों के मातहत है।

سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَكِّيَّةٌ مِنْ أَحَدِ عَشَرَ آيَةً وَفِيهَا ثَلَاثُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَسْبِغْ لِّلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكُ الْقَدُّوسُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْاُمَمِ رُسُلًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ اٰتِیَّهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَ
يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ۝۱۰ وَآخِرِیْنَ
مِّنْهُمْ لَبَّآ یٰحْقُوْا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِیْمُ ۝۱۱ ذٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ یُوْتِیْهِ مَنْ

یَسَّأُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ ۝

आयतें-11

सूरह-62. अल-जुमुअह

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर वह चीज जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। जो बादशाह है, पाक है, जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने उम्मियों के अंदर एक रसूल उन्हीं में से उठाया, वह उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है। और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और हिक्मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है, और वे इससे पहले खुली गुमराही में थे और दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए, और वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। यह अल्लाह का फ़त्ल है, वह देता है जिसे चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़त्ल (अनुग्रह) वाला है। (1-4)

इंसान की हिदायत के लिए रसूल भेजना खुदा की उन्हीं सिफात (गुणों) का इंसानी सतह पर ज़ुहर है जिन सिफात का ज़ुहर माददी एतबार से कायनात की सतह पर हुआ है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, और इसी तरह दूसरे पैग़म्बरों का काम ख़ास तौर पर दो रहा है। एक, खुदा की 'वही' को लोगों तक पहुंचाना। दूसरे, लोगों के शुरु को बेदार करना ताकि वे खुदाई बातों को समझें और अपनी हकीकी ज़िंदगी के साथ उन्हें मरबूत कर सकें। यही दो काम आइंदा भी दावत व इस्लाह की जद्दोज़हद में मल्लूब रहेंगे। यानी तालीमे कुआन और ज़ेहनी तर्बियत।

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا
يَسْ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝
قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادَوْا إِن زَعَمْتُمْ أَنكُمُ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِن دُونِ النَّاسِ
فَتَمَتُّوا الْمَوْتَ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ وَلَا يَتَمَتُّونَ أَبَدًا إِنَّمَا قَدَّمَ
أَيُّدِيَهُمْ وَاللَّهُ عَلَيْهِمُ بِالْظَّالِمِينَ ۝ قُلْ إِن الْمَوْتَ الَّذِي تَتَذَكَّرُونَ مِنْهُ
وَإِن مَّلَاقِيَكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝

ع

जिन लोगों को तौरात का हामिल (धारक) बनाया गया फिर उन्होंने उसे न उठाया, उनकी मिसाल उस गधे की सी है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो। क्या ही बुरी

सूरह-62. अल-जुम'अह

1443

पारा 28

मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। कहो कि ऐ यहुदियों, अगर तुम्हारा गुमान है कि तुम दूसरों के मुकाबले में अल्लाह के महबूब हो तो तुम मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो। और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे उन कामों की वजह से जिन्हें उनके हाथ आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह जालिमों को खूब जानता है। कहो कि जिस मौत से तुम भागते हो वह तुम्हें आकर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और जाहिर के जानने वाले के पास ले जाए जाओगे, फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे हो। (5-8)

खुदा की किताब जब किसी कौम को दी जाती है तो इसलिए दी जाती है कि वह उसे अपने अंदर उतारे और उसे अपनी जिंदगी में अपनाए। मगर जो कौम इस मअना में किताबे आसमानी की हामिल (धारक) न बन सके उसकी मिसाल उस गधे की सी होगी जिसके ऊपर इल्मी किताबें लदी हुई हों और उसे कुछ खबर न हो कि उसके ऊपर क्या है।

यहूद ने अगरचे अमली तौर पर खुदा के दीन को छोड़ रखा था, इसके बावजूद उसे अपने कैमी फख्र का निशान बनाए हुए थे। मगर इस किस्म का फख्र किसी के कुछ काम आने वाला नहीं। ऐसा फख्र हमेशा झूठा फख्र होता है। और इसका एक सुबूत यह है कि आदमी जिस दीन को अपने फख्र का सामान बनाए हुए होता है उसके लिए वह कुर्बानी देने को तैयार नहीं होता। ताहम जब मौत आएगी तो ऐसे लोग जान लेंगे कि दुनिया में वे जिस फख्र पर जी रहे थे वह अखिरत में उन्हें जिल्लत के सिवा और कुछ देने वाला नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمٍ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ وَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۖ وَإِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا وَأُتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ فَبُذِلُوا ۚ وَتَرْكُوكَ قَالِمًا قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ۚ

ऐ ईमान वाले, जब जुमा के दिन की नमाज के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की तरफ चल पड़ो और खरीद व फरोख्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। फिर जब नमाज पूरी हो जाए तो जमीन में फैल जाओ और अल्लाह का फल तलाश करो, और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करो, ताकि तुम फलाह पाओ। और जब वे कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं। और तुम्हें

पारा 28

1444

सूरह-63. अल-मुनाफिकून

खड़ा हुआ छोड़ देते हैं, कहो कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और तिजारत से बेहतर है, और अल्लाह बेहतर रिश्क देने वाला है। (9-11)

दुनिया में आदमी बयकवक्त दो तकजों के दर्मियान होता है। एक मआश (जीविका) का तकज, और दूसरे दीन का तकज। इनमेंसे हर तकज जरूरी है। अलबत्ता उनके दर्मियान इस तरह तक्सीम होनी चाहिए कि मआशी सरगर्मियां दीनी तकजे के मातहत हों। आदमी को इजाजत है कि वह जाइज हुदूद में मआश के लिए दौड़ धूप करे। मगर यह जरूरी है कि उसे जो मआशी कामयाबी हासिल हो उसे वह सरासर अल्लाह का फल समझे। नीज मआशी सरगर्मी के दौरान बराबर अल्लाह को याद करता रहे। इसी के साथ उसे हमेशा तैयार रहना चाहिए कि जब भी दीन के किसी तकजे के लिए पुकारा जाए तो उस वक्त वह हर दूसरे काम को छोड़कर दीन के काम की तरफ दौड़ पड़े।

मदीना में एक बार ऐन जुमा के खुत्वे के वक्त कुछ लोग उठकर बाजार चले गए। इस पर मज्हूर आयतें उतरतीं। इस हुक्म का तअल्लुक अगरचे बराहदास्त तौर पर जुमा से है मगर बिलवास्ता तौर पर हर दीनी काम से है। जब भी किसी खास दीनी मक्सद के लिए लोगों को जमा किया जाए तो अमीर की इजाजत के बगैर उठकर चले जाना सख्त महरूमी की बात है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَ لَكَ الْمُتَفِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ ۗ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُتَفِقِينَ لَكَاذِبُونَ ۖ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً ۖ فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۚ

आयतें-11

सूरह-63. अल-मुनाफिकून

रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। जब मुनाफिक (पाखंडी) तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि बेशक तुम उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफिकीन (पाखंडी) झूठे हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, बेशक निहायत बुरा है जो वे कर रहे हैं। यह इस सबब से है कि वे ईमान लाए फिर उन्होंने कुफ्र किया, फिर उनके दिलों पर मुहर कर दी गई, पस वे नहीं समझते। (1-3)

यह किसी आदमी के निफाक (पाखंड) की अलामत है कि वह बड़ी-बड़ी बातें करे। और कसम खाकर अपनी बात का यकीन दिलाए। मुख़्तस (निष्ठावान) आदमी अल्लाह के ख़ौफ से दबा हुआ होता है। वह ज़बान से ज्यादा दिल से बोलता है। मुनाफ़िक आदमी सिर्फ़ इज़्मान को अपनी आवाज़ सुनाने का मुशताक होता है। और मुख़्तस आदमी खुदा को सुनाने का।

जब एक शख्स ईमान लाता है तो वह एक संजीदा अहद (प्रण) करता है। इसके बाद ज़िंदगी के अमली मवाकेअ आते हैं जहां ज़रूरत होती है कि वह उस अहद के मुताबिक अमल करे। अब जो शख्स ऐसे मौकों पर अपने दिल की आवाज़ को सुनकर अहद के तकाज़े पूरे करेगा। उसने अपने अहदे ईमान को पुरख़्ता किया। इसके बरअक्स जिसका यह हाल हो कि उसके दिल ने आवाज़ दी मगर उसने दिल की आवाज़ को नज़रअंज़ाज़ करके अहद के ख़िलाफ अमल किया तो इसका नतीजा यह होगा कि वह धीरे-धीरे अपने अहदे ईमान के मामले में बेहिस हो जाएगा। यही मतलब है दिल पर मुहर करने का।

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَانَتْهُمْ حُشْبٌ مُّسَدَّدَةٌ ۚ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۖ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۖ قَاتِلْهُمْ اللَّهُ ۖ إِنَّهُ يُوَفُّكَ ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْكُمْ رَسُولُ اللَّهِ ۖ لَوَّأَوْا رُءُوسَهُمْ ۖ وَإِيتُهُمْ يَصُدُّونَ ۖ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۖ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ①

और जब तुम उन्हें देखो तो उनके जिस्म तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करते हैं तो तुम उनकी बात सुनते हो, गोया कि वे लकड़ियां हैं टेक लगाई हुई। वे हर जोर की आवाज़ को अपने ख़िलाफ समझते हैं। यही लोग दुश्मन हैं, पस उनसे बचो। अल्लाह उन्हें हलाक करे, वे कहां फिरे जाते हैं। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए इस्तिफ़ार (माफी की दुआ) करे तो वे अपना सर फेर लेते हैं। और तुम उन्हें देखोगे कि वे तकबुर (घमंड) करते हुए बेरुख़ी करते हैं। उनके लिए यकसां (समान) है, तुम उनके लिए मफ़िरत (माफी) की दुआ करो या मफ़िरत की दुआ न करो, अल्लाह हरगिज़ उन्हें माफ न करेगा। अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (4-6)

मुनाफ़िक आदमी मस्तेहतपरस्ती के ज़रिए अपने मफ़दत (हितों) को महफूज़ रखता है। वह हक नाहक की बहस में नहीं पड़ता, इसलिए हर एक से उसका बनाव रहता है। उसकी ज़िंदगी ग़म से ख़ाली होती है। ये चीज़ें उसके जिस्म को फरबा (मोटा) बना देती हैं। वे लोगों

के मिजाज की रियायत करके बोलता है। इसलिए उसकी बातों में हर एक अपने लिए दिलचस्पी का सामान पा लेता है। मगर ये बजाहिर हरे भरे दरख़्त हकीकतन सिर्फ सूखी लकड़ियां होते हैं जिनमें कोई ज़िंदगी न हो। वे अंदर से बुजदिल होते हैं। उनके नजदीक उनका दुनियावी मफ़द हर दीनी मफ़द से ज्यादा अहम होता है। ऐसे लोग ईमान के बुलन्दबाग़ मुद्दई (ऊंचे दावेदार) होने के बावजूद खुदा की हिदायत से यकसर महरूम हैं।

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُوا ۚ وَاللَّهُ خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ① يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ②

यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर खर्च मत करो यहां तक कि वे मुंतशिर (तितर-बितर) हो जाएं। और आसमानों और जमीन के खजाने अल्लाह ही के हैं लेकिन मुनाफ़िकीन (पाखंडी) नहीं समझते। वे कहते हैं कि अगर हम मदीना लौटे तो इज्जत वाला वहां से ज़िल्लत वाले को निकाल देगा। हालांकि इज्जत अल्लाह के लिए और उसके रसूल के लिए और मोमिनीन के लिए है, मगर मुनाफ़िकीन (पाखंडी) नहीं जानते। (7-8)

कदीम मदीना में दो किस्म के मुसलमान थे। एक मुहाजिर दूसरे अंसार। मुहाजिरीन मक्का से बेवतन होकर आए थे। उनका सबसे बड़ा जाहिरी सहारा मकामी मुसलमान (अंसार) थे। इस बिना पर दुनियापरस्त लोगों को मुहाजिर बेइज्जत दिखाई देते थे और अंसार उनकी नज़र में बाइज्जत लोग थे। यहां तक कि एक मैके पर अबुल्लाह बिन उबई ने साफ तौर पर कह दिया कि इन मुहाजिरीन की हकीकत क्या है। अगर हम इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दें तो दुनिया में कहीं इन्हें ठिकाना न मिले।

इस किस्म के अफ़ज उसी शख्स की ज़बान से निकल सकते हैं जो इस हकीकत से बेख़बर हो कि इस दुनिया में जो कुछ है सब अल्लाह का है। वही जिसे चाहे दे और वही जिससे चाहे छीन ले।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ① وَأَنْفِقُوا مِنْ ثَمَرِ ثَمَرِكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ ۖ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۖ فَأَصَّدَقَ ۖ وَأَكُن مِّنَ الصَّالِحِينَ ② وَلَنْ يُؤَخَّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۚ

सूरह-64. अत-तगाबुन

1447

पारा 28

وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग्राफिल न करने पाएं, और जो ऐसा करेगा तो वही घाटे में पड़ने वाले लोग हैं। और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से खर्च करो इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए, फिर वह कहे कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे कुछ और मोहलत क्यों न दी कि मैं सदाका (दान) करता और नेक लोगों में शामिल हो जाता। और अल्लाह हरगिज किसी जान को मोहलत नहीं देता जबकि उसकी मीआद (नियत समय) आ जाए, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (9-11)

हर आदमी के लिए सबसे बड़ा मसला आखिरत का मसला है। मगर माल और औलाद इंसान को इस सबसे बड़े मसले से ग्राफिल कर देते हैं। इंसान को जानना चाहिए कि माल और औलाद मक्सद नहीं बल्कि जरिया हैं। वे इसलिए किसी को दिए जाते हैं कि वह उन्हें अल्लाह के काम में लगाए। वह उन्हें अपनी आखिरत बनाने में इस्तेमाल करे। मगर नादान आदमी उन्हें बजाते खुद मक्सूद (लक्ष्य) समझ लेता है। ऐसे लोग जब अपने आखिरी अंजाम को पहुंचेंगे तो वहां उनके लिए हसरत व अफसोस के सिवा और कुछ न होगा।

سُورَةُ التَّغْوِيٰۙتِ ۝ اٰیَةُ الْاٰخِرَةِ ۝ وَفِي الْاٰخِرَةِ ۝
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
يَسْتَخِرُ اللّٰهُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۚ لَهٗ الْمُلْكُ وَلَهٗ الْحَمْدُ ۚ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝
هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ کَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۗ وَاللّٰهُ یَمَّا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ۝
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوْرَكُمْ ۗ وَاِلَیْهِ الْمَصِیْرُ ۝
یَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَیَعْلَمُ مَا تُسْرُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۗ وَاللّٰهُ عَلِیْمٌ بِذٰتِ الصُّدُوْرِ ۝

आयतें-18

सूरह-64. अत-तगाबुन

रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर चीज जो आसमानों में है और हर चीज जो जमीन

पारा 28

1448

सूरह-64. अत-तगाबुन

में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज पर कादिर है। वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कोई मुंकिर है और कोई मोमिन, और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। उसने आसमानों और जमीन को ठीक तौर पर पैदा किया और उसने तुम्हारी सूरत बनाई तो निहायत अच्छी सूरत बनाई, और उसी की तरफ है लौटना। वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। और अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है। (1-4)

‘कायनात अल्लाह की तस्बीह कर रही है’ का मतलब यह है कि अल्लाह ने जिस हकीकत को कुरआन में खोला है, कायनात सरापा उसकी तस्दीक (पुष्टि) बनी हुई है, वह जबानेहाल से हम्द व सताइश (प्रशस्ति) की हद तक इसकी तारीफ कर रही है। इस दोतरफा एलान के बावजूद जो लोग मोमिन न बनें उन्हें इसके बाद तीसरे एलान का इंतजार करना चाहिए जबकि तमाम लोग खुदा के यहां जमा किए जाएंगे ताकि खुद मालिके कायनात की जबान से अपने बारे में आखिरी फैसले को सुनें।

اَلَمْ یَاۤیُّکُمْ نَبُۤؤُا الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا مِنْ قَبْلُ فَاَفۡوَا وَبَالَ اَمْرِہُمۡ وَلَہُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ ۝
ذٰلِکَ بِاَنَّهُ کَانَتۡ تَاۡتِیَہُمۡ رُسُلُہُمۡ بِالْبَیِّنٰتِ فَقَالُوۡۤا اَبَشِّرۡنَا بِہٖۤذَا وَنَا فَاکْفُرُوۡا وَتَوَلَّوۡۤا وَاسْتَغۡنٰی اللّٰهُ وَاللّٰهُ غَفِیۡرٌ حَمِیۡدٌ ۝

क्या तुम्हें उन लोगों की खबर नहीं पहुंची जिन्होंने इससे पहले इंकार किया, फिर उन्होंने अपने किए का बवाल चखा और उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल खुली दलीलों के साथ आए, तो उन्होंने कहा कि क्या इंसान हमारी रहनुमाई करेंगे। पस उन्होंने इंकार किया और मुंह फेर लिया, और अल्लाह उनसे बेपरवाह हो गया, और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफ वाला है। (5-6)

कदीम जमाने में रसूलों के जरिए जो तारीख बनी वह इंसानों के लिए मुस्तकिल इबरत (सीख) का नमूना है। मसलन आद और समूद और अहले मदयन और कौमे लुत वगैरह के दर्मियान पैगम्बर आए। इन पैगम्बरों के पास अपनी सदाकत बताने के लिए कोई गैर बशरी (इंसानी) कमाल न था, बल्कि सिर्फ दलील थी। दलील की सतह पर इंकार ने उन कौमों को अजाब का मुस्तहिक बना दिया। इससे मालूम हुआ कि इस दुनिया में आदमी का इस्तेहान यह है कि वह दलील की सतह पर हक को पहचाने। जो शख्स दलील की सतह पर हक को पहचानने में नाकाम रहे वह हमेशा के लिए हक से महरूम होकर रह जाएगा।

رَعِمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّيُنَّ بِمَا
عَمِلْتُمْ وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ فَأَمُنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورَ الَّذِي أَنْزَلْنَا
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۝
وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝

النَّارِ

इंकार करने वालों ने दावा किया कि वे हरगिज दुबारा उठाए न जाएंगे, कहो कि हां, मेरे रब की कसम तुम जरूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया है, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। पस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस नूर (प्रकाश) पर जो हमने उतारा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। जिस दिन वह तुम सबको एक जमा होने के दिन जमा करेगा, यही दिन हार जीत का दिन होगा। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान लाया होगा और उसने नेक अमल किया होगा, अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे हमेशा उनमें रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही आग वाले हैं, उसमें हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है। (7-10)

लोग दुनिया को हार जीत (तगाबुन) की जगह समझते हैं। किसी शख्स को यहां कामयाबी मिल जाए तो वह खुश होता है। और जो शख्स यहां नाकामी से दो चार हो वह लोगों की नजर में हकीर (तुच्छ) बनकर रह जाता है। मगर हकीकत यह है कि इस दुनिया की हार भी बेक़ीमत है और यहां की जीत भी बेक़ीमत।

हार जीत का अस्ल मकाम आखिरत (परलोक) है। हारने वाला वह है जो आखिरत में हारे और जीतने वाला वह है जो आखिरत में जीते। और वहां की हार जीत का मेयार बिल्कुल मुज्जलिफ है। दुनिया में हार जीत जाहिरी मादिदयात (पदार्थों) की बुनियाद पर होती है। और आखिरत की हार जीत खुदाई अख्लाकियात की बुनियाद पर होगी। उस वक्त देखने वाले यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि यहां सारा मामला बिल्कुल बदल गया है। जिस पाने को लोग पाना समझ रहे थे वह दरअसल खोना था, और जिस खोने को लोगों ने खोना समझ रखा था वही दरअसल वह चीज थी जिसे पाना कहा जाए। उसी दिन की हार, हार है और उसी दिन की जीत, जीत।

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۖ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝
जो मुसीबत भी आती है अल्लाह के इज्ज (अनुज्ञा) से आती है। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उसके दिल को राह दिखाता है, और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। और तुम अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम एराज (उपेक्षा) करोगे तो हमारे रसूल पर बस साफ-साफ पहुंचा देना है। अल्लाह, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11-13)

कोई मुसीबत अपने आप नहीं आती, हर मुसीबत खुदा की तरफ से आती है। और इसलिए आती है कि उसके जरिए से इंसान को हिदायत अता की जाए। मुसीबत आदमी के दिल को नर्म करती है। और उसकी सोई हुई नपिसयात में हलचल पैदा करती है। मुसीबत के झटके आदमी के जेहन को जगाने का काम करते हैं। अगर आदमी अपने आपको मंफ़ी रद्देअमल (नकारात्मक प्रतिक्रिया) से बचाए तो मुसीबत उसके लिए बेहतररीन रब्बानी मुअल्लिम (शिक्षक) बन जाएगी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوٌّ لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۖ وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۖ وَاللَّهُ عِنْدَ أَجْرٍ عَظِيمٍ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنْتَقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
إِنْ تَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ۝
عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

عَلِمُ

ऐ ईमान वालो, तुम्हारी कुछ बीवियां और कुछ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, पस तुम उनसे होशियार रहो, और अगर तुम माफ कर दो और दसगुन करो और बख्श दो तो अल्लाह बख्शने वाला, रहम करने वाला है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आजमाइश की चीज हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है। पस तुम अल्लाह से डरो जहां तक हो सके। और सुनो और मानो और खर्च करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो शख्स दिल की तंगी से महफूज रहा तो ऐसे ही लोग फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। अगर तुम

सूरह-65. अत-तलाक

1451

पारा 28

अल्लाह को अच्छा कर्ज दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख्श देगा, और अल्लाह कद्रदा है, बुर्दवार (उदार) है। ग़ायब और हाज़िर को जानने वाला है, ज़बरदस्त है, हकीम (तत्वदर्शी) है। (14-18)

इंसान को सबसे ज्यादा तअल्लुक अपनी औलाद से होता है। आदमी हर दूसरे मामले में उसूल की बातें करता है मगर जब अपनी औलाद का मामला आता है तो वह बेउसूल बन जाता है। इसीलिए हदीस में इर्शाद हुआ है कि औलाद किसी आदमी को बुजदिली और बुख़ल (कंजूसी) पर मजबूर करने वाले हैं। इसी तरह एक और हदीस में इर्शाद हुआ है कि कियामत के दिन एक शख्स को लाया जाएगा, फिर कहा जाएगा कि इसके बीवी बच्चे इसकी नेकियां खा गए।

इंसान अपने बच्चों की खातिर अल्लाह की राह में खर्च नहीं करता। हालांकि अगर वह अल्लाह की राह में खर्च करे तो मुख़लिफ़ शक्तों में अल्लाह उसकी तरफ़ उससे बहुत ज्यादा लौटाएगा जितना उसने अल्लाह की राह में दिया था।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تَخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ
بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ
ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ
أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَى
عَدْلٍ مِنْكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّكَّةَ لِلَّهِ ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۚ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ
لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ قَدْ
جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝

आयतें-12

सूरह-65. अत-तलाक
(मदीना में नाज़िल हुई)

रुकूअ-2

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है।
ऐ पैग़म्बर, जब तुम लोग औरतों को तलाक दो तो उनकी इद्दत पर तलाक दो और
इद्दत को गिनते रहो, और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है। उन औरतों को उनके

पारा 28

1452

सूरह-65. अत-तलाक

घरों से न निकालो और न वे खुद निकलें, इल्ला यह कि वे कोई खुली बेहयाई करें, और ये अल्लाह की हदें हैं, और जो शख्स अल्लाह की हदों से तज़ावुज़ करेगा तो उसने अपने ऊपर जुम किया, तुम नहीं जानते शायद अल्लाह इस तलाक के बाद कोई नई सूरत पैदा कर दे। फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुंच जाएं तो उन्हें या तो मारुफ़ (भली रीति) के मुताबिक रख लो या मारुफ़ के मुताबिक उन्हें छोड़ दो और अपने में से दो मोतबर गवाह कर लो और ठीक-ठीक अल्लाह के लिए गवाही दो। यह उस शख्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो। और जो शख्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए राह निकालेगा, और उसे वहां से रिक़ देगा जहां उसका गुमान भी न गया हो, और जो शख्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह उसके लिए काफी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है, अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक अंदाज़ ठहरा रखा है। (1-3)

इस्लाम में अपरिहार्य हालात के तौर पर तलाक की इजाज़त दी गई है। ताहम इसका एक तरीक़ेकार मुक़र्र किया गया है जो ख़ास वक़्ते के दर्मियान पूरा होता है। इस तरह तलाक के अमल को कुछ हदों का पाबंद कर दिया गया है। इन हदों का मक्सद यह है कि दोनों पक्षों के दर्मियान आखिर वक़्त तक वापसी का मौक़ा बाकी रहे। और तलाक का वाक़्या किसी किस्म के ख़ानदानी या समाजी फ़साद का ज़रिया न बने। वही तलाक इस्लामी तलाक है जिसके पूरे अमल के दौरान ख़ुदा के ख़ौफ़ की रूह जारी व सारी रहे।

وَالَّذِي يَسْنَنَ مِنَ الْمَيْضِ مَنْ نَسَاكُمْ إِنْ ارْتَبْتُمْ فَعَدَّتْهُنَّ ثَلَاثُ أَشْهُرٍ وَالَّتِي لَمْ يَحْضُنْ وَأُولَاكِ الْأَحْصَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ وَ مَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۚ ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَكْفِرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ۝

और तुम्हारी औरतों में से जो हैज़ (मासिक धर्म) से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुम्हें शुबह हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है। और इसी तरह उनकी भी जिन्हें हैज़ नहीं आया, और हामिला (गर्भवती) औरतों की इद्दत उस हमल का पैदा हो जाना है, और जो शख्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी कर देगा। यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा है, और जो शख्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा अज़्र देगा। (4-5)

शरीअत ने तलाक और दूसरे मामलात में इंसान को कुछ जवाबित (नियमों) का पाबंद किया है। ये जवाबित बजाहिर इंसान की आजादाना तबीअत के लिए रुकावट हैं। मगर

हकीकत के एतबार से ये नेमत हैं। इन जवाबित का यह फायदा है कि आदमी बहुत से ग़ैर जरूरी नुस्सानात से बच जाता है। मजिद यह कि इस दुनिया का निजाम इस तरह बना है कि यहां हर नुस्सान की तलाफी (क्षतिपूर्ति) किसी न किसी तरह की जाती है। ताहम यह तलाफी सिर्फ उस शख्स के हिस्से में आती है जो फितरत के दायरे से बाहर न जाए।

اسْكُنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ۚ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَلْيُنفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاَنْفِقُوْا لِهِنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاتَّبِعُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ تَعَاَسَرْتُمْ فَمَسْئِرُكُمْ لِاٰخَرٰى ۚ لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ۚ وَمَنْ قَدِرَ عَلٰى رِزْقِهٖ فَلْيُنفِقْ مِّمَّا اٰتٰهُ اللّٰهُ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَآ مَا اٰتٰهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۝

तुम उन औरतों को अपनी वुस्तत (हिसियत) के मुताबिक रहने का मकान दो जहां तुम रहते हो और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें तकलीफ न पहुंचाओ, और अगर वे हमल (गर्भ) वालीयां हों तो उन पर खर्च करो यहां तक कि उनका हमल पैदा हो जाए। फिर अगर वे तुम्हारे लिए दूध पिलाएं तो उनकी उजरत (पारिश्रमिक) उन्हें दो। और तुम आपस में एक दूसरे को नेकी सिखाओ। और अगर तुम आपस में जिद करो तो कोई और औरत दूध पिलाएगी। चाहिए कि वुस्तत वाला अपनी वुस्तत के मुताबिक खर्च करे और जिसकी आमदनी कम हो उसे चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसे दिया है उसमें से खर्च करे। अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता मगर उतना ही जितना उसे दिया है, अल्लाह सख्ती के बाद जल्द ही आसानी पैदा कर देता है। (6-7)

इस्लाम में यह मल्लूब है कि आदमी मामलात में फरीके सानी (दूसरे पक्ष) के साथ फराखदिली का तरीका इस्तिहार करे। वह सब के साथ खिलाफे मिजाज बातों को सहे। नागवारियों के बावजूद दूसरे का हक अदा करे। जब आदमी ऐसा करता है तो वह सिर्फ फरीके सानी के लिए अच्छा नहीं करता बल्कि वह खुद अपने लिए भी अच्छा करता है। इस तरह वह अपने अंदर हकीकतपसंदी का मिजाज पैदा करता है और हकीकतपसंदी का मिजाज बिलाशुबह इस दुनिया में कामयाबी का सबसे बड़ा जीना है।

وَكَايْنِ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَجَاسَبْنٰهَا حَسَابًا

شَدِيْدًا ۚ وَاَعَدَّ لَهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ۝ فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يَا اُولٰٓئِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ قَدْ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۚ وَمَنْ يُؤْمَرْ بِاللّٰهِ وَعَمَلٍ صٰلِحًا يُّدْخِلْهُ جَنَّٰتٍ تَجْرٰى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا اَبَدًا ۚ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۝

और बहुत सी बस्तियां हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के हुक्म से सरताबी (विमुखता) की, पस हमने उनका सख्त हिसाब किया और हमने उन्हें हौलनाक सजा दी। पस उन्होंने अपने किए का ववाल चखा और उनका अंजामकार खसारा (घाटा) हुआ। अल्लाह ने उनके लिए एक सख्त अजाब तैयार कर रखा है। पस अल्लाह से डरो, ऐ अक्ल वालो जो कि ईमान लाए हो। अल्लाह ने तुम्हारी तरफ एक नसीहत उतारी है, एक रसूल जो तुम्हें अल्लाह की खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाता है। ताकि उन लोगों को तारीकियों से रोशनी की तरफ निकाले जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान लाया और नेक अमल किया उसे वह ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उसे बहुत अच्छी रोजी दी। (8-11)

ताकि अहले ईमान को तारीकी से निकाल कर रोशनी में ले आए। इस मौके पर यह बात आइली (पारिवारिक) कानून के बारे में है। कदीम जमाने में सारी दुनिया में तवह्हुमात (अंधविश्वास) का गलबा था। तरह-तरह के तवह्हुमाती अकाइद ने मर्द और औरत के तअल्लुकात को ग़ैर फितरी बुनियादों पर कायम कर रखा था। कुरआन ने इन तवह्हुमातों को खत्म किया और दुबारा मर्द और औरत के तअल्लुकात को फितरत की बुनियाद पर कायम किया। इस इतिजाम के बाद भी जो लोग इस्लाही रास्ते को इस्तिहार न करें उनके लिए खुदा की दुनिया में घाटे के सिवा और कुछ नहीं।

'अक्ल वालो अल्लाह से डरो' का फिकरा बताता है कि तकवे का सरचश्मा (मूल स्रोत) अक्ल है। आदमी अपने अक्ल व शुऊर को काम में लाकर ही उस दर्जे को हासिल करता है जिसे शरीअत में तकवा (परहेजगारी, खोफे खुदा) कहा गया है।

اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِيَتْلُوْا اِنَّ اللّٰهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۚ وَاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

सूरह-66. अत-तहरीम

1455

पारा 28

अल्लाह ही है जिसने बनाए सात आसमान और उन्हीं की तरह जमीन भी। उनके अंदर उसका हुक्म उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है। और अल्लाह ने अपने इल्म से हर चीज का इहाता (आच्छादन) कर रखा है। (12)

‘व मिनल अरजि मिस-ल हुन’ से मुराद अगर सात जमीनें हैं तो इल्मुल अफलाक (आकाशीय विज्ञान) अभी तक इस तादाद को दरयापत नहीं कर सका है। इंसानी मालूमात के मुताबिक, इस तहरीर (लेखन) के वक़्त तक मौजूदा जमीन सारी कायनात में एक इस्तिस्ना (अपवाद) है। इसलिए यह अल्लाह को मालूम है कि इस आयत का वाकई मतलब क्या है।

‘ताकि तुम जानो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है।’ इससे मालूम होता है अल्लाह को इंसान से अस्लान जो चीज मलूब है वह ‘इल्म’ है, यानी जाते-खुदावंदी का शुऊर। कायनात का अजीम कारखाना इसलिए बनाया गया है कि इंसान उसके जरिए खालिक को पहचाने, वह उसके जरिए खुदा की बेपायां (असीम) कुस्त की मअसलत (अन्तर्ज्ञान) हासिल करे।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِكَرَمِكَ وَكَرَمِ عَرْشِكَ وَكَرَمِ رَحْمَتِكَ وَكَرَمِ قُدْرَتِكَ وَكَرَمِ جَلَالِكَ وَكَرَمِ إِكْبَارِكَ وَكَرَمِ إِهْلَاسِكَ وَكَرَمِ إِتِّسَالِكَ وَكَرَمِ إِتِّسَالِ رَحْمَتِكَ وَكَرَمِ إِتِّسَالِ قُدْرَتِكَ وَكَرَمِ إِتِّسَالِ جَلَالِكَ وَكَرَمِ إِتِّسَالِ إِكْبَارِكَ وَكَرَمِ إِتِّسَالِ إِهْلَاسِكَ وَكَرَمِ إِتِّسَالِ إِتِّسَالِ رَحْمَتِكَ وَكَرَمِ إِتِّسَالِ قُدْرَتِكَ وَكَرَمِ إِتِّسَالِ جَلَالِكَ وَكَرَمِ إِتِّسَالِ إِكْبَارِكَ وَكَرَمِ إِتِّسَالِ إِهْلَاسِكَ ۝

आयतें-12

सूरह-66. अत-तहरीम

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ नबी तुम क्यों उस चीज को हराम करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, अपनी वीवियों की रिजामंदी चाहने के लिए, और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी कसमों का खोलना मुकर्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज है, और वह जानने वाला, हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

वीवियों के पैदा करदा कुछ अंदरूनी मसाइल की वजह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने घर में यह कसम खा ली कि मैं शहद नहीं खाऊंगा। मगर पैगम्बर का अमल उसकी उम्मत के लिए नमूना बन जाता है, इसलिए अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि आप शरई तरीके के मुताबिक कफ़्फ़रा (प्रयश्चित) अदा करके अपनी कसम को तोड़ दें। और शहद न खाने के अहद से अपने आपको आजाद कर लें। ताकि ऐसा न हो कि आइंदा आपके उम्मीती इसे तकवे का मेयार समझ कर शहद खाने से परहेज करने लगें।

पारा 28

1456

सूरह-66. अत-तहरीम

وَإِذَا سَأَلَ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَاكَ هَذَا قَالَ نَبَأَنِي الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝ إِنَّ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۖ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝ عَلَى رَبِّهِ أَنْ يَبْدِلَهُ أَتْرَاجًا خَيْرًا مِّنْكُمْ مُّسْلِمًا مُّؤْمِنًا قَنَاطًا عِيدًا سِجِّينًا ۝

और जब नबी ने अपनी किसी बीवी से एक बात छुपा कर कही, तो जब उसने उसे बता दिया और अल्लाह ने नबी को उससे आगाह कर दिया तो नबी ने कुछ बात बताई और कुछ टाल दी, फिर जब नबी ने उसे यह बात बताई तो उसने कहा कि आपको किसने इसकी ख़बर दी। नबी ने कहा कि मुझे बताया जानने वाले ने, बाख़बर ने। अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ रुजूअ करो तो तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं, और अगर तुम दोनों नबी के मुक़बले में कार्खाइयां करोगी तो उसका रफ़ीक (साथी) अल्लाह है और जिब्रील और सालेह (नेक) अहले ईमान और इनके अलावा फरिश्ते उसके मददगार हैं। अगर नबी तुम सबको तलाक दे दे तो उसका ख़ब तुम्हारे बदले में तुमसे बेहतर वीवियां उसे दे दे, मुस्लिमा, बाईमान, फरमांबरदार, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोजेदार, विधवा और कुंवारी। (3-5)

मज्कूरा मामले में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ अजवाज (पत्नियों) ने आपके घर में जो पेचीदगी पैदा की थी, उस पर मुतनब्वह करने के लिए आपकी अजवाज से अल्टीमेटम के अंदाज में कलाम किया गया। इससे जिंदगी के मामलात में औरतों की अहमियत मालूम होती है। हकीकत यह है कि औरतें अगर सही मअनों में अपने शोहरों की सहायता (सहयोग) करें तो वे उनका ‘आधा बेहतर’ बन जाती हैं। और अगर वे सच्ची रफ़ीक साबित न हों तो वे एक वामक्सद इंसान के पूरे मंसूबे को ख़ाक में मिला सकती हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

सूरह-66. अत-तहरीम

1457

पारा 28

ऐ ईमान वालो अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईश्वर आदमी और पत्थर होंगे, उस पर तुंडखू (कठोर) और जबरदस्त फरिश्ते मुक़र्र हैं, अल्लाह उन्हें जो हुक्म दे उसमें वे उसकी नाफरमानी नहीं करते, और वे वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। ऐ लोगो जिन्होंने इंकार किया, आज उज़्र न पेश करो, तुम वही बदले में पा रहे हो जो तुम करते थे। (6-7)

मौजूदा दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि आदमी एक चीज को हक समझता है। मगर बीबी बच्चों से बड़ा हुआ तअल्लुक उसे मजबूर करता है कि वह हक के तरीके को छोड़ दे और वही करे जो उसके बीबी-बच्चे चाहते हैं। मगर यह जबरदस्त भूल है। इंसान को याद रखना चाहिए कि आज जिन बच्चों की रियायत करने में वह इस हद तक जाता है कि हक की रियायत करना भूल जाता है, वे बच्चे अपनी इस रविश के नतीजे में कल ऐसे जहन्नमी कारिंदों के हवाले किए जाएंगे जो मशीनी इंसान (Robot) की तरह बेरहम होंगे और उनके साथ किसी किस्म की कोई रियायत नहीं करेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَن تُكْفَرُوا عَنْكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَبِذِكْرِكُمْ جِئْتِ تَجْرِي مِنَ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا
آمِنْمُنَا يُزَلِّنا وَأَغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

ऐ ईमान वालो, अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें ऐसे बागों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को रुसवा नहीं करेगा। उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाईं तरफ दौड़ रही होगी, वे कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारी रोशनी को कामिल कर दे और हमारी मफिस्त फरमा, बेशक तू हर चीज पर क़दिर है। (8)

मौजूदा दुनिया में इंसान को आजमाइशी हालात में रखा गया है। इसलिए इंसान से गलतियां भी होती हैं। उसकी तलाफी के लिए तौबा है। यानी अल्लाह की तरफ रुजूअ करना। तौबा की अस्ल हकीकत शर्मिंदगी है। आदमी को अगर वाक्यतन अपनी गलती का एहसास हो तो वह सख्त शर्मिंदगी होगा और उसकी शर्मिंदगी उसे मजबूर करेगी कि वह आईदा ऐसा फेअल न करे। चुनांचे हदीस में आया है कि शर्मिंदगी ही तौबा है। एक सहाबी ने कहा है कि सच्ची तौबा यह है कि आदमी रुजूअ करे और फिर उस फेअल को न दोहराए।

तौबा वह है जो सच्ची तौबा (तौबतुन नसूह) हो। महज अल्फज़ दोहरा देने का नाम

पारा 28

1458

सूरह-66. अत-तहरीम

तौबा नहीं। हजरत अली ने एक शख्स को देखा कि वह अपनी किसी गलती के बाद जबान से तौबा तौबा कह रहा है। आपने फरमाया कि यह झूठे लोगों की तौबा है। सच्ची तौबा आखिरत की रोशनी है और झूठी तौबा आखिरत का अंधेरा।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَا أُولَٰئِكَ جَهَنَّمَ
وَكَيْسَ الْمَصِيرُ ۝ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَاتٍ يُوفِينَ امْرَأَاتِ
لَوْ طُ كَانَتْ تَحْتِ عِبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحِينَ فَكَانَتْهُمَا فَكَانَتْهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا
عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّٰخِلِينَ ۝

ऐ नबी मुक़िरो और मुनाफिकों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर सख्ती करो, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है। अल्लाह मुक़िरो के लिए मिसाल बयान करता है नूह की बीबी की और लूत की बीबी की, दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ ख़ियानत की तो वे दोनों अल्लाह के मुकाबले में उनके कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में दाखिल हो जाओ दाखिल होने वालों के साथ। (9-10)

‘मुनाफिकीन के साथ जिहाद करो’ का मतलब यह है कि मुनाफिकीन का सख्त अहतसाब करो। यह एक दाइमी हुक्म है। मुआशिरों के बड़ों और जिम्मेदारों को चाहिए कि वे मुआशिरों के अफ़राद पर मुस्तक़िल नजर रखें। और जब भी कोई मुसलमान ग़लत रविश इख़्तियार करे तो उसे रोकने की वे हर मुमकिन कोशिश करें जो उनके इम्कान में है।

ख़ुदा के यहां आदमी का सिर्फ अपना अमल काम आएगा यहां तक कि बुजुर्गों से निस्वत या सालिहीन से रिश्तेदारी भी वहां किसी के कुछ काम आने वाली नहीं। हजरत नूह और हजरत लूत ख़ुदा के पैग़म्बर थे। मगर उनकी बीवियां दुश्मनाने हक से भी क़त्बी तअल्लुक का रिश्ता कायम किए हुए थीं। इसका नतीजा यह हुआ कि पैग़म्बर की बीबी होने के बावजूद वे दोषग़्त्र की मुस्तहक़ क़ार पाईं।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَاتٍ فَرَعَوْنَ ۖ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي
عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَمَرْيَمَ ابْنَتْ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَدَتْ فَرجَهَا فَفَتَنَّا فِيهِ مِنْ
رُوحِنَا وَصَدَقَتْ بِكَلِمَتِ رَبِّهَا وَكُنِيَ وَكَانَتْ مِنَ الْقَنِينَ ۝

और अल्लाह ईमान वालों के लिए मिसाल बयान करता है फिरऔन की बीबी की,

सूरह-67. अल-मुल्क

1459

पारा 29

जबकि उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फिरौन और उसके अमल से बचा ले और मुझे जालिम कौम से नजात दे। और इमरान की बेटी मरयम, जिसने अपनी अस्मत (सतीत्व) की हिफाजत की, फिर हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और उसने अपने रब के कलिमात की और उसकी किताबों की तस्दीक की, और वह फरमावरदारों में से थी। (11-12)

फिरौन एक मुक़िर और जालिम शख्स था। मगर उसकी बीवी आसिया बिनत मुजाहिम ईमानदार और बाअमल ख़ातून थी। बीवी ने जब अपने आपको सही रविश पर कायम रखा तो शोहर की ग़लत रविश उसे कुछ नुक़सान न पहुंचा सकी। शोहर जहन्नम में दाख़िल किया गया और बीवी को जन्नत के बाग़ों में जगह मिली।

अहसनत फरजहा दरअस्त किनाया (संकेत) है। इसका मतलब यह है कि उन्होंने अपनी अस्मत (सतीत्व) को महफूज़ रखा। बचपन से जवानी तक वह पूरी तरह बेदाग़ रहीं। चुनांचे अल्लाह ने उन्हें मोजिजाती पैग़म्बर की पैदाइश के लिए चुना। कुछ रिवायात के मुताबिक, जिब्रील फरिश्ते ने उनके गिरेबान में फूंक मारी, जिससे इस्तकारे हमल (गर्भ का ठहरना) हुआ और फिर हजरत मसीह अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَفِيهَا ثَلَاثُونَ آيَاتٌ وَفِيهَا تَرْكُوعٌ وَفِيهَا ثَلَاثُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ۝ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۚ مَا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِن تَفَوُّتٍ ۚ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ۚ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ۝

आयतें-30

सूरह-67. अल-मुल्क

रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महारबान, निहायत रहम वाला है। बड़ा बाबरकत है वह जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज़ पर कादिर है। जिसने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया ताकि तुम्हें जांचे कि तुम में से कौन अच्छा काम करता है, और वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। जिसने बनाए सात आसमान ऊपर तले,

पारा 29

1460

सूरह-67. अल-मुल्क

तुम रहमान के बनाने में कोई ख़लल (असंगति) नहीं देखोगे, फिर निगाह डाल कर देख लो, कहीं तुम्हें कोई ख़लल नजर आता है। फिर बार-बार निगाह डाल कर देखो, निगाह नाकाम थक कर तुम्हारी तरफ वापस आ जाएगी। (1-4)

जब एक शख्स मौजूदा दुनिया का मुतालआ करता है तो उसे यहाँ एक तजाद (असंगति) नजर आता है। इंसान के सिवा जो बक़िया कायनात है वह इतिहाई हद तक मुत्ज़म और कामिल है। उसमें कहीं कोई नक्स नजर नहीं आता। इसके बरअक्स इंसानी ज़िंदगी में जुम व फ़साद नजर आता है। इसकी वजह इंसान की अलाहदा (पृथक) नौइयत है। इंसान इस दुनिया में हालते इस्तेहान में है। इस्तेहान लाजिमी तौर पर अमल की आजादी चाहता है। इसी अमल की आजादी ने इंसान को यह मौज़ दिया है कि वह दुनिया में जुम व फ़साद कर सके।

इंसानी दुनिया का जुम इंसानी आजादी की कीमत है। अगर ये हालात न हों तो उन कीमती इंसानों का इंटरखाब कैसे किया जाएगा जिन्होंने जुम के मौके पाते हुए जुम नहीं किया। जिन्होंने सरकशी की ताकत रखने के बावजूद अपने आपको सरकशी से बचाया।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ۚ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۚ إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ۚ تَكَادُ تَبْكُرُ مِنَ الْغَيْظِ كُلِّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۚ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ ۚ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۚ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۚ فَاعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ ۖ فَنُحِقُّ الْأَصْغَابَ السَّعِيرِ ۝

और हमने करीब के आसमान को चराग़ों से सजाया है। और हमने उन्हें शैतानों के मारने का जरिया बनाया है। और हमने उनके लिए दोज़ख का अजाब तैयार कर रखा है। और जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया, उनके लिए जहन्नम का अजाब है। और वह बुरा ठिकाना है। जब वे उसमें डाले जाएंगे, वे उसका दहाड़ना सुनेंगे और वह जोश मारती होगी, मालूम होगा कि वह गुस्से में फट पड़ेगी। जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा, उसके दारोगा उससे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। वे कहेंगे कि हां, हमारे पास डराने वाला आया। फिर हमने उसे झुठला दिया और हमने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज़ नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो। और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोज़ख वालों में से न होते। पस वे अपने गुनाह का इक्कार करेंगे, पस लानत हो दोज़ख वालों पर। (5-11)

सूरह-58. अल-मुजादलह

1419

पारा 28

आयतें-22

सूरह-58. अल-मुजादलह

रुकूअ-3

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने शौहर के मामले में तुमसे झगड़ती थी और अल्लाह से शिकायत कर रही थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ्तगू सुन रहा था, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

इस्लाम से पहले अरब में रवाज था कि कोई मर्द अगर अपनी बीवी से कह देता कि 'तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी मां की पीठ' तो वह औरत हमेशा के लिए उस मर्द पर हराम हो जाती। इसे जिहार कहा जाता था। मदीना के एक मुसलमान औस बिन सामित अंसारी ने अपनी बीवी खौला बिनत सालबा को एक बार यही लफ्ज कह दिया। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और वाकया बताया। आपने कदीम रवाज के एतबार से फरमा दिया कि मैं ख्याल करता हूँ कि तुम उस पर हराम हो गई हो। खौला को पेशानी हुई कि मेरे घर और मेरे बच्चे बर्बाद हो जाएंगे। वह फरयाद व जारी (विलाप) करने लगीं। इस पर ये आयतें उतरीं और बताया गया कि जिहार के बारे में इस्लामी हुक्म क्या है।

الَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْكُمْ مَنْ سَاءَ بِهِمْ قَاهُتْ أُمَمُهُمْ ۚ إِنَّ أُمَّهَتَهُمْ
إِلَّا الْيَتَامَىٰ وَلَدْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ
لَعَفُوءٌ ۚ وَالَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْكُمْ مَنْ سَاءَ بِهِمْ ثُمَّ يَعُوذُونَ لِمَا قَالُوا
فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۚ مَنْ قَبْلَ أَنْ يَتِمَّ آسَاءُ ذَلِكُمْ تُوعَظُونَ بِهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ
أَنْ يَتِمَّ آسَاءُ فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَاطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذَلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से जिहार (तलाक देने की एक सूरत जिसमें शौहर अपनी बीवी से कहता है कि तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो) करते हैं वे उनकी माएं नहीं हैं। उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जना। और ये लोग बेशक एक नामाकूल और झूठ बात कहते हैं, और अल्लाह माफ करने वाला बख्शने वाला है। और जो लोग अपनी बीवियों से जिहार करें फिर उससे रुजूअ करें जो उन्होंने कहा था तो एक गर्दन को आजाद करना (गुलाम आजाद करना) है, इससे पहले कि वे आपस में हाथ लगाएं। इससे तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। फिर

पारा 28

1420

सूरह-58. अल-मुजादलह

जो शख्स न पाए तो रोजे हैं दो महीने के लगातार, इससे पहले कि आपस में हाथ लगाएं। फिर जो शख्स न कर सके तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और ये अल्लाह की हदें हैं और मुंकिरों के लिए दर्दनाक अजाब है। (2-4)

इस्लाम में सूरत और हकीकत के दर्मियान फर्क किया गया है। यही वजह है कि इस्लाम ने इस कदीम रवाज को तस्लीम नहीं किया कि जो औरत हकीकी मां न हो वह महज मां का लफ्ज बोल देने से किसी की मां बन जाए। इस किस्म का फेअल एक लघ (निरर्थक) बात तो जरूर है मगर इसकी वजह से फितरत के क्वानीन (नियम) बदल नहीं सकते।

कुरआन में बताया गया कि महज जिहार से किसी आदमी की बीवी पर तलाक नहीं पड़ेगी। अलबत्ता उस आदमी पर लाजिम किया गया कि वह पहले कफफारा (प्रायश्चित्त) अदा करे। इसके बाद वह दुबारा अपनी बीवी के पास जाए। किसी गलती के बाद जब आदमी इस तरह कफफारा अदा करता है तो वह दुबारा अपने यकीन को जिंदा करता है। वह इस उसूल में अपने अक्रीदे को नए सिरे से मुस्तहकम (सुदृढ़) बनाता है जिसे वह गफलत या नादानी से छोड़ बैठा था।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كَيْتُوا كَمَا كَيْتَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۚ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ
اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنُصُوهُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफत करते हैं वे जलील होंगे जिस तरह वे लोग जलील हुए जो इनसे पहले थे और हमने वाजेह (स्पष्ट) आयतें उतार दी हैं, और मुंकिरों के लिए जिल्लत का अजाब है। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा और उनके किए हुए काम उन्हें बताएगा। अल्लाह ने उसे गिन रखा है। और वे लोग उसे भूल गए, और अल्लाह के सामने है हर चीज। (5-6)

हक की मुखालिफत करना खुदा की मुखालिफत करना है। और खुदा की मुखालिफत करना उस हस्ती की मुखालिफत करना है जिससे मुखालिफत करके आदमी खुद अपना नुक्सान करता है। खुदा से आदमी न अपनी किसी चीज को छुपा सकता और न किसी के लिए यह मुमकिन है कि वह खुदा की पकड़ से अपने आपको बचा सके।

الَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَا يَكُونُ مِنْ

تَجَوَّى ثَلَاثَةً إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خُمُسَةَ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَى
مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا
عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ
نُهِوا عَنِ النَّجْوَى ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهَوُّ عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْأَثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ ۖ وَإِذَا جِئُواكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ ۖ وَ
يَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۖ حَسْبُكُمْ جَهَنَّمُ
يَصْلُونَهَا فَيَسْأَلُ الْمَصِيرُ ۝

तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। कोई सरगोशी (गुप्त वाती) तीन आदमियों की नहीं होती जिसमें चौथा अल्लाह न हो। और न पांच की होती है जिसमें छठा वह न हो। और न इससे कम की या ज्यादा की। मगर वह उनके साथ होता है जहां भी वे हों, फिर वह उन्हें उनके किए से आगाह करेगा कियामत के दिन। बेशक अल्लाह हर बात का इल्म रखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा जिन्हें सरगोशियों से रोका गया था, फिर भी वे वही कर रहे हैं जिससे वे रोके गए थे। और वे गुनाह और ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियां करते हैं, और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हें ऐसे तरीके से सलाम करते हैं जिससे अल्लाह ने तुम्हें सलाम नहीं किया। और अपने दिलों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमें अजाब क्यों नहीं देता। उनके लिए जहन्नम ही काफी है, वे उसमें पड़ेंगे, पस वह बुरा ठिकाना है। (7-8)

कायनात अपने इतिहाई पेचीदा निजाम के साथ यह गवाही दे रही है कि वह हर आन किसी बालातर (उच्चतर) ताकत की निगरानी में है। कायनात में निगरानी की शहादत यह साबित करती है कि इंसान भी मुसलसल तौर पर अपने खालिक की निगरानी में है। ऐसी हालत में हक के खिलाफ खुफिया सरगमियां दिखाना सिर्फ ऐसे अधे लोगों का काम हो सकता है जो खुदा की सिफ्तों को न बराहरेस्त (प्रत्यक्ष) तौर पर मत्फूज (शाब्दिक) कुरआन में पढ़ सकें और न बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर गैर मत्फूज कायनात में।

कुछ यहूद और मुनाफिकीन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में आते तो वे अस्सलामु अलैकुम (आप पर सलामती हो) कहने के बजाए अस्सामु अलैकुम (आप पर मौत आए) कहते। यह हमेशा से सतही (निम्न स्तरीय) इंसानों का तरीका रहा है।

सतही लोग एक सच्चे इंसान को बेकदर करके अपने जेहन में खुश होते हैं। वे भूल जाते हैं कि सारी फैली हुई खुदाई ऐन उस वक्त भी उस सच्चे इंसान का एतराफ कर रही होती है जबकि अपने महदूद जेहन के मुताबिक वे उसकी तहकीर (अनादर) व तरदीद के लिए अपना आखिरी लफज इस्तेमाल कर चुके हों।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْأَثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَى ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ إِنَّمَا النَّجْوَى مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَرِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

ऐ ईमान वालो जब तुम सरगोशी (गुप्त वाती) करो तो गुनाह और ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशी न करो। और तुम नेकी और परहेजगारी की सरगोशी करो। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम जमा किए जाओगे। यह सरगोशी शैतान की तरफ से है ताकि वह ईमान वालों को रंज पहुंचाए, और वह उन्हें कुछ भी रंज नहीं पहुंचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (9-10)

खुफिया सरगोशियां करना आम हालात में एक नापसंदीदा फेअल (कृत्य) है। ताहम कभी कोरेखर के लिए भी खुफिया सरगोशी की जरूरत होती है। इस सिलसिले में अस्ल फैसलाकुन चीज नियत है। खुफिया सरगोशी अगर अच्छी नियत से की जाए तो जाइज है और अगर वह बुरी नियत से की जाए तो नाजाइज।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا فَانْشُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

ऐ ईमान वालो जब तुम्हें कहा जाए कि मजलिसों में खुलकर बैठो तो तुम खुलकर बैठो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी (खुलापन) देगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो तुम उठ जाओ। तुम में से जो लोग ईमान वाले हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह उनके दर्जे बुलन्द करेगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाखबर है। (11)

मजलिस के आदाब के तहत कभी ऐसा होता है कि एक शख्स को पीछे करके दूसरे शख्स को आगे बिठाया जाता है। इसी तरह कभी ऐसा होता है कि लोगों को उम्मीद के खिलाफ

कह दिया जाता है कि अब आप लोग तशरीफ ले जाएं। ऐसी बातों को इज्जत का सवाल बनाना शुऊरी पस्ती का सबूत है। और जो शख्स इन बातों को इज्जत का सवाल न बनाए उसने यह सबूत दिया कि शुऊरी एतबार से वह बुलन्द दर्जे को पहुंचा हुआ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَ الرَّسُولَ فَقَدْ مَوَّابِينَ يَدَيَّ نَجْوَاكُمْ
صَدَقَةٌ ذَلِك خَيْرٌ لَكُمْ وَأَطْهَرُ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝ أَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيَّ نَجْوَاكُمْ صَدَقْتُمْ وَإِذَا لَمْ تَفْعَلُوا
وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَ
رَسُولَهُ ۝ وَاللَّهُ خَيْرٌ رِيًّا تَعْمَلُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, जब तुम रसूल से राजदाराना बात करो तो अपनी राजदाराना बात से पहले कुछ सदका दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है और ज्यादा पाकीजा है। फिर अगर तुम न पाओ तो अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। क्या तुम डर गए इस बात से कि तुम अपनी राजदाराना गुफ्तगू से पहले सदका दो। पस अगर तुम ऐसा न करो, और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया, तो तुम नमाज कयम करो और जफ़ात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (12-13)

अल्लाह तआला को यह मल्लूब था कि रसूल से सिर्फ वही लोग मिलें जो फिलवाकअ संजीदा मक्सद के तहत आपसे मिलना चाहते हैं। ग़ैर जरूरी किस्म के लोग छंट दिए जाएं जो अपनी बेमयदा बातों से सिर्फ वक्त जाया करने का सबब बनते हैं। इसलिए यह उसूल मुकरर किया गया कि जब रसूल से मिलने का इरादा करो तो पहले अल्लाह के नाम पर कुछ सदका करो। और अगर इसकी कुदरत न हो तो कोई दूसरी नेकी करो।

यह हुकम अगरचे अस्लन रसूल के लिए मल्लूब था। मगर रसूल के बाद भी उम्मत के रहनुमाओं के हक में वह हालात के एतबार से दर्जा-ब-दर्जा मल्लूब होगा।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمُ
وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا
إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ فَأَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ। वे न तुम में से हैं और न उनमें से हैं और वे झूठी बात पर कसम खाते हैं हालांकि वे जानते हैं। अल्लाह ने उन लोगों के लिए सज़ा अजाब तैयार कर रखा है, बेशक वे बुरे काम हैं जो वे करते हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, पस उनके लिए जिल्लत का अजाब है। (14-16)

मदीना के मुनाफिकीन इस्लाम की जमाअत में शामिल थे। इसी के साथ वे यहूद से भी मिले हुए थे। यही हमेशा उन लोगों का हाल होता है जो हक को पूरी यकसूई (एकाग्रता) के साथ इख़्तियार न कर सकें। ऐसे लोग बजाहिर सबसे मिले हुए होते हैं मगर हकीकतन वे सिर्फ अपने मफ़द (स्वाथ) के वफ़ादार होते हैं। चाहे वे कसमें खाकर अपने हक़मस्त होने का यकीन दिला रहे हों।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا
يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۝ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝
اسْتَوْدَعَهُمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۝ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۝ أَلَا
إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ۝ كَتَبَ اللَّهُ لَأَعْلَبَنَ أَنَا وَرُسُلِي ۝ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ
عَزِيزٌ ۝

उनके माल और उनकी औलाद उन्हें जरा भी अल्लाह से बचा न सकेंगे। ये लोग दोज़ख़ वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उससे भी इसी तरह कसम खाएंगे जिस तरह तुमसे कसम खाते हैं। और वे समझते हैं कि वे किसी चीज़ पर हैं, सुन लो कि यही लोग झूठे हैं। शैतान ने उन पर काबू हासिल कर लिया है। फिर उसने उन्हें ख़ुदा की याद भुला दी है। ये लोग शैतान का गिरोह हैं। सुन लो कि शैतान का गिरोह जरूर बर्बाद होने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करते हैं वही जलील लोगों में हैं। अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। बेशक अल्लाह कुव्वत वाला, जबरदस्त है। (17-21)

मफ़दपरस्त आदमी जब हक की दावत की मुख़ालिफ़त करता है तो वह समझता है कि इस तरह वह अपने आपको महफूज़ कर रहा है। मगर उस वक़्त वह दहशतजदा होकर रह जाएगा जब आख़िरत में वह देखेगा कि जिन चीज़ों पर उसने भरोसा कर रखा था वे फ़ैसले के उस वक़्त में उसके कुछ काम आने वाली नहीं।

मुनाफ़िक़ (पाखंडी) आदमी अपने मौक़िफ़ को सही साबित करने के लिए बढ़-बढ़कर बातें करता है। यहां तक कि वह कसमें खाकर अपने इख़्लास (निष्ठा) का यकीन दिलाता है। ये सब करके वह समझता है कि 'वह किसी चीज़ पर है।' उसने अपने हक में कोई वाकई बुनियाद फ़ाहम कर ली है। मगर क़ियामत का वक़ाफ़ा जब हकीक़तों को खेलेगा उस वक़्त वह जान लेगा कि यह महज़ शैतान के सिखाए हुए झूठे अल्फ़ज़ थे जिन्हें वह अपने बेक़सूर होने का यकीनी सुबूत समझता रहा।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ
فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ فَوَيْدٌ لَهُمْ جَدَّتِ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَلِيدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَئِكَ
حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٥٨

तुम ऐसी कौम नहीं पा सकते जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो और वह ऐसे लोगों से दोस्ती रखे जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं। अगरचे वे उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके ख़ानदान वाले क्यों न हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और उन्हें अपने फ़ैज़ से कुव्वत दी है। और वह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनके राजी हुआ और वे अल्लाह से राजी हुए। यही लोग अल्लाह का ग़िरोह हैं और अल्लाह का ग़िरोह ही फ़लाह (कल्याण, सफलता) पाने वाला है। (22)

इस दुनिया में कामयाबी हिज़्बुल्लाह के लिए है। हिज़्बुल्लाह (अल्लाह की जमाअत) कौन लोग हैं। ये वे लोग हैं जिनके दिलों में ईमान सबसे बड़ी हकीक़त के तौर पर रासिख़ (घनीभूत) हो गया हो। जिन्हें अल्लाह से इतनी गहरी निस्वत हासिल हो कि उन्हें अल्लाह की तरफ से रूख़नी फ़ैज़ पहुंचने लगे। फिर यह कि खुदाई हकीक़तों से उनकी वाबस्तगी इतनी गहरी हो कि उसी की बुनियाद पर उनकी दोस्तियां और दुश्मनियां कायम हों। वे सबसे ज्यादा उन लोगों से करीब हों जो खुदाई सदाक़त (सच्चाई) को अपनाए हुए हैं। और जो लोग खुदाई सदाक़त से दूर

हैं वे भी उनसे दूर हो जाएं, चाहे वे उनके अपने अजीज और रिश्तेदार क्यों न हों।

سُوْرَةُ الْحٰثِرَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعَةٌ وَخَمْسُونَ آيَةً بِمِائَةِ ثَمَانٍ وَخَمْسِينَ كَلِمَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيْمُ ۝ هُوَ الَّذِي
اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۝ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَخْرُجُوْا وَظَنُّوْا اَنْهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتَتْهُمْ
اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِي قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ ۝ يُخْرِجُوْنَ
بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِى الْمُؤْمِنِيْنَ فَاَعْتَدِوْا يٰٓاُولِى الْاَبْصٰرٍ ۝

आयतें-24

सूरह-59. अल-हथ्र

रुकूअ-3

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की पाकी बयान करती हैं सब चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने अहले किताब मुंकिरों को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया। तुम्हारा गुमान न था कि वे निकलेंगे और वे ख़्याल करते थे कि उनके किले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, फिर अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां से उन्हें ख़्याल भी न था। और उनके दिलों में रौब डाल दिया, वे अपने घरों को खुद अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी। पस ऐ आंख वालो, इबरत (सीख) हासिल करो। (1-2)

मदीना के मशिक में यहूदी कबीला बनू नजीर की आबादी थी। उनके और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान सुलह का मुआहिदा था। मगर उन्होंने बार-बार अहदशिकनी की। आखिरकार 4 हि० में अल्लाह तआला ने ऐसे हालात पैदा किए कि मुसलमानों ने उन्हें मदीना से निकलने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद वे ख़ैबर और अजरिआत में जाकर आबाद हो गए। मगर उनकी साजिशों सरगर्मियां जारी रहीं। यहां तक कि हज़रत उमर फारूक की ख़िलाफ़त की ज़माने में वे और दूसरे यहूदी क़ब़ाइल जज़िरा अरब से निकलने पर मजबूर कर दिए गए। इसके बाद वे लोग शाम में जाकर आबाद हो गए। 'अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां उन्हें गुमान भी न था' की तशरीह अगले फिकरे में मौजूद है। यानी अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया। उन्होंने बेरुनी (वाह्य) तौर पर हर किस्म की तैयारियां कीं। मगर जब मुसलमानों की फौज ने उनकी आबादी को घेर लिया

तो सारी ताकत के बावजूद उन पर ऐसी दहशत तारी हुई कि उन्होंने लड़ने का हौसला खो दिया। और बिला मुकाबले हथियार डाल दिया।

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمُ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِّ
اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ مَآ قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا
قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ۝

और अगर अल्लाह ने उन पर जलावतनी (देश-निकाला) न लिख दी होती तो वह दुनिया ही में उन्हें अजाब देता, और आखिरत में उनके लिए आग का अजाब है। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफत की। और जो शख्स अल्लाह की मुखालिफत करता है तो अल्लाह सख्त अजाब वाला है। खजूरों के जो दरख्त तुमने काट डाले या उन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह के हुक्म से, और ताकि वह नाफरमानों को रुसवा करे। (3-5)

यहूद को जो सजा दी गई, वह अल्लाह के कानून के तहत थी। यह सजा उन लोगों के लिए मुकद्दर है जो पैगम्बर के मुखालिफ बनकर खड़े हों। बनू नजीर के मुहासिर (घेराव) के वक्त उनके बागात के कुछ दरख्त जंगी मस्तेहत के तहत काटे गए थे। यह भी बराहेरास्त खुदा के हुक्म से हुआ। ताहम यह कोई आम उसूल नहीं। यह एक इस्तिसानाई (अपवाद स्वरूप) मामला है जो पैगम्बर के बराहेरास्त मुखातबीन के साथ एक या दूसरी शकल में इख्तियार किया जाता है।

وَمَا آفَاءَ اللَّهِ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا
رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
مَا آفَاءَ اللَّهِ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي
الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ كُنْ لَا يَكُونَ دُولَةً
بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنكُمْ ۚ وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ
فَانْتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ
الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالُهُمْ يُبْتَغُونَ فَرْضًا مِّنَ اللَّهِ وَ
رِضْوَانًا وَيَنْصَرُّونَ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّدِيقُونَ ۝

और अल्लाह ने उनसे जो कुछ अपने रसूल की तरफ लौटाया तो तुमने उस पर न थोड़े दौड़ाए और न ऊंट और लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है तसल्लुत (पृथुत्व) दे देता है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। जो कुछ अल्लाह अपने रसूल को बस्तियों वालों की तरफ से लौटाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए है और रिश्तेदारों और यतीमों (अनाथों) और मिस्कीनों (असहाय जनों) और मुसाफिरों के लिए है। ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दर्मियान गर्दिश न करता रहे। और रसूल तुम्हें जो कुछ दे वह ले लो और वह जिस चीज से तुम्हें रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो, अल्लाह सख्त सजा देने वाला है। उन मुफ्लिस मुहाजिरों के लिए जो अपने घरों और अपने मालों से निकले गए हैं। वे अल्लाह का फरस और रिजामंदी चाहते हैं। और वे अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं। (6-8)

दुश्मन का जो माल लड़ाई के बाद मिले वह गनीमत है और जो माल लड़ाई के बगैर हाथ लगे वह फई है। गनीमत में पांचवां हिस्सा निकालने के बाद बकिया सब लश्कर का है। और फई सबका सब इस्लामी हुक्मत की मिल्कियत है जो मसालेहे आम्मा (जन-हित) के लिए खर्च किया जाएगा।

इस्लाम चाहता है कि माल किसी एक तबके में महदूद होकर न रह जाए। बल्कि वह हर तबके के दर्मियान पहुंचे। इस्लाम में मआशी (आर्थिक) जन्न नहीं है। ताहम उसके मआशी कवानीन इस तरह बनाए गए हैं कि दौलत मुरतकिज (केन्द्रित) न होने पाए। वह हर तबके के लोगों में गर्दिश करती रहे।

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُجْزَوْنَ مِمَّنْ هَاجَرُوا إِلَيْهِمْ
لَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ
وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقِ شَهْنَفَهُ فَإِنَّكَ لَهُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا
الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا
إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝

और जो लोग पहले से दार (मदीना) में करार पकड़े हुए हैं और इमान अस्तवार किए हुए हैं, जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे वे मुहब्बत करते हैं और वे अपने दिलों में उससे तंगी नहीं पाते जो मुहाजिरीन को दिया जाता है। और वे उन्हें अपने ऊपर मुकद्दम रखते हैं। अगरचे उनके ऊपर फाव हो। और जो शख्स अपने जी के

सूरह-59. अल-हश्र

1429

पारा 28

लालच से बचा लिया गया तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो उनके बाद आए वे कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें बख्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं। और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना (द्वेष) न रख, ऐ हमारे रब, तू बड़ा शफीक (कृणामय) और महरबान है। (9-10)

हिजरत के बाद जो मुसलमान अपना वतन छोड़कर मदीना पहुंचे, उनका मदीना आना मदीने के वाशियों (अंसार) पर एक बोझ था। मगर उन्होंने निहायत खुशदिली के साथ उनका इस्तकबाल किया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जब अमवाल (धन-सम्पत्ति) आए तो आपने उनका हिस्सा मुहाजिरिन के दर्मियान तकसीम किया। इस पर भी अंसारे मदीना के अंदर उनके लिए कोई रंजिश पैदा न हुई। इसके बाद भी वे उनके इतने कद्रदान रहे कि उनके हक में उनके दिल से बेहतरीन दुआएं निकलती रहीं। यही वह आली हौसलगी है जो किसी गिरोह को तारीखसाज (इतिहास-निर्माता) गिरोह बनाती है।

الْمُتَرَكِّ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَیْنُ أَخْرَجْتُمْ لِخُرُوجِنَا مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِیْكُمْ أَحَدًا أَبَدًا ۖ وَإِنْ قُوَّتُمْ لِنَصْرِكُمْ وَاللَّهُ یَشْهَدُ أَنَّهُمْ لَكَذِبُونَ ۝ لَیْنُ أَخْرَجُوا لَا یَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَیْنُ قُوتُوا لَا یَنْصُرُونَهُمْ ۖ وَلَیْنُ نَصْرُوهُمْ لَیُؤْتِنَنَّ الْأُذُنُ بَآرِئًا لِنَصْرِهِمْ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो निफाक (पाखंड) में मुत्तिला हैं। वे अपने भाइयों से कहते हैं जिन्होंने अहले किताब में से कुफ्र किया है, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे। और तुम्हारे मामले में हम किसी की बात न मानेंगे। और अगर तुमसे लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं। अगर वे निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे। और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे। और अगर उनकी मदद करेंगे तो जरूर वे पीठ फेरकर भागेंगे, फिर वे कहीं मदद न पाएंगे। (11-12)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू नजीर की जलावतनी (दिश निकाला) का एलान किया तो मुनाफिक्रीन उनकी हिमायत पर आ गए। उन्होंने बनू नजीर से कहा कि तुम अपनी जगह जमे रहो, हम हर तरह तुम्हारी मदद करेंगे। मगर मुनाफिक्रीन की ये बातें महज उन्हें मुसलमानों के खिलाफ उकसाने के लिए थीं। वे इस पेशकश में हरगिज मुख़्लिस न थे। चुनांचे जब मुसलमानों ने बनू नजीर को घेर लिया तो मुनाफिक्रीन में से कोई भी उनकी मदद पर न आया। मफ़ादपरस्त (स्वार्थी) गिरोह का हर जमाने में यही किरदार रहा है।

पारा 28

1430

सूरह-59. अल-हश्र

لَا أَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِی صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِك بِأَنَّكُمْ قَوْمٌ لَا یَفْقَهُونَ ۝ لَا یَقَاتِلُونَكُمْ جَمِیعًا إِلَّا فِی قَرْیَ مُحْصَنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بِأَسْهُمٍ بَیْنَهُمْ شَدِیدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِیعًا وَقَلُوبُهُمْ شَتَّى ذَٰلِك بِأَنَّكُمْ قَوْمٌ لَا یَعْقِلُونَ ۝

बेशक तुम लोगों का डर उनके दिलों में अल्लाह से ज्यादा है, यह इसलिए कि वे लोग समझ नहीं रखते। ये लोग सब मिलकर तुमसे कभी नहीं लड़ेंगे। मगर हिफाजत वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ में। उनकी लड़ाई आपस में सज़त है। तुम उन्हें मुत्तहिद (एकजुट) ख़्याल करते हो और उनके दिल जुदा-जुदा हो रहे हैं, यह इसलिए कि वे लोग अक्ल नहीं रखते। (13-14)

खुदा की ताक़्त बजाहिर दिखाई नहीं देती। मगर इंसानों की ताक़्त खुली आंख से नजर आती है। इस बिना पर जाहिरपरस्त लोगों का हाल यह होता है कि वे अल्लाह से तो बेखौफ रहते हैं मगर इंसानों में अगर कोई जोरआवर दिखाई दे तो वे फ़ौरन उससे डरने की ज़रूरत महसूस करने लगते हैं। खुदा के बारे में उनकी बेशुक्करी उन्हें उनकी दुनिया के बारे में भी बेशुक्करी बना देती है।

ऐसे लोग जिन्हें सिर्फ़ मंफ़ी (नकारात्मक) मक़सद ने मुत्तहिद किया हो वे ज्यादा देर तक अपना इत्तिहाद बाकी नहीं रख पाते। क्योंकि देरपा इत्तहाद के लिए मुस्वत (सकारात्मक) बुनियाद दरकार है और वह उनके पास मौजूद ही नहीं।

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ ۖ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّی بَرِئٌ مِّنْكَ إِنِّی أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِیْنَ ۝ فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِی النَّارِ خَالِدِیْنَ فِیْهَا ۚ وَ ذَٰلِكَ جَزَاُ الظَّالِمِیْنَ ۝

ये उन लोगों की मानिंद हैं जो उनके कुछ ही पहले अपने किए का मजा चख चुके हैं, और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। जैसे शैतान जो इंसान से कहता है कि मुंकिर हो जा, फिर जब वह मुंकिर हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुमसे बरी हूं। मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब है। फिर अंजाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोजख़ में गए जहां वे हमेशा रहेंगे, और जालिमों की सजा यही है। (15-17)

मदीना के मुनाफिकीन बनू नजीर को मुसलमानों के खिलाफ उभार रहे थे। उन्होंने उस वाक्य से सबक नहीं लिया कि जल्द ही पहले क़ैल और क़बीला बनू क़ैलम उनका खिलाफ उठे। मगर उन्हें जबरदस्त शिकस्त हुई। जो लोग शैतान को अपना मुशिर (सलाहकार) बनाएं उनका हाल हमेशा यही होता है। वे वाक़ेयात से नसीहत नहीं लेते। पहले वे जोश व ख़रोश के साथ लोगों को मुजरिमाना अफ़आल पर उभारते हैं। फिर जब उसका भयानक अंजाम सामने आता है तो वे तरह-तरह के अल्फ़ाज बोलकर यह चाहते हैं कि उसकी जिम्मेदारी से अपने आपको बरी कर लें। मगर इस किस्म की कोशिशें ऐसे लोगों को अल्लाह की पकड़ से बचाने वाली साबित नहीं हो सकतीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो, और हर शय्स देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह वाख़बर है जो तुम करते हो। और तुम उन लोगों की तरह न बन जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन्हें खुद उनकी जानों से ग़ाफ़िल कर दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं। देखने वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते। जन्नत वाले ही अस्ल में कामयाब हैं। (18-20)

इंसानी ज़िंदगी को 'आज' और 'कल' के दर्मियान तक्सीम किया गया है। मौजूदा दुनिया इंसान का आज है और आख़िरत की दुनिया उसका कल है। इंसान मौजूदा दुनिया में जो कुछ करेगा उसका लाज़िमी अंजाम उसे आने वाली तबीलतर (दीर्घतर) ज़िंदगी में भुगतना पड़ेगा।

यही अस्ल हकीकत है और इसी हकीकत का दूसरा नाम इस्लाम है। इंसान की कामयाबी इसमें है कि वह इस हकीकत वाक़ई को ज़हन में रखे। जो शय्स इस हकीकत वाक़ई से ग़ाफ़िल हो जाए उसकी पूरी ज़िंदगी ग़लत होकर रह जाएगी। इस मामले में मुसलमान और ग़ैर मुसलमान का कोई फ़र्क़ नहीं। मुसलमानों को इसका फ़ायदा उसी वक़्त मिलेगा जबकि वाक़येतन वे उस पर कायम हों। मुसलमान अगर ग़फलत में पड़ जाएं तो उनका अंजाम भी वही होगा जो इससे पहले ग़फलत में पड़ने वाले यहूद का हुआ।

لَوْ أَنزَلْنَاهُ الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَّرَأَيْنَاهُ خَاشِعًا مَّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۖ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقَدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهِيمُنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

अगर हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह खुदा के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता, और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, पोशीदा और जाहिर को जानने वाला, वह बड़ा महरबान है। निहायत रहम वाला है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। बादशाह, सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, जोरआवर, अज्मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं। वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वुजूद में लाने वाला, सूरतगरी (संरचना) करने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम। हर चीज जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तस्बीह कर रही है, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (21-24)

क़ुरआन इस अजीम हकीकत का एलान है कि इंसान आजद नहीं है बल्कि उसे अपने तमाम आमाल की जवाबदेही अल्लाह के सामने करनी है जो इतिहाई ताकतवर है। और हर एक के आमाल को बजातेखुद पूरी तरह देख रहा है। यह ख़बर इतनी संगीन है कि पहाड़ तक को लरजा देने के लिए काफी है। मगर इंसान इतना ग़ाफ़िल और बेहिस है कि वह इस हौलनाक ख़बर को सुनकर भी नहीं तड़पता।

अल्लाह के नाम जो यहां बयान किए गए हैं वे एक तरफ़ अल्लाह की जात का तआरुफ़ (परिचय) हैं। दूसरी तरफ़ वे बताते हैं कि वह हस्ती कैसी अजीम हस्ती है जो इंसानों की ख़ालिक है और उनके ऊपर उनकी निगरानी कर रही है। अगर आदमी को वाक़येतन इसका एहसास हो जाए तो वह अल्लाह की हम्द व तस्बीह में सरापा ग़र्क़ हो जाएगा।

कायनात अपनी तख़्नीकी मअनवियत की सूरत में खुदा की सिफ़ात का आइना है। वह खुद हम्द व तस्बीह में मसरूफ़ होकर इंसान को भी हम्द व तस्बीह का सबक देती है।

سُورَةُ الْمُتَمِّتَةِ بِكَسْرٍ وَهِيَ ثَلَاثٌ عَشْرَةُ آيَاتٍ وَفِيهَا زَكَاةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمُ
بِالنُّوَدَةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ
أَنْ تَتُومِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَ
ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِمُ بِالْمُودَةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ
وَمَا أَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ إِنْ
يَشْكُرُوا يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَسْطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَسْنتَهُمْ بِالسُّوۤءِ
وَوَدُّوا أَنْ تُكْفَرُوا ۝ لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُهُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ
يَقْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

مع
عبداللہ الحارثی

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ ईमान वाले, तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे
दोस्ती का इच्छा करते हो हालांकि उन्होंने उस हक (सत्य) का इंकार किया जो तुम्हारे
पास आया, वे रसूल को और तुम्हें इस वजह से जलावतन (निर्वासित) करते हैं कि तुम
अपने रब, अल्लाह पर ईमान लाए। अगर तुम मेरी राह में जिहाद और मेरी रिजामंदी
की तलब के लिए निकले हो, तुम छुपाकर उन्हें दोस्ती का पैगाम भेजते हो। और मैं
जानता हूं जो कुछ तुम छुपाते हो। और जो कुछ तुम जाहिर करते हो। और जो शय
तुम में से ऐसा करेगा वह राहेरास्त से भटक गया। अगर वे तुम पर काबू पा जाएं तो
वे तुम्हारे दुश्मन बन जाएंगे। और अपने हाथ और अपनी जबान से तुम्हें आजार (पीड़ा)
पहुंचाएंगे। और चाहेंगे कि तुम भी किसी तरह मुंकिर हो जाओ। तुम्हारे रिश्तेदार और
तुम्हारी औलाद कियामत के दिन तुम्हारे काम न आएंगे, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला
करेगा, और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का की तरफ इक्दाम करने

का फैसला किया तो आपने उसका पूरा मंसूबा निहायत खामोशी के साथ बनाया ताकि मक्का
वाले मुकाबले की तैयारी न कर सकें। उस वक्त एक बंदी सहाबी हातिब बिन अबी बलतआ
ने इस मंसूबे को एक खत में लिखा और उसे खुफिया तौर पर मक्का वालों के नाम रवाना
कर दिया। ताकि मक्का वाले उनसे खुश हो जाएं और उनके अहल व अयाल (परिवारजनों)
को न सताएं जो मक्का में मुकीम हैं। मगर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए इसकी इत्तिला
हो गई और कासिद को रास्ते ही में पकड़ लिया गया। इस क्रिम का हर फेअल ईमानी
तक़्केफ़ि है।

जब यह सूरतेहाल हो कि इस्लाम और ग़ैर इस्लाम के अलग-अलग महाज बन जाएं तो
उस वक्त अहले इस्लाम की जिम्मेदारी होती है कि वे ग़ैर इस्लामी महाज से दिलचस्पी का
तअल्लुक तोड़ लें। चाहे ग़ैर इस्लामी महाज में उनके अजीज और रिश्तेदार ही क्यों न हों।
हक को मानना और हक का इंकार करने वालों से कत्बी तअल्लुक रखना दो मुतजाद (परस्पर
विरोधी) चीजें हैं जो एक साथ जमा नहीं हो सकती।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا
لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءُكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَ
بَدَّلْنَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ الْعِدَاةَ وَالْبَغْضَاءَ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحَدَهُ
إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَا اسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ
مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنْتَبْنَا وَلِلَّهِ الْمَصِيرُ ۝ رَبَّنَا لَا
تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفُ رَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ
الْآخِرَ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوْدَّةً وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَحِيمٌ

तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी कौम
से कहा कि हम अलग हैं तुमसे और उन चीजों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत
करते हो, हम तुम्हारे मुंकिर हैं और हमारे और तुम्हारे दर्मियान हमेशा के लिए अदावत
(बैर) और बेजारी (दुराव) जाहिर हो गई यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान
लाओ। मगर इब्राहीम का अपने बाप से यह कहना कि मैं आपके लिए माफी मांगूंगा,
और मैं आपके लिए अल्लाह के आगे किसी बात का इख्तियार नहीं रखता। ऐ हमारे

सूरह-60. अल-मुमत्तहिनह

1435

पारा 28

रब, हमने तेरे ऊपर भरोसा किया और हम तेरी तरफ रुजूअ हुए और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ हमारे रब, हमें मुंकिरों के लिए फितना न बना, और ऐ हमारे रब, हमें बख्श दे, बेशक तू जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। बेशक तुम्हारे लिए उनके अंदर अच्छा नमूना है, उस शख्स के लिए जो अल्लाह का और आखिरत के दिन का उम्मीदवार हो। और जो शख्स रूगदानी (अवहेलना) करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तरीफों वाला है। उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान दोस्ती पैदा कर दे जिनसे तुमने दुश्मनी की। और अल्लाह सब कुछ कर सकता है, और अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। (4-7)

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इब्तिदा में खैरख़ाहाना अंदाज में अपने ख़ानदान को तौहीद का पैग़ाम दिया। जब इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद वे लोग मुंकिर बने रहे तो आप उनसे बिल्कुल जुदा हो गए। मगर यह बड़ा सख्त मरहला था। क्योंकि एलाने बरा-त (विरक्ति) का मतलब मुंकिरीने हक को यह दावत देना था कि वे हर मुमकिन तरीके से अहले ईमान को सताएं। दलील के मैदान में शिकस्त खाने के बाद ताकत के मैदान में अहले ईमान को जलील करें। यही वजह है कि इसके बाद हजरत इब्राहीम ने जो दुआ कि उसमें ख़ास तौर से फ़रमाया कि ऐ हमारे रब हमें इन जालिमों के जुम का तख़्ताए मशक (निशाना) न बना।

अजीजों और रिश्तेदारों से एलाने बरा-त आम मजनों में एलाने अदावत नहीं है। यह दाजी की तरफ से अपने यकीन का आखिरी इज़हार है। इस एतबार से उसमें भी एक दावती (Value) शामिल हो जाती है। चुनांचे कभी ऐसा होता है कि जो शख्स 'पैग़ाम' की जवान से मुतअस्सिर नहीं हुआ था 'यकीन' की जवान उसे जीतने में कामयाब हो जाती है।

لَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

अल्लाह तुम्हें उन लोगों से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग नहीं की। और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला कि तुम उनसे भलाई करो और तुम उनके साथ इंसाफ करो। बेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। अल्लाह बस उन लोगों से तुम्हें मना करता है जो दीन के मामले में तुमसे लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। और तुम्हारे निकालने में मदद की कि तुम उनसे दोस्ती करो, और जो उनसे

पारा 28

1436

सूरह-60. अल-मुमत्तहिनह

दोस्ती करे तो वही लोग जालिम हैं। (8-9)

जहां तक अदुल व इंसाफ का तअल्लुक है वह हर एक से किया जाएगा, चाहे फ़रीक सानी (प्रतिपक्षी) दुश्मन हो या ग़ैर दुश्मन। मगर दोस्ती का तअल्लुक हर एक से दुरुस्त नहीं। दोस्ती सिर्फ उसी के साथ जाइज है जो अल्लाह का दोस्त हो या कम से कम यह कि वह अल्लाह का दुश्मन न हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ فَاجْرِبْنَ لَهُنَّ مَا نَفَقْنَ إِلَى الْكُفَّارِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمْنَ ۚ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمْنَ ۚ وَلَهُنَّ مَا أَهْلَهُنَّ بِحِلٍّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۚ وَأَتَوْهُنَّ مَا نَفَقْنَ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تَنْسِكُوا بِعَصَمِ الْكُوفَرِ وَنَسُوا مَا نَفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمُ أَنْ تَنْفِقُوا مَا أَنْفَقُوا ۚ إِنَّكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَلَيْكُمْ فَاتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत (स्थान-परिवर्तन) करके आए तो तुम उन्हें जांच लो, अल्लाह उनके ईमान को खूब जानता है। पस अगर तुम जान लो कि वे मोमिन हैं तो उन्हें मुंकिरों की तरफ न लौटाओ। न वे औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वे उन औरतों के लिए हलाल हैं। और मुंकिर शोहरों ने जो कुछ खर्च किया वह उन्हें अदा कर दो। और तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम उनसे निकाह कर लो जबकि तुम उनके महर उन्हें अदा कर दो। और तुम मुंकिर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो। और जो कुछ तुमने खर्च किया है उसे मांग लो। और जो कुछ मुंकिरों ने खर्च किया वे भी तुमसे मांग लें। यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। और अगर तुम्हारी वीवियों के महर में से कुछ मुंकिरों की तरफ रह जाए, फिर तुम्हारी नौबत आए तो जिनकी वीवियां गई हैं उन्हें अदा कर दो जो कुछ उन्होंने खर्च किया। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। (10-11)

यहां सुलह हुदैबिया के बाद पैदाशुदा हालात की रोशनी में इस्लाम के कुछ उन कानूनों

सूरह-60. अल-मुमतेहिनह

1437

पारा 28

को बताया गया है जिनका तअल्लुक दारुल हरब और दारुल इस्लाम के दर्मियान पेश अपने वाले आइली (पारिवारिक) मसाइल से है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُمَاجِعُكَ عَلَى أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَرْفِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ فَلَا يَعْمُنَنَّ وَأَسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ⑤

ऐ नबी जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) के लिए आए कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज को शरीक न करेंगी। और वे चोरी न करेंगी। और वे बदकारी न करेंगी। और वे अपनी औलाद को कत्ल न करेंगी। और वे अपने हाथ और पांव के आगे कोई बोहतान गढ़कर न लाएंगी। और वे किसी मारुफ (सत्कर्म) में तुम्हारी नाफरमानी न करेंगी तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से बख्शिश की दुआ करो, बेशक अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। (12)

इस आयत में वे शर्तें बताई गई हैं जिनका इकरार लेकर किसी औरत को इस्लाम में दाखिल किया जाता है। इन शर्तों में दो शर्त की हैसियत बुनियादी है। यानी शिर्क न करना और रसूल की नाफरमानी न करना। बाकी तमाम मयूर (उल्लिखित) और मयूर तमाम अपने आप इन दो शर्तों में शामिल हो जाते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَكْسِبُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَكْسِبُ الْكُفَّارُ مِنَ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ⑥

ऐ ईमान वाले तुम उन लोगों को दोस्त न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे आखिरत से नाउम्मीद हो गए हैं जिस तरह कफ़रों में पड़े हुए मुंकिर नाउम्मीद हैं। (13)

आसमानी किताब को मानने वाले यहूद और उसे न मानने वाले मुंकिर आखिरत के एतबार से एक सतह पर हैं। खुले हुए मुंकिरों को उम्मीद नहीं होती कि कोई शख्स दुबारा अपनी कब्र से उठेगा। यही हाल उन लोगों का भी होता है जो यहूद की तरह ईमान लाने के बाद मफ़लत और बेहिंसी में मुक्किला हो गए हैं। आखिरत का लफ़्ज़ी इकरार करने के बावजूद उनकी अमली जिंदगी वैसी ही हो जाती है जैसी खुले हुए मुंकिरीन की जिंदगी।

पारा 28

1438

सूरह-61. अस-सफ़क

سُورَةُ الصَّفِّ كَذَيْبٌ مَّا وَرَأَىٰ أَرْبَعٌ عَشَرَ آيَةً وَفِيهَا الْكُفْرُ بِاللَّهِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سَبِّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ② يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ③ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ④ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُورٌ ⑤

आयतें-14

सूरह-61. अस-सफ़क

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज जो आसमानों और जमीन में है। और वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हकीम (तत्वदर्शी) है। ऐ ईमान वाले, तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं। अल्लाह के नजदीक यह बात बहुत नाराजी की है कि तुम ऐसी बात कहो जो तुम करो नहीं। अल्लाह तो उन लोगों को पसंद करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं गोया वे एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। (1-4)

इंसान के सिवा जो कायनात है उसमें कहीं तजाद (अन्तर्विरोध) नहीं। इस दुनिया में लकड़ी हमेशा लकड़ी रहती है। और जो चीज अपने आपको लोहा और पत्थर के रूप में जाहिर करे वह हकीकी तजर्वे में भी लोहा और पत्थर ही साबित होती है। इंसान को भी ऐसा ही बनना चाहिए। इंसान के कहने और करने में मुताबिकत होनी चाहिए। यहां तक कि उस वक्त भी जबकि आदमी को अपने कहने की यह कीमत देनी पड़े कि हर किस्म की दुश्वारियों के बावजूद वह सत्र का पहाड़ बन जाए।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ لِمَ تَقُولُونَ لِمَ تَقُولُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ ⑥

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम लोग क्यों मुझे सतते हो, हालांकि तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं। पस जब वे फिर गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया। और अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (5)

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के दर्मियान आए। बनी इस्राईल उस वक्त एक जवालयाफता कौम थे। उनके अंदर यह हौसला बाकी नहीं रहा था कि जो कहें वही करें। और करें वही कहें। चुनांचे उनका हाल यह था कि वे हजरत मूसा के हाथ पर ईमान का इकरार भी करते थे और इसी के साथ हर किस्म की बदअहदी और नाफरमानी में भी मुक्तिला रहते थे। यहां तक कि हजरत मूसा के साथ अपने बुरे सुलूक को जाइज साबित करने के लिए वे खुद हजरत मूसा पर झूठे झूठे इल्जाम लगाते थे। बाइबल में खुर्रुज और गिनती के अववाब (अध्यायों) में इसकी तपसील देखी जा सकती है।

अहद करने के बाद अहद की ख़िलाफ़तजी आदमी को पहले से भी ज्यादा हक से दूर कर देती है।

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّضْمِنٌ ۖ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ يَرْيَدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝

और जब ईसा बिन मरयम ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं, तस्दीक (पुष्टि) करने वाला हूं उस तौरात की जो मुझसे पहले से मौजूद है, और खुशखबरी देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे हालांकि वह इस्लाम की तरफ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें, हालांकि अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा करके रहेगा, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। वही है जिसने भेजा अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ ताकि उसे सब दीनों पर ग़ालिब कर दे चाहे मुशिरकों (बहुदेववादियों) को यह कितना ही नागवार हो। (6-9)

हजरत मसीह अलैहिस्सलाम के मौजिजात इस बात का सुबूत थे कि आप खुदा के पैगम्बर

हैं। मगर यहूद ने उन मौजिजात को जादू का करिश्मा कहकर उन्हें नजरअंदाज कर दिया। इसी तरह कदीम आसमानी किताबों में वाजेह तौर पर पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की पेशगी ख़बर मौजूद थी। मगर जब आप आए तो यहूद और नसारा दोनों ने आपका इंकार कर दिया। इंसान इतना जालिम है कि वह खुली-खुली हकीकतों का एतराफ करने के लिए भी तैयार नहीं होता।

इस आयत में ग़लबे से मुराद फिक्री ग़लबा (वैचारिक वर्चस्व) है। यानी खुदा और मजहब के बारे में जितने ग़ैर मुवह्हिदाना (ग़ैर-एकेश्वरवादी) अकाइद दुनिया में हैं उन्हें जेर करके तौहीद (एकेश्वरवाद) के अक्दीद को ग़ालिब फिक्र की हैसियत दे दी जाए। बकिस्मा तमाम अकाइद हमेशा के लिए फिक्री तौर पर मग़लूब होकर रह जाएं। कुरआन में यह पेशीनगोई इतिहाई नामुवाफिक्र हालात में सन् 3 हि० में नाजिल हुई थी। मगर बाद को वह हर्फ़बर्फ़ पूरी हुई।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ۝ تُوْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَعْلَمُ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٌ طَيِّبٌ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۖ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۖ وَآخِرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۖ وَبَشِيرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

ऐ ईमान वाले, क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारात बताऊं जो तुम्हें एक दर्दनाक अजाब से बचा ले। तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपने जान से जिहाद (जद्दोजहद) करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में जो हमेशा रहने के बाग़ों में होंगे, यह है बड़ी कामयाबी और एक और चीज भी जिसकी तुम तमन्ना रखते हो, अल्लाह की मदद और फतह जल्दी, और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (10-13)

तिजारात में आदमी पहले देता है, इसके बाद उसे वापस मिलता है। दीन की जद्दोजहद में भी आदमी को अपनी कुव्वत और अपना माल देना पड़ता है। इस एतबार से यह भी एक किस्म की तिजारात है। अलबत्ता दुनियावी तिजारात का नफ़ा सिर्फ दुनिया में मिलता है और दीन की तिजारात का नफ़ा मज्दीद इजाफे के साथ दुनिया में भी मिलता है और आखिरत में भी। फिर इसी 'तिजारात' से ग़लबा की राह भी खुलती है जो मौजूदा दुनिया में किसी गिरोह को बाइज्जत जिद्दी हसिल करने का सबसे बड़ा जरिया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَأَمْنَتْ ظَافِقَةُ
مَنْ بَنَى إِسْرَائِيلَ وَكَفَرْتَ ظَافِقَةُ فَأَيُّدَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَى
عَدُوِّهِمْ فَاصْبِرُوا ظَاهِرِينَ ۝

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि ईसा बिन मरयम ने हवारियों (साथियों) से कहा, कौन अल्लाह के वास्ते मेरा मददगार बनता है। हवारियों ने कहा हम हैं अल्लाह के मददगार, पस बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इंकार किया। फिर हमने ईमान लाने वालों की उनके दुश्मनों के मुकाबले में मदद की, पस वे ग़ालिब हो गए। (14)

यहूद की अक्सरियत ने अगरचे हजरत मसीह अलैहिस्सलाम को रद्द कर दिया मगर उनमें से कुछ लोग (हवारिय्यीन) ऐसे थे जिन्होंने पूरे इख़्लास और वफादारी के साथ आपका साथ दिया। और आपके पैगम्बराना मिशन को आगे बढ़ाया। यही चन्द लोग अल्लाह की नजर में मोमिन करार पाए और बक़िया तमाम यहूद पिछले पैगम्बरों को मानने के बावजूद मुँकर करार पा गए।

यहां जिस ग़लबे का जिक्र है वह फ़िल जुमला (वस्तुतः) मोमिनीने मसीह का फ़िल जुमला मुँकिरीने मसीह पर ग़लबा है। हजरत मसीह के बाद रूमी शहंशाह कुस्तुतीन दोम (272-337 ई०) ने नसरानियत (ईसाइयत) कुबूल कर ली जिसकी सल्लनत शाम और फ़िलिस्तीन तक फैली हुई थी। इसके बाद रूमी रियाया बहुत बड़ी तादाद में ईसाई हो गई। चुनांचे यहूद उनके महकूम (शासनाधीन) हो गए। मौजूदा जमाने में भी यहूदियों की हुकूमते इस्राईल हर एतबार से ईसाइयों के मातहत है।

سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَكِّيَّةٌ مِنْ أَحَدِ عَشَرَ آيَةً وَفِيهَا ثَلَاثُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَسْبِغْ لَكُمْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝
هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝
وَأَخْرَجَ مِنْهُمْ لَبَأً يَلْعَقُوا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

يَسَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर वह चीज जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। जो बादशाह है, पाक है, जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने उम्मियों के अंदर एक रसूल उन्हीं में से उठाया, वह उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है। और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और हिक्मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है, और वे इससे पहले खुली गुमराही में थे और दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए, और वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। यह अल्लाह का फ़त्ल है, वह देता है जिसे चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़त्ल (अनुग्रह) वाला है। (1-4)

इंसान की हिदायत के लिए रसूल भेजना खुदा की उन्हीं सिफात (गुणों) का इंसानी सतह पर जुहर है जिन सिफात का जुहर माददी एतबार से कायनात की सतह पर हुआ है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, और इसी तरह दूसरे पैगम्बरों का काम ख़ास तौर पर दो रहा है। एक, खुदा की 'वही' को लोगों तक पहुंचाना। दूसरे, लोगों के शुरुआत को बेदार करना ताकि वे खुदाई बातों को समझें और अपनी हकीकी ज़िंदगी के साथ उन्हें मरबूत कर सकें। यही दो काम आइंदा भी दावत व इस्लाह की जद्दोज़हद में मल्लूब रहेंगे। यानी तालीमे कुआन और ज़ेहनी तर्बियत।

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۝
يَسْأَلُ الْقَوْمَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝
قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادَوْا إِن زَعَمْتُمْ أَنكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ
فَتَمَتُّوا الْمَوْتَ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝
وَلَا يَتَمَتُّونَ أَبَدًا إِنَّمَا قَدَّمَ
أَيُّدِيَهُمْ وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ بِالْظَّالِمِينَ ۝
قُلْ إِن الْمَوْتَ الَّذِي تَتَذَكَّرُونَ مِنْهُ
وَإِن مَّلَاقِيَكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝

ع

जिन लोगों को तौरात का हामिल (धारक) बनाया गया फिर उन्होंने उसे न उठाया, उनकी मिसाल उस गधे की सी है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो। क्या ही बुरी

सूरह-62. अल-जुम'अह

1443

पारा 28

मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। कहो कि ऐ यहूदियों, अगर तुम्हारा गुमान है कि तुम दूसरों के मुकाबले में अल्लाह के महबूब हो तो तुम मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो। और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे उन कामों की वजह से जिन्हें उनके हाथ आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह जालिमों को खूब जानता है। कहो कि जिस मौत से तुम भागते हो वह तुम्हें आकर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और जाहिर के जानने वाले के पास ले जाए जाओगे, फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे हो। (5-8)

खुदा की किताब जब किसी कौम को दी जाती है तो इसलिए दी जाती है कि वह उसे अपने अंदर उतारे और उसे अपनी जिंदगी में अपनाए। मगर जो कौम इस मअना में किताबे आसमानी की हामिल (धारक) न बन सके उसकी मिसाल उस गधे की सी होगी जिसके ऊपर इल्मी किताबें लदी हुई हों और उसे कुछ खबर न हो कि उसके ऊपर क्या है।

यहूद ने अगरचे अमली तौर पर खुदा के दीन को छोड़ रखा था, इसके बावजूद उसे अपने कैमो फख्र का निशान बनाए हुए थे। मगर इस किस्म का फख्र किसी के कुछ काम आने वाला नहीं। ऐसा फख्र हमेशा झूठा फख्र होता है। और इसका एक सुबूत यह है कि आदमी जिस दीन को अपने फख्र का सामान बनाए हुए होता है उसके लिए वह कुर्बानी देने को तैयार नहीं होता। ताहम जब मौत आएगी तो ऐसे लोग जान लेंगे कि दुनिया में वे जिस फख्र पर जी रहे थे वह अखिरत में उन्हें जिल्लत के सिवा और कुछ देने वाला नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمٍ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ
اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ وَإِذَا قُضِيَتِ
الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ
كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۖ وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا
وَتَرَكَوْا قُلُوبًا قَلِيلًا مَّا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ آلَاهُو وَمِنَ التِّجَارَةِ وَاللَّهُ
خَبِيرُ الرَّزَاقِينَ ۝

ऐ ईमान वाले, जब जुमा के दिन की नमाज के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की तरफ चल पड़ो और खरीद व फरोख्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। फिर जब नमाज पूरी हो जाए तो जमीन में फैल जाओ और अल्लाह का फल तलाश करो, और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करो, ताकि तुम फलाह पाओ। और जब वे कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं। और तुम्हें

पारा 28

1444

सूरह-63. अल-मुनाफिकून

खड़ा हुआ छोड़ देते हैं, कहो कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और तिजारत से बेहतर है, और अल्लाह बेहतर रिक रिक् देने वाला है। (9-11)

दुनिया में आदमी बयकवक्त दो तकजों के दर्मियान होता है। एक मआश (जीविका) का तकज, और दूसरे दीन का तकज। इनमेंसे हर तकज जरूरी है। अलबत्ता उनके दर्मियान इस तरह तक्सीम होनी चाहिए कि मआशी सरगर्मियां दीनी तकजे के मातहत हों। आदमी को इजाजत है कि वह जाइज हुदूद में मआश के लिए दौड़ धूप करे। मगर यह जरूरी है कि उसे जो मआशी कामयाबी हासिल हो उसे वह सरासर अल्लाह का फल समझे। नीज मआशी सरगर्मी के दौरान बराबर अल्लाह को याद करता रहे। इसी के साथ उसे हमेशा तैयार रहना चाहिए कि जब भी दीन के किसी तकजे के लिए पुकारा जाए तो उस वक्त वह हर दूसरे काम को छोड़कर दीन के काम की तरफ दौड़ पड़े।

मदीना में एक बार ऐन जुमा के खुत्वे के वक्त कुछ लोग उठकर बाजार चले गए। इस पर मज्हूर आयतें उतरतीं। इस हुक्म का तअल्लुक अगरचे बराहदास्त तौर पर जुमा से है मगर बिलवास्ता तौर पर हर दीनी काम से है। जब भी किसी खास दीनी मक्सद के लिए लोगों को जमा किया जाए तो अमीर की इजाजत के बगैर उठकर चले जाना सख्त महरूम की बात है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَ لَكَ الْمُتَفِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ
لَرَسُولُهُ ۗ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُتَفِقِينَ لَكَاذِبُونَ ۖ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُرْئَةً
فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا
ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝

आयतें-11

सूरह-63. अल-मुनाफिकून

रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। जब मुनाफिक (पाखंडी) तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि बेशक तुम उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफिकीन (पाखंडी) झूठे हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, बेशक निहायत बुरा है जो वे कर रहे हैं। यह इस सबब से है कि वे ईमान लाए फिर उन्होंने कुफ्र किया, फिर उनके दिलों पर मुहर कर दी गई, पस वे नहीं समझते। (1-3)

यह किसी आदमी के निफाक (पाखंड) की अलामत है कि वह बड़ी-बड़ी बातें करे। और कसम खाकर अपनी बात का यकीन दिलाए। मुख़्तस (निष्ठावान) आदमी अल्लाह के ख़ौफ से दबा हुआ होता है। वह ज़बान से ज्यादा दिल से बोलता है। मुनाफ़िक आदमी सिर्फ़ इज़ान को अपनी आवाज़ सुनाने का मुशताक होता है। और मुख़्तस आदमी खुदा को सुनाने का।

जब एक शख्स ईमान लाता है तो वह एक संजीदा अहद (प्रण) करता है। इसके बाद ज़िंदगी के अमली मवाक़ेअ आते हैं जहां ज़रूरत होती है कि वह उस अहद के मुताबिक अमल करे। अब जो शख्स ऐसे मौक़ों पर अपने दिल की आवाज़ को सुनकर अहद के तकाज़े पूरे करेगा। उसने अपने अहदे ईमान को पुरख़्ता किया। इसके बरअक्स जिसका यह हाल हो कि उसके दिल ने आवाज़ दी मगर उसने दिल की आवाज़ को नज़रअंज़ाज़ करके अहद के ख़िलाफ अमल किया तो इसका नतीजा यह होगा कि वह धीरे-धीरे अपने अहदे ईमान के मामले में बेहिस हो जाएगा। यही मतलब है दिल पर मुहर करने का।

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشْبٌ مُّسَدَّدٌ ۚ يَحْسَبُونَ كُلَّ صِغَةٍ عَلَيْهِمْ ۖ هُمُ الْعَدُوّ ۖ فَاحْذَرُهُمْ ۚ قَالَتْ لَهُمُ اللَّهُ ۖ إِنِّي يُوَفِّكُونُ ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ ۖ لَوَّارُؤُسُهُمْ ۖ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ ۖ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُونَ ۖ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ①

और जब तुम उन्हें देखो तो उनके जिस्म तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करते हैं तो तुम उनकी बात सुनते हो, गोया कि वे लकड़ियां हैं टेक लगाई हुई। वे हर जोर की आवाज़ को अपने ख़िलाफ समझते हैं। यही लोग दुश्मन हैं, पस उनसे बचो। अल्लाह उन्हें हलाक करे, वे कहां फिरे जाते हैं। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए इस्तिफ़ाफ़ (माफी की दुआ) करे तो वे अपना सर फेर लेते हैं। और तुम उन्हें देखोगे कि वे तकबुर (घमंड) करते हुए बेरुख़ी करते हैं। उनके लिए यकसां (समान) है, तुम उनके लिए मफ़िरत (माफी) की दुआ करो या मफ़िरत की दुआ न करो, अल्लाह हरगिज़ उन्हें माफ न करेगा। अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (4-6)

मुनाफ़िक आदमी मस्तेहतपरस्ती के ज़रिए अपने मफ़दत (हितों) को महफूज़ रखता है। वह हक नाहक की बहस में नहीं पड़ता, इसलिए हर एक से उसका बनाव रहता है। उसकी ज़िंदगी ग़म से ख़ाली होती है। ये चीज़ें उसके जिस्म को फरबा (मोटा) बना देती हैं। वे लोगों

के मिजाज की रियायत करके बोलता है। इसलिए उसकी बातों में हर एक अपने लिए दिलचस्पी का सामान पा लेता है। मगर ये बजाहिर हरे भरे दरख़्त हकीकतन सिर्फ सूखी लकड़ियां होते हैं जिनमें कोई ज़िंदगी न हो। वे अंदर से बुजदिल होते हैं। उनके नजदीक उनका दुनियावी मफ़द हर दीनी मफ़द से ज्यादा अहम होता है। ऐसे लोग ईमान के बुलन्दबाग़ मुद्दई (ऊंचे दावेदार) होने के बावजूद खुदा की हिदायत से यकसर महरूम हैं।

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُوا ۚ وَاللَّهُ خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۖ يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ②

यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर खर्च मत करो यहां तक कि वे मुंतशिर (तितर-बितर) हो जाएं। और आसमानों और जमीन के खजाने अल्लाह ही के हैं लेकिन मुनाफ़िकीन (पाखंडी) नहीं समझते। वे कहते हैं कि अगर हम मदीना लौटे तो इज्त वाला वहां से ज़िल्लत वाले को निकाल देगा। हालांकि इज्त अल्लाह के लिए और उसके रसूल के लिए और मोमिनीन के लिए है, मगर मुनाफ़िकीन (पाखंडी) नहीं जानते। (7-8)

कदीम मदीना में दो किस्म के मुसलमान थे। एक मुहाजिर दूसरे अंसार। मुहाजिरीन मक्का से बेवतन होकर आए थे। उनका सबसे बड़ा जाहिरी सहारा मकामी मुसलमान (अंसार) थे। इस बिना पर दुनियापरस्त लोगों को मुहाजिर बेइज्जत दिखाई देते थे और अंसार उनकी नज़र में बाइज्जत लोग थे। यहां तक कि एक मैके पर अबुल्लाह बिन उबई ने साफ तौर पर कह दिया कि इन मुहाजिरीन की हकीकत क्या है। अगर हम इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दें तो दुनिया में कहीं इन्हें ठिकाना न मिले।

इस किस्म के अफ़ज उसी शख्स की ज़बान से निकल सकते हैं जो इस हकीकत से बेख़बर हो कि इस दुनिया में जो कुछ है सब अल्लाह का है। वही जिसे चाहे दे और वही जिससे चाहे छीन ले।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۖ وَأَنْفِقُوا مِنْ ثَمَرِ ثَمَرِكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ ۖ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۖ فَأَصَدَّقَ ۚ وَأَكُن مِّنَ الصَّالِحِينَ ③ وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۚ

सूरह-64. अत-तगाबुन

1447

पारा 28

وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग्राफिल न करने पाएं, और जो ऐसा करेगा तो वही घाटे में पड़ने वाले लोग हैं। और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से खर्च करो इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए, फिर वह कहे कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे कुछ और मोहलत क्यों न दी कि मैं सदाका (दान) करता और नेक लोगों में शामिल हो जाता। और अल्लाह हरगिज किसी जान को मोहलत नहीं देता जबकि उसकी मीआद (नियत समय) आ जाए, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (9-11)

हर आदमी के लिए सबसे बड़ा मसला आखिरत का मसला है। मगर माल और औलाद इंसान को इस सबसे बड़े मसले से ग्राफिल कर देते हैं। इंसान को जानना चाहिए कि माल और औलाद मक्सद नहीं बल्कि जरिया हैं। वे इसलिए किसी को दिए जाते हैं कि वह उन्हें अल्लाह के काम में लगाए। वह उन्हें अपनी आखिरत बनाने में इस्तेमाल करे। मगर नादान आदमी उन्हें बजाते खुद मक्सूद (लक्ष्य) समझ लेता है। ऐसे लोग जब अपने आखिरी अंजाम को पहुंचेंगे तो वहां उनके लिए हसरत व अफसोस के सिवा और कुछ न होगा।

سُورَةُ التَّغْوِيٰۙتِ ۝ اٰیَةُ الْاٰخِرَةِ ۝ وَفِي الْاٰخِرَةِ ۝
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
يَسْتَخِرُ اللّٰهُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۚ لَهٗ الْمُلْكُ وَلَهٗ الْحَمْدُ ۚ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝
هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ کَافِرٌ وَّ مِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِیْرٌ ۝
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوْرَكُمْ ۚ وَاِلَیْهِ الْمَصِیْرُ ۝
یَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَیَعْلَمُ مَا تُسْرُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِیْمٌ بِذٰتِ الصُّدُوْرِ ۝

आयतें-18

सूरह-64. अत-तगाबुन

रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
अल्लाह की तस्वीह कर रही है हर चीज जो आसमानों में है और हर चीज जो जमीन

पारा 28

1448

सूरह-64. अत-तगाबुन

में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज पर कादिर है। वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कोई मुंकिर है और कोई मोमिन, और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। उसने आसमानों और जमीन को ठीक तौर पर पैदा किया और उसने तुम्हारी सूरत बनाई तो निहायत अच्छी सूरत बनाई, और उसी की तरफ है लौटना। वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। और अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है। (1-4)

‘कायनात अल्लाह की तस्वीह कर रही है’ का मतलब यह है कि अल्लाह ने जिस हकीकत को कुरआन में खोला है, कायनात सरापा उसकी तस्वीह (पुष्टि) बनी हुई है, वह जबानेहाल से हम्द व सताइश (प्रशस्ति) की हद तक इसकी तारीफ कर रही है। इस दोतरफा एलान के बावजूद जो लोग मोमिन न बनें उन्हें इसके बाद तीसरे एलान का इंतजार करना चाहिए जबकि तमाम लोग खुदा के यहां जमा किए जाएंगे ताकि खुद मालिके कायनात की जबान से अपने बारे में आखिरी फैसले को सुनें।

اَلَمْ یَاۤیُّکُمْ نَبُۤؤُا الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا مِنْ قَبْلُ فَاَفۡوَا وَبَالَ اَمْرِہُمۡ وَلَہُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ ۝
ذٰلِکَ بِاَنۡہٗ کَانَتۡ تَاۡتِیَہُمۡ رُسُلُہُمۡ بِالْبَیِّنٰتِ فَقَالُوۡۤا اَبَشِّرۡنَا بِہٖۤذَا وَنَا فَاکْفُرُوۡا وَتَوَلَّوۡۤا وَاسْتَغۡنٰی اللّٰهُ وَاللّٰهُ غَفِیۡرٌ حَمِیۡدٌ ۝

क्या तुम्हें उन लोगों की खबर नहीं पहुंची जिन्होंने इससे पहले इंकार किया, फिर उन्होंने अपने किए का ववाल चखा और उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल खुली दलीलों के साथ आए, तो उन्होंने कहा कि क्या इंसान हमारी रहनुमाई करेंगे। पस उन्होंने इंकार किया और मुंह फेर लिया, और अल्लाह उनसे बेपरवाह हो गया, और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफ वाला है। (5-6)

कदीम जमाने में रसूलों के जरिए जो तारीख बनी वह इंसानों के लिए मुस्तकिल इबरत (सीख) का नमूना है। मसलन आद और समूद और अहले मदयन और कौमे लुत वगैरह के दर्मियान पैगम्बर आए। इन पैगम्बरों के पास अपनी सदाकत बताने के लिए कोई गैर बशरी (इंसानी) कमाल न था, बल्कि सिर्फ दलील थी। दलील की सतह पर इंकार ने उन कौमों को अजाब का मुस्तहिक बना दिया। इससे मालूम हुआ कि इस दुनिया में आदमी का इस्तेहान यह है कि वह दलील की सतह पर हक को पहचाने। जो शख्स दलील की सतह पर हक को पहचानने में नाकाम रहे वह हमेशा के लिए हक से महरूम होकर रह जाएगा।

رَعِمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّيُنَّ بِمَا
عَمِلْتُمْ وَذَلِكِ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ فَأَمُنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورَ الَّذِي أَنْزَلْنَا
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكِ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۝
وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ ذَلِكِ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝

النَّارِ

इंकार करने वालों ने दावा किया कि वे हरगिज दुबारा उठाए न जाएंगे, कहो कि हां, मेरे रब की कसम तुम जरूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया है, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। पस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस नूर (प्रकाश) पर जो हमने उतारा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। जिस दिन वह तुम सबको एक जमा होने के दिन जमा करेगा, यही दिन हार जीत का दिन होगा। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान लाया होगा और उसने नेक अमल किया होगा, अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे हमेशा उनमें रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही आग वाले हैं, उसमें हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है। (7-10)

लोग दुनिया को हार जीत (तगाबुन) की जगह समझते हैं। किसी शख्स को यहां कामयाबी मिल जाए तो वह खुश होता है। और जो शख्स यहां नाकामी से दो चार हो वह लोगों की नजर में हकीर (तुच्छ) बनकर रह जाता है। मगर हकीकत यह है कि इस दुनिया की हार भी बेक़ीमत है और यहां की जीत भी बेक़ीमत।

हार जीत का अस्त मकाम आखिरत (परलोक) है। हारने वाला वह है जो आखिरत में हारे और जीतने वाला वह है जो आखिरत में जीते। और वहां की हार जीत का मेयार बिल्कुल मुज्जलिफ है। दुनिया में हार जीत जाहिरी मादिदयात (पदार्थों) की बुनियाद पर होती है। और आखिरत की हार जीत खुदाई अख्ताकियात की बुनियाद पर होगी। उस वक्त देखने वाले यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि यहां सारा मामला बिल्कुल बदल गया है। जिस पाने को लोग पाना समझ रहे थे वह दरअस्त खोना था, और जिस खोने को लोगों ने खोना समझ रखा था वही दरअस्त वह चीज थी जिसे पाना कहा जाए। उसी दिन की हार, हार है और उसी दिन की जीत, जीत।

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۖ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝
जो मुसीबत भी आती है अल्लाह के इज्ज (अनुज्ञा) से आती है। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उसके दिल को राह दिखाता है, और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। और तुम अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम एराज (उपेक्षा) करोगे तो हमारे रसूल पर बस साफ-साफ पहुंचा देना है। अल्लाह, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11-13)

कोई मुसीबत अपने आप नहीं आती, हर मुसीबत खुदा की तरफ से आती है। और इसलिए आती है कि उसके जरिए से इंसान को हिदायत अता की जाए। मुसीबत आदमी के दिल को नर्म करती है। और उसकी सोई हुई नपिसयात में हलचल पैदा करती है। मुसीबत के झटके आदमी के जेहन को जगाने का काम करते हैं। अगर आदमी अपने आपको मंफ़ी रद्देअमल (नकारात्मक प्रतिक्रिया) से बचाए तो मुसीबत उसके लिए बेहतररीन रब्बानी मुअल्लिम (शिक्षक) बन जाएगी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوٌّ لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۖ وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۖ وَاللَّهُ عِنْدَ أَجْرٍ عَظِيمٍ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنْتَقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ وَمَنْ يُؤَقِّ شَرَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
إِنْ تَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ۝
عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

عَلِمُ

ऐ ईमान वालो, तुम्हारी कुछ बीवियां और कुछ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, पस तुम उनसे होशियार रहो, और अगर तुम माफ कर दो और दसगुन करो और बख्श दो तो अल्लाह बख्शने वाला, रहम करने वाला है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आजमाइश की चीज हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है। पस तुम अल्लाह से डरो जहां तक हो सके। और सुनो और मानो और खर्च करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो शख्स दिल की तंगी से महफूज रहा तो ऐसे ही लोग फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। अगर तुम

सूरह-65. अत-तलाक

1451

पारा 28

अल्लाह को अच्छा कर्ज दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख्श देगा, और अल्लाह कद्रदा है, बुर्दवार (उदार) है। ग़ायब और हाज़िर को जानने वाला है, ज़बरदस्त है, हकीम (तत्वदर्शी) है। (14-18)

इंसान को सबसे ज्यादा तअल्लुक अपनी औलाद से होता है। आदमी हर दूसरे मामले में उसूल की बातें करता है मगर जब अपनी औलाद का मामला आता है तो वह बेउसूल बन जाता है। इसीलिए हदीस में इर्शाद हुआ है कि औलाद किसी आदमी को बुजदिली और बुख़ल (कंजूसी) पर मजबूर करने वाले हैं। इसी तरह एक और हदीस में इर्शाद हुआ है कि कियामत के दिन एक शख्स को लाया जाएगा, फिर कहा जाएगा कि इसके बीवी बच्चे इसकी नेकियां खा गए।

इंसान अपने बच्चों की खातिर अल्लाह की राह में खर्च नहीं करता। हालांकि अगर वह अल्लाह की राह में खर्च करे तो मुख़लिफ़ शक्तों में अल्लाह उसकी तरफ़ उससे बहुत ज्यादा लौटाएगा जितना उसने अल्लाह की राह में दिया था।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُبَيَّنَةٍ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِنْكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّكَّةَ لِلَّهِ ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۚ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝

आयतें-12

सूरह-65. अत-तलाक
(मदीना में नाज़िल हुई)

रुकूअ-2

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है।
ऐ पैग़म्बर, जब तुम लोग औरतों को तलाक दो तो उनकी इद्दत पर तलाक दो और इद्दत को गिनते रहो, और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है। उन औरतों को उनके

पारा 28

1452

सूरह-65. अत-तलाक

घरों से न निकालो और न वे खुद निकलें, इल्ला यह कि वे कोई खुली बेहयाई करें, और ये अल्लाह की हदें हैं, और जो शख्स अल्लाह की हदों से तज़ावुज़ करेगा तो उसने अपने ऊपर जुम किया, तुम नहीं जानते शायद अल्लाह इस तलाक के बाद कोई नई सूरत पैदा कर दे। फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुंच जाएं तो उन्हें या तो मारुफ़ (भली रीति) के मुताबिक रख लो या मारुफ़ के मुताबिक उन्हें छोड़ दो और अपने में से दो मोतबर गवाह कर लो और ठीक-ठीक अल्लाह के लिए गवाही दो। यह उस शख्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो। और जो शख्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए राह निकालेगा, और उसे वहां से रिक़ देगा जहां उसका गुमान भी न गया हो, और जो शख्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह उसके लिए काफी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है, अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक अंदाज़ ठहरा रखा है। (1-3)

इस्लाम में अपरिहार्य हालात के तौर पर तलाक की इजाज़त दी गई है। ताहम इसका एक तरीक़ेकार मुक़र्र किया गया है जो ख़ास वक़्ते के दर्मियान पूरा होता है। इस तरह तलाक के अमल को कुछ हदों का पाबंद कर दिया गया है। इन हदों का मक्सद यह है कि दोनों पक्षों के दर्मियान आखिर वक़्त तक वापसी का मौक़ा बाकी रहे। और तलाक का वाक़या किसी किस्म के ख़ानदानी या समाजी फ़साद का ज़रिया न बने। वही तलाक इस्लामी तलाक है जिसके पूरे अमल के दौरान ख़ुदा के ख़ौफ़ की रूह जारी व सारी रहे।

وَالَّذِي يَسْنَنَ مِنَ الْمَيْضِ مَنْ نَسَاكُمْ إِنْ ارْتَبْتُمْ فَعَدَّتْهُنَّ ثَلَاثُ أَشْهُرٍ وَالَّذِي لَمْ يَحْضَنْ وَأُولَاكَ الْأَحْكَالُ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ وَ مَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۚ ذَلِكُمْ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَكْفِرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ۝

और तुम्हारी औरतों में से जो हैज़ (मासिक धर्म) से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुम्हें शुबह हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है। और इसी तरह उनकी भी जिन्हें हैज़ नहीं आया, और हामिला (गर्भवती) औरतों की इद्दत उस हमल का पैदा हो जाना है, और जो शख्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी कर देगा। यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा है, और जो शख्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा अज़्र देगा। (4-5)

शरीअत ने तलाक और दूसरे मामलात में इंसान को कुछ जवाबित (नियमों) का पाबंद किया है। ये जवाबित बजाहिर इंसान की आजादना तबीअत के लिए रुकावट हैं। मगर

हकीकत के एतबार से ये नेमत हैं। इन जवाबित का यह फायदा है कि आदमी बहुत से ग़ैर जरूरी नुस्सानात से बच जाता है। मजिद यह कि इस दुनिया का निजाम इस तरह बना है कि यहां हर नुस्सान की तलाफी (क्षतिपूर्ति) किसी न किसी तरह की जाती है। ताहम यह तलाफी सिर्फ उस शख्स के हिस्से में आती है जो फितरत के दायरे से बाहर न जाए।

اسْكُنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ۚ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتٍ حَمِلٍ فَلْيُنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاَنْفِقُوْا لِهِنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاتَّبِعُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ تَعَاَسَرْتُمْ فَمَسْئِرُكُمْ لِاٰخَرٰى ۚ لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ۚ وَمَنْ قَدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِّمَّا اَلٰهُ اللّٰهُ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَا اَتٰهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۝

तुम उन औरतों को अपनी वुस्तत (हिसियत) के मुताबिक रहने का मकान दो जहां तुम रहते हो और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें तकलीफ न पहुंचाओ, और अगर वे हमल (गर्भ) वालीयां हों तो उन पर खर्च करो यहां तक कि उनका हमल पैदा हो जाए। फिर अगर वे तुम्हारे लिए दूध पिलाएं तो उनकी उजरत (पारिश्रमिक) उन्हें दो। और तुम आपस में एक दूसरे को नेकी सिखाओ। और अगर तुम आपस में जिद करो तो कोई और औरत दूध पिलाएगी। चाहिए कि वुस्तत वाला अपनी वुस्तत के मुताबिक खर्च करे और जिसकी आमदनी कम हो उसे चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसे दिया है उसमें से खर्च करे। अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता मगर उतना ही जितना उसे दिया है, अल्लाह सख्ती के बाद जल्द ही आसानी पैदा कर देता है। (6-7)

इस्लाम में यह मल्लूब है कि आदमी मामलात में फरीके सानी (दूसरे पक्ष) के साथ फराखदिली का तरीका इस्तिहार करे। वह सब्र के साथ खिलाफे मिजाज बातों को सहे। नागवारियों के बावजूद दूसरे का हक अदा करे। जब आदमी ऐसा करता है तो वह सिर्फ फरीके सानी के लिए अच्छा नहीं करता बल्कि वह खुद अपने लिए भी अच्छा करता है। इस तरह वह अपने अंदर हकीकतपसंदी का मिजाज पैदा करता है और हकीकतपसंदी का मिजाज बिलाशुबह इस दुनिया में कामयाबी का सबसे बड़ा जीना है।

وَكَايْنِ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَجَاسَبْنٰهَا حَسَابًا

شَدِيْدًا ۚ وَاَعَدَّ لَهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ۝ فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يَا اُولٰٓئِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ قَدْ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۚ وَمَنْ يُؤْمَرْ بِاللّٰهِ وَعَمَلٍ صٰلِحًا يُّدْخِلْهُ جَنَّٰتٍ تَجْرٰى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا اَبَدًا ۚ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۝

और बहुत सी बस्तियां हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के हुक्म से सरताबी (विमुखता) की, पस हमने उनका सख्त हिसाब किया और हमने उन्हें हौलनाक सजा दी। पस उन्होंने अपने किए का ववाल चखा और उनका अंजामकार खसारा (घाटा) हुआ। अल्लाह ने उनके लिए एक सख्त अजाब तैयार कर रखा है। पस अल्लाह से डरो, ऐ अक्ल वालो जो कि ईमान लाए हो। अल्लाह ने तुम्हारी तरफ एक नसीहत उतारी है, एक रसूल जो तुम्हें अल्लाह की खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाता है। ताकि उन लोगों को तारीकियों से रोशनी की तरफ निकाले जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान लाया और नेक अमल किया उसे वह ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उसे बहुत अच्छी रोजी दी। (8-11)

ताकि अहले ईमान को तारीकी से निकाल कर रोशनी में ले आए। इस मौके पर यह बात आइली (पारिवारिक) कानून के बारे में है। कदीम जमाने में सारी दुनिया में तवह्हुमात (अंधविश्वास) का गलबा था। तरह-तरह के तवह्हुमाती अकाइद ने मर्द और औरत के तअल्लुकात को ग़ैर फितरी बुनियादों पर कायम कर रखा था। कुरआन ने इन तवह्हुमातों को खत्म किया और दुबारा मर्द और औरत के तअल्लुकात को फितरत की बुनियाद पर कायम किया। इस इतिजाम के बाद भी जो लोग इस्लाही रास्ते को इस्तिहार न करें उनके लिए खुदा की दुनिया में घाटे के सिवा और कुछ नहीं।

'अक्ल वालो अल्लाह से डरो' का फिकरा बताता है कि तकवे का सरचश्मा (मूल स्रोत) अक्ल है। आदमी अपने अक्ल व शुऊर को काम में लाकर ही उस दर्जे को हासिल करता है जिसे शरीअत में तकवा (परहेजगारी, खोफे खुदा) कहा गया है।

اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِيَتْلُوْا اِنَّ اللّٰهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۚ وَاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

सूरह-66. अत-तहरीम

1455

पारा 28

अल्लाह ही है जिसने बनाए सात आसमान और उन्हीं की तरह जमीन भी। उनके अंदर उसका हुक्म उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है। और अल्लाह ने अपने इल्म से हर चीज का इहाता (आच्छादन) कर रखा है। (12)

‘व मिनल अरजि मिस-ल हुन’ से मुराद अगर सात जमीनें हैं तो इल्मुल अफलाक (आकाशीय विज्ञान) अभी तक इस तादाद को दरयाफ्त नहीं कर सका है। इंसानी मालूमात के मुताबिक, इस तहरीर (लेखन) के वक़्त तक मौजूदा जमीन सारी कायनात में एक इस्तिंसना (अपवाद) है। इसलिए यह अल्लाह को मालूम है कि इस आयत का वाकई मतलब क्या है।

‘ताकि तुम जानो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है।’ इससे मालूम होता है अल्लाह को इंसान से अस्लान जो चीज मल्लूब है वह ‘इल्म’ है, यानी जाते-खुदावंदी का शुऊर। कायनात का अजीम कारखाना इसलिए बनाया गया है कि इंसान उसके जरिए खालिक को पहचाने, वह उसके जरिए खुदा की बेपायां (असीम) कुस्त की मअस्फ़ा (अन्तर्ज्ञान) हासिल करे।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْخُبْرِ الْمُرْمَرِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبَعِي مَرْضَاتِ أَزْوَاجِكَ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ قَدْ فُوضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ إِيْمَانِكُمْ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝

आयतें-12

सूरह-66. अत-तहरीम

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ नबी तुम क्यों उस चीज को हराम करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, अपनी वीवियों की रिजामंदी चाहने के लिए, और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी कसमों का खोलना मुकर्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज है, और वह जानने वाला, हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

वीवियों के पैदा करदा कुछ अंदरूनी मसाइल की वजह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने घर में यह कसम खा ली कि मैं शहद नहीं खाऊंगा। मगर पैगम्बर का अमल उसकी उम्मत के लिए नमूना बन जाता है, इसलिए अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि आप शरई तरीके के मुताबिक कफ़्फ़रा (प्रयश्चित) अदा करके अपनी कसम को तोड़ दें। और शहद न खाने के अहद से अपने आपको आजाद कर लें। ताकि ऐसा न हो कि आइंदा आपके उम्मीती इसे तकवे का मेयार समझ कर शहद खाने से परहेज करने लगें।

पारा 28

1456

सूरह-66. अत-तहरीम

وَإِذَا سَأَرَ السَّيِّئُ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَاكَ هَذَا قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝ إِنَّ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۚ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝ عَلَى رَبِّهِ أَنْ يَبْدِلَهُ أَتْرَاجًا خَيْرًا مِمَّا تَكُنْ مُسْلِمًا ۚ مُؤْمِنًا قَنِتًا ۚ تَبَّتْ عِجْدَتُ سَيْحَتِ تَبَّتْ ۚ

और जब नबी ने अपनी किसी बीवी से एक बात छुपा कर कही, तो जब उसने उसे बता दिया और अल्लाह ने नबी को उससे आगाह कर दिया तो नबी ने कुछ बात बताई और कुछ टाल दी, फिर जब नबी ने उसे यह बात बताई तो उसने कहा कि आपको किसने इसकी ख़बर दी। नबी ने कहा कि मुझे बताया जानने वाले ने, बाख़बर ने। अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ रुजूअ करो तो तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं, और अगर तुम दोनों नबी के मुक़बले में कार्खाइयां करोगी तो उसका रफ़ीक (साथी) अल्लाह है और जिब्रील और सालेह (नेक) अहले ईमान और इनके अलावा फरिश्ते उसके मददगार हैं। अगर नबी तुम सबको तलाक दे दे तो उसका खब तुम्हारे बदले में तुमसे बेहतर वीवियां उसे दे दे, मुस्लिमा, बाईमान, फरमांबरदार, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोजेदार, विधवा और कुंवारी। (3-5)

मज्कूरा मामले में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ अजवाज (पत्नियों) ने आपके घर में जो पेचीदगी पैदा की थी, उस पर मुतनब्वह करने के लिए आपकी अजवाज से अल्टीमेटम के अंदाज में कलाम किया गया। इससे जिंदगी के मामलात में औरतों की अहमियत मालूम होती है। हकीकत यह है कि औरतें अगर सही मअनों में अपने शोहरों कीसिफ़ा (सहयोग) करें तो वे उनका ‘आधा बेहतर’ बन जाती हैं। और अगर वे सच्ची रफ़ीक साबित न हों तो वे एक वामक्सद इंसान के पूरे मंसूबे को ख़ाक में मिला सकती हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

सूरह-66. अत-तहरीम

1457

पारा 28

ऐ ईमान वालो अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईश्वर आदमी और पत्थर होंगे, उस पर तुंडखू (कठोर) और जबरदस्त फरिश्ते मुक़र्र हैं, अल्लाह उन्हें जो हुक्म दे उसमें वे उसकी नाफरमानी नहीं करते, और वे वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। ऐ लोगो जिन्होंने इंकार किया, आज उज़्र न पेश करो, तुम वही बदले में पा रहे हो जो तुम करते थे। (6-7)

मौजूदा दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि आदमी एक चीज को हक समझता है। मगर बीवी बच्चों से बड़ा हुआ तअल्लुक उसे मजबूर करता है कि वह हक के तरीके को छोड़ दे और वही करे जो उसके बीवी-बच्चे चाहते हैं। मगर यह जबरदस्त भूल है। इंसान को याद रखना चाहिए कि आज जिन बच्चों की रियायत करने में वह इस हद तक जाता है कि हक की रियायत करना भूल जाता है, वे बच्चे अपनी इस रविश के नतीजे में कल ऐसे जहन्नमी कारिंदों के हवाले किए जाएंगे जो मशीनी इंसान (Robot) की तरह बेरहम होंगे और उनके साथ किसी किस्म की कोई रियायत नहीं करेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَن تُكْفَرُوا عَنْكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَيدخلكم جنت تجري من تحتها الأنهار يوم لا يحزى الله الشقي
والذين آمنوا معاً نوزهم يسعى بين أيديهم وبأيمانهم يقولون ربنا
آتمم لنا نورنا واغفر لنا إناك على كل شيء قدير

ऐ ईमान वालो, अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें ऐसे बागों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को रुसवा नहीं करेगा। उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाईं तरफ दौड़ रही होगी, वे कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारी रोशनी को कामिल कर दे और हमारी मफिस्त फरमा, बेशक तू हर चीज पर क़दिर है। (8)

मौजूदा दुनिया में इंसान को आजमाइशी हालात में रखा गया है। इसलिए इंसान से गलतियां भी होती हैं। उसकी तलाफी के लिए तौबा है। यानी अल्लाह की तरफ रुजूअ करना। तौबा की अस्ल हकीकत शर्मिंदगी है। आदमी को अगर वाक्यतन अपनी गलती का एहसास हो तो वह सख्त शर्मिंदगी होगा और उसकी शर्मिंदगी उसे मजबूर करेगी कि वह आईदा ऐसा फेअल न करे। चुनांचे हदीस में आया है कि शर्मिंदगी ही तौबा है। एक सहाबी ने कहा है कि सच्ची तौबा यह है कि आदमी रुजूअ करे और फिर उस फेअल को न दोहराए।

तौबा वह है जो सच्ची तौबा (तौबतुन नसूह) हो। महज अल्फ़ज दोहरा देने का नाम

पारा 28

1458

सूरह-66. अत-तहरीम

तौबा नहीं। हजरत अली ने एक शख्स को देखा कि वह अपनी किसी गलती के बाद जबान से तौबा तौबा कह रहा है। आपने फरमाया कि यह झूठे लोगों की तौबा है। सच्ची तौबा आखिरत की रोशनी है और झूठी तौबा आखिरत का अंधेरा।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَا أُولَٰئِكَ جَهَنَّمَ
وَيَسَّ الْمَصِيدُ ۝ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَاتٍ نُوفِرْنَ وَأَمْرَاتٍ
لُّوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَكَانَتْهُمَا فَلَئِمَ غِيَابًا
عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّٰخِلِينَ ۝

ऐ नबी मुक़िरो और मुनाफ़िकों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है। अल्लाह मुक़िरो के लिए मिसाल बयान करता है नूह की बीवी की और लूत की बीवी की, दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ ख़ियानत की तो वे दोनों अल्लाह के मुकाबले में उनके कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ। (9-10)

‘मुनाफ़िकीन के साथ जिहाद करो’ का मतलब यह है कि मुनाफ़िकीन का सख़्त अहतसाब करो। यह एक दाइमी हुक्म है। मुआशिरों के बड़ों और जिम्मेदारों को चाहिए कि वे मुआशिरों के अफ़राद पर मुस्तक़िल नजर रखें। और जब भी कोई मुसलमान ग़लत रविश इख़्तियार करे तो उसे रोकने की वे हर मुमकिन कोशिश करें जो उनके इम्कान में है।

ख़ुदा के यहां आदमी का सिर्फ अपना अमल काम आएगा यहां तक कि बुजुर्गों से निस्वत या सालिहीन से रिश्तेदारी भी वहां किसी के कुछ काम आने वाली नहीं। हजरत नूह और हजरत लूत ख़ुदा के पैग़म्बर थे। मगर उनकी बीवियां दुश्मनाने हक से भी क़त्बी तअल्लुक का रिश्ता कायम किए हुए थीं। इसका नतीजा यह हुआ कि पैग़म्बर की बीवी होने के बावजूद वे दोषग़्त्र की मुस्तहक़ करार पाईं।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَاتٍ فَرَعَوْنَ ۚ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي
عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَانْجِنِي مِنْ الْقَوْمِ
الظَّالِمِينَ ۝ وَمَرْيَمَ ابْنَتْ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَدَتْ فَرجَهَا فَفَتَنَّا فِيهِ مِنْ
رُوحِنَا وَصَدَقَتْ بِكَلِمَتِ رَبِّهَا وَكُنِيَ وَكَانَتْ مِنَ الْقَنِينَ ۝

और अल्लाह ईमान वालों के लिए मिसाल बयान करता है फिरऔन की बीवी की,

सूरह-67. अल-मुल्क

1459

पारा 29

जबकि उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फिरौन और उसके अमल से बचा ले और मुझे जालिम कौम से नजात दे। और इमरान की बेटी मरयम, जिसने अपनी अस्मत (सतीत्व) की हिफाजत की, फिर हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और उसने अपने रब के कलिमात की और उसकी किताबों की तस्दीक की, और वह फरमावरदारों में से थी। (11-12)

फिरौन एक मुक़िर और जालिम शख्स था। मगर उसकी बीवी आसिया बिनत मुजाहिम ईमानदार और बाअमल ख़ातून थी। बीवी ने जब अपने आपको सही रविश पर कायम रखा तो शोहर की गलत रविश उसे कुछ नुकसान न पहुंचा सकी। शोहर जहन्नम में दाखिल किया गया और बीवी को जन्नत के बागों में जगह मिली।

अहसनत फरजहा दरअस्त किनाया (संकेत) है। इसका मतलब यह है कि उन्होंने अपनी अस्मत (सतीत्व) को महफूज रखा। बचपन से जवानी तक वह पूरी तरह बेदाग रहीं। चुनांचे अल्लाह ने उन्हें मोजिजाती पैगम्बर की पैदाइश के लिए चुना। कुछ रिवायात के मुताबिक, जिब्रील फरिश्ते ने उनके गिरेबान में फूंक मारी, जिससे इस्तकारे हमल (गर्भ का ठहरना) हुआ और फिर हजरत मसीह अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَفِيهَا ثَلَاثُونَ آيَاتٌ وَفِيهَا تَرْكُوعٌ وَفِيهَا تَسْلِيمٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ۝ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۚ مَا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِن تَفَوُّتٍ ۚ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ۚ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ۝

आयतें-30

सूरह-67. अल-मुल्क

रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महारबान, निहायत रहम वाला है। बड़ा बाबरकत है वह जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज पर कादिर है। जिसने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया ताकि तुम्हें जांचे कि तुम में से कौन अच्छा काम करता है, और वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। जिसने बनाए सात आसमान ऊपर तले,

पारा 29

1460

सूरह-67. अल-मुल्क

तुम रहमान के बनाने में कोई ख़लल (असंगति) नहीं देखोगे, फिर निगाह डाल कर देख लो, कहीं तुम्हें कोई ख़लल नजर आता है। फिर बार-बार निगाह डाल कर देखो, निगाह नाकाम थक कर तुम्हारी तरफ वापस आ जाएगी। (1-4)

जब एक शख्स मौजूदा दुनिया का मुतालआ करता है तो उसे यहाँ एक तजाद (असंगति) नजर आता है। इंसान के सिवा जो बक़िया कायनात है वह इतिहाई हद तक मुत्ज़म और कामिल है। उसमें कहीं कोई नक्स नजर नहीं आता। इसके बरअक्स इंसानी ज़िंदगी में जुम व फ़साद नजर आता है। इसकी वजह इंसान की अलाहदा (पृथक) नौइयत है। इंसान इस दुनिया में हालते इस्तेहान में है। इस्तेहान लाजिमी तौर पर अमल की आजादी चाहता है। इसी अमल की आजादी ने इंसान को यह मौज़ दिया है कि वह दुनिया में जुम व फ़साद कर सके।

इंसानी दुनिया का जुम इंसानी आजादी की कीमत है। अगर ये हालात न हों तो उन कीमती इंसानों का इंटरखाब कैसे किया जाएगा जिन्होंने जुम के मौके पाते हुए जुम नहीं किया। जिन्होंने सरकशी की ताकत रखने के बावजूद अपने आपको सरकशी से बचाया।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ۚ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبُئْسَ الْمَصِيرُ ۚ إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ۚ تَكَادُ تَبْكُرُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۚ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ ۚ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۚ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۚ فَاعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝

और हमने करीब के आसमान को चरागों से सजाया है। और हमने उन्हें शैतानों के मारने का जरिया बनाया है। और हमने उनके लिए दोज़ख का अजाब तैयार कर रखा है। और जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया, उनके लिए जहन्नम का अजाब है। और वह बुरा ठिकाना है। जब वे उसमें डाले जाएंगे, वे उसका दहाड़ना सुनेंगे और वह जोश मारती होगी, मालूम होगा कि वह गुस्से में फट पड़ेगी। जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा, उसके दारोगा उससे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। वे कहेंगे कि हां, हमारे पास डराने वाला आया। फिर हमने उसे झुटला दिया और हमने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो। और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोज़ख वालों में से न होते। पस वे अपने गुनाह का इकरार करेंगे, पस लानत हो दोज़ख वालों पर। (5-11)

कुरआन में जगह-जगह जहन्नम का नक्शा खींचा गया है। यह जहन्नम अगरचे आज इंसान के लिए नाकाबिले मुशाहिदा (अ-अवलोकनीय) है। मगर वह कायनात की मअनवियत में बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर नजर आती है। हकीकत यह है कि अगर आखिरत में बुरे लोगों की पकड़ न होने वाली हो तो मौजूदा कायनात की सारी मअनवियत नाकाबिले तौजीह (औचित्यहीन) होकर रह जाएगी।

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَأَسِرُوا قَوْلَكُمْ
وَاجْهَرُوا بِهِ ۚ إِنَّكُمْ عَلَيْكُمْ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ
اللطيفُ الخبيرُ ۝

जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं, उनके लिए मफ़िरत (क्षमा) और बड़ा अज़्र (प्रतिफल) है। और तुम अपनी बात छुपाकर कहो या पुकार कर कहो, वह दिलों तक की बातों को जानता है। क्या वह न जानेगा जिसने पैदा किया है, और वह बारीकबी (सूक्ष्मदर्शी) है, ख़बर रखने वाला है। (12-14)

आखिरत के अजाब का मौजूदा दुनिया में नाकाबिले मुशाहिदा (अ-अवलोकनीय) होना ऐन खुदाई मंसूबे के मुताबिक है। खुदा को उन इंसानों का इंतखाब करना है जो बिना देखे उसकी अज्मत को मानें, जो बिना देखे उसके फरमांबरदार बन जाएं। और ऐसे लोगों का अंदाजा इसके बग़ैर नहीं हो सकता कि लोगों के उखरवी (परलोक के) अंजाम को उनकी निगाहों से ओझल रखा जाए, ताकि आदमी जो कुछ करे अपने आजाद इरादे के तहत करे न कि मजबूराना हुक्म के तहत।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ ۚ وَإِلَيْهِ
النُّشُورُ ۝ ءَامِنْتُمْ مَّن فِي السَّمَاءِ ۚ إِنَّ يَخْشِفُ بِكُمْ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ۝ أَمْ
أَمِنْتُمْ مَّن فِي السَّمَاءِ ۚ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرٍ ۝
وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝

वही है जिसने जमीन को तुम्हारे लिए पस्त वशीभूत कर दिया तो तुम उसके रास्तों में चलो और उसके रिक में से खाओ और उसी की तरफ है उठना। क्या तुम उससे बेख़ौफ हो गए जो आसमान में है कि वह तुम्हें जमीन में धंसा दे, फिर वह लरजने लगे। क्या तुम उससे जो आसमान में है बेख़ौफ हो गए कि वह तुम पर पथराव करने वाली हवा भेज दे, फिर तुम जान लो कि कैसा है मेरा डराना। और उन्होंने झुठलाया जो उनसे पहले थे। तो कैसा हुआ मेरा इंकार। (15-18)

जमीन पर हर चीज निहयत तवाज़ु (संतुलन) की हालत में है। इसी तवाज़ु ने जमीन को इंसान के लिए कबिले रिहाइश बना रखा है। इस तवाज़ु में अगर मामूली सा भी फर्क पड़ जाए तो इंसान की जिंदगी बर्बाद होकर रह जाए। जो मुतवाज़ुन (संतुलित) दुनिया हमें हासिल है उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करना, और तवाज़ुन टूटने की सूरत में जो तबाहक़ुन हालात पैदा हो सकते हैं उसके लिए अल्लाह से पनाह मांगना, यही वह चीज है जो इंसान से अल्लाह तआला को मल्बूब है।

وَلَكُمْ يَوْمَ الْآخِرِ فَوْزٌ مِّمَّ صَلَّيْتُمْ وَيَقِيضُنَّ ۚ مَا مَسْكُحُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ إِنَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ بَصِيرٌ ۝ أَفَمَنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصَرُّكُمْ مِّنْ دُونِ الرَّحْمَنِ
إِنَّ الْكَافِرُونَ لَا فِي عُرُوشِهِ ۚ أَفَمَنْ هَذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَلْ
لَّجَوْنَافِي غُتُوٍّ وَعَنَفُوْهُ ۝

क्या वे परियों को अपने ऊपर नहीं देखते पर फैलाए हुए और वे उन्हें समेट भी लेते हैं। रहमान के सिवा कोई नहीं जो उन्हें थामे हुए हो, बेशक वह हर चीज को देख रहा है। आखिर कौन है कि वह तुम्हारा लश्कर बनकर रहमान के मुकाबले में तुम्हारी मदद कर सके, इंकार करने वाले धोखे में पड़े हुए हैं। आखिर कौन है जो तुम्हें रोजी दे अगर अल्लाह अपनी रोजी रोक ले, बल्कि वे सरशकी पर और बिदकने पर अड़ गए हैं। (19-21)

पक्षिका फज़ में उड़ना, रिक का जमीन से निकलना और इस तरह के दूसरे वायेंगात इतिहाई हैरतअंगेज हैं। आदमी इन वाकेयात पर ग़ौर करे तो वह खुदाई एहसास में गुम हो जाए। मगर इंसान इतना ग़ाफ़िल है कि वह एक ऐसी दुनिया में खुदा से सरकशी करता है जहां उसके चारों तरफ फैली हुई चीजें उसे सिर्फ खुदा की इताअत का सबक दे रही हैं।

أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَى وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝
قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝

क्या जो शख्स आँधे मुंह चल रहा है वह ज्यादा सही राह पाने वाला है या वह शख्स जो सीधा एक सीधी राह पर चल रहा है। कहो कि वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आंख और दिल बनाए। तुम लोग बहुत कम शुक्र अदा करते हो। कहो कि वही है जिसने तुम्हें जमीन में फैलाया और तुम उसी की तरफ इकट्ठा

सूरह-67. अल-मुल्क
किए जाओगे। (22-24)

1463

पारा 29

इंसान को सुनने और देखने और सोचने की सलाहियतें दी गई हैं। अब कोई इंसान वह है कि जो कुछ सुना उसी पर चल पड़ा, जो देखा उसे बस उसके जाहिर के एतबार से मान लिया। जो बात एक बार जेहन में आ गई उसी पर जम गया। यह इंसान वह है जो जानवर की तरह सर झुकाए हुए बस एक डगर पर चला जा रहा है।

दूसरा इंसान वह है जो सुनी हुई बात की तहकीक करे। जो देखी हुई बात को मजिद ज्यादा सेहत के साथ जानने की कोशिश करे। जो अपने जाती खोल से बाहर निकल कर सच्चाई को दरयाफ्त करे। यह दूसरा इंसान वह है जो सीधा होकर एक हमवार रास्ते पर चला जा रहा है। समअ व बसर व फुवाद (सुनना, देखना, सोचना) की सलाहियत आदमी को इसलिए दी गई है कि वह हक को पहचाने, न यह कि वह अंधे बहरे की तरह उससे बेखबर रहे।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۚ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدْعُونَ ۚ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن أَهْلَكْنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا أَلَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابِ الْبُيُوتِ ۚ قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أُمَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۚ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن أَصْبَحَ مَاوَكُمْ غُورًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِهِاءٌ مَّوعِينَ ۚ

और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि यह इल्म अल्लाह के पास है और मैं सिर्फ खुला हुआ डराने वाला हूं। पस जब वे उसे करीब आता हुआ देखेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएंगे जिन्होंने इंकार किया, और कहा जाएगा कि यही है वह चीज जिसे तुम मांगा करते थे। कहो कि अगर अल्लाह मुझे हलाक कर दे और उन लोगों को जो मेरे साथ हैं, या हम पर रहम फरमाए तो मुंकिरों को दर्दनाक अजाब से कौन बचाएगा। कहो, वह रहमान है, हम उस पर ईमान लाए और उसी पर हमने भरोसा किया। पस अनकरीब तुम जान लोगे कि खुली हुई गुमराही में कौन है। कहो कि बताओ, अगर तुम्हारा पानी नीचे उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए साफ पानी ले आए। (25-30)

मुखातब जब दलील से न माने तो दाओी यकीन का कलिमा बोलकर उसके अंदरून को झिंझोड़ता है। ये आयतें गोया इसी किस्म के यकीन के कलिमात हैं। आदमी के अंदर अगर

पारा 29

1464

सूरह-68. अल-कलाम

कुछ भी एहसास जिंदा हो तो यह आखिरी कलिमात उसे तड़पा देते हैं। मगर जिस शख्स का एहसास बिल्कुल बुझ चुका हो वह किसी तदबीर से भी नहीं जागता। वह 'पानी' की कीमत को सिर्फ उस वक्त तस्लीम करता है जबकि उसे पानी से महरूम करके सहारा (रेगिस्तान) में डाल दिया गया हो।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۚ وَمِنَ الْغُفَرِ ۚ ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ۚ مَا أَنْتَ بِمُعْجِزٍ ۚ وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مُمْنُونٍ ۚ وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۚ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ۚ بِأَبْصَارِكُمُ الْمُبْصِرُونَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۚ

आयतें-52

सूरह-68. अल-कलाम

रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

नून०। कसम है कलाम की और जो कुछ लोग लिखते हैं। तुम अपने ख के फल से दीवाने नहीं हो। और बेशक तुम्हारे लिए अज्र (प्रतिफल) है कभी ख़त्म न होने वाला। और बेशक तुम एक आला अख़्बाक (उच्च चरित्र-आचरण) पर हो। पस अनकरीब तुम देखोगे और वे भी देखेंगे, कि तुम में से किसे जुनून था। तुम्हारा ख ही खूब जानता है, जो उसकी राह से भटका हुआ है, और वह राह पर चलने वालों को भी खूब जानता है। (1-7)

आला अख़्बाक से मुराद वह अख़्बाक है जबकि आदमी दूसरों के रवैये से बुलन्द होकर अमल करे। उसका तरीका यह न हो कि बुराई करने वालों के साथ बुराई और भलाई करने वालों के साथ भलाई, बल्कि वह हर एक के साथ भलाई करे, चाहे दूसरे उसके साथ बुराई ही क्यों न कर रहे हों। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अख़्बाक यही दूसरा अख़्बाक था। इस किस्म का अख़्बाक साबित करता है कि आप एक बाउसूल इंसान थे। आपकी शख्सियत हालात की पैदावार न थी। बल्कि खुद अपने आला उसूलों की पैदावार थी। आपका यह आला अख़्बाक आपके इस दावे के ऐन मुताबिक है कि मैं खुदा का रसूल हूं।

वल कल-मि वमा यसतुरून० से मुराद तारीखी रिकॉर्ड है। तारीख की शकल में इंसानी याददाश्त का जो रिकॉर्ड जमा हुआ है उसमें कुरआन एक इस्तसनाई (अद्वितीय) किताब है। और साहिबे कुरआन एक इस्तसनाई शख्सियत। इस इस्तसना की इसके सिवा और कोई तौजीह नहीं की जा सकती कि कुरआन को खुदा की किताब माना जाए। और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खुदा का पैगम्बर।

فَلَا تُطِيعِ الْمُكَذِّبِينَ ۝ وَذُوا الْوُدْهِنِ فَيَذْهَبُونَ ۝ وَلَا تُطِيعِ كُلَّ
حَلَّافٍ مَّهِينٍ ۝ هَمَزَ مَشَاءَ بِمِيمٍ ۝ مَكَاءَ الْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَيْمٍ ۝ عَتَلٍ
بَعْدَ ذَلِكَ زَنِيمٍ ۝ أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ۝ إِذْ تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ سَنَسِفُهُ عَلَى الْخُرُومِ ۝

पस तुम इन झुठलाने वालों का कहना न मानो। वे चाहते हैं कि तुम नर्म पड़ जाओ तो वे भी नर्म पड़ जाएं। और तुम ऐसे शख्स का कहना न मानो जो बहुत कसमें खाने वाला हो, बेवकअत (हीन) हो, ताना देने वाला हो, चुगली लगाता फिरता हो, नेक काम से रोकने वाला हो, हद से गुजर जाने वाला हो, हक मारने वाला हो, संगदिल हो, साथ ही बेनस्व (अधम) हो। इस सबब से कि वह माल व औलाद वाला है। जब उसे हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं। अनकरीब हम उसकी नाक पर दाग लगाएंगे। (8-16)

‘झुठलाने वालों का कहना न मानो’ का मतलब यह है कि झुठलाने वाले इस काबिल नहीं कि उनका कहना माना जाए। एक तरफ हक का अलमबरदार (ध्वजावाहक) है जो दलील पर खड़ा हुआ है, जिसके कौल व फेअल में कोई तजाद (अन्तर्विरोध) नहीं। दूसरी तरफ उसके मुखालिफीन हैं जिनके पास झूठी बातों और पस्त किरदार के सिवा और कोई सरमाया नहीं। दाओए हक का एतमाद सदाकत पर है और उसके मुखालिफीन का एतमाद अपनी माददी हैसियत पर। हक का दाओी उसूल का पाबंद है। इसके बरअक्स उसके मुखालिफीन के सामने कोई उसूल नहीं। वे कभी एक बात कहते हैं और कभी दूसरी बात। अगर किसी शख्स के अंदर अकल हो तो यही फर्क यह बताने के लिए काफी है कि कौन शख्स हक पर है और कौन शख्स नाहक पर।

إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَبُوا لِيَصْرُمُوهَا مُصْبِحِينَ ۝ وَ
لَا يَسْتَشْنُونَ ۝ فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ۝ فَأَصْبَحَتْ
كَالْظَّرِيمِ ۝ فَتَنَادُوا مُصْبِحِينَ ۝ أَنْ اْعُدُوا عَلٰى حَرْثِكُمْ إِن كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝ فَانطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ۝ أَنْ لَا يَدْخُلَهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ
مُسْكِينٌ ۝ وَاعْدُوا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُونَ ۝ بَلْ
نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۝ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ۝ قَالُوا
سُبْحَنَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلََاوُمُونَ ۝

قَالُوا يٰوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ عَسَىٰ رَبُّنَا أَنْ يُبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا
رَاغِبُونَ ۝ كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۝ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

हमने उन्हें आजमाइश (परीक्षा) में डाला है जिस तरह हमने बाग वालों को आजमाइश में डाला था। जबकि उन्होंने कसम खाई कि वे सुबह सवेरे जरूर उसका फल तोड़ लेंगे। और उन्होंने इंशाअल्लाह नहीं कहा। पस उस बाग पर तेरे रब की तरफ से एक फिरने वाला फिर गया और वे सो रहे थे। फिर सुबह को वह ऐसा रह गया जैसे कटी हुई फसल। पस सुबह को उन्होंने एक दूसरे को पुकारा कि अपने खेत पर सवेरे चलो अगर तुम्हें फल तोड़ना है। फिर वे चल पड़े और वे आपस में चुपके-चुपके कह रहे थे। कि आज कोई मोहताज तुम्हारे बाग में न आने पाए। और वे अपने को न देने पर कादिर समझ कर चले। फिर जब बाग को देखा तो कहा कि हम रास्ता भूल गए। बल्कि हम महरूम (बंचित) हो गए। उनमें जो बेहतर आदमी था उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम लोग तस्बीह क्यों नहीं करते। उन्होंने कहा कि हमारा रब पाक है। बेशक हम जालिम थे। फिर वे आपस में एक दूसरे को इल्जाम देने लगे। उन्होंने कहा, अफसोस है हम पर, बेशक हम हद से निकलने वाले लोग थे। शायद हमारा रब हमें इससे अच्छा बाग इसके बदले में दे दे, हम उसी की तरफ रुजूअ होते हैं। इसी तरह आता है अजाब, और आखिरत का अजाब इससे भी बड़ा है, काश ये लोग जानते। (17-33)

इस दुनिया में आदमी जो कुछ कमाता है वह बजाहिर खेत से या और किसी चीज से मिलता हुआ नजर आता है। मगर हकीकतन वह खुदा का दिया हुआ होता है। जो शख्स उसे खुदा का अतिया समझे और उसमें दूसरे बंदगाने खुदा का हिस्सा निकाले उसकी कमाई में अल्लाह तआला बरकत अता फरमाएगा। और जो शख्स अपनी कमाई को अपनी लियाकत का नतीजा समझे और दूसरों का हक उन्हें देने पर राजी न हो, उसकी कमाई उसे फायदा न दे सकेगी। यह खुदा का अटल कानून है। कभी वह किसी के लिए दुनिया में भी जाहिर हो जाता है और आखिरत में तो लाजिमन वह हर एक के हक में जाहिर होगा।

إِنَّا لَنُتَقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّتِ النَّعِيمِ ۝ أَفَجَعَلُ الْمُتَّقِينَ
كَالْبُحْرِ مِينَ ۝ أَلَمْ تَكُنْ فِيهِ تَذَرُونَ ۝ إِن لَّكُمْ
فِيهِ لِمَا تُخْفَرُونَ ۝ أَمْ لَكُمْ آيْمَانٌ عَلَيْنَا بِالْغَةِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۝ إِن
لَّكُمْ لِمَا تَحْكُمُونَ ۝ سَأَلَهُمْ أَيُّهُمْ بِذَلِكَ زَعِيمٌ ۝ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ ۝
فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ۝

सूह-68. अल-कलाम

1467

पारा 29

वेशक डरने वालों के लिए उनके रब के पास नेमत के बाग हैं। क्या हम फरमावरदारों (आज्ञाकारियों) को नाफरमानों के बराबर कर देंगे। तुम्हें क्या हुआ, तुम कैसा फैसला करते हो। क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो। उसमें तुम्हारे लिए वह है जिसे तुम पसंद करते हो। क्या तुम्हारे लिए हमारे ऊपर कसमें हैं कियामत तक बाकी रहने वाली कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फैसला करो। उनसे पूछो कि उनमें से कौन इसका जिम्मेदार है। क्या उनके कुछ शरीक हैं, तो वे अपने शरीकों को लाएं अगर वे सच्चे हैं। (34-41)

खुदा से न डरने वाला आदमी सिर्फ सामने की चीजों को अहमियत देता है। इसके मुकाबले में खुदा से डरने वाला वह है जो गैबी हकीकत (अप्रकट यथार्थ) के बारे में संजीदा हो जाए। ये दो बिल्कुल अलग-अलग किरदार हैं और दोनों का अंजाम यकीनी तौर पर एकसां नहीं हो सकता।

يَوْمَ يَكْشِفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعُونَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۖ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ ذُلٌّ وَقَدْ كَانُوا يَدْعُونَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَالِمُونَ ۝
فَذَرْنِي وَمَنْ يُكْذِّبُ بِهَذَا الْحَدِيثِ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۖ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۝

जिस दिन हकीकत से पर्दा उठाया जाएगा और लोग सज्दे के लिए बुलाए जाएंगे तो वे न कर सकेंगे। उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, उन पर जिल्लत छाई होगी, और वे सज्दे के लिए बुलाए जाते थे और सही सालिम थे। पस छोड़ो मुझे और उन्हें जो इस कलाम को झुठलाते हैं, हम उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता ला रहे हैं जहां से वे नहीं जानते। और मैं उन्हें मोहलत दे रहा हूं, वेशक मेरी तदबीर मजबूत है। (42-45)

कियामत में जब खुदा अयानन (प्रत्यक्षतः) सामने आ जाएगा तो तमाम ईमान वाले लोग अपने रब के सामने सज्दे में गिर जाएंगे जिस तरह वे पिछली ज़िंदगी में उसके आगे सज्दे में गिरे हुए थे। मगर जूड़े खड़ाबंदी के वक्त सज्दे की यह तैयारी सिर्फ सच्चे मेमिनीन को हासिल होगी। जो लोग दुनिया में झूठा सज्दा करते थे उनकी कमर उस वक्त अकड़ जाएगी जिस तरह बाएतबार हकीकत वह दुनिया में अकड़ गई थी। ऐसे लोग सज्दा करना चाहेंगे मगर वे सज्दा न कर सकेंगे। यह मुख़लिस अहले ईमान की सबसे बड़ी कद्रदानी होगी कि खुदा खुद जाहिर होकर उनका सज्दा कुबूल करे। इसके मुकाबले में ईमान का झूठा दावा करने वालों के लिए यह सबसे ज्यादा रुसवाई का लम्हा होगा कि उनका खालिक व मालिक उनके सामने है और वे उसके सामने अपनी बंदगी का इकरार करने पर कादिर नहीं।

पारा 29

1468

सूह-68. अल-कलाम

أَمَرَسْتُ لَهُمْ أَجْرًا ۖ فَمَنْ مِّنْكُمْ مِّنْ مَّعْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ۖ أَمْرٌ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ لَا يَكْتُبُونَ ۖ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ۖ لَوْلَا أَن تَذَرِكُهُ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ۖ فَاجْتَبِهْ رَبُّهُ ۖ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ۖ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۖ

क्या तुम उनसे मुआवजा मांगते हो कि वे उसके तावान से दबे जा रहे हैं। या उनके पास ग़ैब है पस वे लिख रहे हैं। पस अपने रब के फैसले तक सब्र करो और मछली वाले की तरह न बन जाओ, जब उसने पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था। अगर उसके रब की महरबानी उसके शामिलेहाल न होती तो वह मजूम (निंदित) होकर चटयल मैदान में फेंक दिया जाता। फिर उसके रब ने उसे नवाजा, पस उसे नेकों में शामिल कर दिया। और ये मुंकिर लोग जब नसीहत को सुनते हैं तो इस तरह तुम्हें देखते हैं गोया अपनी निगाहों से तुम्हें फिसला देंगे। और कहते हैं कि यह जरूर दीवाना है। और वह आलम वालों के लिए सिर्फ एक नसीहत है। (46-52)

दाजी (आह्वानकर्ता) और मदऊ का रिश्ता बेहद नाजुक रिश्ता है। दाजी को यकतरफा तौर पर अपने आपको हुस्ने अख़्लाक का पाबंद बनाना पड़ता है। मदऊ बेदलील बातें करे, वह दाजी को हकीर (तुच्छ) समझे, वह दाजी पर झूठा इल्जाम लगाए। वह चाहे कुछ भी करे। दाजी को हर हाल में अपने आपको रद्देअमल (प्रतिक्रिया) की नफिसयात से बचाना है। दाजी की कामयाबी का राज दो चीजों में छुपा हुआ है मदऊ की ज्यादातियों पर सब्र और मदऊ से कोई माददी गर्ज न रखना।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَمَا آدُرُكَ مَا الْحَاقَّةُ ۖ كَذَّبْتَ ثُمُودَ وَعَادَ بِالْقَارَعَةِ ۖ فَأَمَّا ثُمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ۖ وَأَمَّا عَادُ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۖ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَلَاثَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ كَأَنَّهُمْ أَجْزَاءُ نَّخْلٍ خَاوِيَةٍ ۖ فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ

بَاقِيَةٍ ۝ وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝ فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَابِيَةً ۝ إِنَّا لَنَاطِقُوا الْمَاءَ حَمَلَتُكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكُرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ۝

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है। वह होने वाली। क्या है वह होनी वाली। और तुम क्या जानो कि क्या है वह होने वाली। समूद और आद ने उस खड़खड़ाने वाली चीज को झुठलाया। पस समूद, तो वे एक सज़ा हादसे से हलाक कर दिए गए। और आद, तो वे एक तेज व तुंद हवा से हलाक किए गए। उसे अल्लाह ने सात रात और आठ दिन उन पर मुसल्लत रखा, पस तुम देखते हो कि वहां वे इस तरह गिरे हुए पड़े हैं गोया कि वे खजूरों के खोखले तने हों। तो क्या तुम्हें उनमें से कोई बचा हुआ नजर आता है। और फिरऔन और उससे पहले वालों और उल्टी हुई बस्तियों ने जुर्म किया। उन्होंने अपने रब के रसूल की नाफरमानी की तो अल्लाह ने उन्हें बहुत सज़ा पकड़। और जब पानी हद से गुजर गया तो हमने तुम्हें कश्ती में सवार कराया। ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बना दें, और याद रखने वाले कान उसे याद रखें। (1-12)

कुछ लोग खुले तौर पर आखिरत का इंकार करते हैं। कुछ लोग वे हैं जो जबान से आखिरत का इंकार नहीं करते मगर उनके दिल में सारी अहमियत बस इसी दुनिया की होती है। चुनांचे उनकी जिंदगी में और खुले हुए मुँकरीन की जिंदगी में कोई फर्क नहीं होता। ये दोनों गिरोह ब-एतबारे हकीकत एक हैं। और दोनों ही अल्लाह के नजदीक आखिरत को झुठलाने वाले हैं। एक गिरोह अगर जबानी तौर पर उसे झुठला रहा है तो दूसरा गिरोह अमली तौर पर।

ऐसे तमाम लोग खुदा के कानून के मुताबिक हलाकत में पड़ने वाले हैं। पैगम्बरों के जमाने में यह हलाकत मौजूदा दुनिया में सामने आ गई और बाद के लोगों के लिए वह आखिरत में सामने आएगी।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝ وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۝ فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَسُيُومَئِذٍ وَاهِيَةً ۝ وَالْمَلَائِكَةُ عَلَى أَرْجَائِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشُ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَةٌ ۝ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝

पस जब सूर में यकवारगी फूंक मारी जाएगी। और जमीन और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में रेज़-रेज़ा कर दिया जाएगा। तो उस दिन वाक़ेअ (घटित) होने वाली वाक़ेअ हो जाएगी। और आसमान फट जाएगा तो वह उस रोज बिल्कुल बोदा होगा। और फरिश्ते उसके किनारों पर होंगे, और तेरे रब के अर्श को उस दिन आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाए होंगे। उस दिन तुम पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई बात पोशीदा (छुपी) न होगी। (13-18)

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की मस्लेहत के मुताबिक बनाई गई है। जब इम्तेहान की मुदत खत्म होगी तो यह दुनिया तोड़कर नई दुनिया नए तकाजों के मुताबिक बनाई जाएगी। खुदा का जलाल आज बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर जाहिर हो रहा है, उस वक़्त खुदा का जलाल बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) तौर पर जाहिर हो जाएगा।

فَالَّذِينَ آمَنُوا قَدْ كُنُوا فِي كِتَابِ اللَّهِ ۝ فَيَقُولُ هَؤُلَاءِ مَقْرُوءٌ وَلِكُنِيَّةٌ ۝ إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلْقٍ حَسَابِيَةٍ ۝ فَهَوِيَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ قَطُوفُهَا دَانِيَةٌ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝ وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابًا شِمَالًا ۝ فَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُوتِ كِتَابِيَةَ ۝ وَلَمْ أَدْرِمَا حَسَابِيَةَ ۝ يَلَيْتَنِي كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَةَ ۝ هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَةَ ۝ خَذُوهُ فَغْلُوهُ ۝ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۝ ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۝ إِنَّكَ كَانَ لَأَيُّؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۝ وَلَا يَحْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۝ فَلَئِنَّ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا حَبِيمٌ ۝ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ۝ لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝

पस जिस शख्स को उसका आमालनामा (कर्म-पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा कि लो मेरा आमालनामा पढ़ लो। मैंने गुमान रखा था कि मुझे मेरा हिसाब पेश आने वाला है। पस वह एक पसंदीदा ऐश में होगा। ऊंचे बास में उसके फल झुके पड़े रहे होंगे। खाओ और पियो मजे के साथ, उन आमाल के बदले में जो तुमने गुजरे दिनों में किए हैं। और जिस शख्स का आमालनामा उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा, तो वह कहेगा काश मेरा आमालनामा मुझे न दिया जाता। और मैं न जानता

सूरह-69. अल-हक्क

1471

पारा 29

कि मेरा हिसाब क्या है। काश वही मौत फैसलाकुन होती। मेरा माल मेरे काम न आया। मेरा इन्तेदार (सत्ता-अधिकार) खत्म हो गया। इस शख्स को पकड़ो, फिर इसे तौक पहनाओ। फिर इसे जहन्नम में दाखिल कर दो। फिर एक जंजीर में जिसकी पैमाइश सत्तर हाथ है इसे जकड़ दो। यह शख्स खुदाए अजीम पर ईमान न रखता था। और वह ग़रीबों को खाना खिलाने पर नहीं उभारता था। पस आज यहां इसका कोई हमदर्द नहीं। और जज़्मों के धोवन के सिवा उसके लिए कोई खाना नहीं। उसे गुनाहगारों के सिवा कोई और न खाएगा। (19-37)

आखिरत की दुनिया में कामयाबी उस शख्स के लिए है जो मौजूदा दुनिया में खुदा से डरकर ज़िंदगी गुजारे। और जो शख्स मौजूदा दुनिया में निडर होकर रहे और बंदों के मुकाबले में सरकशी करे वह आखिरत में सख्ततरीन अजाब में फंसकर रह जाएगा।

فَلَا أَقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ۖ وَمَا لَا تَبْصِرُونَ ۖ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۖ
 مَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ۖ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَدَّكَّرُونَ ۖ
 تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۚ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ۚ
 لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۚ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۚ فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ
 حَاجِزِينَ ۚ وَإِنَّهُ لَتَذْكُرَةٌ لِلْمُتَّقِينَ ۚ وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ۚ
 وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۚ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۚ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

पस नहीं, मैं कसम खाता हूं उन चीजों की जिन्हें तुम देखते हो, और जिन्हें तुम नहीं देखते हो। बेशक यह एक वाइज्जत रसूल का कलाम है। और वह किसी शायर का कलाम नहीं। तुम बहुत कम ईमान लाते हो। और यह किसी काहिन (भविष्य वक्ता) का कलाम नहीं, तुम बहुत कम गौर करते हो। खुदाबंद आलम की तरफ से उतारा हुआ है। और अगर वह कोई बात गढ़कर हमारे ऊपर लगाता तो हम उसका दायां हाथ पकड़ते। फिर हम उसकी रंगे दिल काट देते। फिर तुम में से कोई इससे हमें रोकने वाला न होता। और बिलाशुबह यह याददहानी है डरने वालों के लिए। और हम जानते हैं कि तुम में इसके झुठलाने वाले हैं और वह मुंकिरों के लिए पछतावा है। और यह यकीनी हक है। पस तुम अपने अजीम ख के नाम की तस्बीह करो। (38-52)

जो कुछ तुम देखते हो और जो कुछ तुम नहीं देखते सब इस कलाम की सदाकत पर गवाह है। इसका मतलब यह है कि नुज़ुले कुरआन के वक्त जो मालूमात इंसान की दस्तरस

पारा 29

1472

सूरह-70. अल-मआरिज

में आ चुकी थीं और जो बाद के जमाने में उसकी दस्तरस में आने वाली थीं, दोनों इस कलाम की हक्कनियत साबित करने वाली हैं। इस कलाम के बरहक होने की तरदीद (खंडन) न हाल का इल्म कर रहा है और न मुस्तकबिल का इल्म इसकी तरदीद कर सकेगा। इसके बावजूद जो लोग इसे न मानें वे अपने बारे में सिर्फ यह साबित कर रहे हैं कि वे हक और नाहक के मामले में संजीदा नहीं।

سُبْحَانَ الْمَعَارِجِ بِكَيْدِهِمْ أَرْجُ وَأَرْجَعُونَ إِنَّا وَفِيقَهُمْ كُنَّا
 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۖ لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ۖ مِنَ اللَّهِ ذِي
 الْمَعَارِجِ ۖ تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ
 أَلْفَ سَنَةٍ ۖ فَأَصْبَرَ صَبْرًا جَمِيلًا ۚ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۖ وَنَرَاهُ قَرِيبًا ۖ
 يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ۖ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۖ وَلَا يَسْأَلُ
 حَمِيمٌ حَمِيمًا ۖ يُبْصَرُونَ وَهُمْ يَوْدُ الْمُجْرِمُ لَوْ يُفْتَدَى مِنْ عَذَابٍ يَوْمَئِذٍ
 بِبَيْنَةٍ ۖ وَصَاحِبَتُهُ وَأَخِيهِ ۖ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤَيِّدُ ۖ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ
 جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ۚ

आयतें-44

सूरह-70. अल-मआरिज

रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। मांगने वाले ने अजाब मांगा वाक़ेअ (घटित) होने वाला, मुंकिरों के लिए कोई उसे हटाने वाला नहीं। अल्लाह की तरफ से जो सीढ़ियों का मालिक है। उसकी तरफ फरिश्ते और ज़िब्रिल चढ़कर जाते हैं, एक ऐसे दिन में जिसकी मिक्दार पचास हजार साल है। पस तुम सब्र करो, भली तरह का सब्र। वे उसे दूर देखते हैं, और हम उसे करीब देख रहे हैं। जिस दिन आसमान तेल की तलछट की तरह हो जाएगा। और पहाड़ धुने हुए ऊन की तरह। और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पछेगा। वे उन्हें दिखाए जाएंगे। मुजरिम चाहेगा कि काश उस दिन के अजाब से बचने के लिए अपने बेटों और अपनी बीवी और अपने भाई और अपने कुंवरे को जो उसे पनाह देने वाला था और तमाम अहले जमीन को फिदये (मुक्ति मुआमले) में देकर अपने को बचा ले। (1-14)

क़ियामत के मनाज़िर को मौजूदा दुनिया में हकीकी तौर पर खेला नहीं जा सकता।

ताहम कुरआन में जगह-जगह उन्हें इशारा या तमसील में बताया गया है ताकि आदमी उनका मुजमल (संक्षिप्त) एहसास कर सके। कियामत जब आएगी तो वह इतनी हैलनाक होगी कि आदमी अपने उन रिश्तों और मफादात (हितों) को भूल जाएगा जिन्हें आज वह इतना अहम समझे हुए है कि उनकी खातिर वह हक को नजरअंदाज कर देता है।

كَلَّا إِنَّهَا لَنظَى ۖ نَزَاعَةَ الشَّوَى ۖ تَدْعُو مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ۖ وَجَمَعَ
فَأَوْعَى ۖ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ۖ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۖ وَإِذَا
مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۖ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۖ الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ
دَائِمُونَ ۖ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ۖ لِلْسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۖ
وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ عَذَابٍ رَبِّهِمْ
مُشْفِقُونَ ۖ إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ لِقَائِهِمْ
حَافِظُونَ ۖ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۖ
فَمَنْ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعُدُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ
لِأَمْنِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ۖ
وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۖ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ۖ

हरगिज नहीं। वह तो भड़कती हुई आग की लपट होगी जो खाल उतार देगी। वह हर उस शख्स को बुलाएगी जिसने पीठ फेरी और एराज (उपेक्षा) किया। जमा किया और सेंट कर रखा। बेशक इंसान कमहिम्मत पैदा हुआ है। जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो वह घबरा उठता है। और जब उसे फारिगुलबाली (सम्पन्नता) होती है तो वह बुल्ल (कंजूसी) करने लगता है। मगर वे नमाजी जो अपनी नमाज की पाबंदी करते हैं। और जिनके मालों में साइल (मांगने वाले) और महरूम (बंचित) का मुअय्यन हक है। और जो इंसफ के दिन पर यकीन रखते हैं। और जो अपने रब के अजाब से डरते हैं। बेशक उनके रब के अजाब से किसी को निडर न होना चाहिए। और जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करते हैं मगर अपनी वीवियों से या अपनी ममलूका (अधीन) औरतों से, पस इन पर उन्हें कोई मलामत नहीं, फिर जो शख्स इसके अलावा कुछ और चाहे तो वही लोग हद से तजावुज (उल्लंघन) करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहदों की निभाते हैं। और जो अपनी गवाहियों पर कायम रहते हैं। और जो अपनी नमाज की हिफाजत करते हैं। यही लोग

जन्नतों में इज्जत के साथ होंगे। (15-25)

इन आयात में मुख्तसर तौर पर दोनों किस्म के इंसानों की सिफात बयान कर दी गई हैं। उन लोगों की भी जो जन्नत में दाखिल किए जाने के मुस्तहिक करार पाएंगे और उन लोगों की भी जिनके आमाल उन्हें कियामत के दिन जहन्नम में गिराने का सबब बनेंगे।
فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ۖ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ۖ
أَيُّكُمْ كُلٌّ أَمْرِي مِّنْهُمْ أَن يُدْخَلَ جَنَّةٌ نَّعِيمٌ ۖ كَلَّا ۖ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّنَّا
يَعْلَمُونَ ۖ

फिर इन मुंकिरों को क्या हो गया है कि वे तुम्हारी तरफ दौड़े चले आ रहे हैं, दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह। क्या उनमें से हर शख्स यह लालच रखता है कि वह नेमत के बाग में दाखिल कर लिया जाएगा। हरगिज नहीं, हमने उन्हें पैदा किया है उस चीज से जिसे वे जानते हैं। (36-39)

जो लोग नाहक पर खड़े हुए हों वे उस वक्त अपनी हैसियत को ख़त्म होता हुआ महसूस करते हैं जबकि उनके सामने हक की खुली-खुली दावत पेश कर दी जाए। वे ऐसी दावत को जेर करने के लिए उस पर टूट पड़ते हैं। उनकी नामाकूल रविश उन्हें जहन्नम की तरफ ले जा रही होती है। मगर अपनी झूठी खुशफहमी के तहत वे यही समझते रहते हैं कि वे जन्नत की तरफ अपना तेज रफ़्तार सफ़र तैयार रहे हैं।

فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشَارِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَقَدِرُونَ ۖ عَلَىٰ أَن تُبَدِّلَ خَيْرًا
مِّنْهُمْ ۖ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۖ فَذَرْنَاهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۖ يَوْمَ يُخْرِجُونَ مِنَ الْكَجْدِ إِثْرًا ۖ كَانَتْهُمْ
إِلَىٰ نَصَبٍ يُّوْفَضُونَ ۖ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ ذُلَّةٌ ۖ ذَلِكَ الْيَوْمُ
الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۖ

पस नहीं मैं कसम खाता हूँ मस्किं (पूर्वों) और मरिबों (पश्चिमों) के रब की, हम इस पर कादिर हैं कि बदल कर उनसे बेहतर ले आएँ, और हम आजिज नहीं हैं। पस उन्हें छोड़ दो कि वे बातें बनाएँ और खेल करें। यहां तक कि अपने उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। जिस दिन कब्रों से निकल पड़ेंगे दौड़ते हुए। जैसे वे किसी निशाने की तरफ भाग रहे हों। उनकी निगाहें झुकी होंगी। उन पर

सूरह-71. नूह

1475

पारा 29

जिल्लत छाई होगी, यह है वह दिन जिसका उनसे वादा था। (40-44)

जमीन पर बास-बार मशिक (पूर्व) और मरिब (पश्चिम) का बदलना जमीन की उस अनोखी खसूसियत की बिना पर होता है जिसे महवरी झुकाव (Axial tilt) कहते हैं। और जिसकी वजह से जमीन पर मुख़लिफ़ किस्म के मौसम पैदा होते हैं। सूरज की निरखत से अगर जमीन में यह झुकाव न होता तो जमीन इंसान के लिए बहुत कम मुफ़ीद होती। इस झुकाव ने जमीन को इंसान के लिए बहुत ज्यादा मुफ़ीद बना दिया।

जिस दुनिया में कम बेहतर को ज्यादा बेहतर बनाने की ऐसी मिसाल मौजूद हो उस दुनिया में इसी नौइयत के दूसरे वाक्यात का जुहूर में आना कुछ भी बईद (असंभव) नहीं। इन खुली-खुली निशानियों के बावजूद जो लोग नसीहत न पकड़ें वे बिलाशुबह ग़ैर संजीदा लोग हैं। और ग़ैर संजीदा लोग सिर्फ़ उस वक़्त नसीहत पकड़ते हैं जबकि वे उसके लिए मजबूर कर दिए गए हों।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَنُوحٍ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَإِذْ قَالَ نُوحٌ رَبِّ اجْعَلْ لِي ذُرِّيَّتًا طَابَتْ لَهُمْ جُودًا وَابْتَغِ لِي فِيهِمْ مَقَالًا ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۖ وَإِذْ قَالَ نُوحٌ رَبِّ اجْعَلْ لِي ذُرِّيَّتًا طَابَتْ لَهُمْ جُودًا وَابْتَغِ لِي فِيهِمْ مَقَالًا ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۖ وَإِذْ قَالَ نُوحٌ رَبِّ اجْعَلْ لِي ذُرِّيَّتًا طَابَتْ لَهُمْ جُودًا وَابْتَغِ لِي فِيهِمْ مَقَالًا ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۖ

आयतें-28

सूरह-71. नूह

रुकूअ-2

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। हमने नूह को उसकी कौम की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा कि अपनी कौम के लोगों को ख़बरदार कर दो इससे पहले कि उन पर एक दर्दनाक अजाब आ जाए। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगो, मैं तुम्हारे लिए एक खुला हुआ डराने वाला हूँ कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो। अल्लाह तुम्हारे गुनाहों से दसगुन करेगा और तुम्हें एक मुअय्यन वक़्त तक बाक़ी रहेगा। बेशक जब अल्लाह का मुकरर किया हुआ वक़्त आ जाता है तो फिर वह टाला नहीं जाता। काश कि तुम उसे जानते। (1-4)

हज़रत नूह ग़ालिबन हज़रत आदम के बाद सबसे पहले पैग़म्बर हैं। उस वक़्त के बिगड़े हुए इंसानों को उन्होंने जो पैग़ाम दिया उसे यहां तीन लफ़्ज़ में बयान किया गया है इबादत,

पारा 29

1476

सूरह-71. नूह

तकवा, इताअते रसूल। यानी ग़ैर-अल्लाह की परस्तिश छोड़कर एक अल्लाह की परस्तिश करना, दुनिया में अल्लाह से डरकर ज़िंदगी गुज़ारना, और हर मामले में अल्लाह के रसूल को अपनेलिए क़बिले तक्वीद (अनुकरणीय) नमूना समझना। यही हर ज़माने में तमाम पैग़म्बरों की अस्ल दावत रही है। और यही खुद कुरआन की अस्ल दावत है।

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۖ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ۖ وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصْرَوْا وَاسْتَكْبَرُوا وَاسْتَكْبَرُوا ۖ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا ۖ ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۖ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۖ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۖ وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ۖ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۖ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۖ أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَوَاتٍ طِبَاقًا ۖ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ۖ وَاللَّهُ أَنْبَتُكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۖ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۖ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ سَاطِعًا ۖ لَتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۖ

नूह ने कहा कि ऐ मेरे ख़, मैंने अपनी कौम को शब व रोज़ पुकारा। मगर मेरी पुकार ने उनकी दूरी ही में इजाफ़ा किया। और मैंने जब भी उन्हें बुलाया कि तू उन्हें माफ़ कर दे तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ डाल लीं और अपने ऊपर अपने कपड़े लपेट लिए और ज़िद पर अड़ गए और बड़ा घमंड किया। फिर मैंने उन्हें बरमला (खुलकर) पुकारा। फिर मैंने उन्हें खुली तब्लीग़ की और उन्हें चुपके से समझाया। मैंने कहा कि अपने ख़ से माफ़ी मांगो, बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला है। वह तुम पर आसमान से ख़ूब बारिश बरसाएगा और तुम्हारे माल और औलाद में तरक्की देगा। और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा। और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के लिए अज़मत (महानता) की उम्मीद नहीं रखते। हालांकि उसने तुम्हें तरह-तरह से बनाया। क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस तरह सात आसमान तह-ब-तह बनाए। और उनमें चांद को नूर और सूरज को चराग़ बनाया। और अल्लाह

ने तुम्हें जमीन से खास एहतिमाम से उगाया। फिर वह तुम्हें जमीन में वापस ले जाएगा।
और फिर उससे तुम्हें बाहर ले जाएगा। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए जमीन को हमवार
(समतल) बनाया ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो। (5-20)

हजरत नूह की इस तकरीर से वाजह होता है कि उनका अंदाजे दावत भी ऐम वही था जो कुरआन में लोगों को दावत देने के लिए इस्तिथार किया गया है। हजरत नूह ने कायनाती वाक्यात से इस्तदलाल करते हुए अपनी दावत पेश की। उन्होंने इज्तिमाई (सामूहिक) खिताब भी किया और इफ़्तिदादी (व्यक्तिगत) गुफ्तगुएं भी कीं। लोगों को इस्लाह (सुधार) पर लाने के लिए उन्होंने अपनी सारी कोशिश सर्फ कर डाली। मगर कैम आपकी बात मानने पर राजी न हुई।

‘मालकुम ला तरजून लिल्ला-हि वकारा’ की तफ्सीर अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने इन अल्फ़ज़ में की है: ‘तुम अल्लाह की अजमत उस तरह नहीं मानते जिस तरह उसकी अजमत मानना चाहिए’ इससे मालूम हुआ कि हजरत नूह की कैम अल्लाह का इकारा करती थी मगर उस पर अल्लाह की अजमत का एहसास उस तरह छाया हुआ न था जिस तरह किसी इंसान पर छाया हुआ होना चाहिए। हकीकत यह है कि यही खुदापरस्ती का अस्त मेयार है। जो शख्स खुदा की अजमत में जी रहा हो वह खुदापरस्त है। और जिसका दिल खुदा की अजमत के एहसास में डूबा हुआ न हो वह खुदापरस्त नहीं।

قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالًا وَوَلَدًا إِلَّا خَسَارًا ۖ وَمَكَرُوا مَكْرًا كَبِيرًا ۖ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا ۖ وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ۖ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۖ مِمَّا خَطِيئَتُهُمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا فَكَلِمَةً يَّحْدُوا لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ۖ

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, उन्होंने मेरा कहा न माना और ऐसे आदमियों की पैरवी की जिनके माल और औलाद ने उनके घाटे ही में इजाफा किया। और उन्होंने बड़ी तदबीर कीं। और उन्होंने कहा कि तुम अपने माबूदों (पूज्यों) की हगिज न छोड़ना। और तुम हगिज न छोड़ना वद को और सुवाअ को और यगूस को और यऊक और नस्र को। और उन्होंने बहुत लोगों को बहका दिया। और अब तू उन गुमराहों की गुमराही में ही इजाफा कर। अपने गुनाहों के सबब से वे शर्क किए गए। फिर वे आग में दाखिल कर दिए गए। पस उन्होंने अपने लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार न पाया। (21-25)

हजरत नूह की दावत का लोगों ने क्यों इंकार किया, इसकी वजह यह थी कि लोगों को हजरत नूह के मुअबले में उन लोगों की बातें ज्यादा कबिले लिहाज नजर आई जो कुनियावी लिहाज से बड़ाई का दर्जा हासिल किए हुए थे। वक्त के बड़ों ने अपनी बड़ाई के घमंड में हक की दावत का इंकार किया। और जो छोटे थे उन्होंने इसलिए इंकार किया कि उनके बड़े उसके मुकिर बने हुए थे।

हजरत नूह के मुखलिफ़ीन ने हजरत नूह के खिलाफ बड़ी-बड़ी तदबीरें कीं। उनमें से एक खास तदबीर यह थी कि उन्होंने कहा कि नूह हमारे अकाबिर (वद और सुवाअ और यगूस और यऊक और नस्र) के खिलाफ हैं। ये पांचों कदीम जमाने के सालेह (नफ़) अफ़राद थे। बाद को वे धीरे-धीरे लोगों की नजर में मुकद्दस बन गए। यहां तक कि लोगों ने उन्हें पूजना शुरू कर दिया। उनके नाम पर लोगों को हजरत नूह के खिलाफ भड़काना आसान था, चुनांचे उन्होंने यह कहकर आपको लोगों की नजर में मुशतबह (संदिग्ध) कर दिया कि आप बुजुर्गों के रास्ते को छोड़कर नए रास्ते पर चल रहे हैं।

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۚ إِنَّكَ إِن تَذَرْنِي يَظْلُمُونَ عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۚ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلَا تَجْعَلْ لِّمَن دَخَلَ بَيْتِي مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۚ

और नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, तू इन मुकिरों में से कोई जमीन पर बसने वाला न छोड़। अगर तूने इन्हें छोड़ दिया तो ये तेरे बंदों को गुमराह करेंगे और उनकी नस्त से जो भी पैदा होगा बदकार और सख्त मुकिर ही होगा। ऐ मेरे रब, मेरी मफ़िरत (स्फ़ि) फरमा। और मेरे मां बाप की मफ़िरत फरमा। और जो मेरे घर में मोमिन होकर दाखिल हो तू उसकी मफ़िरत फरमा। और सब मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को माफ़ फरमा दे और जल्लिमों के लिए हलाकत (नाश) के सिवा किसी चीज में इज़म न कर। (26-28)

हजरत नूह की दुआ से मालूम होता है कि उनके जमाने में बिगाड़ अपनी आखिरी हद तक पहुंच चुका था। पूरे मआशरे में गुमराह अकाइद (कुआस्थाएं) व ख्यालात इस तरह छा गए थे कि जो बच्चा उस मआशरे में पैदा होकर उठता वह गुमराही के ख्यालात लेकर उठता। जब मआशरा (समाज) इस दर्जे को पहुंच जाए तो इसके बाद उसके लिए इसके सिवा कुछ और मुकद्दर नहीं होता कि तूफ़ान नूह के जरिए उसका खात्मा कर दिया जाए।

وَأَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَهُمْ مَاءً غَدَقًا ۖ لِنُفِثَهُمْ فِيهِ وَمَنْ يُعِزُّ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسُدِّكُ عَنْدَ آبِائِهِ ۖ وَاتَّقِ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝١٨ وَأَنْتَ لَبِاقٌ مَعَ عَبْدِ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا أَنْ يَكُونُوا عَلَيْهِ لَبِيدًا ۝١٩ قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝٢٠ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا

सूरह-72. अल-जिन्न

1481

पारा 29

رَشَدًا ۖ قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ ۚ وَلَنْ أجدَ مِنْ دُونِهِ
مُلْتَحَدًا ۖ إِلَّا بَلَاغًا مِنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۚ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ
نَاجِيَةً مُمْلَكَةً خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ

और मुझे 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि ये लोग अगर रास्ते पर कायम हो जाते तो हम उन्हें खूब सैराब (तृप्त) करते। ताकि इसमें उन्हें आजमाएं, और जो शस्त्र अपने ख की याद से एराज (उपेक्षा) करेगा तो वह उसे सख्त अजाब में मुत्तिला करेगा। और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं पस तुम अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो। और यह कि जब अल्लाह का बंदा उसे पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो लोग उस पर टूट पड़ने के लिए तैयार हो गए। कहे कि मैं सिर्फ अपने ख को पुकारता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। कहे कि मैं तुम लोगों के लिए न किसी नुक्सान का इस्तिहार रखता हूं और न किसी भलाई का। कहे कि मुझे अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता। और न मैं उसके सिवा कोई पनाह पा सकता हूं। पस अल्लाह ही की तरफ से पहुंचा देना और उसके पैगामों की अदायगी है और जो शस्त्र अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी (अवज्ञा) करेगा तो उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वे हमेशा रहेंगे। (16-23)

मौजूदा दुनिया का निजाम इस्तेहान की मस्तेहत के तहत बनाया गया है। इसीलिए सच्चाई यहां सिर्फ पैगामरसानी (संदेश पहुंचाने) की हद तक सामने लाई जाती है। अगर इस्तेहान की मस्तेहत न हो और ग़ैब का पर्दा हटा दिया जाए तो लोग देखेंगे कि फरिश्तों से लेकर जिन्नात के सालिहीन (सज्जन) तक सब खुदा की खुदाई का एतराफ कर रहे हैं और सारी कायनात सरापा इसकी तस्दीक बनी हुई है।

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَيَسْجُدُونَ مِنْ أَضْعَافٍ نَاصِرًا ۖ وَقَلَّ عَدَدًا ۖ
قُلْ إِن أَدْرِي أَقْرَبُ مِمَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۖ عِلْمُ الْغَيْبِ فَلَا
يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا ۖ إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ يَسْلُكُ مِنْ
بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۖ لِيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رَسُولَهُمْ وَاحْتَاطَ بِمَا
لَدَيْهِمْ وَأَحْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۖ

यहां तक कि जब वे देखेंगे उस चीज को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो वे जान लेंगे कि किसके मददगार कमजोर हैं और कौन तादाद में कम है। कहे कि मैं

पारा 29

1482

सूरह-73. अल-मुजम्मिल

नहीं जानता कि जिस चीज का तुमसे वादा किया जा रहा है वह करीब है या भेरे ख ने उसके लिए लम्बी मुद्दत मुकर्रर कर रखी है। ग़ैब का जानने वाला वही है। वह अपने ग़ैब पर किसी को मुतलअ (प्रकट) नहीं करता। सिवा उस रसूल के जिसे उसने पसंद किया हो, तो वह उसके आगे और पीछे मुहाफिज लगा देता है। ताकि अल्लाह जान ले कि उन्होंने अपने ख के पैगामात पहुंचा दिए हैं और वह उनके माहौल का इहाता (आच्छादन) किए हुए है और उसने हर चीज को गिन रखा है। (24-28)

हकका दाजी (आह्वानकर्ता) बजाहिर एक आम इंसान होता है। इसलिए वे लोग उस पर टूट पड़ते हैं जिनके ऊपर उसकी दावत (आह्वान) की जद पड़ रही हो। वे भूल जाते हैं कि हक के दाजी के खिलाफ कार्रवाई खुद खुदा के खिलाफ कार्रवाई है, और कौन है जो खुदा के खिलाफ कार्रवाई करके कामयाब हो।

سُبْحَانَكَ رَبِّيَ عَمَّا يَشْرِكُونَ ۚ سُبْحَانَكَ رَبِّيَ عَمَّا يَشْرِكُونَ ۚ
يَا أَيُّهَا الْمَرْءُ ۖ قُلْ إِنَّمَا أَدْعِيكُمْ إِلَىٰ الْقِيَامَةِ ۖ أَوْ أَنْقِصُ مِنْهُ قَلِيلًا ۖ أَوْ
زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ۖ إِنَّا سَمِعْنَا عَلِيكَ قَوْلًا فُخِيرًا ۖ

आयतें-20

सूरह-73. अल-मुजम्मिल

रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ कपड़े में लिपटने वाले, रात में कियाम (नमाज के लिए खड़ा होना) कर मगर थोड़ा हिस्सा। आधी रात या उससे कुछ कम कर दो। या उससे कुछ बढ़ा दो, और कुरआन को ठहर-ठहर कर पढ़ो। हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं। (1-5)

‘ठहर-ठहर कर पढ़ो’ का मतलब यह है कि मफहूम (भावार्थ) पर ध्यान देते हुए पढ़ो। जब आदमी ऐसा करे तो करी (पढ़ने वाला) और कुरआन के दर्मियान एक दोतरफा अमल शुरू हो जाता है। कुरआन उसके लिए एक इलाही खिताब (सुधारक संबोधन) होता है और उसका दिल हर आयत पर इस खिताब का जवाब देता चला जाता है। जब कुरआन में अल्लाह की बड़ाई का जिक्र आता है तो करी का पूरा वजूद उसकी बड़ाई के एहसास से दब जाता है। जब कुरआन में खुदा के एहसानात बताए जाते हैं तो उसे सोचकर करी का दिल खुदा के शुक्र से भर जाता है। जब कुरआन में खुदा की पकड़ का बयान होता है तो करी उसे पढ़कर कांप उठता है। जब कुरआन में कोई हुक्म बताया जाता है तो करी के अंदर यह जब्बा मुस्तहकम होता है कि वह उस हुक्म को इस्तिहार करके अपने ख का फरमांबरदार बने।

‘भारी कौल’ से मुराद इंजार (आगाह करने) का वह हुक्म है जो अगली सूरह में आ रहा

है। (कुम फर्जिर, अल-मुद्दस्सिर-2) यानी आखिरत के मसले से लोगों को आगाह कर दे। यह काम बिलाशुबह इस दुनिया का मुश्किलतरीन काम है। इसके लिए दाओ को बेआमेज (विशुद्ध) हक पर खड़ा होना पड़ता है, चाहे वह तमाम लोगों के दर्मियान अजनबी बन जाए। उसे लोगों की ईजाओं (उत्पीड़न) को बर्दाश्त करना पड़ता है ताकि उसके और मुखातबीन के दर्मियान दाओ और मदऊ का रिश्ता आखिर वक्त तक बाकी रहे। उसे यकतरफ़ा तौर पर अपने आपको सब्र और एराज (संयम) का पाबंद करना पड़ता है। ताकि किसी भी हाल में उसकी दाअियाना हैसियत मजरूह न होने पाए।

إِن نَّاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ۖ إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۖ وَادْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبْتَغِلْ إِلَيْهِ تَبْتِغِيلاً ۖ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۖ وَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۖ وَذُرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولَى النَّعْتَةِ وَكَلِمَةً قَلِيلًا ۖ إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ۖ وَطَعَامًا ذَا غَضَّةٍ وَعَذَابًا لِّئَلَّا يَسْتَأْذِنُوا ۖ يَوْمَ تُرْجَفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۖ

बेशक रात का उठना सख्त रौंदता है और बात ठीक निकलती है। बेशक तुम्हें दिन में बहुत काम रहता है। और अपने रब का नाम याद करो और उसकी तरफ मुतवज्जह हो जाओ सबसे अलग होकर। वह मश्कि (पूर्व) और मरिब (पश्चिम) का मालिक है, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, पस तुम उसे अपना कारसाज बना लो। और लोग जो कुछ कहते हैं उस पर सब्र करो। और भली तरह उनसे अलग हो जाओ और झुठलाने वाले खुशहाल लोगों का मामला मुझ पर छोड़ दो और उन्हें थोड़ी ढील दे दो। हमारे पास बेड़ियां हैं और दोजख है। और गले में फंस जाने वाला खाना है और दर्दनाक अजाब है। जिस दिन जमीन और पहाड़ हिलने लगेंगे और पहाड़ रेत के फिसलते हुए तोड़े (टरे) हो जाएंगे। (6-14)

बेम्मे (विशुद्ध) हक की दावत लेकर उठना मुश्किलतरीन मुहिम के लिए उठना है। ऐसा शख्स पूरे माहौल में एक गैर मल्लूब (अवांछित) शख्स बन जाता है। ऐसी हालत में हक का दाओ जिस वाहिद हस्ती को अपना मूनिस (हमदर्द साथी) और कारसाज (कार्य साधक) पाता है वह उसका खुदा है। वह न सिर्फ दिल में अपने खुदा को याद करता रहता है बल्कि वह रात के वक्तों में भी उसके सामने खड़ा होता है। रात का वक्त फरागत का वक्त है। रात के सन्नाटे में इसका ज्यादा मौका होता है कि आदमी पूरी यकसूई के साथ खुदा की तरफ

मुतवज्जह हो सके। हक की दावत के कठिन रास्ते में दाओ का अस्ल हथियार यही है। सच्चे दाओ का यह तरीका है कि उसे मदऊ की तरफ से तकलीफ पहुंचती है तो वह मदऊ से नहीं उलझता बल्कि वह खुदा की तरफ दौड़ता है। वह आखिरी हद तक अपने आपको रद्देअमल (प्रतिक्रिया) की नपिसयात से बचाता है। और रद्देअमल की नपिसयात से बुलन्द होकर काम करना ही वह वाहिद (एक मात्र) लाजिमी शर्त है जो किसी शख्स को हक्की मअनोमेंहक का दाओ बनाती है।

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۖ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ۖ فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۚ السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۚ إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۚ

हमने तुम्हारी तरफ एक रसूल भेजा है, तुम पर गवाह बनाकर, जिस तरह हमने फिरऔन की तरफ एक रसूल भेजा। फिर फिरऔन ने रसूल का कल न माना तो हमने उसे पकड़ा सख्त पकड़ना। पस अगर तुमने इंकार किया तो तुम उस दिन के अजाब से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा जिसमें आसमान फट जाएगा, बेशक उसका वादा पूरा होकर रहेगा। यह एक नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ राह इख्तियार कर ले। (15-19)

फैम्बर का आना हक (सत्य) और बातिल (असत्य) के दर्मियान फैसला करने के लिए होता है। यही फैसला पहले मूसा अलैहि० और फिरऔन के दर्मियान हुआ था। फिर यही फैसला फैम्बरे इस्लाम और कुरैश के दर्मियान हुआ। जो लोग दुनिया में खुदा के दाओ के आगे न झुकें वे अपने लिए यह खतरा मोल ले रहे हैं कि आखिरत में उन्हें खुदा के अजाब के आगे झुकना पड़े।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثِي اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَ وَطْأَيْفَةٍ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّنْ نَّحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ مِنكُم مَّرْضَىٰ وَوَأَخْرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا

الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ
تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ أَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا لِلَّهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝

ع
14

बेशक तुम्हारा खर्च जानता है कि तुम दो तिहाई रात के करीब या आधी रात या एक तिहाई रात कियाम (नमाज के लिए खड़ा होना) करते हो, और एक गिरोह तुम्हारे साथियों में से भी। और अल्लाह ही रात और दिन का अंदाजा ठहराता है, उसने जाना कि तुम उसे पूरा न कर सकोगे पस उसने तुम पर महरबानी फरमाई, अब कुरआन से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, उसने जाना कि तुम में बीमार होंगे और कितने लोग अल्लाह के फल की तलाश में जमीन में सफ़र करेंगे। और दूसरे ऐसे लोग भी होंगे जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस उसमें से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, और नमाज कियाम करो और जम्मा अन्न करो और अल्लाह को कर्ज दो अच्छा कर्ज और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां मौजूद पाओगे, वह बेहतर है और सवाब में ज्यादा, और अल्लाह से माफ़ी मांगो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (20)

दीन में जो फर्ज (अनिवार्य) आमाल हैं वे आम ईसान की इस्तताअत (सामर्थ्य) को मल्लूज रखते हुए मुफ़्त किए गए हैं। मगर ये फराइज सिर्फ़ लाजिमी हुक्म को बताते हैं। इस लाजिमी हद के आगे भी मल्लूब आमाल हैं मगर वे नवाफ़िल (ऐच्छिक) हैं। मसलन पंजवक्ता नमाजों के बाद तहज्जुद, जफ़ात के बाद मजिद इफ़्तक (अल्लाह की राह में ख़र्च) वगैरह। यह आदमी के अपने हौसले का इम्तेहान है कि वह कितना ज्यादा अमल करता है और आखिरत में कितना ज्यादा इनाम का मुस्तहक बनता है।

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۖ قُمْ فَأَنذِرْ ۚ وَرَبِّكَ فَكَذِّبُ ۚ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۚ وَالرُّجْزَ
فَأَهْجُرْ ۚ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۚ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۚ

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ कपड़े में लिपटने वाले, उठ और लोगों को डरा। और अपने खर्च की बड़ाई बयान कर।
और अपने कपड़े को पाक रख। और गंदगी को छोड़ दे। और ऐसा न करो कि एहसान

करो और बहुत बदला चाहो और अपने खर्च के लिए सब्र करो। (1-7)

इस दुनिया में अस्ल पैगम्बराना काम इंजार है। यानी आखिरत में पेश आने वाले संगीन मसले से लोगों को आगाह करना। यह काम वही शख्स कर सकता है जिसका दिल अल्लाह की बड़ाई से लबरेज हो। जो अच्छे अख़्लाक का मालिक हो। जो हर किस्म की बुराई से दूर हो। जो बदले की उम्मीद के बग़ैर नेकी करे। जो दूसरों की तरफ से पेश आने वाली तकलीफों पर यक़तरफ़ सब्र कर सके।

وَإِذَا تُفْعَلُ فِي الْكَافِرِينَ ۖ فَذَلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۚ عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ
يَسِيرٍ ۚ ذُرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۚ وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ۚ وَبَيْنَينَ
شُهُودًا ۚ وَوَعَدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ۚ ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۚ كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا
عَيْنِدًا ۚ سَاءَ هَؤُلَاءِ صَعُودًا ۚ

फिर जब सूर फूँका जाएगा तो वह बड़ा सख़्त दिन होगा। मुँक़िरों पर आसान न होगा। छोड़ दो मुझे और उस शख्स को जिसे मैंने पैदा किया अकेला। और उसे बहुत सा माल दिया और पास रहने वाले बेटे। और सब तरह का सामान उसके लिए मुहय्या कर दिया। फिर वह तमअ (लालच) रखता है कि मैं उसे और ज्यादा दूँ। हरगिज नहीं, वह हमारी आयतों का मुखालिफ़ (विरोधी) है। अनकरीब मैं उसे एक सख़्त चढ़ाई चढ़ाऊँगा। (8-17)

जो आदमी अपने आपको इस हाल में पाता है कि उसके पास माल भी है और साथियों की फौज भी, उसके अंदर झूठा एतमाद पैदा हो जाता है। वह समझने लगता है कि मौजूदा दुनिया में जिस तरह मेरे अहवाल दुरुस्त हैं इसी तरह वे आखिरत में भी दुरुस्त रहेंगे। मगर कियामत के आते ही सारी सूरतेहाल बदल जाएगी। वह शख्स जो दुनिया में हर तरफ आसानियां देख रहा था, वह कियामत के दिन अपने आपको असहनीय दुश्वारियों के दर्मियान घिरा हुआ पाएगा।

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۖ فَقَتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۖ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۖ ثُمَّ نَظَرَ ۖ ثُمَّ
عَبَسَ وَكَبَّرَ ۖ ثُمَّ أَدْبَرَ ۖ وَأَسْتَكْبَرَ ۖ فَقَالَ إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْتَىٰ ۖ إِنْ هَذَا إِلَّا
أَلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۖ

उसने सोचा और बात बनाई। पस वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई। फिर वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई, फिर उसने देखा। फिर उसने त्थोरी चढ़ाई और मुंह

बनाया। फिर पीठ फेरी और तकबुर (घमंड) किया। फिर बोला यह तो महज एक जादू है जो पहले से चला आ रहा है। यह तो बस आदमी का कलाम है। (18-25)

हक को मानने में सबसे बड़ी रुकावट तकबुर (घमंड) है। जो लोग माहौल में बड़ाई का दर्जा हासिल कर लें वे हक का एतराफ इसलिए नहीं करते कि उसका एतराफ करने से उनकी बड़ाई खत्म हो जाएगी। अपने इस एतराफ न करने को छुपाने के लिए वे मजीद यह करते हैं कि दाजी (आह्वानकर्ता) के कलाम में ऐब निकालते हैं। वे दाजी पर इल्जाम लगाकर उसकी हैसियत को घटाने की कोशिश करते हैं।

سَاحِلِيهِ سَقَرٌ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرٌ لَا تَبْقَى وَلَا تَذَرُ ۚ لَوَاحِيَةٌ لِلْبَشَرِ عَلَيْهِمَا تِسْعَةُ عَشْرَ ۖ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۖ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَيْسَتِ يَتَّقِينَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادُ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابِ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ وَلَيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۚ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْبَشَرِ ۚ

मैं उसे अनकरीब दोख में दाखिल करूंगा। और तुम क्या जानो कि क्या है दोख। न बाकी रहने देगी और न छोड़ेगी। खाल झुलसा देने वाली। उस पर 19 फरिश्ते हैं। और हमने दोख के कारकून सिर्फ फरिश्ते बनाए हैं। और हमने उनकी जो गिनती रखी है वह सिर्फ मुंकिरों को जांचने के लिए ताकि यकीन हासिल करें वे लोग जिन्हें किताब अता हुई। और ईमान वाले अपने ईमान को बढ़ाएं और अहले किताब (पूर्ववर्ती ग्रंथों के धारक) और मोमिनीन शक न करें, और ताकि जिन लोगों के दिलों में मर्ज है और मुंकिर लोग कहें कि इससे अल्लाह की क्या मुराद है। इस तरह अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहता है और हिदायत देता है जिसे चाहता है, और तेरे रब के लश्कर को सिर्फ वही जानता है, और यह तो सिर्फ समझाना है लोगों के वास्ते। (26-31)

जहन्नम के अहवाल जो कुरआन में बताए गए हैं वे सब अदेखी दुनिया से तजल्लुक रखते हैं। जहन्नम में 19 फरिश्तों का होना भी इसी नौइयत की चीज है। आदमी अगर मूर्खाना (कुतर्क) करे तो ये चीजें उसके शुबहात में इजाफ़ करेंगी। लेकिन अगर सार्थक ईमान का तरीका इस्तिअर किया जाए तो इस किस्म की बातों से आदमी के खौफे आखिरत

मेझन होगा।

كَلَّا وَالْقَمَرِ ۚ وَالْيَلِ إِذَا دُبِّرَ ۚ وَالصُّبْرِ إِذَا اسْفَرَ ۚ إِنَّهَا لِأَحَدَى الْكَذِبِ ۚ نَذِيرٌ لِلْبَشَرِ ۚ لِمَن شَاءَ مِنْكُمْ أَن يَتَّقَدَّ مَا أَوْتِيَا خَرُ ۚ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينٌ ۚ إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۚ فِي جَدَّتْ يَتَسَاءَلُونَ ۚ عَنِ الْجُرَيْنِ ۚ مَا سَأَلَكُمْ فِي سَقَرٍ ۚ قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمَصْلِينَ ۚ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ۚ وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَاضِعِينَ ۚ وَكُنَّا نَكْذِبُ ۚ يَوْمَ الدِّينِ ۚ حَتَّى أَتَيْنَا الْبَاقِينَ ۚ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ۚ

हरगिज नहीं, कसम है चांद की। और रात की जबकि वह जाने लगे। और सुबह की जब वह रोशन हो जाए, वह दोख बड़ी चीजों में से है, इंसान के लिए डरावा, उनके लिए जो तुम में से आगे की तरफ बढ़े या पीछे की तरफ हटे। हर शख्स अपने आमाल के बदले में रहन (गिरवी) है, दाएं वालों के सिवा, वे बाएँ में होंगे, पृष्ठते होंगे, मुजरिमों से, तुम्हें क्या चीज दोख में ले गई। वे कहेंगे, हम नमाज पढ़ने वालों में से न थे। और हम गरीबों को खाना नहीं खिलाते थे। और हम बहस करने वालों के साथ बहस करते थे। और हम इन्साफ के दिन को झुटलाते थे। यहां तक कि वह यकीनी बात हम पर आ गई तो उन्हें शफअत (सिफास्ति) करने वालों की शफअत कुछ फायदा न देगी। (32-48)

इस दुनिया में गर्दिश (गति) का निजाम है। इसी की वजह से चांद की तारीखें बदलती हैं और जमीन पर बारी-बारी रात और दिन आते हैं। यह गर्दिश और तब्दीली का निजाम गोया एक इशारा है कि इसी तरह मौजूदा दौर बदल कर आखिरत का दौर आएगा। जो लोग इस निजाम पर गौर करें वे चाहेंगे कि 'रात' के आने से पहले अपने 'दिन' को इस्तेमाल कर लें। वे जहन्नम वाले आमाल से भागेंगे और जन्नत वाले आमाल को इस्तिअर करेंगे।

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ ۚ كَانَهُمْ حُمُرٌ مَّسْتَنْفِرَةٌ ۚ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۚ بَلْ يَرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَن يُؤْتَى صُحُفًا مُنَشَّرَةٌ ۚ كَلَّا بَلْ لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ۚ كَلَّا إِنَّهُ تَذَكُّرٌ ۚ فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۚ وَمَا يَنْدُرُوْنَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَى وَأَهْلُ الْمَعْرِفَةِ ۚ

सूरह-75. अल-कियामह

1489

पारा 29

फिर उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से रूगदर्दानी (अवहेलना) करते हैं। गोया कि वे बहशी गधे हैं जो शेर से भागे जा रहे हैं। बल्कि उनमें से हर शख्स यह चाहता है कि उसे खुली हुई किताबें दी जाएं। हरगिज नहीं, बल्कि ये लोग आखिरत (परलोक) से नहीं डरते। हरगिज नहीं, यह तो एक नसीहत है। पस जिसका जी चाहे, इससे नसीहत हासिल करे। और वे इससे नसीहत हासिल नहीं करेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही है जिससे डरना चाहिए और वही है बख्शाने के लायक। (49-56)

नसीहत चाहे कितनी ही मुदल्लल (तार्किक) हो, सुनने वाले के लिए वह उसी वक्त मुअस्सिर (प्रभावी) बनती है जबकि वह उसके बारे में संजीदा हो। अगर सुनने वाला संजीदा न हो तो नसीहत उसके दिल में नहीं उतरेगी। जो दलील एक संजीदा इंसान को तड़पा देती है वह सिर्फ उसकी लायानी (निरर्थक) बहसों में इजाफ़ा करने का सबब बनेगी।

سُبْحَانَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ وَالْأَقْسَمُ بِالنَّفْسِ الْوَّامَةِ ۖ
لَا أَقْسَمُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ وَلَا أَقْسَمُ بِالنَّفْسِ الْوَّامَةِ ۖ
يَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنَّهُ
يُحْمَلُهُ عِظَامُهُ ۖ بَلَىٰ قَادِرِينَ عَلَىٰ أَن تُسَوَّىٰ بَنَانُهُ ۖ
بَلْ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ
لِيَفْجَرًا مَّاءَهُ ۖ يَسْتَلِقِيكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ
فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۖ وَخَسَفَ
الْقَمَرُ ۖ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۖ يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ إِنِّي الْمَفْرُغُ ۖ
كَلَّا
لَا وَزَرَ ۖ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۖ
يُنَبِّئُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ
وَأَخَّرَ ۖ بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۖ
وَلَوْ أَلْفَىٰ مَعَادِيرَهُ ۖ

आयतें-40

सूरह-75. अल-कियामह

रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महारवान, निहायत रहम वाला है। नहीं, मैं कसम खाता हूँ कियामत के दिन की। और नहीं, मैं कसम खाता हूँ मलामत करने वाले नफस की। क्या इंसान ख्याल करता है कि हम उसकी हड्डियों को जमा न करेंगे। क्यों नहीं, हम इस पर कादिर हैं कि उसकी उंगलियों की पोर-पोर तक दुरुस्त कर दें। बल्कि इंसान चाहता है कि ढिठाई करे उसके सामने। वह पूछता है कि कियामत का दिन कब आएगा। पस जब आंखें खीरह (चौंधिया जाना) हो जाएंगी। और चांद बेनूर हो जाएगा। और सूरज और चांद इकट्ठा कर दिए जाएंगे। उस दिन इंसान कहेगा कि कहां भागूं। हरगिज नहीं, कहीं पनाह नहीं। उस दिन तेरे रब ही के पास ठिकाना है। उस दिन इंसान को बताया जाएगा कि उसने क्या

पारा 29

1490

सूरह-75. अल-कियामह

आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा। बल्कि इंसान खुद अपने आपको जानता है, चाहे वह कितने ही बहाने पेश करे। (1-15)

इंसान के अंदर पैदाइशी तौर पर यह शुऊर मौजूद है कि वह बुराई और भलाई में तमीज करता है। वह ऐन अपनी फितरत के तहत यह चाहता है कि बुराई करने वाले को सजा मिले और भलाई करने वाले को इनाम दिया जाए। यही वह शुऊर है जिसे कुरआन में नफसे लवामा कहा गया है। यह नफसे लवामा आलमे आखिरत के हक्की होने की एक नफिसयती शहदत (गवाही) है। इस दाखिली (अंदरूनी) शहादत के बाद जो शख्स उसके तकजे पूरे न करे वह गोया अपनी ही मानी हुई बात का इंकार कर रहा है।

لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتُجْزَلَ بِهِ ۖ إِنَّ عَلَيْكَ جَمْعَهُ وَقرآنَهُ ۖ وَإِذَا قرآنَهُ
فَاتَّبِعْ قرآنَهُ ۖ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْكَ بَيَانَهُ ۖ

तुम उसके पढ़ने पर अपनी जबान न चलाओ ताकि तुम उसे जल्दी सीख लो। हमारे ऊपर है उसे जमा करना और उसे सुनाना। पस जब हम उसे सुनाएं तो तुम उस सुनाने की पैरवी करो। फिर हमारे ऊपर है उसे बयान कर देना। (16-19)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) उतरती तो आप उसे लेने में जल्दी फरमाते। इससे आपको मना कर दिया गया। इस सिलसिले में मजीद फरमाया कि कुरआन का जो हिस्सा उतर चुका है और जो तुम्हें मुखातब बना रहा है, उस पर सारी तवज्जोह सर्फ करो न कि कुरआन के उस बकिया हिस्से पर जो अभी उतरा नहीं और जिसने अभी तुम्हें मुखातब नहीं बनाया। इससे यह मालूम हुआ कि जिस वक्त जिस कुरआन के हिस्से का एक शख्स मुकल्लफ है उसी पर उसे सबसे ज्यादा तवज्जोह देना चाहिए। जिस कुरआन के हिस्से का एक शख्स मुकल्लफ न हो उसके पीछे दौड़ना 'उजलत' (जल्दी) है जो कुरआनी हिक्मत के सरासर खिलाफ है।

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۖ وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۖ وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ فَاضِلَةٌ إِلَىٰ
رَبِّهَا نَاطِرَةٌ ۖ وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۖ تَتَّظُنُّ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۖ كَلَّا
إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۖ وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ۖ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۖ وَالْتَمَعَتْ
السَّاقُ بِالسَّاقِ ۖ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۖ

हरगिज नहीं, बल्कि तुम चाहते हो जो जल्द आए। और तुम छोड़ते हो जो देर में आए। कुछ चेहरे उस दिन बारौनक होंगे। अपने रब की तरफ देख रहे होंगे। और कुछ चेहरे

सूरह-75. अल-कियामह

1491

पारा 29

उस दिन उदास होंगे। गुमान कर रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जाएगा। हरगिज नहीं, जब जान हलक तक पहुंच जाएगी। और कहा जाएगा कि कौन है झाड़ू फूंक करने वाला। और वह गुमान करेगा कि यह जुदाई का वक्त है। और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी। वह दिन होगा तेरे रब की तरफ जाने का। (20-30)

आखिरत की तरफ से गफलत की वजह हमेशा सिर्फ एक होता है, और वह हुबे आजिला है। यानी अपने अमल का फौरी नतीजा चाहना। आखिरत के लिए अमल का नतीजा देर में मिलता है। इसलिए आदमी उसे नजरअंदाज कर देता है। और दुनिया के लिए अमल का नतीजा फौरन मिलता हुआ नजर आता है। इसलिए आदमी उसकी तरफ दौड़ पड़ता है। लोग देखते हैं कि हर आदमी पर आखिरकार मौत तारी होती है और वह उसकी तमाम कामयाबियों को बातिल कर देती है। मगर कोई शख्स उससे सबक नहीं लेता। यहां तक कि खुद उसकी मौत का लम्हा आ जाए और वह उससे सबक लेने की मोहलत छीन ले।

فَلَا صَدَقَ وَلَا صَلَّى ۖ وَلَكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۖ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ
يَمْتَطِي ۖ أُولَىٰ لَكَ فَأُولَىٰ ۖ ثُمَّ أُولَىٰ لَكَ فَأُولَىٰ ۖ اٰبَحَسْبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ
سُدًى ۖ اَلَمْ يَكُنْ نَاطِقًا مِّنْ مِّنِّىْ يُمْنًى ۖ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَتُهُ فِخْلًا
فَسَوًى ۖ فَبَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنثَىٰ ۚ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقَدْرِ عَلَىٰ
اَنْ يُنْحَىٰ ۖ النُّوٓى ۝

तो उसने न सच माना और न नमाज पढ़ी। बल्कि झुठलाया और मुंह मोड़ा। फिर अकड़ता हुआ अपने लोगों की तरफ चला गया। अफसोस है तुझ पर अफसोस है। फिर अफसोस है तुझ पर अफसोस है। क्या इंसान ख्याल करता है कि वह बस यूं ही छोड़ दिया जाएगा। क्या वह टपकाई हुई मनी (वीर्य) की एक बूंद न था। फिर वह अलका (जोंक की तरह) हो गया, फिर अल्लाह ने बनाया, फिर आजा (शरीरांग) दुरुस्त किए। फिर उसकी दो किस्में कर दीं, मर्द और औरत। क्या वह इस पर कादिर नहीं कि मुर्दों को जिंदा कर दे। (31-40)

इंसान इब्तिदाअन अपनी मां के पेट में एक बूंद की मानिंद (तरह) दाखिल होता है। फिर वह बढ़कर अलका (जोंक) की मानिंद हो जाता है। फिर मजीद तरक्की होती है और उसके आजा (शरीरांग) और नुकूश बनते हैं। फिर वह मर्द या औरत बनकर बाहर आता है। ये तमाम हैतनाक तसररफत (प्रक्रियाएं) इंसान की कोशिश के बगैर होते हैं। फिर कुदरत का

पारा 29

1492

सूरह-76. अद-दहर

जो निज़ाम रोज़ाना ये अजाइब (आश्चर्यजनक प्रक्रियाएं) जुहूर में ला रहा है, उसके लिए मौजूदा दुनिया के बाद एक और दुनिया बना देना क्या मुश्किल है। हकीकत यह है कि सच्चाई को मानने में जो चीज़ रुकावट बनती है वह लोगों की अनानियत (अहंकार) है न कि दलाइल व क़त्त (संकेतों) की कमी।

سُبْحَانَكَ يٰهٰذَا الَّذِىٓ اُنۡشِئُوۡهُ ۚ اِنۡ اِلٰهًا غَیۡرُكَ ۚ
هَلْ اٰتٰى عَلَى الْاِنۡسَانِ حِیۡنٌ مِّنَ الدَّهۡرِ لَمۡ یَكُنۡ شَیۡئًا ذَّکُوۡرًا ۚ اِنَّا خَلَقۡنَا
الۡاِنۡسَانَ مِّنۡ نُّطۡفَةٍ اَمۡشَاجٍ تَبۡتَغِیۡهِ ۚ فَعَلَدۡنَا سَمِیۡمًا بَصِیۡرًا ۚ اِنَّا هَدٰیۡنُهُ
السَّبۡیۡلَ اِنۡمَآ شَآکِرًا وَّاِمَّا کَفُوۡرًا ۝

आयतें-31

सूरह-76. अद-दहर

रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कभी इंसान पर ज़माने में एक वक्त गुज़ा है कि वह कोई कबिले जिक्र चीज़ न था। हमने इंसान को एक मख़्लूत (मिश्रित) बूंद से पैदा किया, हम उसे पलटते रहे। फिर हमने उसे सुनने वाला, देखने वाला बना दिया। हमने उसे राह समझाई, चाहे वह शुक्र करने वाला बने या इंकार करने वाला। (1-3)

कुरआन सातवीं सदी ईसवी में उतरा। उस वक्त सारी दुनिया में किसी को यह मालूम न था कि रहमे मादर (गर्भाशय) में इंसान का आगाज एक मख़्लूत नुफे से होता है। यह सिर्फ बीसवीं सदी की बात है कि इंसान ने यह जाना कि इंसान और (हैवान) का इब्तिदाई नुफा देअज्ज (अवयवों) से मिलकर बनता है एक औरत का बैजा (Ovum) और दूसरे मर्द का शुक्र (Sperm)। ये दोनों ख़ुर्दबीनी (अत्यंत सूक्ष्म) अज्जा जब आपस में मिल जाते हैं उस वक्त रहमे मादर में वह चीज़ बनना शुरू होती है जो बिलआखिर इंसान की सूरत इख़्तियार करती है। ढ़ेह हजार साल पहले कुरआन में नुफ़ अमश़ाज (मख़्लूत नुफ़) का लफ़्ज़ आना इस बात का सबूत है कि कुरआन खुदा की किताब है।

कुरआन में इस तरह की बहुत सी मिसालें हैं। ये इस्तसनाई (विलक्षण) मिसालें वाज़ेह तौर पर कुरआन को खुदा की किताब साबित करती हैं। और जब यह बात साबित हो जाए कि कुरआन खुदा की किताब है तो इसके बाद कुरआन का हर बयान सिर्फ कुरआन का बयान होने की बुनियाद पर दुरुस्त मानना पड़ेगा।

اِنَّا اَعۡتَدۡنَا لِلۡكَافِرِیۡنَ سَلَیۡلًا وَّاَغۡلَآ ۚ وَسَعِیۡرًا ۝ اِنَّ الْاَكۡبَرَ اِلٰهَ رَبُّوۡنَ ۚ

كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۖ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۖ يُؤْفُونَ
بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۖ وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ
مِسْكِينَ وَابْتِئَامًا ۖ أَسِيرًا ۖ إِنَّمَا تُطْعَمُونَ لُجَّةَ اللَّهِ لَا تُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا
شُكْرًا ۖ إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۖ فَوَقَّهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ
وَلَقَهُمْ نَصْرَةٌ وَسُرُورًا ۖ وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ۖ مُتَّكِئِينَ فِيهَا
عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَهْرًا ۖ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَ

ذُلَّتْ قُطُوفُهَا تَذَلُّلًا ۖ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِانِّيَةِ مِّنْ فَضَّةٍ وَكُؤُوبٍ كَانَتْ
قَوَارِيرًا ۖ قَوَارِيرًا مِّنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ۖ

وَرَبُّهُمْ جَبَّارٌ فَاعِلٌ
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ
فَلْيَرْجِعْ إِلَىٰ رَبِّهِ
أَلَمْ يَرْجِعْ إِلَىٰ رَبِّهِ
أَلَمْ يَرْجِعْ إِلَىٰ رَبِّهِ

हमने मुँकियों के लिए जंजीरें और तौक और भड़कती आग तैयार कर रखी है। नेक लोग ऐसे प्याले से पियेंगे जिसमें काफूर की आमेजिश होगी। उस चश्मे (स्रोत) से अल्लाह के बंदे पियेंगे। वे उसकी शाखें निकालेंगे। वे लोग वाजिबत (दायित्वों) को पूरा करते हैं और ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख्ती आम होगी। और उसकी मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को और यतीम को और कैदी को। हम जो तुम्हें खिलाते हैं तो अल्लाह की खुशी चाहने के लिए। हम न तुमसे बदला चाहते और न शुकुगुजारी। हम अपने रब की तरफ से एक सख्त और तलख (कटु) दिन का अंदेशा रखते हैं। पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की सख्ती से बचा लिया। और उन्हें ताजगी और सुशी अता फरमाई और उनके सब्र के बदले में उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास अता किया। टेक लगाए होंगे उसमें तख्तों पर, उसमें न वे गर्मी से दो चार होंगे और न सर्दी से। जन्नत के साये उन पर झुके हुए होंगे और उनके फल उनके बस में होंगे। और उनके आगे चांदी के बर्तन और शीशे के प्याले गर्दिश में होंगे। शीशे चांदी के होंगे, जिन्हें भरने वालों ने मुनासिब अंदाज़ से भरा होगा। (4-16)

दुनिया में इंसान को आज़ाद पैदा किया गया, और फिर उसे राह दिखा दी गई। नाशुकी की राह और शुकुगुज़ार ज़िंदगी की राह। अब यह इंसान के अपने ऊपर है कि वह दोनों में से कौन सी राह इख्तियार करता है। जो शख्स नाशुकी का तरीका इख्तियार करे उसके लिए आखिरत में दोज़ख का अज़ाब है। और जो शख्स शुकुगुज़ारी का तरीका इख्तियार करे उसके लिए जन्नत की नेमतें।

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ۖ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّى سَاسِيًا ۖ وَيُطَوَّقُونَ
عَلَيْهِمْ وَلَدَانُ ۖ يُخَلَّدُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثورًا ۖ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَرًا
رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ۖ عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٌ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُوعًا
أَسْوَدٌ مِّنْ فَضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ۖ إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً
وَوَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا ۖ

और वहां उन्हें एक और जाम पियाला जाएगा जिसमें सौंठ की आमेजिश होगी। यह उसमें एक चश्मा (स्रोत) है जिसे सलसबील कहा जाता है। और उनके पास फिर रहे होंगे ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, तुम उन्हें देखो तो समझो कि मोती हैं जो बिखेर दिए गए हैं। और तुम जहां देखोगे वहीं अज़ीम नेमत और अज़ीम बादशाही देखोगे। उनके ऊपर बारीक रेशम के सबज़ कपड़े होंगे और दबीज़ (गाढ़े) रेशम के सबज़ कपड़े भी, और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे। और उनका रब उन्हें पाकीज़ा मशरूब (पेय) पिलाएगा। बेशक यह तुम्हारा सिला (प्रतिफल) है और तुम्हारी कोशिश मकबूल (माननीय) हुई। (17-22)

यह बरतर जन्नत का बयान है जहां ज्यादा बरतर ईमान का सुबूत देने वाले लोग बसाए जाएंगे। उस जन्नत के बाशियों को शाहाना नेमतें हासिल होंगी।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۖ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ
إِمًّا أَوْ كَفُورًا ۖ وَادْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۖ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ
لَيْلًا طَوِيلًا ۖ إِنَّ هَؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۖ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۖ
نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمثالَهُمْ تَبْدِيلًا ۖ إِنَّ
هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۖ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ
اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۖ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ

हमने तुम पर कुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। पस तुम अपने रब के हुक्म पर सब्र करो और उनमें से किसी गुनाहगार या नाशुकी की बात न मानो। और अपने रब का नाम सुबह व शाम याद करो। और रात को भी उसे सज्दा करो। और उसकी तस्बीह

सूरह-77. अल-मुरसलात

1495

पारा 29

करो रात के लंबे हिस्से में। ये लोग जल्दी मिलने वाली चीज को चाहते हैं और उन्होंने छोड़ रखा है अपने पीछे एक भारी दिन को। हम ही ने उन्हें पैदा किया और हमने उनके जोड़बंद मजबूत किए, और जब हम चाहेंगे उन्हीं जैसे लोग उनकी जगह बदल लाएंगे। यह एक नसीहत है, पस जो शख्स चाहे अपने ख की तरफ रास्ता इस्तिआर कर ले। और तुम नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह चाहे। बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाखिल करता है, और जालिमों के लिए उसने दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (23-31)

हक की दावत को न मानने के दो खास सबब होते हैं। या तो आदमी के सामने दुनिया का मफ़द होता है और मफ़द (हित) से महरूमी का अंदेशा उसे हक की तरफ बढने नहीं देता। दूसरा सबब यह है कि आदमी तकबुर (घमंड) की नफ़िसयात में मुब्तिला हो और उसका तकबुर इसमें रुकावट बन जाए कि वह अपने से बाहर किसी की बड़ाई को तस्लीम करे। ये दोनों किस्म के लोग हक की दावत की राह में तरह-तरह की रुकावटें डालते हैं। मगर हक के दाओ को हुक्म है कि वह उनका लिहाज किए बग़ैर अपना काम सब्र के साथ जारी रखे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ۚ فَالْعُصْفَاتِ عَصْفًا ۚ وَالنُّشْرِ نَشْرًا ۚ فَالْفُرْقَاتِ
فُرْقًا ۚ فَالْمُلْقَاتِ ذِكْرًا ۚ عَذْرًا أَوْ نَذْرًا ۚ إِنَّهَا تُوَعَّدُونَ وَلَاقِعَةٌ ۚ

आयतें-50

सूरह-77. अल-मुरसलात

रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है हवाओं की जो छोड़ दी जाती हैं। फिर वे तूफ़ानी रफ़्तार से चलती हैं। और बादलों को उठाकर फैलाती हैं। फिर मामले को जुदा करती हैं। फिर याददिहानी डालती हैं। उज़्र के तौर पर या इरावे के तौर पर। जो वादा तुमसे किया जा रहा है वह जरूर क़ै (घटित) होने वाला है। (1-7)

समुद्र से भाप उठकर फ़जा में जाती हैं और बादल बन जाती हैं। इन बादलों को हवाएं उड़कर एक तरफ से दूसरी तरफ ले जाती हैं। वे एक इलाके में बारिश बरसाकर सरसबी का सामान करती हैं और दूसरे इलाके को ख़ुशक छोड़ देती हैं। इससे मालूम हुआ कि इस दुनिया का निज़ाम एक और दूसरे के दर्मियान फ़र्क करने के उसूल पर कायम है। मौजूदा दुनिया में इस उसूल का इन्हार जुर्ह (आशिक) सूरत में हो रहा है और आखिरत में इस उसूल का इन्हार अपनी कामिल (पूर्ण) सूरत में होगा।

पारा 29

1496

सूरह-77. अल-मुरसलात

हवाओं की यह नौइयत आदमी के लिए याददिहानी है। उनका किसी के लिए रहमत और किसी के लिए जहमत बनना इस हकीकत की याददिहानी है कि मौजूदा दुनिया में जब दो मुख़लिफ़ किस्म के इंसान हैं तो उनके लिए ख़ुदा का फैसला दो अलग-अलग सूरतों में जाहिर होगा। फिर हवाओं की यह नौइयत ख़ुदा की तरफ से इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) भी है। इस मुजहिर के बाद किसी के लिए मअज़त (विवशता जताने) की कोई गुंजाइश नहीं।

وَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ۚ وَإِذَا السَّمَاءُ فُرْجَتْ ۚ وَإِذَا الْجِبَالُ سُفَّتْ ۚ وَإِذَا الرَّسْلُ
أُفْتُتْ ۚ لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ۚ لِيَوْمِ الْفُصْلِ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفُصْلِ ۚ
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ أَلَمْ نُهَبِكِ الْأَوَّلِينَ ۚ ثُمَّ نُنْعِبُكُمْ
الْآخِرِينَ ۚ كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۚ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ

पस जब सितारे बेनूर हो जाएंगे। और जब आसमान फट जाएगा। और जब पहाड़ रेजा-रेजा कर दिए जाएंगे। और जब पैग़म्बर मुअय्यन (निश्चित) वक़्त पर जमा किए जाएंगे। किस दिन के लिए वे टाले गए हैं। फैसले के दिन के लिए। और तुम्हें क्या ख़बर कि फैसले का दिन क्या है। तबाही है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। क्या हमने अगलों को हलाक नहीं किया। फिर हम उनके पीछे भेजते हैं पिछलों को। हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (8-19)

जब कियामत आएगी तो दुनिया का मौजूदा निज़ाम दरहम बरहम हो जाएगा। जो लोग मौजूदा दुनिया में अपने आपको जोरआवर समझते हैं और इस बिना पर हक की दावत (सत्य के आह्वान) को नज़रअंदाज करते हैं, वे उस दिन अपने आपको इस हाल में पाएंगे कि उनसे ज्यादा बेज़ोर और कोई नहीं।

أَلَمْ تَخْلُقْنَا مِنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ۚ فَبَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ۚ إِلَى قَدَرٍ
مَّعْلُومٍ ۚ فَقَدَرًا فَنَعْمَ الْقَدَرُونَ ۚ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ أَلَمْ
نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۚ أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ۚ وَجَعَلْنَا فِيهَا رِوَاسِي شَيْعَاتٍ ۚ
أَسْقَيْنَاكُمْ مَاءً فُرَاتًا ۚ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ

क्या हमने तुम्हें एक हकीर (तुच्छ) पानी से पैदा नहीं किया। फिर उसे एक महफूज जगह रखा, एक मुक़रर मुद्दत तक। फिर हमने एक अंदाजा ठहराया, हम कैसा अच्छा अंदाजा ठहराने वाले हैं। ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों की। क्या हमने

जमीन को समेटने वाला नहीं बनाया, जिंदों के लिए और मुर्दों के लिए। और हमने उसमें ऊंचे पहाड़ बनाए और तुम्हें मीठा पानी पिलाया। उस रोज ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए। (20-28)

मौजूदा दुनिया का निजाम इस तरह बनाया गया है कि उस पर ग़ौर करने वाला उसके आइने में आखिरत को देख लेता है। इसके बावजूद जो लोग हक (सत्य) को झुठलाते हैं उनसे बड़ा मुजरिम और कोई नहीं।

إِنطَلِقُوا إِلَى مَا كُنْتُمْ بِهِ تَكْذِبُونَ ۖ إِنطَلِقُوا إِلَى ظِلِّ ذِي شَلَثِ شَعْبٍ ۖ لَا ظِلِيلٌ وَلَا يُغْنِي مِنَ الْهَبِّ ۖ إِنَّمَا تَزْمِي بِشَرِّ كَالْقَصْرِ ۖ كَأَنَّهُ جُمِلَتْ صُفُرٌ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ۖ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمْعُكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۖ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ

۞

चलो उस चीज की तरफ़ जिसे तुम झुठलाते थे। चलो तीन शाखों वाले साये की तरफ़। जिसमें न साया है और न वह गर्मी से बचाता है। वह अंगारे बरसाएगा जैसे कि ऊंचा महल, जर्द ऊंटों की मानिंद, उस दिन ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए। यह वह दिन है जिसमें लोग बोल न सकेंगे। और न उन्हें इजाजत होगी कि वे उज़्र पेश करें। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। यह फैसले का दिन है। हमने तुम्हें और अगले लोगों को जमा कर लिया। पस अगर कोई तदबीर हो तो मुझ पर तदबीर चलाओ। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (29-40)

आखिरत की होलनाकियां जब सामने आएंगी तो इंसान उनके मुकाबले में अपने आपको बिल्कुल बेबस पाएगा। उस वक़्त उन लोगों का बोलना बंद हो जाएगा जो दुनिया में इस तरह बोलते थे जैसे कि उनके अल्फ़ाज का ज़ख़ीरा कभी ख़त्म होने वाला नहीं।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلِّ وَعُيُونٍ ۖ وَفَوَاكِهٍ مَّيَّا يَشْتَهُونَ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ

لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ كُلُوا وَتَشَبَّهُوا قُلَيْدًا ۖ إِنَّكُمْ تُجْرَمُونَ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ فَيَأْتِي حَذِيثٌ بَعْدَهُ يُؤْيُونُونَ ۖ

۞

वेशक डरने वाले साये में और चशमों (स्रोतों) में होंगे, और फलों में जो वे चाहें। मजे के साथ खाओ और पियो। उस अमल के बदले में जो तुम करते थे। हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। खाओ और बरत लो थोड़े दिन, वेशक तुम गुनाहगार हो। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। और जब उनसे कहा जाता है कि झुको तो वे नहीं झुकते। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। अब इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे। (41-50)

मौजूदा दुनिया में खुदा की नेमतें वक़्ती तौर पर इस्तेहान की गरज से रखी गई हैं। आखिरत में खुदा की नेमतें अबदी (चिरस्थायी) तौर पर ज्यादा कामिल सूरत में ज़ाहिर होंगी। आज इन नेमतों में हर एक हिस्सा पा रहा है। मगर आखिरत की आला नेमतें सिर्फ़ उन लोगों का हिस्सा होंगी जिन्होंने आज़ादी के हालात में इताअत की। जो उस वक़्त झुके जबकि वे झुकने के लिए मजबूर न थे। जो लोग कौल (कथन) पर झुकें उनके लिए जन्नत है और जो लोग वैल (दुख) को देखकर झुकें उनके लिए जहन्नम।

سُبْحَانَكَ يَا رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۖ وَهِيَ الرُّبُوعُ ۖ وَإِنَّهَا رُكُوعٌ ۖ

۞

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۖ عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ۖ عَنِ النَّبَا الْعَظِيمِ ۖ الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ۖ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۖ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۖ أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ هَدًى ۖ وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ۖ وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ۖ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۖ وَجَعَلْنَا النَّيْلَ لَبَاسًا ۖ وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۖ وَبَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ شَدَادٍ ۖ وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ۖ وَآتَيْنَا مِنَ الْبُعْثَرِ مَاءً تَجَّاجًا ۖ لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۖ وَجَعَلْنَا الْأَفْقَافَ ۖ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۖ

सूरह-78. अन-नवा

1499

पारा 30

आयतें-40

सूरह-78. अन-नवा

रुकूअ-2

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। लोग किस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं। उस बड़ी ख़बर के बारे में, जिसमें वे लोग मुज़्तलिफ़ हैं। हरगिज़ नहीं, अनक़रीब वे जान लेंगे। हरगिज़ नहीं, अनक़रीब वे जान लेंगे। क्या हमने ज़मीन को फ़र्श नहीं बनाया, और पहाड़ों को मेखें। और तुम्हें हमने बनाया जोड़े जोड़े, और नींद को बनाया तुम्हारी थकान दूर करने के लिए। और हमने रात को पर्दा बनाया, और हमने दिन को मआश (जीविका) का वक़्त बनाया। और हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए। और हमने उसमें एक चकमता हुआ चिराग़ रख दिया। और हमने पानी भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया, ताकि हम उसके ज़रिए से उगाएं ग़ल्ला और सब्ज़ी और घने बाग़। बेशक़ फैसले का दिन एक मुह्र है। (1-17)

अरब के लोग आख़िरत के मुंकिर न थे अलबत्ता वे आख़िरत की उस नौइयत के मुंकिर थे जिसकी उन्हें कुरआन में ख़बर दी जा रही थी। यानी उन्हें इस बाब में शुबह था कि 'मुहम्मद' को न मानने से वे आख़िरत के आलम में ज़लील व ख़्वार हो जाएंगे। मौजूदा दुनिया में जो तबीई (भौतिक) वाक़ेयात हैं वे आख़िरत के दिन की तरफ़ इशारा करने वाले हैं। हमारी दुनिया का हाल तकाज़ा करता है कि उसी के मुताबिक़ उसका एक मुस्तक़बिल हो। इस पहलू से ग़ौर किया जाए तो यह मानना पड़ता है कि इस अज़ीम आगाज़ का एक अज़ीम अंजाम आने वाला है। यह दुनिया यूं ही बेअंजाम ख़त्म हो जाने वाली नहीं।

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ۚ وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۚ وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۚ إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۚ لِلظَّالِمِينَ مَابَأُ ۚ لَيْشِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۚ لَا يَدْخُلُونُ فِيهَا أَبَدًا وَلَا شَرَابًا ۚ الْأَحْيَاءُ وَالْأَمْوَاتُ ۚ جَزَاءُ رُفُوفًا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۚ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذِبًا ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۚ فَذُوقُوا فَلَئِنْ تَزِيدُوا إِلَّا عَذَابًا ۚ

जिस दिन सूर फूँका जाएगा, फिर तुम फौज़ दर फौज़ आओगे। और आसमान खोल दिया जाएगा, फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे। और पहाड़ चला दिए जाएंगे तो वे रेत की तरह हो जाएंगे। बेशक़ जहन्नम घात में है, सरकशों का ठिकाना, उसमें वे मुद्दतों पड़े रहेंगे। उसमें वे न किसी ठंडक को चखेंगे और न पीने की चीज़, मगर गर्म पानी और

पारा 30

1500

सूरह-78. अन-नवा

पीप, बदला उनके अमल के मुवाफ़िक़। वे हिसाब का अदेशा नहीं रखते थे। और उन्होंने हमारी आयतों को बिल्कुल झुटला दिया। और हमने हर चीज़ को लिखकर शुमार कर रखा है। पस चखो कि हम तुम्हारी सज़ा ही बढ़ाते जाएंगे। (18-30)

दुनिया में सरकशी इंसान को बहुत लज़ीज़ मालूम होती है क्योंकि वह उसकी अना (अहंकार) को तस्कीन देती है। मगर इंसान की सरकशी जब आख़िरत में अपनी अस्ल हकीकत के एतबार से ज़ाहिर होगी तो सूरतेहाल बिल्कुल मुज़्तलिफ़ हो जाएगी। जिस चीज़ से आदमी दुनिया में लज़ज़त लिया करता था, अब वह उसके लिए एक भयानक अज़ाब बन जाएगा।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۚ حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۚ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۚ وَكَأْسًا دِهَاقًا ۚ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذْبًا ۚ جَزَاءُ مِمَّنْ رَزَقْتَ عِطَاءً حَسَابًا ۚ رَبِّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَنُ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ۚ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْبَالِكَةُ صَفًّا ۚ لَا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صَوَابًا ۚ ذَلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ مَا بَاءًا ۚ إِنَّا أَنْذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا ۚ يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدُهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ لَيَلَيْتَنِي كُنْتُ تُرَابًا ۚ

बेशक़ डरने वालों के लिए कामयाबी है। बाग़ और अंगूर। और नौखेज़ हमसिन लड़कियाँ। और भरे हुए जाम। वहाँ वे लग्न (घटिया, निरर्थक) और झूठी बात न सुनेंगे। बदला तेरे ख़ब की तरफ़ से होगा, उनके अमल के हिसाब से रहमान की तरफ़ से जो आसमानों और ज़मीन और उनके दरमियान की चीज़ों का ख़ब है, कोई कुदरत नहीं रखता कि उससे बात करे। जिस दिन रूह और फ़रिश्ते सफ़वस्ता (पंक्तिबद्ध) खड़े होंगे, कोई न बोलेगा मगर जिसे रहमान इजाज़त दे, और वह ठीक बात कहेगा। यह दिन बरहक़ है, पस जो चाहे अपने ख़ब की तरफ़ ठिकाना बना ले। हमने तुम्हें करीब आ जाने वाले अज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन आदमी उसको देख लेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा है, और मुंकिर कहेगा, काश मैं मिट्टी होता। (31-40)

जन्नत का माहौल लग्न और झूठी बातों से पाक होगा। इसलिए जन्नत की लतीफ़ व नफीस दुनिया में बसाने के लिए सिर्फ़ वही लोग चुने जाएंगे जिन्होंने मौजूदा दुनिया में इस अहलियत का सुबूत दिया हो कि वे लग्न और झूठ से दूर रहकर ज़िंदगी गुज़ारने का ज़ौक रखते हैं।

سُوْرَةُ النَّازِعَاتِ مَكِّيَّةٌ مِّنْ ثَمَانِيَةِ آيَاتٍ وَفِيهَا ثَمَانِيَةٌ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالنَّازِعَاتِ غَرْقًا ۚ وَالشَّيْطَانِ نَسْطًا ۚ وَالسَّيِّئَاتِ سَبًّا ۚ
فَالْمُدْبِرَاتِ أَمْرًا ۚ يَوْمَ تُرْجَفُ الزَّاجِفَةُ ۚ تَتَّبِعُنَّ الرَّادِفَةَ ۚ
وَالْجَفَّةُ ۚ أَبْصَارُهُنَّ تَخْشَعُ ۚ يَقُولُونَ ۚ إِنَّا لَنَرُّدُّوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ۚ عِزًّا
كُنَّا عِظَامًا تَخْرُجُ ۚ قَالُوا تِلْكَ إِذْ كُنَّا خَاسِرَةً ۚ قَالَتَاهِ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ۚ
فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ۚ

आयतें-46

सूरह-79. अन-नाज़िआत

रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महारवान, निहायत रहम वाला है।
कसम है जड़ से उखाड़ने वाली हवाओं की। और कसम है आहिस्ता चलने वाली हवाओं
की। और कसम है तेरने वाले बादलों की। फिर सबकत (अग्रसरता) करके बढ़ने वालों
की। फिर मामले की तदबीर करने वालों की। जिस दिन हिला देने वाली हिला
डालेगी। उसके पीछे एक और आने वाली चीज़ आएगी। कितने दिल उस दिन धड़कते
होंगे। उनकी आंखें झुक रही होंगी। वे कहते हैं क्या हम पहली हालत में फिर वापस
होंगे। क्या जब हम बोसीदा हड़ियां हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि यह वापसी तो बड़े
घाटे की होगी। वह तो बस एक डांट होगी, फिर यकायक वे मैदान में मौजूद होंगे।
(1-14)

हर साल दुनिया में यह मंज़र दिखाई देता है कि बज़ाहिर हर तरफ सुकून होता है। इसके
बाद तेज़ हवाएं चलती हैं। वे बादलों को उड़ाना शुरू करती हैं। फिर वे बारिश बरसाती हैं।
जल्द ही बाद लोग देखते हैं कि जहां खाली ज़मीन थी वहां एक नई दुनिया निकल कर खड़ी
हो गई। फ़ितरत का यह वाक्या आखिरत के इम्कान को बताता है। यह तमसील की ज़बान
में बता रहा है कि मौजूदा दुनिया के अंदर से आखिरत की दुनिया का बरामद होना इतना ही
मुमकिन है जितना खाली ज़मीन से सरसब्ज़ ज़मीन का जुहूर में आना।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۖ إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۖ إِذْهَبْ
إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ۖ فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَى أَنْ تَزْكَى ۖ وَاهْدِيكَ إِلَى رَبِّكَ
فَتَخْشَى ۖ فَإِنَّهُ الْآيَةُ الْكُبْرَى ۖ فَكَذَّبَ وَعَصَى ۖ ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَى ۖ فَخَشَى

فَتَنَادَى ۖ فَتَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَى ۚ فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ وَالْأُولَى ۚ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَخْشَى

क्या तुम्हें मूसा की बात पहुंची है। जबकि उसके ख ने उसे तुवा की मुकद्दस (पवित्र)
वादी में पुकारा। फिरऔन के पास जाओ, वह सरकश हो गया है। फिर उससे कहे
क्या तुझे इस बात की ख़्वाहिश है कि तू दुरुस्त हो जाए। और मैं तुझे तेरे ख की राह
दिखाऊं फिर तू डरे। पस मूसा ने उसे बड़ी निशानी दिखाई। फिर उसने झुठलाया और
न माना। फिर वह पलटा कोशिश करते हुए। फिर उसने जमा किया, फिर उसने
पुकारा। पस उसने कहा कि मैं तुम्हारा सबसे बड़ा ख हूं। पस अल्लाह ने उसे आखिरत
और दुनिया के अज़ाब में पकड़ा। बेशक इसमें नसीहत है हर उस शख्स के लिए जो
डरे। (15-26)

फिरऔन और इस तरह के दूसरे मुकिरीन की ज़िंदगी इस बात का सुबूत है कि जो शख्स
हकीकते वाक्या का इंकार करे वह लाज़िमन उसकी सज़ा पाकर रहता है। ये तारीख़ी मिसालें
आदमी की इबरत (सीख) के लिए काफी हैं। मगर कोई इबरत की बात सिर्फ उस शख्स के
लिए इबरत का ज़रिया बनती हैं जो अदेशा की नफिसयात रखता हो। जो किसी अमल को
उसके अंजाम के एतबार से देखे न कि सिर्फ उसके आगाज़ के एतबार से।

إِنَّمَا أَشَدُّ خَلْقًا أَمَ السَّمَاءِ بُنْيَانُهَا ۖ رَفَعْنَا سَمَكُهَا فَسَوَّيْنَاهَا ۖ وَأَعْطَشَ
لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُغْحَهَا ۖ وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا ۖ أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَ
مَرْعَاهَا ۖ وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۖ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۚ

क्या तुम्हारा बनाना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान का, अल्लाह ने उसे बनाया।
उसकी छत को बुलन्द किया फिर उसे दुरुस्त बनाया। और उसकी रात को तारीक
(अंधकारमय) बनाया और उसके दिन को ज़ाहिर किया। और ज़मीन को इसके बाद
फैलाया। उससे उसका पानी और चारा निकाला। और पहाड़ों को कायम कर दिया,
सामाने हयात (जीवन-सामग्री) के तौर पर तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के
लिए। (27-33)

कायनात की सूरत में जो वाक्या हमारे सामने मौजूद है वह इतना ज़्यादा बड़ा है कि इसके
बाद हर दूसरा वाक्या इससे छोटा हो जाता है। फिर जिस दुनिया में बड़े वाक्ये का जुहूर मुमकिन
हो वहां छोटे वाक्ये का जुहूर क्यों मुमकिन न होगा। ऐसी हालत में कुरआन की यह खबर कि
इंसान को दुबारा पैदा होना है एक ऐसी खबर है जिसे काबिलेफहम बनाने के लिए पहले ही
से बहुत बड़े पैमाने पर मालूम असबाब मौजूद हैं।

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَى ۖ يَوْمَ يَكُونُ الْإِنْسَانُ مَأْسُومًا ۖ وَبُورَتِ
الْحَجِيمُ ۚ لِمَنْ يَرَى ۖ فَأَمَّا مَنْ طَغَى ۖ وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۖ فَإِنَّ الْحَجِيمَ هِيَ
الْبَاوَى ۖ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ ۖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَى ۖ فَإِنَّ
الْجَنَّةَ هِيَ الْبَاوَى ۖ يُسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۖ فِيمَ أَنْتَ مِنْ
ذِكْرِهَا ۖ إِيَّاكَ مُنْتَهِمَهَا ۖ إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرُ مَنْ يُخَشِئُهَا ۖ كَانَتْهُمْ يَوْمَ
يُرْوَاهَا ۖ لَمْ يَكُنُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَو ضُحَاهَا ۖ

फिर जब वह बड़ा हंगामा आएगा। जिस दिन इंसान अपने किए को याद करेगा। और देखने वालों के सामने दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी। पस जिसने सरकशी की और दुनिया की जिंदगी को तरजीह दी, तो दोज़ख़ उसका ठिकाना होगा और जो शख्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा और नफ्स को ख़ाहिश से रोका, तो जन्नत उसका ठिकाना होगा। वे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब खड़ी होगी। तुम्हें क्या काम उसके ज़िक्र से। यह मामला तेरे रब के हवाले है। तुम तो बस डराने वाले हो उस शख्स को जो डरे। जिस रोज़ ये उसे देखेंगे तो गोया वे दुनिया में नहीं ठहरे मगर एक शाम या उसकी सुबह। (34-46)

आदमी दो चीज़ों के दर्मियान है। एक मौजूदा दुनिया जो सामने है। और दूसरे आखिरत की दुनिया जो ग़ैब (अप्रकट) में है। आदमी का अस्ल इस्तेहान यह है कि वह मौजूदा दुनिया के मुकाबले में आखिरत को तरजीह दे। मगर यह काम सिर्फ वही लोग कर सकते हैं जो अपने नफ्स की ख़ाहिशों पर कंट्रोल करने का हौसला रखते हैं।

سُبْحَانَكَ يَا مَنْ أَمَّا مَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۖ ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ ۖ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَبَسَ وَتَوَلَّى ۖ أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَى ۖ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهِ يُزَكَّى ۖ أَوْ يَذَّكَّرُ
فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرَى ۖ أَمَّا مَنْ اسْتَعْصَمَ ۖ فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّى ۖ وَمَا عَلَيْكَ
الْأَلِيزَكَّى ۖ وَأَمَّا مَنْ جَاءَهُ الْيَسْعَى ۖ وَهُوَ يَخْشَى ۖ فَأَنْتَ عَنْهُ تَكْفَى ۖ كَلَّا
إِنَّمَا تَذَكَّرُ ۖ فَكُنْ ۖ شَاءَ ذِكْرُهُ ۖ فِي صُفْحٍ مُمَكِّمَةٍ ۖ مَرْفُوعَةٍ مُطَهَّرَةٍ ۖ

بِسْمِ اللَّهِ

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۖ كَرَامٍ بَرَرَةٍ ۖ

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

उसने तय़ौरी चढ़ाई हुआ और बेरुख़ी बरती इस बात पर कि अंधा उसके पास आया। और तुम्हें क्या ख़बर कि वह सुधर जाए या नसीहत को सुने तो नसीहत उसके काम आए। जो शख्स बेपरवाही बरतता है, तुम उसकी फ़िक्र में पड़ते हो। हालांकि तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं अगर वह न सुधरे। और जो शख्स तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आता है और वह डरता है, तो तुम उससे बेपरवाही बरतते हो। हरगिज़ नहीं, यह तो एक नसीहत है, पस जो चाहे याददिहानी हासिल करे। वह ऐसे सहीफ़ों (ग्रंथों) में है जो मुकर्रम हैं, बुलन्द मर्तबा हैं, पाकीज़ा हैं, मुअज़्ज़ज़, नेक कातिबों के हाथों में। (1-16)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मक्का में कुरैश के सरदारों से दावती गुप्तगू कर रहे थे। इतने में एक नाबीना मुसलमान अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम वहां आ गए। उन्होंने कहा : 'ऐ अल्लाह के रसूल, अल्लाह ने जो कुछ आपको सिखाया है उसमें से मुझे सिखाइए।' अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसे मौके पर एक अंधे शख्स का आना नागवार गुज़रा, इस पर ये आयतें उतरतीं। इन आयात में बज़ाहिर ख़िताब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से है मगर हकीकत में इस वाक्य के हवाले से बताया गया है कि अल्लाह की नज़र में उन बड़ों की कोई कीमत नहीं जो दीन से फिरे हुए हों। अल्लाह के नज़दीक कीमती इंसान सिर्फ वह है जिसके अंदर ख़शियत (खौफ) वाली रूह हो, चाहे बज़ाहिर वह एक अंधा आदमी दिखाई देता हो।

قُلِ الْإِنْسَانُ مَا أَكْفَرُ ۖ مِنْ آيِ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۖ مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ
فَقَدَرَهُ ۖ ثُمَّ السَّبِيلَ يَسْرُهُ ۖ ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۖ ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ ۖ
كَأَلَّا لَنَا يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ۖ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهِ ۖ أَتَا صَبَبْنَا الْمَاءَ
صَبًّا ۖ ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۖ فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۖ وَعَبْنَا وَقَضْبًا ۖ
وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ۖ وَحَدَائِقَ غُلْبًا ۖ وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ۖ مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَعْلَامِكُمْ ۖ

बुरा हो आदमी का, वह कैसा नाशुक्र है। उसे किस चीज़ से पैदा किया है, एक बूंद से। उसे पैदा किया। फिर उसके लिए अंदाज़ा ठहराया। फिर उसके लिए राह आसान कर दी। फिर उसे मौत दी, फिर उसे कब्र में ले गया। फिर जब वह चाहेगा उसे दुबारा

सूरह-80. अबस

1505

पारा 30

जिंदा कर देगा। हरगिज़ नहीं, उसने पूरा नहीं किया जिसका अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। पस इंसान को चाहिए कि वह अपने खाने को देखे। हमने पानी बरसाया अच्छी तरह, फिर हमने ज़मीन को अच्छी तरह फाड़ा। फिर उगाए उसमें ग़ल्ले और अंगूर और तरकारियां और ज़ैतून और खज़ूर और घने बाग़ और फल और सब्ज़ा, तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए सामाने हयात (जीवन-सामग्री) के तौर पर (17-32)

इंसान से जो खुदापरस्ती मल्लूब है उसका मुहर्रिक (प्रेरक) अस्तन शुक्र है। इंसान अपनी तख़्नीक को सोचे और अपने गिर्द व पेश के कुदरती इतिज़ामात पर गौर करे तो लाज़िमन उसके अंदर अपने रब के बारे में शुक्र का जज़्बा पैदा होगा। इस शुक्र और एहसानमंदी के जज़्बे के तहत जिस अमल का जुहूर होता है उसी का नाम खुदापरस्ती है।

وَإِذَا جَاءَتِ الصَّاحَّةُ ۖ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۖ وَأُمُّهُ وَأَبْنَاهُ ۖ وَصَاحِبَتُهُ وَبَنِيهِ ۖ لِكُلِّ امْرَأٍ مِنْهُمْ يَوْمَ يَوْمٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۖ وَجُودُهُ يَوْمَ يَوْمٍ مَسْفُورَةٌ ۖ ضَاحِكَةٌ مُسْتَبْشِرَةٌ ۖ وَوُجُوهٌ يَوْمَ يَوْمٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۖ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرَةُ الْفَجَرَةُ ۖ

पस जब वह कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा। जिस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से, और अपनी मां से और अपने बाप से, और अपनी बीवी से और अपने बेटों से। उनमें से हर शख्स को उस दिन ऐसा फिक्र लगा होगा जो उसे किसी और तरफ़ मुतवज्जह न होने देगा। कुछ चेहरे उस दिन रोशन होंगे, हंसते हुए, खुशी करते हुए। और कुछ चेहरों पर उस दिन ख़ाक उड़ रही होगी, उन पर स्याही छई हुई होगी। यही लोग मुंकिर हैं, ढीठ हैं। (33-42)

सच्चाई को न मानना और उसके मुकाबले में सरकशी दिखाना सबसे बड़ा जुर्म है, ऐसे लोग आखिरत में बिल्कुल बेकीमत होकर रह जाएंगे। और जो लोग सच्चाई का एतराफ़ करें और उसके आगे अपने आपको झुका दें वही आखिरत में बाकीमत इंसान ठहरेंगे। आखिरत की इज़्ज़तें और कामयाबियां सिर्फ़ ऐसे ही लोगों का हिस्सा होंगी।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۖ وَسِعَتْ كُرْسِيُّكَ ۖ وَإِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۖ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۖ وَإِذَا الْجِبَالُ سُدِرَتْ ۖ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۖ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۖ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۖ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۖ وَإِذَا الْمَوْءَدَةُ سُيِّمَتْ ۖ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۖ وَإِذَا

पारा 30

1506

सूरह-81. अत-तकवीर

الْصُّحُفُ نُشِرَتْ ۖ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۖ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۖ وَإِذَا الْعُرُشُ بَسُورَتْ ۖ وَإِذَا السُّعُورُ كُفِّرَتْ ۖ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۖ وَإِذَا الْمَوْءَدَةُ سُيِّمَتْ ۖ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۖ وَإِذَا

आयतें-29

सूरह-81. अत-तकवीर

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब सूरज लपेट दिया जाएगा। और जब सितारे बेनूर हो जाएंगे। और जब पहाड़ चलाए जाएंगे। और जब दस महीने की गाभन ऊंटनियां आवारा फिरंगी। और जब वहशी जानवर इकट्ठा हो जाएंगे। और जब समुद्र भड़का दिए जाएंगे। और जब एक-एक किस्म के लोग इकट्ठा किए जाएंगे। और जब ज़िंदा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा कि वह किस कुसूर में मारी गई। और जब आमालनामे (कर्म-पत्र) खोले जाएंगे। और जब आसमान खुल जाएगा। और दोज़ख़ भड़काई जाएगी। और जब जन्नत करीब लाई जाएगी। हर शख्स जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है। (1-14)

कुरआन में जगह-जगह क़ियामत की मंज़रकशी की गई है। क़ियामत जब आएगी तो दुनिया का मौजूदा तवाजुन (संतुलन) टूट जाएगा। उस वक़्त इंसान अपने आपको बिल्कुल बेबस महसूस करेगा। उस दिन नेकी के सिवा दूसरी तमाम चीज़ें अपना वज़न खो देंगी। मज़्लूम को हक़ होगा कि वह ज़ालिम से अपने जुल्म का जो बदला लेना चाहे ले सके।

فَلَا أَقِيمُ بِالْخُسُفِ ۖ الْجَوَارِ الْكُنُفِ ۖ وَالْيَلِيلُ إِذَا عَسْعَسَ ۖ وَالصُّبُحُ إِذَا تَنَفَّسَ ۖ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۖ ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۖ مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۖ وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ۖ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأَفُقِ الْمُبِينِ ۖ وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۖ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ۖ فَاَيْنَ تَذْهَبُونَ ۖ إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۖ لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ۖ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۖ

पस नहीं, मैं कसम खाता हूँ पीछे हटने वाले, चलने वाले और छुप जाने वाले सितारों की। और रात की जब वह जाने लगे। और सुबह की जब वह आने लगे कि यह एक बाइज़्ज़त रसूल का लाया हुआ कलाम है। कुव्वत वाला, अर्श वाले के नज़दीक बुलन्द मर्तवा है। उसकी बात मानी जाती है, वह अमानतदार है। और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं। और उसने उसे खुले उफ़ुक (क्षितिज) में देखा है। और वह ग़ैब की बातों का हरीस (हिंस रखने

वाला) नहीं। और वह शैतान मरदूद का कौल नहीं। फिर तुम किधर जा रहे हो। यह तो बस आलम (संसार) वालों के लिए एक नसीहत है, उसके लिए जो तुम में से सीधा चलना चाहे। और तुम नहीं चाह सकते मगर यह है कि अल्लाह रबुल आलमीन चाहे। (15-29)

ज़मीन पर रात दिन का आना और इंसान के मुशाहिदे (अवलोकन) में सितारों के मकामात का बदलना ज़मीन की महवरी (धुरीय) गर्दिश की बिना पर होता है। इस एतबार से इन अल्फाज़ का मतलब यह होगा कि ज़मीन की महवरी गर्दिश का निज़ाम इस बात पर गवाह है कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं और कुरआन खुदा का कलाम है जो फरिश्ते के ज़रिए उन पर उतरा है।

ज़मीन की महवरी गर्दिश इस कायनात का इतिहाई नादिर और इतिहाई अज़ीम वाकया है। यह वाकया गोया एक मॉडल है जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के मामले को हमारे लिए काबिलेफहम बनाता है। अगर यह तस्वुर कीजिए कि ज़मीन अपने महवर (धुरी) पर गर्दिश करती हुई वसीअ खला (अंतरिक्ष) में सूरज के गिर्द घूम रही है तो ऐसा महसूस होगा गोया रिमोट कंट्रोल का कोई ताकतवर निज़ाम है जो इसे इतिहाई सेहत के साथ कंट्रोल कर रहा है। फरिश्ते के ज़रिए एक इंसान और खुदा के दर्मियान रब (संपर्क) कायम होना भी इसी किस्म का एक वाकया है। पहला वाकया तमसील के रूप में दूसरे वाकये को समझने में मदद देता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۖ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۖ وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۖ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۖ عَلِمْتُ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَ أَخَّرَتْ ۖ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۖ الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوِّكَ فَعَدَلَكَ ۖ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ۖ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالذِّينِ ۖ وَإِنْ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۖ كِرَامًا كَاتِبِينَ ۖ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۖ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۖ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۖ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۖ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۖ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۖ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۖ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۚ

जब आसमान फट जाएगा। और जब सितारे बिखर जाएंगे। और जब समुद्र बह पड़ेंगे। और जब कद्रे खोल दी जाएंगी। हर शख्स जान लेगा कि उसने क्या आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा। ऐ इंसान तुझे किस चीज़ ने अपने रब्वे करीम की तरफ से धोखे में डाल रखा है। जिसने तुझे पैदा किया। फिर तेरे आज्ञा (शरीरांग) को दुरुस्त किया, फिर तुझे मुतनासिब (संतुलित) बनाया। जिस सूरत में चाहा तुम्हें तर्तीब दे दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम इसाफ के दिन को झुठलाते हो। हालाँकि तुम पर निगहबान मुकर्र हैं। मुअज़्ज़ज़ लिखने वाले। वे जानते हैं जो कुछ तुम करते हो। बेशक नेक लोग ऐश में होंगे। और बेशक गुनाहगार दोज़ख में। इसाफ के दिन वे उसमें डाले जाएंगे। वे उससे जुदा होने वाले नहीं। और तुम्हें क्या ख़बर कि इसाफ का दिन क्या है। फिर तुम्हें क्या ख़बर इसाफ का दिन क्या है। उस दिन कोई जान किसी दूसरी जान के लिए कुछ न कर सकेगी। और मामला उस दिन अल्लाह ही के इख़्तियार में होगा। (1-19)

कुरआन में यह ख़बर दी गई है कि बिलआखिर इसाफ का एक दिन आने वाला है जबकि तमाम इंसानों को जमा करके उनके अमल के मुताबिक उन्हें सज़ा या इनाम दिया जाएगा। यह ख़बर दुनिया की मौजूदा सूरतेहाल के ऐन मुताबिक है। इंसान की बामअना (अर्थपूर्ण) तख़लीक इस ख़बर में अपनी तौजीह (तर्क) पा लेती है। इसी तरह इंसान के कौल व अमल की रिकॉर्डिंग का निज़ाम जो मौजूदा दुनिया में पाया जाता है वह इस ख़बर के बाद पूरी तरह काबिलेफहम बन जाता है। (कौल व अमल की रिकॉर्डिंग की तफसील इन पक्तियों के लेखक की किताब 'मज़हब और जदीद चैलेन्ज' (God Arises) में मुलहिज़ा फरमाएं)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۖ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۖ وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۖ أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ ۖ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۖ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُتُورِ لَفِي سِجِّينٍ ۖ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۖ كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۖ الَّذِينَ يُكْذِبُونَ بِبُيُوتِ الدِّينِ ۖ وَمَا يَكْذِبُ بِهِ إِلَّا كَلٌّ مَعْتَدٍ ۖ أَشِحُّ ۖ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۖ كَلَّا بَلْ سَرَاتٍ ۖ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ تَاكُلُوا يَكْسِبُونَ ۖ كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّجَحُودُونَ ۖ ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ۖ ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۖ

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। ख़राबी है नाप तौल में कमी करने वालों की। जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें। और जब उन्हें नाप कर या तौल कर दें तो घटा कर दें। क्या ये लोग नहीं समझते कि वे उठाए जाने वाले हैं, एक बड़े दिन के लिए जिस दिन तमाम लोग खुदावन्दे आलम के सामने खड़े होंगे। हरगिज़ नहीं, बेशक गुनाहगारों का आमालनामा (कर्म-पत्र) सिज्जीन में होगा। और तुम क्या जानो कि सिज्जीन क्या है। वह एक लिखा हुआ दफ्तर है। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों की। जो इंसाफ के दिन को झुठलाते हैं। और उसे वही शख्स झुठलाता है जो हद से गुज़रने वाला हो, गुनाहगार हो। जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि ये अगलों की कहानियां हैं। हरगिज़ नहीं, बल्कि उनके दिलों पर उनके आमाल का ज़ंग चढ़ गया है। हरगिज़ नहीं, बल्कि उस दिन वे अपने रब से ओट में रखे जाएंगे। फिर वे दोज़ख में दाखिल होंगे। फिर कहा जाएगा कि यही वह चीज़ है जिसे तुम झुठलाते थे। (1-17)

हर आदमी यह चाहता है कि वह दूसरों में अपना पूरा हक वसूल करे। मगर आला इंसानी किरदार यह है कि आदमी दूसरों को भी उनका पूरा-पूरा हक अदा करे। वह दूसरों के लिए वही कुछ पसंद करे जो वह अपने लिए पसंद कर रहा है। जो लोग खुद पूरा लें और दूसरों को कम दें वे आखिरत में इस हाल में पहुंचेंगे कि वहां वे बर्बाद होकर रह जाएंगे।

जो अपने लिए पूरा वसूल कर रहा है वह गोया इस बात को जानता है कि आदमी को उसका पूरा हक मिलना चाहिए। ऐसी हालत में जब वह दूसरों को देने के वक्त उन्हें कम देता है तो वह दूसरों के हुकूक के बारे में अपनी हस्सासियत (सवेदनशीलता) को घटाता है। जो शख्स बार-बार इस तरह का अमल करे उस पर बिलआखिर वह वक्त आएगा जबकि दूसरों के हुकूक के बारे में उसकी हस्सासियत बिल्कुल ख़त्म हो जाए। उसके दिल के ऊपर पूरी तरह उसके अमल का ज़ंग लग जाए।

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ۝ كِتَابٌ مَرْفُوعٌ ۝ يُشْهَدُ الْمَقَرَّبُونَ ۝ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ عَلَى الْأَرَارِكِ يَنْظُرُونَ ۝ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۝ يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْمُومٍ ۝ خِتْمُهُ مِسْكَ ۝ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ۝ وَمِزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ۝ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمَقَرَّبُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا

يُضْحَكُونَ ۝ وَإِذَا امْرَأُؤُهُمْ يَتَغَامِرُونَ ۝ وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُونَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ۝ وَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ۝ عَلَى الْأَرَارِكِ يَنْظُرُونَ ۝ هَلْ تُؤِيبُ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

हरगिज़ नहीं, बेशक नेक लोगों का आमालनामा इल्लियीन में होगा। और तुम क्या जानो इल्लियीन क्या है। लिखा हुआ दफ्तर है, मुकर्रब फरिस्तों की निगरानी में। बेशक नेक लोग आराम में होंगे। तख़्तों पर बैठे देखते होंगे। उनके चेहरों में तुम आराम की ताज़गी महसूस करोगे। उन्हें शराबे ख़ालिस मुहर लगी हुई पिलाई जाएगी, जिस पर मुश्क की मुहर होगी। और यह चीज़ है जिसकी हिंस करने वालों को हिंस करना चाहिए। और उस शराब में तस्नीम की आमेज़िश होगी। एक ऐसा चशमा (स्रोत) जिससे मुकर्रब लोग पियेंगे। बेशक जो लोग मुजरिम थे वे ईमान वालों पर हंसते थे। और जब वे उनके सामने से गुज़रते तो वे आपस में आंखों में इशारे करते थे। और जब वे अपने लोगों में लौटते तो दिल्लगी करते हुए लौटते। और जब वे उन्हें देखते तो कहते कि ये बहके हुए लोग हैं। हालांकि वे उन पर निगरां बनाकर नहीं भेजे गए। पस आज ईमान वाले मुंकिरों पर हंसते होंगे, तख़्तों पर बैठे देख रहे होंगे। वाकई मुंकिरों को उनके किए का ख़ूब बदला मिला। (18-36)

मौजूदा दुनिया में अक्सर लोग इस बात के हरीस नहीं होते कि वे दूसरों को उनका पूरा हक अदा करें। उनकी सारी दिलचस्पी इसमें होती है कि वे दूसरों से अपना हक भरपूर वसूल कर सकें। ऐसे लोग आखिरत में महरूम होकर रह जाएंगे। अक्लमंद लोग वे हैं जो सबसे ज़्यादा इस बात के हरीस बनें कि वे दूसरों को भरपूर तौर पर उनका हक अदा करें। क्योंकि यही वे लोग हैं जो आखिरत में भरपूर तौर पर खुदा की नेमतों के मुस्तहिक करार पाएंगे।

जो शख्स आखिरत की ख़ातिर अपनी दुनियावी मस्तेहतों को नज़रअंदाज़ कर दे वह दुनियापरस्तों की नज़र में हकीर (तुच्छ) बन जाता है। मगर जब आखिरत आएगी तो मालूम होगा कि वही लोग होशियार थे जिनको दुनिया में नादान समझ लिया गया था।

سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ ۝ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ هُم مِّنْ عَشْرَةِ آيَاتٍ ۝ إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۝ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدًا فَمَلَقِيهِ ۝ فَمَا مَن أَوْقَىٰ كِتَابَهُ يَمِينِهِ ۝ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ

حَسَابًا يَسِيرًا ۖ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۚ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَأَىٰ ظَهْرَهُ ۖ
فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ۖ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۚ إِنَّكَ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۚ إِنَّهُ ظَنَّ
أَن لَّنْ يُخَوَّرَ ۖ بَلَىٰ ۚ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۖ فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۖ
وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۖ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۖ لَتَرْكَبَنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ۖ فَمَا لَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۖ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا
يَكْذِبُونَ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۖ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۖ

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَرْثَدَةَ

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَرْثَدَةَ

आयतें-25

सूरह-84. अल-इन्शिकफ

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
जब आसमान फट जाएगा। और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह इसी लायक
है। और जब ज़मीन फैला दी जाएगी। और वह अपने अंदर की चीज़ों को उगल देगी
और खाली हो जाएगी। और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगी और वह इसी लायक
है। ऐ इंसान तू कशां-कशां (सश्रम) अपने रब की तरफ जा रहा है। फिर उससे मिलने
वाला है। तो जिसे उसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा। उससे
आसान हिसाब लिया जाएगा। और वह अपने लोगों के पास खुश-खुश आएगा। और
जिसका आमालनामा उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा, वह मौत को पुकारेगा, और
जहन्नम में दाखिल होगा। वह अपने लोगों में बेग़म रहता था। उसने ख्याल किया था
कि उसे लौटना नहीं है। क्यों नहीं। उसका रब उसे देख रहा था। पस नहीं, मैं कसम
खाता हूँ शफक (सांध्य-लालिमा) की। और रात की और उन चीज़ों की जिन्हें वह समेट
लेती है। और चांद की जब वह पूरा हो जाए। कि तुम्हें ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी
हालत पर पहुंचना है। तो उन्हें क्या हो गया है कि वे ईमान नहीं लाते। और जब उनके
सामने कुरआन पढ़ा जाता है तो वे खुदा की तरफ नहीं झुकते। बल्कि मुकिरीन झुठला
रहें हैं। और अल्लाह जानता है जो कुछ वे जमा कर रहे हैं। पस उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब
की खुशख़बरी दे दो। लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए उनके
लिए कभी न ख़त्म होने वाला अज़्र है। (1-25)

यहां कियामत के मुताल्लिक जो बात कही गई है वह बज़ाहिर नामालूम दुनिया के बारे में
एक ख़बर की हैसियत रखती है। ताहम ऐसे शवाहिद (प्रमाण) मौजूद हैं जो उसकी सदाक़्त (सच्चाई)

का करीना (संकेत) पैदा करते हैं। इसकी एक मिसाल मौजूदा दुनिया है। एक दुनिया की मौजूदगी
खुद इस बात का सबूत है कि दूसरी ऐसी ही या इससे मुख़लिफ़ दुनिया वुजूद में आ सकती है।
दूसरे, कुरआन में ऐसे ग़ैर मामूली पहलुओं का मौजूद होना जो यह साबित करते हैं कि वह खुदा
की किताब है। (तफ़्सील के लिए मुलाहिज़ा हो, अज़मते कुरआन)

इन वाज़ेह कराइन (संकेतों) के बाद जो लोग आख़िरत पर यकीन न करें और आख़िरत
फरमोशी में ज़िंदगी गुज़ारें वे यकीनन ऐसा ज़ुर्म कर रहे हैं जिसकी सज़ा वही हो सकती है
जिसका ऊपर ज़िक्र हुआ।

سُبْحَانَكَ رَبِّيَ ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۖ
وَالسَّمَاءُ ذَاتُ الْبُرُوجِ ۖ وَالْيَوْمُ الْوَعْدِ ۖ وَشَاهِدٌ وَمَشْهُودٌ ۖ قِيلَ أَصْحَابُ
الْأُخْدُودِ ۖ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ۖ إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ۖ وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ
بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ۖ وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَن يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ
الْحَمِيدِ ۖ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۖ
إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ
وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۖ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ
تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۖ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۖ
إِنَّهُ هُوَ يُبْدِي ۖ وَهُوَ الْعَفُورُ الْودُودُ ۖ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۖ
فَعَالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۖ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۖ فِرْعَوْنُ وَثَمُودُ ۖ بَلِ
الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۖ وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ۖ بَلِ هُوَ قُرْآنٌ
مَّجِيدٌ ۖ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ۖ

आयतें-22

सूरह-85. अल-बुरुज

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कसम है बुर्जों वाले आसमान की। और वादा किए हुए दिन की। और देखने वाले
की और देखी हुई की। हलाक हुए खन्दक वाले, जिसमें भड़कते हुए ईंधन की आग
थी। जबकि वे उस पर बैठे हुए थे। और जो कुछ वे ईमान वालों के साथ कर रहे

सूरह-85. अल-बुरुज

1513

पारा 30

थे उसे देख रहे थे। और उनसे उनकी दुश्मनी इसके सिवा किसी वजह से न थी कि वे ईमान लाए अल्लाह पर जो ज़बरदस्त है, तारीफ वाला है। उसी की बादशाही आसमानों और ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है। जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को सताया, फिर तौबा न की तो उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है। और उनके लिए जलने का अज़ाब है। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बड़ी कामयाबी है। बेशक तेरे रब की पकड़ बड़ी सख्त है। वही आगाज़ करता है और वही लौटाएगा। और वह बख़्शने वाला है, मुहब्बत करने वाला है, अश्वरों का मालिक, कर डालने वाला जो चाहे। क्या तुम्हें लश्क़रों की ख़बर पहुंची है, फिरओन और समुद्र की। बल्कि ये मुंकिर झुठलाने पर लगे हुए हैं। और अल्लाह उन्हें हर तरह से घेरे हुए है। बल्कि वह एक बाअज़्मत (गौरवशाली) कुरआन है, लौहे महफूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में लिखा हुआ। (1-22)

कायनात का निज़ाम तकाज़ा करता है कि आखिरी पैसले का एक दिन आए। उसी दिन की ख़बर तमाम पैग़म्बर और उनके सच्चे नायब देते रहे हैं। इसके बावजूद जो लोग हक का एतराफ न करें बल्कि हक के दावियों के दुश्मन बन जाएं वे ऐसी सरकशी करते हैं जिसके होलनाक अंजाम से वे किसी तरह बच नहीं सकते। ताहम जो लोग हर किस्म की मुश्किलात के बावजूद सदाक़त की आवाज़ पर लब्बैक कहें वे खुदाए महरबान की तरफ से ऐसा इनाम पाएंगे जिससे बड़ा इनाम और कोई नहीं।

आसमानी किताबों में कुरआन इस्तसनाई (अद्वितीय) तौर पर एक महफूज़ किताब है। यह इस बात की अलामत है कि कुरआन को खुदा की खुसूसी मदद हासिल है, इसे ज़ेर करना किसी के लिए मुमकिन नहीं यहां तक कि कियामत आ जाए।

سُبْحَانَكَ يَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ سُبْحَانَكَ يَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ سُبْحَانَكَ يَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝
وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۝ النُّجُومُ الثَّاقِبُ ۝ إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ
لَّعَالَيْهَا حَافِظٌ ۝ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝ خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ۝ يَخْرُجُ
مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝ إِنَّهُ عَلَى رَجُوعِهِ لَقَادِرٌ ۝ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝
فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجَمِ ۝ وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصُّدُعِ ۝
إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝ وَمَا هُوَ إِلَّا هَزْلٌ ۝ لَنْهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝ وَكَيْدُ كَيْدًا ۝
فَهَلِ الْكَافِرِينَ أَهْلُهُمْ يُؤَيِّدُ ۝

पारा 30

1514

सूरह-86. अत-तारिक

आयतें-17

सूरह-86. अत-तारिक

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है आसमान की और रात को नुमूदार (प्रकट) होने वाले की। और तुम क्या जानो कि वह रात को नुमूदार होने वाला क्या है, चमकता हुआ तारा। कोई जान ऐसी नहीं है जिसके ऊपर निगहबान न हो। तो इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है। जो निकलता है पीठ और सीने के दरमियान से। बेशक वह उसे दुबारा पैदा करने पर कादिर है। जिस दिन छुपी बातें परखी जाएंगी। उस वक्त इंसान के पास कोई ज़ोर न होगा और न कोई मददगार। कसम है आसमान चक्कर मारने वाले की। और फूट निकलने वाली ज़मीन की। बेशक यह दोटूक बात है और वह हंसी की बात नहीं। वे तदबीर (युक्ति) करने में लगे हुए हैं। और मैं भी तदबीर करने में लगा हुआ हूँ। पस मुंकिरों को ढील दे, उन्हें ढील दे थोड़े दिनों। (1-17)

इंसान के ऊपर तारे का चमकना तमसील (उपमा) की ज़बान में इस वाक्ये की याददाहनी है कि कोई देखने वाला उसे देख रहा है। यह देखने वाला इंसान के आमाल को रिकॉर्ड कर रहा है। वह मौत के बाद दुबारा इंसान को पैदा करेगा। और उससे उसके तमाम आमाल का हिसाब लेगा। यह सिर्फ इम्तेहान की मोहलत है जो इंसान के दरमियान और उस वक्त के दरमियान हदे फासिल (सीमा-रेखा) बनी हुई है। इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होते ही उसका वह अंजाम सामने आएगा जिससे आज वह बज़ाहिर बहुत दूर नज़र आता है।

سُبْحَانَكَ يَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ سُبْحَانَكَ يَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ سُبْحَانَكَ يَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝
سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ۝ الَّذِي خَلَقَ فَسْوَى ۝ وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى ۝
وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى ۝ فَجَعَلَ عُنَاءَهُ آخِى ۝ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنسَى ۝ إِلَّا مَا شَاءَ
اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى ۝ وَيُخَوِّفُ لِيُسْرى ۝ فَنَذَرَ ۝ إِن تَفْعَلْ
الَّذِى كُرِى ۝ سَيَكْفُرُكَ مَنْ يَخْشَى ۝ وَيَتَجَبَّبُهَا الْأَشْقى ۝ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ
الْكُبْرَى ۝ ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۝ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزكى ۝ وَذَكَرَ اسْمَ
رَبِّهِ فَصَلّى ۝ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَوةَ الدُّنْيَا ۝ وَالْآخِرَةَ خَيْرٌ ۝ أَبْقَى ۝ إِنَّ
هَذَا لَفِى الصُّحُفِ الْأُولَى ۝ صُحُفٍ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۝

सूरह-87. अल-आला

1515

पारा 30

आयतें-19

सूरह-87. अल-आला

रुकूअ-1

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अपने रब के नाम की पाकी बयान कर जो सबसे ऊपर है। जिसने बनाया फिर ठीक किया। और जिसने ठहराया, फिर राह बताई। और जिसने चारा निकाला। फिर उसे स्याह कूड़ा बना दिया। हम तुम्हें पढ़ाएंगे फिर तुम नहीं भूलोगे। मगर जो अल्लाह चाहे, वह जानता है खुले को भी और उसे भी जो छुपा हुआ है। और हम तुम्हें ले चलेंगे आसान राह। पस नसीहत करो अगर नसीहत फायदा पहुंचाए। वह शख्स नसीहत कुबूल करेगा जो डरता है। और उससे गुरेज़ (विमुखता) करेगा वह जो बदबख्त होगा। वह पड़ेगा बड़ी आग में। फिर न उसमें मरेगा और न जिएगा। कामयाब हुआ जिसने अपने को पाक किया। और अपने रब का नाम लिया। फिर नमाज़ पढ़ी। बल्कि तुम दुनियावी ज़िंदगी को मुकद्दम रखते हो। और आखिरत बेहतर है और पाएदार है। यही अगले सहीफों (ग्रंथों) में भी है, मूसा और इब्राहीम के सहीफों में। (1-19)

इंसान की और दुनिया की तख़लीक में वाज़ेह तौर पर एक मंसूबाबंदी है। यह मंसूबाबंदी तक्कज़ा करती है कि इस तख़लीक का कोई मक्सद हो। यही वह मक्सद है जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के ज़रिए इंसान के ऊपर खोला गया है। ताहम 'वही' से वही शख्स नसीहत कुबूल करेगा जिसके अंदर सोचने और असर लेने का मिज़ाज हो। ऐसे लोग खुदा के अबदी (चिरस्थायी) इनामात में दाख़िल किए जाएंगे। और जिन लोगों की सरकशी उनके लिए नसीहत कुबूल करने में रुकावट बन जाए, उनका अंजाम सिर्फ यह है कि वे हमेशा के लिए आग में जलते रहें।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ۖ
وَجُودَ يُومِئِدْ خَاشِعَةً ۖ عَالِمَةً تَأْتِبُهُ ۖ تَصْلَى
نَارًا حَامِيَةً ۖ تُسْفَى مِنْ عَيْنِ أُنْيَةٍ ۖ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ ضَرِيعٍ ۖ لَا
يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ۖ وَجُودَ يُومِئِدْ نَاعِمَةً ۖ لَسَعِيهَا رَاضِيَةً ۖ فِي
جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۖ لَا تَسْمَعُ فِيهَا لَاحِظٌ ۖ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۖ فِيهَا سُرُرٌ
تَرْفُوعَةٌ ۖ وَأَكْوَابٌ مُوَضُّوعَةٌ ۖ وَمَنَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۖ وَزُرَابُ مَبْثُوثَةٌ ۖ أَفَلَا
يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۖ وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۖ وَإِلَى الْجِبَالِ
كَيْفَ نُصِبَتْ ۖ وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۖ فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ۖ

पारा 30

1516

सूरह-88. अल-ग़ाशियह

لَسْتُ عَلَيْهِمْ بِمُضَيِّطٍ ۖ إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ۖ فَيَعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ
الْأَكْبَرَ ۖ إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابُهُمْ ۖ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۖ

आयतें-26

सूरह-88. अल-ग़ाशियह

रुकूअ-1

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। क्या तुम्हें उस छा जाने वाली की ख़बर पहुंची है। कुछ चेहरे उस दिन ज़लील होंगे, मेहनत करने वाले थके हुए। वे दहकती आग में पड़ेंगे। खौलते हुए चशमे (स्रोत) से पानी पिलाए जाएंगे। उनके लिए कांटों वाले झाड़ के सिवा और कोई खाना न होगा, जो न मोटा करे और न भूख मिटाए। कुछ चेहरे उस दिन बारोनक होंगे। अपनी कमाई पर खुश होंगे। ऊंचे बाग़ में। उसमें कोई लगव (घटिया, निरर्थक) बात नहीं सुनेंगे। उसमें बहते हुए चशमे होंगे। उसमें तख़्त होंगे ऊंचे बिछे हुए। और आबख़ोरे सामने चुने हुए। और बराबर बिछे हुए गद्दे। और कालीन हर तरफ पड़े हुए। तो क्या वे ऊंट को नहीं देखते कि वह कैसे पैदा किया गया। और आसमान को कि वह किस तरह बुलन्द किया गया। और पहाड़ों को कि वह किस तरह खड़ा किया गया। और ज़मीन को कि वह किस तरह बिछाई गई। पस तुम याददिहानी कर दो, तुम बस याददिहानी करने वाले हो। तुम उन पर दारोगा नहीं। मगर जिसने रूगदर्दानी (अवहेलना) की और इंकार किया, तो अल्लाह उसे बड़ा अज़ाब देगा। हमारी ही तरफ उनकी वापसी है। फिर हमारे ज़िम्मे है उनसे हिसाब लेना। (1-26)

आदमी देखता है कि ऊंट जैसा अजीबुल ख़िलकत (विचित्र) जानवर उसका मुतीअ (आज्ञापालक) है। आसमान अपनी सारी अज़मतों के बावजूद उसके लिए मुसरख़्बर है। ज़मीन हमारी किसी कोशिश के बग़ैर हमारे लिए हद-दर्जा मुवाफ़िक बनी हुई है। ये वाक़ेयात सोचने वाले को खुदा और आखिरत की याददिहानी कराते हैं। जो लोग दुनिया के इस निज़ाम से याददिहानी की ग़िज़ा लें उन्होंने अपने लिए खुदा की अबदी (चिरस्थायी) नेमतों का इस्तहकाक (अधिकार) साबित किया। और जो लोग ग़फलत में पड़ें रहें उन्होंने यह साबित किया कि वे सिर्फ इस काबिल हैं कि उन्हें हर किस्म की नेमतों से हमेशा के लिए महरूम कर दिया जाए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَالْفَجْرِ ۖ وَلَيْلٍ عَشِيرٍ ۖ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۖ وَالنَّيْلِ إِذَا يَسْرَ ۖ هَلْ فِي ذَلِكَ
قَسَمٌ لِّذِي حَجِرٍ ۖ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۖ إِرْمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۖ الَّتِي لَمْ
يَخْلُقْ مِثْلَهَا فِي الْبِلَادِ ۖ وَتَمُودَ الَّذِي جَابَأُ الصَّخْرَ بِأَلْوَادِ ۖ وَفِرْعَوْنَ

ذِي الْأَوْتَادِ الَّذِينَ طُغُوا فِي الْبِلَادِ ۖ فَكَثُرُوا فِيهَا الْفُسَادُ ۖ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ
رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَبَاسِرٌ صَادِقٌ ۚ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ
رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۚ وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ
عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ۚ كَلَّا بَلْ لَا تَكْفُرُونَ الْيَتِيمَ ۚ وَلَا
تَحْضُونَ عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۚ وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَبًّا ۚ وَتُحِبُّونَ الْمَالَ
حُبًّا جَمًّا ۚ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۚ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۚ
وَجِئَ يَوْمَئِذٍ بِمِجَنَّمٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّى لَهُ الذِّكْرَى ۚ يَقُولُ
يَلَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ۚ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ۚ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ
أَحَدٌ ۚ يَا أَيُّهَا التَّغْسُ الْمُطْمِئِنَّةُ ۚ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكَ رَاضِيَةً مُّقْرَضِيَةً ۚ
فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۚ وَادْخُلِي جَنَّتِي ۚ

۱
۶
۱۴

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
क़म हैफ़ज़ (उषाकाल) की। और दस रातों की। और जुफ़्त (सम) और ताक
(विषम) की। और रात की जब वह चलने लगे। क्यों, इसमें अक्लमंद के लिए काफी
कसम है। तुमने नहीं देखा, तुम्हारे रब ने आद के साथ क्या मामला किया, सुतूनों
(स्तंभों) वाले इरम के साथ। जिनके बराबर कोई कौम मुल्कों में पैदा नहीं की गई।
और समूद के साथ जिन्होंने वादी में चट्टानें तराशीं। और मेखों वाले फिरऔन के
साथ, जिन्होंने मुल्कों में सरकशी की। फिर उनमें बहुत फ़साद फैलाया। तो तुम्हारे
रब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया। बेशक तुम्हारा रब घात में है। पस इंसान
का हाल यह है कि जब उसका रब उसे आजमाता है और उसे इज़्ज़त और नेमत
देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी। और जब वह उसे आजमाता
है और उसका रिज़्क उस पर तंग कर देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे
ज़लील कर दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते। और तुम
मिस्कीन को खाना खिलाने पर एक दूसरे को नहीं उभारते। और तुम विरासत को
समेटकर खा जाते हो। और तुम माल से बहुत ज़्यादा मुहब्बत रखते हो। हरगिज़

नहीं, जब ज़मीन को तोड़कर रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा। और तुम्हारा रब आएगा
और फ़स्ते आये क़तार (पंक्ति) दर क़तार। और उस दिन जहन्नम लाई जाएगी,
उस दिन इंसान को समझ आएगी, और अब समझ आने का मौका कहां। वह
कहेगा, काश मैं अपनी ज़िंदगी में कुछ आगे भेजता। पस उस दिन न तो खुदा के
बराबर कोई अज़ाब देगा, और न उसके बांधने के बराबर कोई बांधेगा। ऐ नफ़से
मुतमइन (संतुष्ट आत्मा) चल अपने रब की तरफ। तू उससे राज़ी, वह तुझसे राज़ी।
फिर शामिल हो मेरे बंदों में और दाख़िल हो मेरी जन्नत में। (1-30)

दुनिया में आदमी को दो किस्म के अहवाल पेश आते हैं। कभी पाना और कभी महरूम
हो जाना। ये दोनों हालतें इस्तेहान के लिए हैं। वे इस जांच के लिए हैं कि आदमी किस हाल
में कौन सा रद्देअमल पेश करता है। जिस शख्स का मामला यह हो कि जब उसे कुछ मिले
तो वह फ़ख्र करने लगे और जब उससे छीना जाए तो वह मफ़ी (नकारात्मक) नफ़िष्यात में
मुब्तिला हो जाए, ऐसा शख्स इस्तेहान में नाकाम हो गया।

दूसरा इंसान वह है कि जब उसे मिला तो उसने खुदा के सामने झुक कर उसका शुक्र
अदा किया, और जब उससे छीना गया तो दुबारा उसने खुदा के आगे झुक कर अपने इज़्ज़
(निर्बलता) का इकारा किया। यही दूसरा इंसान है जिसे यहां नफ़से मुतमइन कहा गया है,
यानी मुतमइन रूह (संतुष्ट आत्मा)।

नफ़से मुतमइन का मकाम उस शख्स को मिलता है जो कायनात में खुदा की निशानियों
पर गौर करे। जो तारीख़ के वाक़ेयात से इबरत (सीख) व नसीहत की गिज़ा ले सके। जो इस
बात का सबूत दे कि जब उसकी ज़ात में और हक में टकराव होगा तो वह अपनी ज़ात को
नज़रअंदाज़ कर देगा और हक को कुबूल कर लेगा। जो एक बार हक को मान लेने के बाद
फिर उसे कभी न छोड़े, चाहे उसकी ख़ातिर उसे अपने आपको कुचलना पड़े, और चाहे उसके
नतीजे में उसकी ज़िंदगी वीरान हो जाए।

يٰۤاَيُّهَا الْمَرْكَبُ ۚ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ وَرَحْمَةُكَ اَبِیْ
لَا اُقِیْمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۚ وَاَنْتَ حِلٌّ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۚ وَوَالِدٌ وَّمَا وَلَدٌ ۚ لَقَدْ
خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ كَبَدٍ ۚ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ یَقْدِرَ عَلَیْهِ اَحَدٌ ۚ یَقُولُ
اَهْلَكْتُ مَا لَا بُدَّ ۚ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ یَرَهُ اَحَدٌ ۚ اَلَمْ یَجْعَلْ لَّهِ
عَیْنَیْنِ ۚ وَلِسَانًا وَشَفَتَیْنِ ۚ وَهَدَیْنَاهُ النُّجْدَیْنِ ۚ فَلَا اقْتَحَمَ الْعُقَبَةَ ۚ
وَمَا اَدْرٰیكَ مَا الْعُقَبَةُ ۚ فَكُ رَقَبَةً ۚ اَوْ اِطْعَمُ فِیْ یَوْمِ ذِی مَسْغَبَةٍ ۚ

सूरह-90. अल-बलद

1519

पारा 30

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۚ أَوْ مَسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۚ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصِّدْقِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۚ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَاتِنَاهُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۚ عَلَيْهِمُ نَارُ مُؤَصَّاتٍ ۚ

आयतें-20

सूरह-90. अल-बलद

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
नहीं, मैं कसम खाता हूँ इस शहर (मक्का) की। और तुम इसमें मुक़ीम (रह रहे) हो।
और कसम है बाप की और उसकी औलाद की। हमने इंसान को मशक्कत (सश्रम स्थिति) में पैदा किया है। क्या वह ख़याल करता है कि उस पर किसी का ज़ोर नहीं। कहता है कि मैंने बहुत सा माल खर्च कर दिया। क्या वह समझता है कि किसी ने उसे नहीं देखा। क्या हमने उसे दो आंखें नहीं दीं। और एक ज़बान और दो होंट। और हमने उसे दोनों रास्ते बता दिए। फिर वह घाटी पर नहीं चढ़ा। और तुम क्या जानो कि क्या है वह घाटी। गर्दन को छुड़ाना। या भूख के ज़माने में खिलाना, कराबतदार यतीम को, या ख़ाकनशी (धूल-धूसरित) मोहताज को। फिर वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और एक दूसरे को सत्र की और हमदर्दी की नसीहत की। यही लोग नसीब वाले हैं। और जो हमारी आयतों के मुँकिर हुए वे बदबख़्ती (दुर्भाग्य) वाले हैं। उन पर आग छाई हुई होगी। (1-20)

इंसान किसी हाल में अपने आपको मशक्कतों से आज़ाद नहीं कर पाता। इससे मालूम हुआ कि इंसान किसी बालातर कुव्वत (उच्चतर शक्ति) के मातहत है। इसी तरह इंसान की आंखें बताती हैं कि कोई बरतर आंख भी है जो उसे देख रही है। इंसान की कुव्वते नुक (वाक शक्ति) इशारा करती है कि उसके ऊपर भी एक साहिबे नुक है जिसने उसे नुक (बोलने) की सलाहियत दी। और उसे हिदायत का रास्ता दिखाया। आदमी अगर हकीकी मअनों में अपने आपको पहचान ले तो यकीनन वह खुदा को भी पहचान लेगा।

खुदा ने इंसान को दो किस्म की बुलन्दियों पर चढ़ने का हुक्म दिया है। एक इंसान के साथ मुसिफाना सुलूक और इंसान की ज़रूरतों में उसके काम आना। दूसरी चीज़ अल्लाह पर ईमान और यकीन है। यह ईमान और यकीन जब आदमी के अंदर गहराई के साथ उतरता है तो वह आदमी की अपनी ज़ात तक महदूद नहीं रहता बल्कि मुतअद्दी (प्रसारक) बन जाता है। ऐसा इंसान दूसरों को भी उसी हक पर लाने की कोशिश करने लगता है जिसे वह खुद इख़्तियार किए हुए है।

पारा 30

1520

सूरह-91. अश-शम्स

سُبْحَانَ الْقُرْآنِ ۚ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۚ فَمِنْ مَشْرِقٍ أَيْ
وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ۚ وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَّهَا ۚ وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّهَا ۚ وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ۚ وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ۚ وَالْأَرْضِ وَمَا طَرَاهَا ۚ وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۚ
فَالْهَمَّهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۚ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ رَزَّاهَا ۚ وَقَدْ خَابَ مَنْ
دَسَّاهَا ۚ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۚ إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا ۚ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ
اللَّهِ نَاقَةُ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۚ فَكَذَّبُوا فَفَعَلْنَا مَا هُمْ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ
يَذُنُّهُمْ فَسَوَّاهَا ۚ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۚ

आयतें-15

सूरह-91. अश-शम्स

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कसम है सूरज की और उसकी धूप चढ़ने की। और चांद की जबकि वह सूरज के पीछे आए। और दिन की जबकि वह उसे रोशन कर दे। और रात की जब वह उसे छुपा ले। और आसमान की और जैसा कि उसे बनाया। और ज़मीन की और जैसा कि उसे फैलाया। और जान की जैसा कि उसे ठीक किया। फिर उसे समझ दी, उसकी बदी की और उसकी नेकी की। कामयाब हुआ जिसने उसे पाक शुद्ध किया और नामुराद हुआ जिसने उसे आलूदा (अशुद्ध) किया। समूद ने अपनी सरकशी की बिना पर झुटलाया। जबकि उठ खड़ा हुआ उनका सबसे बड़ा बदबख़्त। तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा कि अल्लाह की ऊंटनी और उसके पानी पीने से ख़बरदार। तो उन्होंने उसे झुटलाया। फिर ऊंटनी को मार डाला। फिर उनके रब ने उन पर हलाकत नाज़िल की। फिर सबको बराबर कर दिया। वह नहीं डरता कि उसके पीछे क्या होगा। (1-15)

इंसान की हिदायत के लिए अल्लाह तआला ने सहगाना (बहुमुखी) इतिज़ाम किया है। एक तरफ़ कायनात इस तरह बनाई गई है कि वह खुदा की मर्ज़ी का अमली इज़हार बन गई है। दूसरी तरफ़ इंसान के अंदर नेकी और बदी का वजदानी शुऊर (आन्तरिक चेतना) रख दिया गया है। इसके बाद मज़ीद एहतिमाम यह फरमाया कि पैग़म्बरों के ज़रिए हक व बातिल और ज़ुम व झंफ़केलों की कबिलेमहम (सहज) ज़बान में खोलकर बता दिया गया। इसके बाद भी जो लोग राहेरास्त पर न आएँ वे बिलाशुबह ज़ालिम हैं।

सूरह-92. अल-लइल

1521

पारा 30

हजरत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी एक एतबार से इस बात की अलामत थी कि हकदार का एहताराम करो और उसका हक अदा करो, चाहे वह बेबस और कमजोर क्यों न हो। एक वजुद जो बज़ाहिर महज़ 'ऊंटनी' नज़र आ रहा है, ऐन मुमकिन है कि वह खुदा का निशान हो जो लोगों की जांच के लिए मुकर्र किया गया हो।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ اِحْدَ ثَلَاثِينَ
وَاللَّيْلِ اِذَا يَغْشَى ۝ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلَّى ۝ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ۝ اِنَّ
سَعْيَكُمْ لَشَتَّى ۝ فَاَمَّا مَنْ اَعْطَى وَاتَّقَى ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى ۝ فَسَنِيْسِرُهُ
لِلْيُسْرَى ۝ وَاَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى ۝ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى ۝ فَسَنِيْسِرُهُ
لِلْعُسْرَى ۝ وَمَا يَغْنَى عَنْهُ مَالُهُ اِذَا تَرَدَّى ۝ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَى ۝ وَاِنَّ
لَنَا لِّلْآخِرَةِ وَالْأُولَى ۝ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّى ۝ لَا يَصْلُهَا اِلَّا
الْأَشَقَى ۝ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ
يَتَزَكَّى ۝ وَمَا لِاحِدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَى ۝ اِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ
رَبِّهِ الْاَعْلَى ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضَى ۝

आयतें-21

सूरह-92. अल-लइल

रुकूअ-1

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है रात की जबकि वह छा जाए। और दिन की जबकि वह रोशन हो और उसकी जो उसने पैदा किए नर और मादा। कि तुम्हारी कोशिशें अलग-अलग हैं। पस जिसने दिया और वह डरा और उसने भलाई को सच माना। तो उसे हम आसान रास्ते के लिए सुहूलत देंगे। और जिसने बुख़ल (कंजूसी) किया और बेपरवाह रहा, और भलाई को झुटलाया, तो हम उसे सख़्त रास्ते के लिए सुहूलत देंगे। और उसका माल उसके काम न आएगा जब वह गढ़े में गिरेगा। बेशक हमारे ज़िम्मे है राह बताना। और बेशक हमारे इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया। पस मैंने तुम्हें डरा दिया भड़कती हुई आग से। उसमें वही पड़ेगा जो बड़ा बदबख़्त है। जिसने झुटलाया और रूगदानी (अवहेलना) की। और हम उससे बचा देंगे ज़्यादा डरने वाले को। जो अपना माल देता है पाकी हासिल करने के लिए और उस पर किसी का एहसान नहीं जिसका बदला उसे देना हो। मगर सिर्फ अपने खुदाए बरतर की खुशनूदी के लिए।

पारा 30

1522

सूरह-93. अज़-जुहा

और अनकरीब वह खुश हो जाएगा। (1-21)

दुनिया में तमाम चीज़ें जोड़े-जोड़े हैं। नर और मादा, रात और दिन, मुस्बत (धनात्मक) ज़रह और मंफ़ी (ऋणात्मक) ज़रह, मेटर (Matter) और एंटी मेटर। इस दुनिया की हर चीज़ अपने जोड़े के साथ मिलकर अपने मक्सद को पूरा करती है। यह वाज़ेह तौर पर इस बात का सबूत है कि इस कायनात में मक्सदियत (उद्देश्यपरकता) है। ऐसी बामक्सद कायनात में यह नामुमकिन है कि यहां अच्छा अमल और बुरा अमल दोनों बिल्कुल एकसां (समान) अंजाम पर ख़ुस हो। कायनात अपने ख़ालिक का जो तआरुफ करा रही है उससे यह बात मुताबिक़त नहीं रखती।

अल्लाह का ताल्लुक अपने बंदों से सिर्फ हाकिम का नहीं, बल्कि मददगार का भी है। वह अपने उन बंदों का रास्ता हमवार करता है जो उसकी तरफ चलना चाहें। इसके बरअक्स जो लोग सरकशी का रास्ता इख़्तियार करें वह उन्हें सरकशी के रास्ते पर दौड़ने के लिए छोड़ देता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ هُمَا اِحْدَ عَشْرَةَ اَيَّاتٍ
وَالضُّحَى ۝ وَاللَّيْلِ اِذَا اسْبَغَى ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَاقَلَى ۝ وَاَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ
مِنَ الْاُولَى ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَى ۝ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَآوَى ۝ وَ
وَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَى ۝ وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَى ۝ فَلَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا
تَقْهَرُ ۝ وَاَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرُ ۝ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثُ ۝

आयतें-11

सूरह-93. अज़-जुहा

रुकूअ-1

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है रोज़े रोशन (चढ़ते दिन) की। और रात की जब वह छा जाए। तुम्हारे रब ने तुम्हें नहीं छोड़ा। और न वह तुमसे बेज़ार (अप्रसन्न) हुआ। और यकीनन आख़िरत तुम्हारे लिए दुनिया से बेहतर है। और अनकरीब अल्लाह तुझे देगा। फिर तू राज़ी हो जाएगा। क्या अल्लाह ने तुम्हें यतीम (अनाथ) नहीं पाया फिर ठिकाना दिया। और तुम्हें मुतलाशी पाया तो राह दिखाई। और तुम्हें नादार (निर्धन) पाया तो तुम्हें ग़नी (समृद्ध) कर दिया। पस तुम यतीम पर सख़्ती न करो। और तुम साइल (मांगने वाले) को न झिड़को। और तुम अपने रब की नेमत बयान करो। (1-11)

इस दुनिया का निज़ाम इस तरह बना है कि यहां दिन भी आता है और रात भी। दोनों के मिलने से यहां का निज़ाम मुकम्मल होता है। इसी तरह इंसान के इरतका (उत्थान) के लिए

सूरह-94. अल-इनशिराह

1523

पारा 30

भी सख्खी और नर्मी दोनों का पेश आना ज़रूरी है। इस दुनिया में एक बंदए खुदा के साथ सख्खी के हालात इसलिए पेश आते हैं कि उसकी छुपी हुई सलाहियतें बेदार हों। उसकी राह में रुकावटें इसलिए डाली जाती हैं ताकि उसका मुस्तकबिल (भविष्य) उसके हाल (वर्तमान) के ज़्यादा बेहतर हो सके।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यतीम पैदा हुए, फिर अल्लाह ने आपको बेहतरीन सरपरस्त अता फरमाया। आप तलाशे हक में सरगरदां (प्रयत्नशील) थे, फिर अल्लाह ने आपके लिए हक का दरवाज़ा खोल दिया। आप बज़ाहिर बेमाल थे, फिर अल्लाह ने आपको आपकी पत्नी (हज़रत ख़दीज़ा रज़ि०) के ज़रिए साहिबे माल बना दिया। यह एक तारीख़ी मिसाल है जो बताती है कि अल्लाह तआला किस तरह अपने बंदों की मदद फरमाता है।

इंसान को चाहिए कि वह कमज़ोरों की मदद करे ताकि वह अल्लाह की मदद का मुस्तहक़ बने। उसका कलाम नेमते खुदावंदी के इज़हार का कलाम हो ताकि अल्लाह उस पर अपनी नेमतों का इतमाम फरमाए।

سُوْرَةُ الْاِنشِرَاحِ بِكَيِّ يُسْمِعُ اللّٰهُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ وَهُوَ الَّذِي اَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي فِيْهِ اٰيَاتٌ لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝ الَّذِي اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ اِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝ وَالْاِلٰهَ رَبُّكَ فَارْغَبْ ۝

आयतें-8

सूरह-94. अल-इनशिराह

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल नहीं दिया। और तुम्हारा वह बोझ उतार दिया जिसने तुम्हारी पीठ झुका दी थी। और हमने तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द किया। पस मुश्किल के साथ आसानी है। बेशक मुश्किल के साथ आसानी है। फिर जब तुम फारिग हो जाओ तो मेहनत करो। और अपने रब की तरफ तवज्जोह रखो। (1-8)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हकीकत जानने के लिए तड़प रहे थे। अल्लाह तआला ने आपको हकीकत का इल्म देकर आपकी तलाश को मअरफत (अन्तर्ज्ञान) में तब्दील कर दिया। हक्क़ (यथार्थ, सत्य) की मअरफत के लिए आपका सीना खुल गया। फिर आपने मक्का में तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत शुरू की तो बज़ाहिर सख्त मुखालिफतों का सामना पेश आया। मगर इन्हीं मुखालिफतों के ज़रिए यह हुआ कि आपका चर्चा सारे मुल्क में फैल गया।

पारा 30

1524

सूरह-95. अत-तीन

यही मौजूदा दुनिया के लिए अल्लाह का कानून है। यहां इब्तिदा में इंसान के साथ उस (मुश्किल) के हालात पेश आते हैं लेकिन अगर वह सब्र के साथ उन पर जमा रहे यह उस उसके लिए नए युग (आसानी) तक पहुंचाने का जीना बन जाता है। इसलिए इंसान को चाहिए कि वह हमेशा अल्लाह की तरफ देखे, वह अपनी इस्तताअत के बक्दर (यथासामर्थ्य) अपनी जद्दोजहद को बराबर जारी रखे।

سُوْرَةُ الْاِثْنَيْنِ بِكَيِّ يُسْمِعُ اللّٰهُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ وَهُوَ الَّذِي اَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي فِيْهِ اٰيَاتٌ لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝ الَّذِي اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ اِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝ وَالْاِلٰهَ رَبُّكَ فَارْغَبْ ۝

आयतें-8

सूरह-95. अत-तीन

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है तीन की ओर जैतून की। और तूरे सीना की। और इस अमन वाले शहर की। हमने इंसान को बेहतरीन साख़्त (संरचना) पर पैदा किया। फिर उसे सबसे नीचे फेंक दिया। लेकिन जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए तो उनके लिए कभी ख़त्म न होने वाला अज़्र (प्रतिफल) है। तो अब क्या है जिससे तुम बदला मिलने को झुटलाते हो। क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं। (1-8)

‘तीन’ और ‘जैतून’ दो पहाड़ों के नाम हैं जिसके करीब बैतुल मक्दिस वाकेअ है, यानी हज़रत मसीह का मकामे अमल। ‘तूरि सीनीन’ से मुराद वह पहाड़ है जहां हज़रत मूसा पर खुदा ने ‘वही’ (प्रकाशना) फरमाई। ‘बलद अमीन’ से मुराद मक्का है जहां पैग़म्बरे इस्लाम मवऊस (प्रस्थापित) हुए।

अल्लाह तआला ने इंसान को बेहतरीन सलाहियतों (क्षमताओं) के साथ पैदा किया है। ये सलाहियतें इसलिए हैं कि इंसान पैग़म्बरों के ज़रिए ज़ाहिर किए जाने वाले हक को पहचाने और अपनी ज़िंदगी को उसके मुताबिक बनाए। जो लोग ऐसा करें वे इज़्ज़त और बुलन्दी का अबदी मकाम पाएंगे। इसके बरअक्स जो लोग अपनी खुदादाद सलाहियतों को खुदा की मर्ज़ी के ताबेअ न करें, उनसे मौजूदा नेमतें भी छीन ली जाएंगी और कामिल महरूमि के सिवा कोई जगह न होगी जहां उन्हें ठिकाना मिल सके। पैग़म्बरों की बेअसत (प्रस्थापना) और पैग़म्बरों के ज़रिए ज़ाहिर होने वाले नताइज इसकी सदाकत की गवाही देते हैं।

सूरह-96. अल-अलक

1525

पारा 30

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۖ هُوَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً
اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۖ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ اقْرَأْ وَرَبُّكَ
الْأَكْرَمُ ۚ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۚ عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۚ
كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِكَيْفَىٰ ۚ أَنْ رَأَاهُ اسْتَعْغَىٰ ۚ إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ۚ
أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۚ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۚ أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَىٰ الْهُدَىٰ
أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۚ أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۚ أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۚ
كَلَّا لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۚ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ
فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۚ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۚ كَلَّا لَا تَطْلَعُ الْإِبْرَ ۚ
وَاقْتَرَبَ ۚ

आयतें-19

सूरह-96. अल-अलक

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
पढ़ अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया। पैदा किया इंसान को अलक (खून के लोथड़े)
से। पढ़ और तेरा रब बड़ा करीम है जिसने इल्म सिखाया कलम से। इंसान को वह कुछ
सिखाया जो वह जानता न था। हरगिज़ नहीं, इंसान सरकशी करता है। इस बिना पर
कि वह अपने को आत्मनिर्भर देखता है। बेशक तेरे रब ही की तरफ लौटना है। क्या तुमने
देखा उस शख्स को जो मना करता है, एक बंदे को जब वह नमाज़ अदा करता हो तुम्हारा
क्या ख़याल है, अगर वह हिदायत पर हो। या डर की बात सिखाता हो। तुम्हारा क्या ख़याल
है, अगर उसने झुठलाया और रूगर्दानी (अवहेलना) की। क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह
देख रहा है। हरगिज़ नहीं, अगर वह बाज़ न आया तो हम पेशानी के बाल पकड़कर उसे
खींचेंगे। उस पेशानी को जो झूठी गुनाहगार है। अब वह बुला ले अपने हामियों को। हम
भी दोज़ख के फरिश्तों को बुलाएंगे। हरगिज़ नहीं, उसकी बात न मान और सच्चा कर
और करीब हो जा। (1-19)

इस सूरह की इब्तिदाई पांच आयतें वे हैं जो पैगम्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर
सबसे पहले नाज़िल हुईं। इंसान को अल्लाह तआला ने मामूली मादूदी अज्ज़ा (भौतिक तत्वों)
से पैदा किया। फिर उसे यह नादिर (विलक्षण) सलाहियत दी कि वह पढ़े और अल्फ़ाज़ के

पारा 30

1526

सूरह-97. अल-वक्र

ज़रिए मआनी का इदराक कर सके। फिर इंसान को यह मज़ीद सलाहियत दी गई है कि वह
कलम को इस्तेमाल करे और इस तरह अपने इल्म को मुदब्बन (संग्रहित) और महफूज़ कर
सके। मिन्नत (पाठ) की सलाहियत अगर आदमी को खुद पढ़ने के काबिल बनाती है तो कलम
उसे इस काबिल बनाता है कि वह अपने इल्म को वसीअ पैमाने पर दूसरों तक पहुंचा सके।

जो लोग हक के मुकाबले में सरकशी करें और हक का रास्ता इख्तियार करने वालों की
राह में रुकावटें डालें उनका अंजाम बहुत बुरा है। ऐसे हालात में हक के दाओ (आह्वानकर्ता)
का अस्ल सहारा यह है कि वह अल्लाह की इबादत करे। वह लोगों से महरूम होकर खुदा
से पाए, वह लोगों से दूर होकर (लोगों के) खुदा से करीब हो जाए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۖ هُوَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً
إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۚ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ
مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۚ تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ۚ
سَلَامٌ هُوَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۚ

आयतें-5

सूरह-97. अल-वक्र

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
हमने इसे उतारा है शबे क़द्र (गौरवपूर्ण रात) में। और तुम क्या जानो कि शबे क़द्र
क्या है। शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। फरिश्ते और रूह उसमें अपने रब की
इजाज़त से उतरते हैं। हर हुक्म लेकर। वह रात सरासर सलामती है, सुबह निकलने
तक। (1-5)

साल की एक ख़ास रात (ग़ालिबन माहे रमज़ान के आखिरी अशरे की कोई रात)
अल्लाह तआला के यहां फैसले की रात है। दुनिया के इतिज़ाम के मुतअल्लिक जो काम उस
साल में मुक़द्दर हैं उनके निफ़ाज़ (लागू करने) के तअय्युन के लिए उस रात को फरिश्ते
उतरते हैं। इसी किस्म की एक ख़ास रात में क़ुरआन का नुज़ूल (अवतरण) शुरू हुआ।

बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि इस रात को ज़मीन पर फरिश्तों की कसरत होती है।
इससे ज़मीन पर ख़ास तरह का रूहानी माहौल पैदा होता है। अब जो लोग अपने अंदर
रूहानियत बेदार किए हुए हों वे उससे मुतअस्सिर (प्रभावित) होते हैं और इसके नतीजे में
उनके अंदर ग़ैर मामूली रूहानी तासीर पैदा हो जाती है जो उनके दीनी अमल की क़द्र व
कीमत आम हालात से बहुत ज़्यादा बढ़ा देती है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَهُوَ كُنْ أَيْ
لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِينَ حَتَّى
تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۚ رَسُولٌ مِنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُطَهَّرَةً ۚ فِيهَا كُتِبَ
قِيمَةٌ ۚ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَ تَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۚ وَمَا
أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ
فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۚ جَزَاءُ هُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رِضَى
اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ۚ

आयतें-8

सूरह-98. अल-बय्यिनह

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
अहले किताब (पूर्ववर्ती-ग्रंथ धारक) और मुश्रिकीन (बहुदेववादी) में से जिन लोगों ने
इंकार किया वे बाज़ आने वाले नहीं जब तक उनके पास वाज़ेह दलील न आ जाए।
अल्लाह की तरफ से एक रसूल जो पाक सहीफे (ग्रंथ) पढ़कर सुनाए। जिनमें दुरुस्त
मज़ामीन लिखे हों। और जो लोग अहले किताब थे वे वाज़ेह दलील आ जाने के बाद
ही मुख़्तलिफ हो गए। हालांकि उन्हें यही हुक्म दिया गया था कि वे अल्लाह की
इबादत करें। उसके लिए दीन को ख़ालिस कर दें, एकसू (एकाग्रचित्त) होकर और
नमाज़ कायम करें और ज़कात दें, और यही दुरुस्त दीन है। वेशक अहले किताब
और मुश्रिकीन में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे, हमेशा
उसमें रहेंगे, ये लोग बदतरीन ख़लाइक (निकृष्ट प्राणी) हैं। जो लोग ईमान लाए और
उन्होंने अच्छे काम किए, वे लोग बेहतरीन ख़लाइक (सर्वोत्तम प्राणी) हैं। उनका
बदला उनके रब के पास हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें
वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और वे उससे राज़ी, यह उस शख्स के
लिए है जो अपने रब से डरे। (1-8)

अरब के मुश्रिकीन और अहले किताब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से
कहते थे कि आप कोई मोजिज़ा (दिव्य चमत्कार) दिखाएं। या फरिश्ता आसमान से आकर
हमसे कलाम करे तब हम आपकी रिसालत (ईशदूतत्व) मानेंगे। मगर इस किस्म का मुताबला
करने वाले हमेशा ग़ैर संजीदा होते हैं। चुनांचे पिछले लोगों ने इस तरह के मुताबले किए, मगर
मुताबला पूरा होने के बावजूद वे मोमिन न बन सके। खुदा का दीने कय्यिम (सहज सही धर्म)
यह है कि आदमी एक अल्लाह की इबादत करे। वह दिल से उसका चाहने वाला बन जाए।
वह नमाज़ कायम करे और ज़कात अदा करे। यही खुदा की तरफ से आने वाला अस्ल दीन
है। सबसे अच्छे लोग वे हैं जो इस दीने कय्यिम को इख़्तियार करें। और सबसे बुरे लोग वे
हैं जो इस दीने कय्यिम को इख़्तियार न करें या इसके सिवा कोई और दीन वज़अ (गठित)
करें और उस खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन को दीने कय्यिम का नाम दे दें।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَهُوَ كُنْ أَيْ
إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۖ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۖ وَقَالَ الْإِنْسَانُ
مَا هَٰذَا ۖ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۚ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۚ يَوْمَئِذٍ
يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۚ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا
يَرَهُ ۚ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۚ

आयतें-8

सूरह-99. अज़-ज़िज़ाल

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
जब ज़मीन शिद्दत से हिला दी जाएगी। और ज़मीन अपना बोझ निकाल कर बाहर
डाल देगी। और इंसान कहेगा कि इसे क्या हुआ। उस दिन वह अपने हालात बयान
करेगी। क्योंकि तुम्हारे रब का उसे यही हुक्म होगा। उस दिन लोग अलग-अलग
निकलेंगे ताकि उनके आमाल उन्हें दिखाए जाएं। पस जिस शख्स ने ज़रा बराबर नेकी
की होगी वह उसे देख लेगा और जिस शख्स ने ज़रा बराबर बदी की होगी वह उसे देख
लेगा। (1-8)

कियामत का ज़लज़ला मुद्दते इस्तेहान के ख़त्म होने का एलान होगा। इसका मतलब
यह होगा कि अब लोगों से वह आज़ादी छिन गई जो इस्तेहान की मस्लेहत की बिना पर उन्हें
हासिल थी। अब वह वक्त आ गया जब लोगों को उनके अमल का बदला दिया जाए। आज
खुदा की दुनिया बज़ाहिर ख़ामोश है मगर जब हालात बदलेंगे तो यहां की हर चीज़ बोलने

सूरह-100. अल-आदियात

1529

पारा 30

लगेगी। मौजूदा ज़माने की ईजादात (आविष्कारों) ने साबित किया है कि बेजान चीज़ें भी 'बोलने' की सलाहियत रखती हैं। स्टूडियो में किए हुए अमल को फिल्म और रिकॉर्ड पूरी तरह दोहरा देते हैं। इसी तरह मौजूदा दुनिया गोया बहुत बड़ा खुदाई स्टूडियो है। इसके अन्दर इंसान जो कुछ करता है या जो कुछ बोलता है वह सब हर लम्हा महफूज़ हो रहा है। और जब वक्त आएगा तो हर एक की कहानी को यह दुनिया इस तरह दोहरा देगी कि उसकी कोई भी बात उससे बची हुई न होगी, चाहे वह छोटी हो या बड़ी।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ
وَالْعِدْيَاتِ ضُبْحًا ۝ وَالْمُورِيَّتِ قَدْحًا ۝ وَالْمُغِيرَاتِ صُبْحًا ۝ فَأَثَرُنَ بِهِ
نَقْعًا ۝ فَوْسَطُنَ بِهِ جَمْعًا ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝ وَإِنَّ عَلَىٰ ذَٰلِكَ
لَشَهِيدٌ ۝ وَإِنَّ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝ أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝ وَ
حُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۝ إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ۝

आयतें-11

सूरह-100. अल-आदियात

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है उन घोड़ों की जो हांपते हुए दौड़ते हैं। फिर टाप मारकर चिंगारी निकालने वाले। फिर सुबह के वक्त छापा मारने वाले। फिर उसमें गुबार उड़ने वाले। फिर उस वक्त फौज में घुस जाने वाले। बेशक इंसान अपने रब का नाशुक्र है। और वह खुद इस पर गवाह है। और वह माल की मुहब्बत में बहुत शदीद है। क्या वह उस वक्त को नहीं जानता जब वह कब्रों से निकाला जाएगा। और निकाला जाएगा जो कुछ दिलों में है। बेशक उस दिन उनका रब उनसे खूब बाख़बर होगा। (1-11)

घोड़ा एक निहायत वफादार जानवर है। वह अपने मालिक के लिए अपने आपको आखिरी हद तक कुर्बान कर देता है, यहां तक कि जंग के मैदान में भी वह अपने मालिक का साथ नहीं छोड़ता। यह गोया एक अलामती (सांकेतिक) मिसाल है जो इंसान को बताती है कि उसे कैसा बनना चाहिए। इंसान को भी अपने रब का उसी तरह वफादार बनना चाहिए जैसा कि घोड़ा इंसान का वफादार होता है। मगर अमलन ऐसा नहीं।

इस दुनिया में जानवर अपने मालिक का शुक्रगुज़ार है मगर इंसान अपने रब का शुक्रगुज़ार नहीं। यहां जानवर अपने मालिक का हक पहचानता है मगर इंसान अपने रब का हक नहीं पहचानता। यहां जानवर अपने मालिक की इताअत (आज्ञापालन) में सरगर्म है मगर

पारा 30

1530

सूरह-101. अल-क़रिअह

इंसान अपने रब की इताअत में सरगर्म नहीं।

इंसान उसी जानवर की कद्र करता है जो उसका वफादार हो। फिर कैसे मुमकिन है कि वह इस राज़ को न जाने कि खुदा के यहां वही इंसान काबिले कद्र ठहरेगा जो खुदा की नज़र में उसका वफादार साबित हो। मगर माल की मुहब्बत उसे अंधा बना देती है। वह एक ऐसी हकीकत को जानने से महरूम रहता है जिसका वह खुद अपने करीबी हालात में तजर्बा कर चुका है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ
الْقَارِعَةَ ۝ مَا الْقَارِعَةُ ۝ وَمَا أَذْرُكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝ يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ
كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعُفُوفِ ۝ فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ
مَوَازِينُهُ ۝ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝
فَأُمَّهُ هَٰوِيَةٌ ۝ وَمَا أَذْرُكَ مَا هِيَةٌ ۝ نَارَ حَامِيَةٍ ۝

आयतें-11

सूरह-101. अल-क़रिअह

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। खड़खड़ाने वाली। क्या है खड़खड़ाने वाली। और तुम क्या जानो कि क्या है वह खड़खड़ाने वाली। जिस दिन लोग पतंगों की तरह बिखरे हुए होंगे। और पहाड़ धुनके हुए रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे। फिर जिस शख्स का पल्ला भारी होगा वह दिलपसंद आराम में होगा। और जिस शख्स का पल्ला हल्का होगा तो उसका ठिकाना गढ़ा है। और तुम क्या जानो कि वह क्या है, भड़कती हुई आग। (1-11)

कियामत का भूचाल हर चीज़ को तोड़ फोड़ कर रख देगा। लोगों के तमाम इस्तहकामात (दृढ़ चीज़ें) दरहम बरहम हो जाएंगे। इसके बाद एक नया आलम बनेगा जहां सारा वज़न सिर्फ हक में होगा, बकिया तमाम चीज़ें अपना वज़न खो देंगी। मौजूदा दुनिया में इंसानों की पसंद का रवाज है। यहां इंसानों की निस्वत से चीज़ों का वज़न कायम होता है। आखिरत की दुनिया खुदा की दुनिया है। वहां खुदा की पसंद के एतबार से एक चीज़ वज़नदार होगी और दूसरी चीज़ बिल्कुल बेवज़न होकर रह जाएगी।

दुनिया में आमाल का वज़न ज़ाहिर के एतबार से होता है, आखिरत में आमाल का वज़न उनकी अंदरूनी हकीकत के एतबार से होगा। जिस आदमी के अमल में जितना ज़्यादा इख़्लास (निष्ठा) होगा उतना ही ज़्यादा वह वज़नी करार पाएगा। जो अमल इख़्लास से खाली

सूरह-102. अत-तकासुर

1531

पारा 30

हो वह आखिरत में बिल्कुल बेवज़न होकर रह जाएगा, चाहे मौजूदा दुनिया में ज़ाहिरबीनों को वह कितना ही ज़्यादा बावज़न दिखाई देता रहा हो।

نَسُوهُ التَّكَاثُرَ ۚ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۚ وَهُمْ لَكَ آيَاتُ
الْهُكْمِ التَّكَاثُرِ ۚ حَتَّى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۚ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ
تَعْلَمُونَ ۚ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۚ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۚ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا
عَيْنَ الْيَقِينِ ۚ ثُمَّ لَتَسْأَلَنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۚ

आयतें-8

सूरह-102. अत-तकासुर

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
बोहतात (विपुलता) की हिंस ने तुम्हें ग़फलत में रखा। यहां तक कि तुम कब्रों में जा
पहुँचे। हरगिज़ नहीं, तुम बहुत जल्द जान लोगे। फिर हरगिज़ नहीं, तुम बहुत जल्द जान
लोगे। हरगिज़ नहीं, अगर तुम यकीन के साथ जानते, कि तुम ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे।
फिर तुम उसे यकीन की आंख से देखोगे। फिर उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में पूछा
जाएगा। (1-8)

आदमी चाहता है कि वह ज़्यादा से ज़्यादा कमाए, वह ज़्यादा से ज़्यादा साज़ोसामान
अपने पास जमा करे। वह इसी धुन में लगा रहता है। यहां तक कि उसकी मौत आ जाती
है। उस वक्त उसे मालूम होता है कि जमा करने की चीज़ तो दूसरी थी और मैं किसी और
चीज़ को जमा करने में मसरूफ़ रहा।

दुनिया की चीज़ों का इज़ाफ़ा सिर्फ़ आदमी की मस्ज़लियत (जवाबदेही) को बढ़ाता है। और
आदमी अपनी नादानी से यह समझता है कि वह अपनी कामयाबी में इज़ाफ़ा कर रहा है।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ رَبِّ الْمَاجِدِ
وَالْعَصْرِ ۖ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۖ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَتَوَصَّوْا بِالْحَقِّ ۖ وَتَوَصَّوْا بِالصَّبْرِ ۖ

आयतें-3

सूरह-103. अल-अस्र

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कसम है ज़माने की। बेशक इंसान घाटे में है। मगर जो लोग कि ईमान लाए और नेक

पारा 30

1532

सूरह-104. अल-हु-म-ज़ह

अमल किया और एक दूसरे को हक की नसीहत की और एक दूसरे को सब्र की
नसीहत की। (1-3)

आदमी हर लम्हा अपनी मौत की तरफ जा रहा है। इसका मतलब यह है कि आदमी अगर
अपनी मोहलते उम्र को इस्तेमाल न करे तो आखिरकार उसके हिस्से में जो चीज़ आएगी वह
सिर्फ़ हलाकत है। कामयाब होने के लिए आदमी को खुद अमल करना है। जबकि नाकामी के
लिए किसी अमल की ज़रूरत नहीं। वह अपने आप उसकी तरफ भागी चली आ रही है।

एक बुजुर्ग ने कहा कि सूरह अस्र का मतलब मैंने एक बर्फ़ बेचने वाले से समझा जो
बाज़ार में आवाज़ लगा रहा था कि लोगो, उस शख्स पर रहम करो जिसका असासा
(धन-सम्पत्ति) घुल रहा है, लोगो, उस शख्स पर रहम करो जिसका असासा घुल रहा है। इस
पुकार को सुनकर मैंने अपने दिल में कहा कि जिस तरह बर्फ़ पिघलकर कम होती रहती है
इसी तरह इंसान को मिली हुई उम्र भी तेज़ी से गुज़र रही है। उम्र का मौका अगर बेअमली
में या बुरे कामों में खो दिया जाए तो यही इंसान का घाटा है। (तफ़सीर कबीर, इमाम राज़ी)

अपने वक्त को सही इस्तेमाल करने वाला वह है जो मौजूदा दुनिया में तीन बातों का
सुबूत दे। एक ईमान, यानी हकीकत का शुज़र और उसका एतराफ़। दूसरे अमले सालेह,
यानी वही करना जो करना चाहिए और वह न करना जो नहीं करना चाहिए। तीसरे हक व
सब्र की तक्वीन, यानी हकीकत का इतना गहरा इदराक (भान) कि आदमी उसका दाओ
(आह्वानकर्ता) और मुबल्लिग (प्रचारक) बन जाए।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ رَبِّ الْمَاجِدِ
وَالْعَصْرِ ۖ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۖ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَتَوَصَّوْا بِالْحَقِّ ۖ وَتَوَصَّوْا بِالصَّبْرِ ۖ

आयतें-9

सूरह-104. अल-हु-म-ज़ह

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
तबाही है हर ताना देने वाले, ऐब निकालने वाले की। जिसने माल को समेटा और
गिन-गिन कर रखा। वह ख़्याल करता है कि उसका माल हमेशा उसके साथ रहेगा।

सूरह-105. अल-फील

1533

पारा 30

हरिगज नहीं, वह फेंका जाएगा रौंदने वाली जगह में। और तुम क्या जानो कि वह रौंदने वाली जगह क्या है। अल्लाह की भड़काई हुई आग जो दिलों तक पहुंचेगी। वह उन पर बंद कर दी जाएगी, ऊंचे-ऊंचे सुतूनों (स्तंभों) में। (1-9)

किसी से इख्तेलाफ हो तो आदमी उसे दलील से रद्द कर सकता है। मगर यह दुरुस्त नहीं कि आदमी उस पर ऐब लगाए। उसे बदनाम करे। उसे इल्जामताराशी (दोषारोपण) का निशाना बनाए। पहली बात जाइज़ है मगर दूसरी बात सरासर नाजाइज़।

जो लोग ऐसा करते हैं वे इसलिए ऐसा करते हैं कि वे देखते हैं कि उनकी दुनियावी हैसियत महफूज़ व मुस्तहकम है। वे समझते हैं कि दूसरे शरूख पर बेबुनियाद इल्जाम लगाने से उनका अपना कुछ बिगड़ने वाला नहीं। मगर यह सिर्फ नादानी है। हकीकत यह है कि ऐसा करना आग के गढ़ में छलांग लगाना है। ऐसा आग का गढ़ जिससे निकलने की कोई सबील उनके लिए न होगी।

سُبْحَانَ الْقُدُّوسِ ۝ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَهُوَ جَمَلٌ ۝
الْمُتَرَكِّفُ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝ وَ
أَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝ تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيلٍ ۝ فَجَعَلَهُمْ
كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

आयतें-5

सूरह-105. अल-फील
(मक्का में नाज़िल हुई)

रुकूअ-1

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया। क्या उसने उसकी तदवीर को अकारत नहीं कर दिया। और उन पर चिड़ियां भेजीं झुंड की झुंड। जो उन पर कंकर की पथरियां फेंकती थीं। फिर अल्लाह ने उन्हें खाए हुए भुस की तरह कर दिया। (1-5)

अबरहा छठी सदी ईसवी में जुनूबी अरब का एक मसीही हब्शी हुक्मरां था। उसने मज़हबी जुनून के तहत 570 ई० में मक्का पर हमला किया ताकि काबा को ढाकर खत्म कर दे। उसके साथ साठ हज़ार आदमियों का लश्कर था जिसमें तकरीबन एक दर्जन हाथी भी शामिल थे। इसी बिना पर वे लोग असहाबे फील (हाथी वाले) कहे गए। जब ये लोग मक्का के करीब पहुंचे तो हाथियों ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया। इसी के साथ परिंदों के झुंड आए जिनकी चौंचों और पंजों में कंकरियां थीं। उन्होंने ये कंकरियां अबरहा के लश्कर पर गिराई तो सारा लश्कर अजीबोगरीब किस्म की बीमारी में मुब्तला हो गया और घबराकर

पारा 30

1534

सूरह-106. कुरैश

वापस भागा। मगर अबरहा सहित उसके बेशतर अफराद रास्ते ही में हलाक हो गए।

यह वाक्या ऐन उस साल पेश आया जिस साल अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश हुई। यह अल्लाह की तरफ से एक मुज़ाहिरा था कि पैगम्बरे इस्लाम को ग़लबे की निस्वत दी गई है। आपके साथ या आपके दीन के साथ जो भी टकराएगा वह लाज़िम्न मग़लूब (परास्त) होकर रहेगा।

سُبْحَانَ الْقُدُّوسِ ۝ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَهُوَ جَمَلٌ ۝
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۝ الْقَيُّومُ ۝ فَهُمْ رَحِلَةٌ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ۝ فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ
هَذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُودٍ ۝ وَأَمْنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ ۝

आयतें-4

सूरह-106. कुरैश
(मक्का में नाज़िल हुई)

रुकूअ-1

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
इस वास्ते कि कुरैश मानूस (अभ्यस्त) हुए, जाड़े और गर्मी के सफर से मानूस। तो उन्हें चाहिए कि इस घर के रब की इबादत करें जिसने उन्हें भूख में खाना दिया और ख़ौफ से उन्हें अमन दिया। (1-4)

कुरैश एक तिजारती कैम थे। गर्मी के ज़माने में उनके तिजारती काफिले शाम और फिलस्तीन की तरफ जाते थे। और सर्दियों के ज़माने में वे यमन की तरफ तिजारती सफर करते थे। इन्हीं तिजारतों पर उनकी मआशियात (जीविका) का इहिसार था। कदीम ज़माने में जबकि ताजिरों को लूटना आम था, कुरैश के काफिले रास्ते में लूटे नहीं जाते थे। इसकी वजह काबा से उनका ताल्लुक था। कुरैश काबा के खादिम और मुतवल्ली (संरक्षक) थे और लोगों के ज़ेहनों पर चूँकि काबा का बहुत ज़्यादा एहताराम था। वे काबा के खादिमों और मुतवल्लियों का भी एहताराम करते थे और इस बिना पर वे उन्हें नहीं लूटते थे।

यहां हिक्मते दावत के तहत कुरैश को यह वाक्या याद दिलाते हुए इस्लाम की तरफ बुलाया गया है। और कहा गया है कि यह बड़ी नाशुक्र की बात होगी कि तुम बैतुल्लाह के दुनियावी फायदे तो हासिल करो, और उससे वाबस्ता होने की जो ज़िम्मेदारियां हैं उन्हें पूरा न करो। जो खुदा इंसान को मादूदी (भौतिक) फायदा पहुंचाता है उसी खुदा की उसे इबादत भी करना चाहिए।

سُبْحَانَ الْقُدُّوسِ ۝ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَهُوَ جَمَلٌ ۝
أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْدِّينِ ۝ فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ الْيَتِيمَ ۝ وَلَا يَحْضُ عَلَى

सूरह-107. अल-माऊन

1535

पारा 30

طَعَامِ السَّكِينِ ۝ فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۝ وَيَسْتَعُونَ الْبَاغُونَ ۝

आयतें-7

सूरह-107. अल-माऊन
(मक्का में नज़िल हुई)

रुकूअ-1

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। क्या तुमने देखा उस शख्स को जो इन्साफ के दिन को झुल्लाता है। वही है जो यतीम (अनाथ) को धक्के देता है। और मिरकीन का खाना देने पर नहीं उभरता। पस तबाही है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए जो अपनी नमाज़ से ग़ाफिल हैं। वे जो दिखलावा करते हैं। और मामूली ज़रूरत की चीज़ें भी नहीं देते। (1-7)

आखिरत की पकड़ का यकीन आदमी को नेक अमल बनाता है। जिस आदमी के अंदर आखिरत की पकड़ का यकीन न रहे वह नेकी की हर बात से खाली रहेगा। वह अल्लाह की इबातगुजारी से ग़ाफिल हो जाएगा। वह बेज़ोर आदमी को धक्का देने में भी नहीं शरमाएगा। वह ग़रीबों के हुक्क अदा करने की ज़रूरत नहीं समझेगा। यहां तक कि वह लोगों को ऐसी चीज़ देने का भी रवादार न होगा जिसके देने में उसका कोई हकीकी नुकसान नहीं, चाहे वह दियासलाई की एक डिविया हो या किसी के हक में ख़ैरख़ाही का एक बोल।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ وَهُوَ يَكْبِتُ ۝ لَئِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ إِنَّ شَرَّ النَّاسِ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝

आयतें-3

सूरह-108. अल-कौसर
(मक्का में नज़िल हुई)

रुकूअ-1

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। हमने तुम्हें कौसर दे दिया। पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो। बेशक तुम्हारा दुश्मन ही बेनाम व निशान है। (1-3)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेआमेज़ (विशुद्ध) हक की दावत लेकर उठे थे। इस किस्म का काम मौजूदा दुनिया का सबसे ज़्यादा मुश्किल काम है। चुनांचे आपको इस दावत की राह में अपनी हर चीज़ खो देनी पड़ी। आप अपनी कौम से कट गए। आपकी मआशी (आर्थिक) ज़िंदगी बर्बाद हो गई। आपकी औलाद का मुस्तकबिल तारीक हो

पारा 30

1536

सूरह-109. अल-काफ़िरून

गया। थोड़े लोगों के सिवा किसी ने आपका साथ नहीं दिया। मगर इन्हीं हौसलाशिकन हालात में अल्लाह की तरफ से यह ख़बर उतरी कि तुम्हें हमने कौसर (ख़ैरे कसीर) दे दिया। यानी हर किस्म की आलातरीन कामयाबी। कुरआन की यह पेशीनगोई बाद के सालों में कामिल तौर पर पूरी हुई।

यही वादा दर्जा-ब-दर्जा पैग़म्बरे इस्लाम के उम्मतियों से भी है। उनके लिए भी 'ख़ैरे कसीर' (परम सफलता) है बशर्ते कि वे उस ख़ालिस दीन को लेकर उठें जिस पैग़म्बरे इस्लाम और आपके असहाब (साथी) लेकर उठे थे। इस ख़ैरे कसीर का तअल्लुक दुनिया से लेकर आखिरत तक है, वह कभी ख़त्म होने वाला नहीं।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ وَهُوَ يَكْبِتُ ۝ لَئِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ إِنَّ شَرَّ النَّاسِ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝

आयतें-6

सूरह-109. अल-काफ़िरून
(मक्का में नज़िल हुई)

रुकूअ-1

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कहो कि ऐ मुंकिरो, मैं उनकी इबादत नहीं करूंगा जिनकी इबादत तुम करते हो। और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। और मैं उनकी इबादत करने वाला नहीं जिनकी इबादत तुमने की है। और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) और मेरे लिए मेरा दीन। (1-6)

यह सूरह मक्का के आखिरी ज़माने में उतरी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इब्दिदा में एक असें तक 'ऐ मेरी कौम' के लफज़ से लोगों को पुकारते रहे। मगर जब इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद उन्होंने न माना तो आपने 'अय्युहल काफ़िरून' (ऐ इंकार करने वालों) के लफज़ से ख़िताब फरमाया। इस मरहले में यह फ़िक्ररा (वाक्य) दरअस्त कलिमा-ए बरा-त (विरक्ति, असंबद्धता) है न कि कलिमा-ए-दावत (आह्वान)।

मेरे लिए मेरा दीन, तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन यह दूसरों के दीन की तस्दीक नहीं। यह एक तरफ अपने हक पर जमे रहने का आखिरी इज़हार है। और दूसरी तरफ वह मुखातब की उस हालत का एलान है कि तुम अब ज़िद की उस आखिरी हद पर आ गए हो जहां से कोई शख्स कभी नहीं पलटता।

सूरह-110. अन-नस

1537

पारा 30

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ
وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْ لَهُ إِنَّكَ تَوَّابٌ

आयतें-3

सूरह-110. अन-नस

रुकूअ-1

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
जब अल्लाह की मदद आ जाए और फतह। और तुम देखो कि लोग खुदा के दीन में
दाखिल हो रहे हैं फौज दर फौज। तो अपने रब की तस्बीह (गुणगान) करो उसकी हम्द
(प्रशंसा) के साथ और उससे बख्शिश (क्षमा) मांगो, बेशक वह माफ करने वाला है।
(1-3)

अल्लाह की वह मदद जिसका नाम फतह है, वह हमेशा दावत (आह्वान) की राह से
आती है। लोगों का गिरोह दर गिरोह दीने खुदा के दायरे में दाखिल किया जाना, यही अल्लाह
की सबसे बड़ी मदद है। और इसी राह से अहले दीन फतह व गलबे की मजिल तक पहुंचते
हैं। चुनांचे अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आखिरी जमाने (9-10
हि०) में वे हालात पैदा हुए जबकि लोग बहुत बड़ी तादाद में खुदा के दीन में दाखिल हो गए।
और इसके जरिए से फतूहत (विजयों) का दरवाजा खुल गया।

मेमिन की फतह उसके एहसासे इज्ज (विनय) में इजफा करती है। वह अपने बजहिर
सही काम पर भी खुदा से माफी मांगता है। वह बजाहिर अपनी कोशिशों से मिलने वाली
कामयाबी को भी खुदा के खाने में डाल देता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
تَبَّتْ يَدَايَ أَمِّي لَهُبٍ وَتَبَّ مَا آخَفَى عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ سَيَصْلَى نَارًا
ذَاتَ لَهَبٍ وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ

पारा 30

1538

सूरह-111. अल-लहब

आयतें-5

सूरह-111. अल-लहब

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
अबू लहब के हाथ टूट जाएं और वह बर्बाद हो जाए। न उसका माल उसके काम आया
और न वह जो उसने कमाया। वह अनकरीब भड़कती आग में पड़ेगा। और उसकी बीबी
भी जो ईंधन लिए फिरती है सिर पर। उसकी गर्दन में रस्सी है बटी हुई। (1-5)

‘अबू लहब’ एक एतबार से एक शख्स का नाम है। और दूसरे एतबार से वह एक
किरदार है। अबू लहब हक की दावत के उस मुखालिफ की तारीखी अलामत है जो कमीनापन
की हद तक उसका दुश्मन बन जाए। इस किरदार से जिस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु
अलैहि व सल्लम को साबिका पेश आया, इसी तरह आपकी उम्मत के दूसरे दाअियों को भी
इससे साबिका पेश आ सकता है। ताहम अगर दाअी हकीकी मअनों में अल्लाह के लिए उठा
है तो अल्लाह की मदद उसका साथ देगी। अबू लहब जैसे लोगों की मुआनिदाना (प्रतिरोधी)
कोशिशें अल्लाह की मदद से बेअसर हो जाएंगी। अपने तमाम जराए और वसाइल के बावजूद
वह बर्बाद होकर रहेगा। वह अपने इनाद (द्वेष) में खुद जलेगा, वह खुदा के दाअी को जिस
बुरे अंजाम तक पहुंचाना चाहता था वहीं वह खुद अबदी तौर पर पहुंचा दिया जाएगा।

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ
كُفُوًا أَحَدٌ ۝

आयतें-4

सूरह-112. अल-इख्लास

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कहो वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है। न उसकी कोई औलाद है
और न वह किसी की औलाद। और कोई उसके बराबर का नहीं। (1-4)

यह सूरह तौहीद (एकेश्वरवाद) की सूरह है। इसमें खुदा के तसव्वुर को उन तमाम
आमेजिओं (मिलावटों) से अलग करके पेश किया गया है जिसमें हर जमाने का इंसान मुक्तिला
रहा है खुदा कई नहीं, खुदा सिर्फ एक है। सब उसके मोहताज हैं, वह किसी का मोहताज
नहीं, वह बजाते खुद हर चीज पर कादिर है। वह इससे बुलन्द है कि इंसानों की तरह वह
किसी की औलाद हो या उसकी कोई औलाद हो। वह ऐसी यकता (One and only) है
जिसका किसी भी एतबार से कोई मिस्ल (सदृश) और बराबर नहीं।

सूरह-113 अल्फल्क

1539

पारा 30

سُوْرَةُ الْفُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ الْفُلْكِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

आयतें-5

सूरह-113 अल्फल्क

रुकूअ-1

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो, मैं पनाह मांगता हूँ सुबह के रब की। हर चीज के शर (बुराई) से जो उसने पैदा की। और तारीकी (अंधकार) के शर से जबकि वह छा जाए। और गिरहों (गांठों) में फूँक मारने वालों के शर से और हासिद (ईर्ष्यालु) के शर से जबकि वह हसद करे। (1-5)

अल्लाह वह है जो रात की तारीकी को फाड़कर उसके अंदर से सुबह की रोशनी निकालता है। यही खुदा ऐसा कर सकता है कि वह आपत्तों के स्याह बादल को इंसान से हटाए और उसे आफियत के उजाले में ले आए।

मौजूदा दुनिया इस्तेहान की मस्तेहत के तहत बनाई गई है। इसलिए यहां खैर के साथ शर भी शामिल है। इस शर से बचने की तदबीर सिर्फ यह है कि आदमी उसके मुकाबले में अल्लाह की पनाह हासिल करे। ये शर बहुत किस्म के हैं। मसलन वह शर जो बदवातिन (दुष्ट) लोग रात की तारीकी में करते हैं। जादू करने वाले जो अक्सर गिरहों (गांठों) में फूँक मारकर जादू का अमल करते हैं। इसी तरह वे लोग जो किसी को अच्छे हाल में देखकर जलन में मुक्किला हो जाएं और उसे अपनी हासिदाना कार्रवाइयों का शिकार बनाएं। मोमिन को ऐसे तमाम लोगों से अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिए। और बिलाशुबह अल्लाह ही यह ताकत रखता है कि शर की तमाम किस्मों से इंसान को पनाह दे सके।

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثُونَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُوْرِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

30

पारा 30

1540

सूरह-114. अन-नास

आयतें-6

सूरह-114. अन-नास

रुकूअ-1

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो, मैं पनाह मांगता हूँ लोगों के रब की, लोगों के बादशाह की, लोगों के माबूद (पूज्य) की। उसके शर (बुराई) से जो वसवसा डाले और छुप जाए। जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है, जिन्न में से और इंसान में से। (1-6)

इंसान एक आजिज (निर्बल) मख्रूक है। उसे लाजिमी तौर पर पनाह की जरूरत है। यह

पनाह उसे एक खुदा के सिवा कोई और नहीं दे सकता। खुदा ही तमाम इंसानों का रब है, वही लोगों का बादशाह है, वही लोगों का माबूद है। फिर उसके सिवा कौन है जो शर और फितने के मुक़बले में लोगों का सहारा बने।

सबसे ज्यादा ख़तरनाक फितना जिससे इंसान को खुदा की पनाह मांगनी चाहिए वह शैतान है। वह सबसे ज्यादा ख़तरनाक इसलिए है कि वह हमेशा अपनी असल हैसियत को छुपाता है। और पुरफ़रेब तदबीरों से इंसान को बहकाता है। इसलिए शैतान के फितनों से वही शख्स बच सकता है जो बहुत ज्यादा बाहोश हो, जिसे अल्लाह ने वह समझ दी हो जिसके ज़रिए वह हक़ और नाहक में तबीज कर सके, वह समझ सके कि कौन सी बात हकीमी बात है और कौन सी बात वह है जो हकीमी बात नहीं। यह वसवसा अंदाज़ी करने वाले सिर्फ़ मअरूफ़ शयातीन ही नहीं हैं। इंसानों में भी ऐसे शैताननुमा लोग हैं जो मस्नूई (बनावटी) रूप में सामने आते हैं और पुरफ़रेब अल्फ़ज के ज़रिए आदमी के ज़ेहन को फेरकर उसे गुमराही के रास्ते पर डाल देते हैं।

हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। आप उस वक़्त मस्जिद में थे। मैं बैठ गया। आपने फरमाया, ऐ अबूज़र क्या तुमने नमाज़ पढ़ी। मैंने कहा कि नहीं। आपने फरमाया कि उठो और नमाज़ पढ़ो। वह कहते हैं कि मैं उठा और नमाज़ पढ़ी और फिर मैं आकर बैठ गया। आपने फरमाया कि ऐ अबूज़र, जिन्न व इंसानों के शैतानों के शर से अल्लाह की पनाह मांगो। मैंने कहा कि ऐ खुदा के रसूल, क्या इंसानों में भी शैतान होते हैं। आपने फरमाया हां। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

फितनों से खुदा की पनाह मांगना दोतरफ़ा अमल है। एक तरफ़ वह खुदा की इनायत को अपने साथ शामिल करना है। और दूसरी तरफ़ इसका मक़सद यह है कि फितनों के मुक़ाबले में अपने शुऊर को बेदार किया जाए ताकि आदमी ज्यादा बाहोश तौर पर उसका मुक़ाबला करने के क़बिल हो सके।

(दिल्ली, 19 जुलाई 1986)